मन्त्र तन्त्र साधना

पं॰ लक्ष्मी नारायण शर्मा

अनुभूत यन्त्र मन्त्र तन्त्र साधना की पुस्तक

इस पुस्तक में लेखक ने अपने अनुभूत मंत्रों को सिद्ध करने की विधियां विस्तार से बताई हैं। यन्त्र, मंत्र, तंत्र की परिभाषा, उनके प्रभाव का वैज्ञानिक विवेचन, आसन, प्राणायाम, अंगन्यास, करन्यास, अक्षरन्यास, दिगन्यास, षोडसोपचार पूजन, जप, हवन, विधि, तर्पण, मार्जन, पुरश्चरण सहित तंत्र साधना, कुंडलिनी शक्ति, षोडसी पूजा, महा लक्ष्मी, महा काली, महा सरस्वती के मंत्रों की साधन विधि, बटुक भैरव साधना, हनुमान चालीसा अनुष्ठान, बगलामुखी साधना श्रीकृष्ण भगवान का त्रिभुवन मोहन वशीकरण मंत्र, तंत्र सिद्धि, १५ का यंत्र, बीसा यंत्र, सरस्वती यंत्र, गण्डे तावीज, भस्म सिन्दूर, काजल, अभिमन्त्रित जल बनाना, इच्छित वर प्राप्ति, पत्नी प्राप्ति के तंत्र, सन्तान तंत्र, विद्या तंत्र, सरस्वती यंत्र, भूत प्रेत बाधा शांत करने, नजर उतारने, धरन ठीक करने आदि के शाबर मंत्र तथा अनेकों प्रकार के रामबाण मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र और टोटके आदि बताए गए हैं।

मन्त्र तन्त्र साधना

लेखक
लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी० ए०, प्रभाकर, साहित्य रत्न
ज्योतिष वाचस्पति

वर्ल्ड बुक कं०
4531-दाई वाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-6

प्रथम संस्करण 1978
द्वितीय संस्करण 1982
उपरोक्त दोनों संस्करण स्वयं लेखक श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा द्वारा प्रकाशित
तृतीय पूर्णतः संशोधित संस्करण 1987
वर्ल्ड बुक कम्पनी द्वारा प्रकाशित

मूल्य : [illegible] रुपए

प्रकाशक
वर्ल्ड बुक कम्पनी
4531-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006

मुद्रक
श्री कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा
तिलक प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित

समर्पण

जिनकी अहेतुकी कृपा से संसार के अनेकानेक जीवों का उद्धार हो गया, जिनकी शक्ति से सम्पन्न होकर श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी ने विश्व में सनातन धर्म की पताका पहराई, जिनकी कृपा-दृष्टि से मेरे गुरु आनन्द शरण जी ने मेरे जैसे कितने ही जनों का कल्याण किया

उन

परम पूज्य स्वामी रामकृष्ण परमहंस देव

के श्री चरणों में

यह ग्रन्थ पुष्प सादर समर्पित है

अकिंचन बालक

लक्ष्मी नारायण शर्मा 'अम्बशरण'

भूमिका

धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति के लिए शास्त्रों में अनेक मन्त्र यन्त्र व तन्त्रों की व्याख्या की गई है। उनमें से परमार्थ साधन के लिए तथा संसार यात्रा को सुलभ बनाने के लिए जो मन्त्र आदि प्रयोग मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझे बताए तथा जिनकी साधना उनके निर्देशन में की थी और जिनका बाद में कई सज्जनों ने मेरे बताने पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया, उनमें से मुख्य-मुख्य अनुभूत प्रयोगों को इस पुस्तक में विस्तार से बताया गया है।

साधना की आरम्भिक आवश्यक बातें, प्रसिद्ध लक्ष्मी मंत्र साधना, वशीकरण मोहन मंत्र जिसे भगवान श्रीकृष्ण बंशी में बजाकर जगत को मोहित करते थे, श्री बटुक भैरव मन्त्र साधना, बगलामुखी मन्त्र साधना, हनुमान जी की साधना, सरस्वती मन्त्र, सन्तान गोपाल मन्त्र, विवाह के लिए विशेष तन्त्र तथा अनेक सरल शाबर मन्त्रों के सिद्ध करने की पूरी विधि विस्तार से सरल भाषा में बताई गई है।

रक्षा कवच, गण्डे, तावीज, भस्म, काजल, सिन्दूर आदि बनाने की पूरी विधि, भूत प्रेत बाधा शान्त करने, शत्रु को परास्त करने, परीक्षा, साक्षात्कार, मुकद्दमे आदि में सफलता व विजय प्राप्त करने के कई अनुभूत प्रयोग पुस्तक में दिए गए हैं। भाषा सरल हिन्दी है। संस्कृत न जानने वाले भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

विनीत

लक्ष्मीनारायण शर्मा

ई-१२८/१, नारायण विहार
नई दिल्ली-२८

विषय-सूची

पहला अध्याय : विषय प्रवेश ९—२२

मन्त्र तन्त्र साधना की आरम्भिक आवश्यक बातें, मन्त्र शक्ति का वैज्ञानिक आधार, भूत प्रेत साधना, श्मशान साधना, वाम मार्ग साधना का विश्लेषण ।

दूसरा अध्याय : साधना सम्बन्धी नियम २३—३७

श्रद्धा, धैर्य, मन शुद्धि, शरीर शुद्धि, द्रव्य शुद्धि, क्रिया शुद्धि, आसन, उपयुक्त स्थान, प्राणायाम, इष्ट देवता, कुलाकुल चक्र, तत्व मैत्री चक्र, शाबर मन्त्र तथा साधना की उपयोगी बातें ।

तीसरा अध्याय : जप ध्यान आदि की विधियां ३८—५०

साधना विधि, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, दिगन्यास, अक्षरन्यास, ध्यान, माला से जप, हवन विधि, तर्पण विधि, पुरश्चरण ।

चौथा अध्याय : तन्त्र साधना ५१—६६

तन्त्र साधना, कुण्डलिनी शक्ति, गवाक्ष योग साधन, चीर हरण लीला का रहस्य, वाम मार्ग साधना, अघोरपंथ साधना, श्मशान साधना, भैरवी चक्र, षोडसी पूजा ।

पांचवां अध्याय : श्री महा लक्ष्मी मंत्र सिधि की विधि ६७—८१

मातृ भाव से साधना करने के लाभ, मां के स्वरूपों का वर्णन, महा लक्ष्मी, महा काली, महा सरस्वती के मन्त्रों की साधना ।

छटा अध्याय : बटुक भैरव साधना ८२—९७

बटुक भैरव साधना, मन्त्र सिद्ध करने की पूरी विधि, श्री हनुमान चालीसा का अनुष्ठान ।

सातवाँ अध्याय : बगलामुखी साधना ९८—११२

बगला तन्त्र, बगलामुखी देवी साधना, मन्त्र सिद्धि, पुरश्चरण विधि ।

आठवां अध्याय : वशीकरण मन्त्र ११३—१२५

भगवान श्रीकृष्ण का विश्व मोहन करने वाला प्रसिद्ध वशीकरण मन्त्र तथा उसको सिद्ध करने की पुरश्चरण विधि, दुर्गा सप्तशती के कुछ अनुभूत मंत्र ।

नौवां अध्याय : यन्त्रों को सिद्ध करना १२६—१४८

यन्त्र शक्ति के वैज्ञानिक आधार, यन्त्र सिद्ध करने की विधि, १५ का यन्त्र, बीसा यन्त्र, गर्भ स्तम्भन यन्त्र, सन्तान प्रद यन्त्र, मुकदमे में विजय प्रदान कराने वाला यन्त्र, प्रवासी आकर्षण यन्त्र, श्री महालक्ष्मी यन्त्र, इनको सिद्ध करने की विधि ।

दसवां अध्याय : ग्रह शांति के लिए अनुष्ठान १४९—१५५

ग्यारहवां अध्याय : विविध यंत्र, मंत्र और तंत्र १५६—१६९

गण्डे बनाना, भस्म विभूति बनाना, सन्तान तंत्र, सरस्वती तन्त्र, खोए व्यक्ति को बुलाने का तन्त्र, कर्ण पिशाचिनी सिद्धि, हनुमान जी की सरल साधना ।

बारहवां अध्याय : टोने टोटके १७०—१७५

तेरहवां अध्याय : शाबर मंत्र साधना १७६—१८८

भूत-प्रेत-बाधा शांति के लिए मंत्र, प्रेत सिद्धि के मंत्र, आधा शीशी, नेत्र पीड़ा, आदि रोगों के मन्त्र, धरन या नाफ टलने पर उपाय, वशीकरण शाबरी मंत्र इत्यादि ।

पहला अध्याय

विषय प्रवेश

यन्त्र-मन्त्र तन्त्र का बिगड़ा हुआ रूप मन्तर जन्तर तन्तर है और इन शब्दों से आम जनता में जन्तर मन्तर जानने वाले जिन ओझा, सयानों, सेवड़ों, तान्त्रिक अघोरी काला जादू या इन्द्रजाल जानने वाले की जो तस्वीर सामने आती है वह कोई अच्छी तस्वीर नहीं होती। लोग कुछ भय-मिश्रित कौतुहल से इन लोगों को देखते हैं और इस विद्या के जानने वाले या ज्ञान से हीन परन्तु पाखण्ड तथा दम्भ का सहारा लेकर भूत प्रेत व्याधा उतारने, मारण मोहन वशीकरण के नाम पर अनाचार अभिचार करने वालों की काली करतूतों से इस विद्या पर किसी की भी श्रद्धा नहीं रही है। दूसरों के अज्ञान से लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करने वालों के कारण ही हमारे धर्म कर्म और जिन प्राचीन विद्याओं की हानि हुई है उसमें ज्योतिष, सामुद्रिक के साथ-साथ ही यह मन्त्र तन्त्र विद्या भी है। इन विद्याओं की उत्पत्ति जन कल्याण, समाज कल्याण जैसी उच्च महती भावनाओं को लेकर हुई थी, परन्तु कालान्तर में इसे स्वार्थी जनों ने अपनी कुचेष्टा की पूर्ति का साधन बना लिया। परमाणु शक्ति की खोज आज के विज्ञान की चरम उपलब्धि है परन्तु यदि इसे जन कल्याण के कार्यों में न लगाकर विध्वंस के लिये प्रयोग किया जाय तो इसमें विज्ञान का क्या दोष ?

वैदिक काल में हमारे ऋषि मुनि महर्षियों ने सूर्य चन्द्र आदि ग्रहों, अग्नि वायु जल के देवता वरुण आदि की विश्व कल्याण में उपादेयता को जान कर उनकी स्तुति में मन्त्रों की रचना की। सूर्य के तेज व प्रकाश के बिना जीवन का कोई काम नहीं चल सकता। इससे हमें गरमी मिलती है प्रकाश मिलता है वनस्पतियों को जीवन मिलता है। अग्नि तथा वायु भी हमारे जीवन के लिये परम आवश्यक तत्व हैं। प्राण के बिना जीवन नहीं रहता। इन्हीं सब बातों का सूक्ष्म अन्वेषण करके हमारे पूर्वजों ने इनको प्रसन्न करने या अपने अनुकूल बनाने के लिये स्तुति मन्त्र बनाये। यह तो आप जानते हैं कि अग्नि हमारे लिये कितनी उपयोगी है परन्तु यदि प्रतिकूल हो जाये तो सर्वनाश का कैसा

भीषण दृश्य उपस्थित कर सकती है। जल या वर्षा के देवता इन्द्र यदि कुपित हो जायं तो बाढ़ या जल प्लावन के कैसे-कैसे अनर्थ और सर्वनाश कर सकते हैं। वायु देवता यदि कुपित हो जायं तो आंधी तूफान बवंडर से नाश भी कर देते हैं। दैवी विपत्तियों से युद्ध महामारी जननाश होते रहते हैं। इन सब से रक्षा के लिये जो उपाय हमारे पूर्वजों ने निश्चित किये वे सब तन्त्र मन्त्र शास्त्रों में लिखे हुये हैं और काफी समय तक सफलता पूर्वक प्रयोग में भी लाये जाते रहे हैं। यह सब उपाय वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं और जब तक इनके जानने वाले रहे और इन को विधिवत किया जाता रहा इनके परिणाम भी निश्चित रूप से ठीक निकलते रहे। आज भी जब भी जहां कहीं भी इनका विधिवत अनुष्ठान किया जाता है तो सफलता अवश्य मिलती है। इन अनुष्ठानों की प्रामाणिकता में किसी को संदेह नहीं करना चाहिये। यह हो सकता है कि इनके जानकार निस्वार्थ ज्ञानी महर्षियों का दिन प्रति दिन अभाव होता जा रहा है।

पुराने जमाने में आजकल की तरह छापेखाने तो थे नहीं। प्राचीन विद्यायें गुरु के मुख से शिष्य को मुखाग्र कराई जाती थीं और जुबानी याद करने में आसानी हो इसलिये कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव आ जाएं ऐसे सूत्र बनाये जाते थे और उन सूत्रों व श्लोकों को भोजपत्र पर लिख लिया जाता था। विद्या का महत्वपूर्ण भाग गुप्त ही रखा जाता था और उसे गुरु शिष्य को जबानी बताता था और उसको गुप्त ही रखने का आदेश देता था। मन्त्र का मतलब गुप्त सलाह होता है और इसी कारण मन्त्र को गुप्त से गुप्त रखा जाता था। इस कारण हमारा बहुत सा महत्वपूर्ण साहित्य और विद्यायें लुप्त होती गईं। इसी कारण हमारे बहुत से प्राचीन ग्रन्थ हमारे यहां उपलब्ध नहीं हैं। विदेशी पुस्तकालयों व संग्रहालयों में मिल जाते हैं। तात्पर्य यह कि मन्त्र बहुत ही महत्वपूर्ण तथा गुप्त वस्तु है और गुप्त उसी को रखा जाता है जो सबसे अधिक कीमती समझी जाती है। आप जिन वस्तुओं को सबसे अधिक मूल्यवान समझते हैं उनको प्राणों से भी अधिक प्यारी समझ कर सबसे अधिक सुरक्षित स्थान में रखते हैं।

मन्त्र भी सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है। अपने गुरु मन्त्र को कोई भी बताना पसन्द नहीं करेगा। 'फुरै मन्त्र जो करै दुराऊ' वाली उक्ति के अनुसार

मन्त्र तभी तक फलदायक होता है जब तक उसको छिपाया जाय और बताया न जाय। बताने से उसकी शक्ति नष्ट या कम हो जाती है। दान वही कर सकता है जिसके पास देने के लिये काफी सम्पत्ति हो। निर्धन देगा ही क्या और देगा तो उसके पास रहेगा क्या। इसी सिद्धान्त के अनुसार मन्त्र देने की योग्यता उसी की समझी जाती है जिसके पास मन्त्र शक्ति का इतना भण्डार इकट्ठा हो गया हो कि वह उसमें से बिना अपने को नुकसान पहुँचाये या शक्तिहीन बने दूसरों को दे सके। देने वाला निस्वार्थ भाव से, लेने वाले की कल्याण भावना से दे और लेने वाला श्रद्धापूर्वक अपने तथा औरों के लिये निस्वार्थ कल्याण भावना से ले और मन्त्र को सिद्धि तक पहुँचाये।

प्रत्येक मंत्र में आदि में ओंकार का होना आवश्यक व निश्चित होता है। इसके बाद कुछ देवताओं तथा विशेष शक्तियों के बीज अक्षर होते हैं और अन्त में नमः या नमस्कार वन्दना के शब्द होते हैं। हमारे विश्वास तथा मान्यता के अनुसार इस सृष्टि की रचना के आरम्भ में उस पूर्ण ब्रह्म ज्योतिर्पिण्ड के अन्दर से ओंकार की ध्वनि का उदय हुआ था और अ उ म तथा अनुस्वार की बिन्दु से अन्य सभी स्वरों तथा व्यंजनों की उत्पत्ति हुई। इन सबका विस्तार से ब्यौरेवार वर्णन हमारे मन्त्र तथा अन्य शास्त्रों में किया गया है। प्रत्येक स्वर तथा व्यंजन की अलग-अलग शक्तियां हैं और इनसे भिन्न-भिन्न प्रभाव उत्पन्न होते हैं। इसी कारण इनके विभिन्न स्वभाव गुण धर्म के अनुसार इनके स्वामी देवता गण भी निर्धारित किये गये हैं। कुछ स्वर ऐसे हैं जिनके उच्चारण करने से शान्त रस का आविर्भाव होता तो कुछ स्वर ऐसे हैं जिनसे रौद्र रस का प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। देवताओं या शक्तियों के गुण स्वभाव के अनुसार जिन स्वर तथा व्यंजनों का सबसे अधिक मेल खाता है, इसका ज्ञान प्राप्त करके उन विशेष अक्षरों को लेकर उन देवताओं के मन्त्रों के बीच में मिला कर मन्त्रों की रचना ऋषियों ने की। "अतिशय रगड़ करे जो कोई। अनल प्रगट चन्दन ते होई।" चन्दन जैसे शीतल काठ को भी अधिक रगड़ने से अग्नि उत्पन्न हो जाती है। अब तो माचिस की तीली को घिसने से तुरन्त अग्नि पैदा हो जाती है। माचिस के आविष्कार से पहले चकमक पत्थर को रगड़ कर अग्नि पैदा की जाती थी। परन्तु इससे भी पहले वैदिक युग में काठ की अरणियों को रगड़ कर ही यज्ञों में अग्नि उत्पन्न की जाती थी। इसी प्रकार

मंत्रों के बारम्बार लगातार उच्चारण यानी बहुत अधिक संख्या में जप करने से वांछित प्रभाव की उत्पत्ति होती है। वनों में वृक्षों के हवा के प्रभाव से बार-बार रगड़ने से अब भी कभी-कभी आग लग जाती है और जंगल का जंगल पूरा स्वाहा हो जाता है। बनों में लगने वाली इस अग्नि को दावानल कहते हैं। मन्त्रों को भी बारबार कहने से एक निश्चित संख्या पूरी हो जाने पर वह सिद्ध हो जाता है। यानि तब वह मन्त्र ५-१० वार कहने मात्र से ही इच्छित प्रभाव या जो प्रभाव उससे उत्पन्न किया जा सकता है या जो करने की क्षमता रखता है, उत्पन्न हो जाता है। अग्नि उत्पन्न करने के भी मन्त्र होते थे और ऋषियों को वे सिद्ध होते थे। यज्ञ के समय वे उन्हीं मन्त्रों से अग्नि उत्पन्न कर देते थे। किसी माचिस चकमक या अरणी की वह सहायता नहीं लेते थे। किस मन्त्र के सिद्ध होने की संख्या कितनी है यह शास्त्रों में बताई गई है। ज्यादातर मन्त्र सवा लाख जपने के उपरान्त सिद्ध होते हैं।

आप आज यदि अंग्रेजी के या गणित के या संस्कृत के या किसी अन्य विद्या के पंडित हैं और उस पर आपका पूर्ण अधिकार है तो क्या यह पांडित्य आपको आसानी से प्राप्त हो गया है ? आपने बाल्यकाल से लेकर युवावस्था तक कितना कठोर परिश्रम किया है। प्रत्येक शब्द को उसके अर्थ को गिनती पहाड़े से लेकर फार्मूलों और सूत्रों को कितनी बार रटा है, तब जाकर कहीं आप आज इस योग्य हुये हैं कि उनको अधिकारपूर्वक प्रयुक्त कर सकते हैं। इसी प्रकार किसी मन्त्र की कम से कम लाख सवा लाख आवृत्ति करना बहुत जरूरी है। जिस प्रकार एक योग्य अभिभावक यह देखता है कि उसका बच्चा किस तरह की पढ़ाई के अधिक योग्य है और फिर वह उसको उसी तरह की शिक्षा दिलवाता है। डाक्टरी में रुचि है तो डाक्टरी पढ़ायेगा, इंजीनियरिंग में रुचि है तो यही पढ़ायेगा। इसी तरह योग्य गुरु भी देखता है कि अमुक शिष्य को किस प्रकार का मन्त्र दिया जाना चाहिये। वह निराकार में अनुरक्त है या साकार विग्रह में। साकार में भी वह सौम्य विग्रहों की ओर आकृष्ट है या रौद्र स्वरूपों की ओर। और गुरु शिष्य के इष्ट को देखकर ही उसी इष्ट के अनुसार गुरुमन्त्र देता है, जिससे शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो सके। सामयिक उपद्रवों, समस्याओं तथा ग्रहों के कुप्रभाव को शान्त करने के लिये मन्त्र तथा अनुष्ठान अलग-अलग निर्धारित हैं।

जिन महानुभावों ने गुरु के दिये गये मन्त्र को विधिवत् जप करके सिद्ध किया उनमें अपार शक्ति उत्पन्न हुई और वे परम सन्त हो गये। उनकी मन्त्र शक्ति का प्रदर्शन जब भी परिस्थितिवश हो गया, तभी किसी न किसी चमत्कार की सृष्टि हुई। ऐसे लोग अपनी मन्त्र शक्ति का प्रदर्शन कभी नहीं करते परन्तु कभी-कभी दयावश, करुणावश वह लोगों के प्रकाश में आ जाती है। प्रकृति के नियमों के विरुद्ध काम हो तो उसे चमत्कार समझा जाता है और सन्तों ने मुर्दे तक को जीवित कर दिया है। ऐसे कई उदाहरण हैं। हमारे देश में प्राचीन समय से आज तक अनेकों ऐसे सन्त महात्मा हो गये हैं जिनकी मन्त्रशक्ति अपार थी। जिन्होंने अपनी मन्त्रशक्ति आत्मशक्ति से एक प्रदेश ही नहीं, सारे देश को और देशान्तरों तक को हिला दिया था। यहां यदि मैं उन सबके चमत्कारों का वर्णन न कर केवल नाम ही गिनाने लगूं तो भी बहुत स्थान चाहिए। परन्तु उनमें से कुछ का नाम बताना शुभ ही होगा। हमारे राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गांधी परम संत थे। उन्होंने सत्य, अहिंसा के मन्त्र को सिद्ध किया था और अपार आत्मशक्ति अर्जित की थी। सारे संसार को हिला दिया था और जिसकी कम्पन अभी तक बाकी है। उनका इष्टमन्त्र राम था। इससे कुछ पहले बंगाल में भगवान रामकृष्ण परमहंस अवतीर्ण हुये, जिनके मुख्य शिष्य स्वामी विवेकानन्दजी ने समस्त विश्व में हिंदू धर्म की पताका फहराई थी। महाराष्ट्र में सन्त तुकाराम, सन्त ज्ञानेश्वर और नामदेवजी तथा राष्ट्रप्रेमी सन्त समर्थ गुरु रामदासजी उल्लेखनीय हैं। इन सब तथा अनेकानेक अन्य सन्तों के पास मन्त्र शक्ति का ही तो खजाना था जो आज तक भी बंटता चला आ रहा है और चुकता नहीं।

वैसे तो मानव सदा से ही शंकाशील रहा है और उसने सरलता से किसी पर आंख मूंद कर विश्वास नहीं किया। यों भोली भाली अपढ़ अज्ञान जनता को लोग झूठे आडम्बरों पाखण्डों से ठगते भी रहे हैं। परन्तु पढ़े लिखे लोग तो सदैव से ही शंकाशील रहे हैं। फिर आज के वैज्ञानिक युग मे तो जब तक पूरे प्रमाण न मिलें विश्वास कोई नहीं करता और करना भी नहीं चाहिये। इस तरह चौकन्ने रहने से ठगों से तो बचा ही जा सकता है। मन्त्र शक्ति का यथार्थ धनी कभी भी अपना विज्ञापन प्रदर्शन नहीं करता, ढोल नहीं पीटता। अनायास ही कभी किसी का कोई चमत्कार प्रकाश में आ जाता है और तब

लोग जैसे चौंक कर जागते हैं। आज भी ऐसे महानुभाव अवश्य विद्यमान होंगे, क्योंकि पृथ्वी कभी बीजरहित-बीजहीन नहीं होती। और किसी भी विद्या का कभी नितान्त अभाव नहीं होता। जब आपको आपकी रुचि के अनुरूप मन्त्र मिल जाय तो सबसे पहिले आप उसको सिद्ध कीजिये। इसकी निर्धारित संख्या में आवृत्तियां कर लेने पर वह सिद्ध होगा तब आप अपने में पर्याप्त आत्मशक्ति का अनुभव करने लगेंगे आपको अपने पर अपने अन्तर की अपार शक्तियों पर विश्वास उत्पन्न होगा। आपकी आत्मशक्ति जागृत होगी।

आप अपने विद्यार्थी जीवन को याद कीजिये। तब आप अपने अध्ययन के लिये एकान्त स्थान खोजते थे, पार्कों में जाते थे। सुबह चार बजे के शांत वातावरण में या रात को सब के सो जाने पर पढ़ते थे। इसी प्रकार मन्त्र साधना के आरम्भ में आपको शोर शराबे से दूर एकान्त या शान्त वातावरण की जरूरत होगी। प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में या रात के ११-१२ बजे के समय अर्ध रात्रि में घर की छत या एकांत कोने में बैठ कर जप करने से शीघ्र सफलता मिलती है। बस्ती से दूर जंगल पहाड़, किसी भग्न मन्दिर या खण्डहर में भी अच्छा रहता है। परन्तु वहां पर चींटी तथा दीमक या कीड़े जमीन पर न हों किसी हिंस्र पशु का खटका नहीं होना चाहिये। घर में भी साधना की जा सकती है परन्तु आपके मन्त्र जाप से और लोगों की नींद में बाधा पहुँच सकती है। इसका ध्यान रखना होगा। किसी भी विषय की पढ़ाई करते समय यदि आपका मन एकाग्र नहीं होता था, तो वह विषय आपकी समझ में नहीं आता था और इसलिये आप मन को एकाग्र करके ही अध्ययन करते थे। इसलिये इस साधना में भी मन की एकाग्रता बहुत जरूरी है। शुरु-शुरु में इसके लिये प्रयत्न करना पड़ेगा परन्तु धीरे-धीरे आपको मन पर नियंत्रण करना सरल हो जायेगा। इससे आपकी यह आदत बन जायेगी कि आप प्रत्येक विषय को एकाग्र मन से अध्ययन करने लगेंगे और प्रत्येक विषय को आसानी से समझने लगेंगे।

मन्त्र का जाप करने की चार प्रमुख विधियां हैं। इससे पहिले कि वह बताई जाएं एक बात याद रखिये कि आपको जो मन्त्र मिला है और जो साधना आप कर रहे हैं उसको किसी को न बताइये। अपने प्रगाढ प्रेमी तक को नहीं। तभी उसमें सिद्धि होती है। इसका कारण यह है कि कोई उसे

गलत बतायेगा कोई उसमें अपनी बुद्धि के अनुसार कमियां बतायेगा, कोई संशोधन पेश करेगा और इन सबसे उत्पन्न होने वाली कल्पित बाधाओं तथा दुष्परिणामों का भय दिखाकर आपकी श्रद्धा, आपके विश्वास को हिलाने का प्रयत्न करेगा। इसलिये यह आदेश शास्त्रों में दिया गया है कि फुरै मन्त्र जो करे दुराऊ। अपने मन्त्र तथा साधन को गुप्त रखो। हां तो मन्त्र का जाप प्रारम्भ में कण्ठ से करना चाहिये वाणी से और यह ऐसे स्थान में हो जहां बाहर का व्यक्ति सुनने वाला न हो तो अच्छा है। यदि आपने अपने घर में कोई पूजा स्थान बनाया हुआ है तो वहां कीजिये और कर सको तो दरवाजा आदि बन्द करके केवल इतनी ऊँची आवाज में कीजिये कि घर के अन्य लोग ध्वनि तो सुनें परन्तु मन्त्र को सुन समझ न सकें। इससे आपका मन्त्र का उच्चारण ठीक हो जायेगा, वह पक्का याद हो जायेगा और उसको जल्दी-जल्दी कहने पर भी उसके कहने में भूल नहीं होगी। मन्त्र साधना करते समय आप स्नान करके शुद्ध पवित्र वस्त्रों में हों स्वच्छ हों, चित में चिन्ता या उद्वेग न हो और हो तो उसे कुछ देर के लिए दूर करने का प्रयत्न करो। शुरू में ऐसा न हो पाये तो भी आप जोर देकर मन्त्र जाप प्रारम्भ कर दो। सभी दुश्चिन्तायें अपने आप दूर होती चली जायेंगी।

कुछ दिन तक, कहिये कि एक हफ्ते तक, या जब तक १०-१५ हजार की जप संख्या न हो जाय तब तक इस प्रकार वाणी से जप चालू रखें। इसके बाद मुख के अन्दर जिव्हा से जप करना प्रारम्भ करें। इसमें थोड़ी-थोड़ी ध्वनि निकलती रहती है और मुंह के अन्दर जीभ से मन्त्र का जाप होता रहता है। इसके कुछ दिन बाद जो थोड़ी बहुत ध्वनि बाहर निकलती है वह भी बन्द हो जाती है और मुख में जिव्हा जप करती रहती है। जब यह स्थिति आ जाय तब मन्त्र का जाप किसी भी समय किसी भी स्थान पर किया जा सकता है। वैसे सुखासन, पदमासन अर्थात् आरामदेय बैठक हो, स्नानादि से शरीर पवित्र हो, वस्त्र स्वच्छ हों तो अति उत्तम हैं ही। एकांत स्थान और शोर रहित शान्त वातावरण भी होना चाहिये। परंतु जिव्हा से जाप करने के लिये इन सबकी कोई बंदिश नहीं है। चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-लेटे कहीं भी किसी भी स्थिति में इस प्रकार का जाप किया जा सकता है। हां आरम्भ में गिनती रखने की समस्या अवश्य रहती है। इसे जेब में माला रख कर या

ऊंगली के पौरवों पर गिनती रख कर हल किया जा सकता है। इसके बाद का जाप स्वांस से प्राणों का आधार बना कर किया जाता है और यह मन्त्र सिद्ध होने के बाद ही किया जाता है और फिर सुरति से ध्यान से चित्तवृत्ति से किया जाता है।

अब आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि इतनी सब मेहनत व साधना करने से क्या लाभ होगा ? क्यों बेकार समय नष्ट किया जाय और ज्योतिष से इसका क्या सम्बन्ध है तथा ज्योतिष में इससे क्या सहायता मिलती है ? पहला लाभ तो यह होगा कि आपको अपने मन पर नियन्त्रण करना आ जायेगा और यदि मन पर नियंत्रण हो गया तो इन्द्रियों पर नियंत्रण स्वयंमेव हो जाता है। इसी को प्रबल आत्मशक्ति तथा दृढ़ इच्छा शक्ति कहते हैं। आप जो सोचेंगे उसे कार्यरूप में परिणत करने का पूरा प्रयत्न करेंगे। काम को बीच में अधूरा नहीं छोड़ेंगे। आपका आचार व्यवहार ठीक होगा। जीवन के उच्च सिद्धान्त बनेंगे। मन को एकाग्र करना आ जाने से आप जिस विषय को भी पढ़ेंगे या सोचेंगे उसे सम्पूर्ण मन बुद्धि से सोचेंगे और विषय जल्दी समझ में आ जायेगा। समस्याओं के समाधान तुरन्त निकलेंगे। चाहे कितना ही शोर शराबा हो रहा हो, आप गहन से गहन विषय पर विचार करने में या उसका अध्ययन करने में समर्थ होंगे और सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि आपकी बुद्धि प्रखर यानी तेज हो जायेगी तथा स्मरण शक्ति बहुत अच्छी हो जायेगी। वाणी मधुर तथा स्वर मीठा हो जायेगा। सांसारिक व्यवहार में ये सब गुण आपकी उन्नति में बहुत सहायक होंगे। ज्योतिष भी एक गहन व गम्भीर विषय है। इसमें निपुण होने के लिये अच्छी स्मरण शक्ति, तीव्र बुद्धि तथा गहन अन्तर दृष्टि की जरूरत है। यदि ज्योतिषी की स्मरण शक्ति अच्छी नहीं है, ग्रहों के शुभ।शुभ का विचार करके निर्णय लेने की उसकी विवेक शक्ति ठीक नहीं है, तो वह एक सफल ज्योतिषी नहीं हो सकता और यह सब गम्भीर निर्णय मन की एकाग्रता के बिना नहीं लिये जा सकते।

एक डाक्टर वर्षों तक बड़े-बड़े वृहत ग्रन्थों का अध्ययन करता है, क्रियात्मक अनुभव भी प्राप्त करता है परन्तु यदि उसकी स्मरण शक्ति अच्छी नहीं है या उसका निर्णय या रोग-निदान ठीक नहीं है, तो वह अपने

पेशे में सफल नहीं हो सकता। इसी प्रकार डाक्टर, वकील और इन्जीनियर तो पास होकर बहुत निकलते हैं, परन्तु सफल वही थोड़े से होते हैं जिनकी बुद्धि निर्णयात्मक-शक्ति स्मारणशक्ति अधिक प्रखर होती है। तो उपरोक्त साधना से प्राप्त विशेषताएं आपकी हर क्षेत्र व व्यवसाय में सहायक होंगी और औसत से आपको ऊपर उठायेंगी। ज्योतिष विद्या, हस्त रेखा, सामुद्रिक, अङ्क विद्या आदि के सिद्धान्तों को समझने, उन्हें हृदयंगम करने, याद रखने और निर्णयात्मक फलादेश कहने में मन की एकाग्रता, निर्णय लेने की शक्ति विवेक बहुत आवश्यक होता है।

कुछ ज्योतिषियों के बारे में कहा जाता है कि वह फलादेश कहने में कर्ण-पिशाच जैसी किसी प्रेत सिद्धि का सहारा लेते हैं। यहां इस विषय पर भी कुछ बता देना जरूरी है। ऊपर जिन ओझा, सेवड़े, सयाने आदि का वर्णन किया है और आज के जमाने में जो काफी संख्या में मिल जाते हैं वे मन्त्रों द्वारा भूत प्रेत आदि सिद्ध करने वाले होते हैं। इनमें भी बहुत से तो पाखण्डी व ठग होते हैं और उन्हें कोई भूत प्रेत की भी सिद्धि नहीं होती, परन्तु जिन्होंने सचमुच ही इस प्रकार की आत्माओं को सिद्ध किया होता है, वे निम्न स्तर के मन्त्रवेत्ता कहे जा सकते हैं। हमारी मान्यताओं तथा विश्वासों के अनुसार, जिन जीवों की व्यक्तियों की अकाल मृत्यु हो जाती है, आत्महत्या से, हत्या से, जल में डूबकर, आग से जलकर बड़े कष्ट से जिनके प्राण निकलते हैं और जिनकी आत्माएं अतृप्त रह जाती हैं, उनकी गति नहीं होती यानी वे वायुमंडल में अपने सूक्ष्म शरीर को लिये अपनी अतृप्त वासनायें लिये मंडराती रहती हैं और उनका पुनर्जन्म नहीं हो पाता। इनको भूतप्रेत योनि की संज्ञा दी गई है। आज के वैज्ञानिक युग में भी बहुत-सी ऐसी घटनायें प्रकाश में आ चुकी हैं जिनमें इनका अस्तित्व प्रमाणित हो चुका है। सूक्ष्म शरीर होने के कारण ये दिखाई नहीं देतीं परन्तु कभी-कभी कोई अधिक मनोबल वाली प्रेतात्मा छायारूप में दिखाई देकर अपने अस्तित्व का आभास करा देती हैं और ऐन-केन प्रकारेण कुछ हानि-लाभ करने में भी सफल हो जाती हैं। बहुधा यह कमजोर मनोबल वाले पुरुषों, स्त्रियों या बच्चों के शरीर में प्रवेश करके उस शरीर के द्वारा अपनी अतृप्त वासनाओं की तृप्ति करती भी पाई गयी हैं। क्योंकि यह सब समय सब जगह अबाध रूप से जा सकती हैं इसलिए भूत तथा वर्तमान का इन्हें पूरा ज्ञान रहता है और इनमें

भी जो अधिक मनोबल वाली होती हैं उनमें इतनी शक्ति भी होती है कि वह छाया शरीर धारण कर लें और वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्थानान्तर कर सकें।

इस प्रकार की भूत प्रेत आत्माओं का सिद्ध करना अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है। कोई भी साहसी या थोड़ा सा भी दु:साहसी व्यक्ति इसे बहुत थोड़े समय में पूरी कर सकता है। निर्जन श्मशान भूमि में जहां इस प्रकार की प्रेतात्माओं का होना निश्चित होता है, रात के १२ बजे के लगभग जाकर पूर्णतया नग्न होकर मदिरा, मांस और इसी प्रकार के अन्य तामसिक पदार्थों की भेंट लेकर साधक जाता है और पात्र को वहां रख देता है और अपना तान्त्रिक साधन आरम्भ कर देता है। देखते-देखते वह पात्र किसी भी ऊंचे वृक्ष की ओर या आकाश में उड़ कर गायब हो जाता है। और साधक की भेंट प्रेतात्माओं तक पहुंच कर स्वीकृत हो जाती है। या पात्र के वहां रक्खे-रक्खे ही उसका सारा मद्य मांस गायब हो जाता है। इसी प्रकार कुछ दिनों के साधन के बाद वह प्रेतात्मा जिसे मद्य मांस की भेंट लेने की आदत पड़ चुकी होती है उस साधक के वश में हो जाती है और इन तामसी पदार्थों के लालच में उसकी उचित अनुचित आज्ञा मानने को तत्पर रहती है और अपनी शक्ति भर उसका पालन भी करती है। साधक इस प्रकार की विशेष भेंट उस प्रेतात्मा को अक्सर देता रहता है। होली दिवाली शिवरात्रि प्रति अमावश्या और अन्य विशेष अवसरों पर और यदि किसी कारण नहीं दे पाता तो वह प्रेतात्मा उस साधक की भी बुरी हालत कर देती है। इस भूत प्रेत साधन में बहुत से व्यक्ति भय से या साधन में अन्य कोई भूल या कमी रह जाने के कारण पागल हो चुके हैं और कितने ही अपनी जान तक खो चुके हैं। इस तरह भूत प्रेत सिद्ध करने से इतना ही लाभ होता है कि साधक उसके द्वारा दूरदराज से वेमौसम के फल या अन्य वस्तुएँ मंगवाकर लोगों को दिखा सकता है, उन्हें प्रयोग में नहीं ला सकता। केवल बाजीगरी दिखाकर चमत्कृत कर सकता है, इनकी सहायता से वह हर किसी की भूत काल की घटनाओं की जानकारी दे सकता है और वर्तमान को भी जान सकता है। इसीलिए कुछ ज्योतिषी कर्णपिशाच की सहायता से जातक की भूतकाल की तथा वर्तमान की सही बातें बताकर उसे प्रभावित कर देते हैं और उससे पर्याप्त धन ऐंठने में सफल हो जाते हैं। परन्तु उनका बताया

गया भविष्य सम्बन्धी फलादेश बिलकुल गलत निकलता है। इस प्रकार चमत्कार दिखा कर वे लोग अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते हैं, पर इससे ज्योतिष का या उस साधक का कितना अपकार होता है इसकी उन्हें चिन्ता नहीं होती।

इस प्रकार के भूत प्रेत साधकों की आँखों की पलकों के बाल जिन्हें बिन्नी कहते हैं—नहीं होतीं और अन्तिम समय पर मरते समय उनके मुख में से विष्ठा भरी हुई निकलती है तथा वे भूत प्रेत उस व्यक्ति को अपनी ही योनि में ले जाते हैं और अपने जीवन काल में जिन-जिन भूत प्रेतों को उन्होंने तंग किया होता है वे गिन-गिन कर उससे बदला लेते हैं। इसलिए अच्छे सात्विक जनों को जो इस लोक में तथा परलोक में अपनी सुगति चाहते हैं इस प्रकार की निम्न प्रेत साधना व मन्त्र साधना से दूर ही रहना चाहिए और अपने को उन्नति की ओर ले जाने वाली सात्विक साधना ही करनी चाहिए, चाहे उसमें कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़े। सात्विक मन्त्र साधना करने वाला कभी किसी को हानि पहुंचाने वाले अनुष्ठान, मारण आदि अनाचार अन्याय के कर्म नहीं करता।

ज्योतिषी के पास बहुधा वे ही लोग आते हैं जो किसी न किसी दुख कष्ट या विपत्ति में होते हैं या अपने किसी कार्य की सफलता शीघ्र चाहते हैं। ज्योतिषी उसकी कुंडली, ग्रह गोचर देख कर यह निर्णय लेता है कि उसका वर्तमान दुःख कष्ट या विपत्ति किस के कुप्रभाव के कारण है अथवा कौन-सा ग्रह उसके काम के होने में बाधा डाल रहा है? ग्रहों की शान्ति के उपाय व अनुष्ठान उनकी विधि सब कुछ शास्त्रों में दी हुई है। ज्योतिषी की बुद्धि इस निर्णय में काम देती है कि वह उस ग्रह का ठीक पता लगा ले जिसके कारण जातक पर दुख कष्ट है। यदि रोग का निदान ठीक हो गया, तो दवा भी फायदा करेगी, नहीं तो अनुष्ठान चाहे विधि पूर्वक ही किया जाय लाभ नहीं करेगा। अनुष्ठानों में यन्त्र मन्त्र तन्त्र सभी का मिश्रण होता है। अब यहां हम आपको संक्षेप में यह बताने का प्रयत्न करेंगे कि किस प्रकार ग्रहों का कुप्रभाव हम पर पड़ता है और मन्त्रों या अनुष्ठानों से किस प्रकार उनको शान्त किया जा सकता है।

सूर्य सब ग्रहों का राजा है और इसकी किरणों का प्रभाव सभी को सब समय महसूस होता है। प्रातःकाल इसकी किरणों में वह तेज नहीं होता जो

दुपहर १२ बजे होता है। और फिर जैसे-जैसे समय बीतता जाता है संध्या तक वे किरणें निस्तेज होती जाती हैं। तात्पर्य यह हुआ कि सूर्य की किरणें सबसे अधिक प्रखर दुपहर १२ बजे के समय होती हैं। रात के समय केवल उनका आभास रह जाता है। इसी प्रकार सूर्य १३ अप्रैल को मेष राशि पर आता है और २३ जून के लगभग मेष के १० अंश पर होता है। उस समय सूर्य की किरणें अपनी सबसे अधिक तेजी पर होती हैं और यही गरमी की ऋतु का सबसे अधिक गरम दिन होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सूर्य की किरणें अपनी प्रखरता व तेज के हिसाब से सब समय एक सी नहीं होतीं और इसलिये उनका प्रभाव भी एकसा नहीं होता। सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणायण होने से भी अलग-अलग देशों में सूर्य की किरणों का प्रभाव भिन्न-भिन्न प्रकार का पड़ता है। अतएव भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न स्थानों में उत्पन्न हुये व्यक्तियों का शरीर मस्तिष्क व्यक्तित्व भाग्य भिन्न-भिन्न प्रकार का बनता है। अन्य ग्रह चन्द्रमा मंगल बुध गुरू शुक्र शनि इनमें अपनी कोई रोशनी नहीं होती और सूर्य की ही किरणें इनसे टकरा कर लौटती हैं और यह सब सूर्य के ही प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। यह ग्रह अपना स्थान बदलते रहते हैं और किरणों के प्रतिबिम्बित होने का कोण बदलता रहता है। किसी समय विशेष पर इन सब ग्रहों के किरण समूह का सम्मिलित प्रभाव अलग-अलग स्थानों पर भिन्न प्रकार का होता है और उन सबके मिश्रित प्रभाव से ही उस समय उत्पन्न हुये व्यक्ति की प्रारब्ध बनती है। यह सब ग्रह निरन्तर चलते रहते हैं और अपना स्थान भी बदलते रहते हैं। इनसे प्रतिबिम्बित हुई किरणें भी अपने कोण बदलती रहती हैं और भिन्न प्रकार के व्यक्तियों पर उनकी प्रतिक्रिया भी अलग-अलग होती है। किसी पर अच्छी किसी पर बुरी, किसी पर बहुत अच्छी या कम अच्छी और किसी पर बहुत बुरी या कम बुरी आदि-आदि।

गरमी के दिनों में मध्यान्ह काल में धूप बहुत तेज होती है और सूर्य की किरणें असह्य होती हैं। परन्तु यदि आप एक छतरी लगा लें तो उनकी प्रखरता से काफी रक्षा हो सकती है। वातानुकूलित कमरे में बैठ कर भी गरमी की प्ररखता से बचा जा सकता है। सूर्य की गरमी में कोई अंतर नहीं आया है परन्तु आपने कुछ उपाय करके अपने को उसकी प्रखरता के बुरे प्रभाव से बचा लिया है। शास्त्रों में वर्णित अनुष्ठान भी कुछ इसी प्रकार से रक्षा करते हैं।

इसी प्रकार सामूहिक यज्ञ अनुष्ठान करने से किसी राष्ट्र या देश पर आने वाली दैवी विपत्तियों से रक्षा की जा सकती है। सूर्य की तेज किरणों से ही समुद्र का जल वाष्प बन कर मानसून बनता है और वर्षा करता है। वायु के कम्पन में परिवर्तन होने से आंधी तूफान आते हैं। चन्द्रमा के प्रभाव से ज्वार भाटे आते हैं। सूर्य की गरमी से ही बर्फ पिघल कर नदियों में बहती है और वर्षा अधिक होने से बाढ़ आती है। ग्रहों की किरणों के प्रभाव से ही प्रकृति के समस्त क्रिया कलाप नियन्त्रित होते हैं। युद्ध महामारी आदि सब ग्रहों के योग विशेष से होते हैं और इन सब का पता हमारे पूर्वजों ने बहुत पहले लगा लिया था और उनके उपाय भी निर्धारित कर दिये थे। एक अच्छा ज्योतिषी अपने ज्ञान से यह पता लगाता है कि किसी व्यक्ति विशेष के लिए किस समय कौन-सा ग्रह प्रतिकूल पड़ रहा है और फिर वह उसी का उपाय कराने के लिए कहता है। अब यह दूसरी बात है कि वह उस उपाय को करे या न करे और जातक से इस बहाने धन ऐंठ ले परन्तु यदि जातक विधिवत् अपनी देख-रेख में वह शास्त्रोक्त उपाय कराये तो इच्छित फल अवश्य प्राप्त होगा और इन सब अनुष्ठानों को करने के लिए यन्त्र मन्त्र तन्त्र का केवल होना ही काफी नहीं, इनका सिद्ध होना भी जरूरी है। क्योंकि सिद्ध मन्त्रवेत्ता कम मिलते हैं और अनुष्ठान भी विधिवत् नहीं हो पाते इसलिये लोगों का विश्वास इस विद्या पर से उठ गया है।

आपने देखा होगा कि बड़ी-बड़ी ऊँची इमारतों पर आकाशीय बिजली को पकड़ने वाला एक यन्त्र लगा रहता है, जिसे लाइटनिंग अरेस्टर कहते हैं। जब कभी बिजली उस भवन पर गिरती है तो वह उस यन्त्र की नोक पर ही गिरती है और उससे जुड़े हुये तार के जरिये पृथ्वी के अंदर चली जाती है। उस भवन को कोई हानि नहीं हो पाती। दैवी विपत्ति से उसकी रक्षा हो जाती है। इसी आधार पर प्रतिकूल ग्रहों के कुप्रभाव से बचने के लिए रत्न धारण करना बताया जाता है। उस ग्रह विशेष की किरणें रत्न के अंदर से होकर शरीर में प्रवेश करती हैं और उनकी प्रतिकूलता समाप्त हो जाती है तथा वे अनुकूल भी बन जाती हैं। आप यह भी प्रश्न कर सकते हैं कि अन्य ग्रहों की किरणें उस में से क्यों नहीं जातीं। तो इसका उत्तर यह है कि वायुमंडल में सभी रेडियो स्टेशनों की वाणी तरंगें प्रवाहित होती हैं परन्तु आप अपना रेडियो सेट जिस स्टेशन से

मिला देते हैं उसी की आवाज आपके सेट में आती है दूसरों की नहीं। इसलिए प्रत्येक ग्रह के लिए अलग-अलग रत्नों की व्यवस्था की गई है।

होली दिवाली शिवरात्रि, इनको शास्त्रों में कालरात्रि महारात्रि मोहरात्रि के नाम से बताया गया है और इन रात्रियों में गुणीजन भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध की स्याही बनाकर यन्त्र मन्त्र लिखकर तावीज, रक्षा कवच या यन्त्र बनाते हैं। किसी भूत व्याधा ग्रस्त मकान के दरवाजे पर या किसी भूत व्याधा ग्रस्त व्यक्ति के शरीर पर यह कवच बांध दिया जाय तो व्याधा हट जाती है। इनको धारण करने से इस प्रकार की कोई व्याधा कभी असर नहीं करती। जिस घर में पाठ पूजन यज्ञ हवन होता हो या जो व्यक्ति पाठ पूजन यज्ञ हवन करता हो उस पर यह निम्न स्तर की दुरात्मायें अपना प्रभाव नहीं डाल पातीं। यह कपोल कल्पित नहीं अनुभव जन्य प्रामाणिक तथ्य हैं।

दूसरा अध्याय

साधना संबंधी नियम

पिछले अध्याय में आपको इस विषय की प्रारम्भिक जानकारी दी गई थी। इस अध्याय में हम सब से पहले मन्त्र साधना की शास्त्रोक्त विधि विस्तार से बताते हैं। मन्त्र किसी से लिया जाता है। यानी मन्त्र को कोई बताता है। यों ही किसी पुस्तक में से देखकर ले लेना ठीक नहीं होता। जो मन्त्र देता है या जिस से मन्त्र लिया जाता है उसे गुरु कहते हैं। गुरु की पदवी भगवान के बराबर या कहीं-कहीं तो भगवान से भी बड़ी बताई गई है और गुरु की गरिमा को देखते हुए यह अत्युक्ति भी नहीं है। गुरु में श्रद्धा नहीं होगी, तो उसके बताये मन्त्र में कैसे हो सकेगी? परन्तु ऐसे श्रद्धास्पद व्यक्ति जिन्हें भगवान के समान पूज्य समझा जा सके, कहां मिलें? बहुधा तो ऐसे व्यक्ति मिलते हैं जिन पर श्रद्धा होती ही नहीं और हो भी जाती है तो जल्दी ही घृणा में बदल जाती है। यों पृथ्वी बीजरहित तो कभी नहीं रहती और वास्तव में गुरु पद पर सुशोभित होने वाले महानुभाव भी होते हैं तथा श्रद्धालु जिज्ञासु लोगों को भाग्य से मिल भी जाते हैं। आम लोग ज्यादा तो जानते समझते नहीं ऊपरी आडम्बर, पाखंड आदि को देखकर धोखेबाजों के चक्कर में फंस जाते हैं ठगे जाते हैं व अपनी हानि करते हैं। परन्तु गुरु बनाने से पहिले इतनी बात तो अवश्य देख लेनी चाहिए कि गुरु लालची तो नहीं है। "लोभी गुरु लालची चेला-होय नरक में ठेलम ठेला" यह एक पुरानी लोकोक्ति है। गुरु के मन में शिष्य की कल्याण कामना ही होनी चाहिए। डाक्टर, वकील, पुरोहित (शिक्षक गुरु या दीक्षा गुरु) यह यदि लालची हो तो समझ लो कल्याण नहीं है, रोग, मुकदमा, झगड़ा, ग्रह, अरिष्ट पूजा कभी समाप्त नहीं होगी। तो दीक्षा गुरु भी लोभी लालची हुआ तो शिष्य का धन ऐंठने की लालसा करेगा उसके कल्याण की नहीं। यों गुरु भी संसार में ही रहता होगा, हिमालय की कन्दराओं वाले तो मिलेंगे नहीं। और संसार में सादा जीवन बिताने के लि ए

धन व्यय भी आवश्यक होता है, इसलिए इसमें सहायता देने के लिए उचित गुरु दक्षिणा तो अवश्य देनी चाहिए। गुरु लालची नहीं होना चाहिए और सादा जीवन बिताने वाला हो और तीसरी बात इतनी अवश्य देखो कि उसे अपने विषय का ज्ञान व अनुभव है कि नहीं। इतना तो होना ही चाहिए कि वह आपको लक्ष्य तक पहुंचा दे या कम से कम लक्ष्य को दिखा कर उसका मार्ग बता सके।

आपको साधना करने की लगन लगी हुई है और बहुत प्रयत्न करने पर भी आपको मनचाहा गुरु नहीं मिल रहा है, तो क्या किया जाए ? ऐसी हालत में आपको सर्वव्यापक परमात्मा को जो आपके अन्तर में आपकी आत्मा में भी वास करता है अपना गुरु बनाना चाहिए और उनके निराकार या साकार रूप के ध्यान से या मूर्ति चित्र में पूजन करना चाहिए। उसके जिस भी रूप स्वरूप में श्रद्धा हो उसी के अनुसार शास्त्र या ग्रन्थ को ही गुरु मानना चाहिए फिर उस शास्त्र में बताई विधि से ही साधना के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। इस मार्ग पर चलाने वाले कोई सज्जन यदि मिल जाएं तो उन से परामर्श सलाह आदि करते रहना चाहिए। साधना के आरम्भ में बहुत सी कठिनाइयां आती हैं और ग्रन्थ में शास्त्र में चाहे जितना लिखा हो फिर भी बहुत से अवसरों पर किसी अधिक जानने वाले का परामर्श आवश्यक हो जाता है। यदि ऐसा भी सत्संगी कोई न मिले, तो अपने अन्तर स्थित परमात्मा से ही प्रार्थना करनी चाहिए। सच्चे मन से अन्तर में की गई प्रार्थना सफल होती है और गुरु मिल जाता है।

यदि कोई महापुरुष व्यक्तिगत रूप से आपको गुरु रूप में मिल जाते हैं तब तो कोई बात नहीं। साधना की विधि उनके बताये अनुसार ही होगी। यदि नहीं मिलते और आप शास्त्र विधि से साधना करते हैं तो निराकार या साकार जिस विधि को चुनते हैं उसी शास्त्र के अनुसार अपनी साधना जारी रखें। यहां हम आपको ऐसी ही शास्त्रोक्त विधियों के बारे में बतायेंगे और अपनी विद्या बुद्धि अनुभव के आधार पर परामर्श भी देते रहेंगे। अब यह बताते हैं कि साधना करते समय आप में किन-किन बातों का होना आवश्यक है या साधना करते समय किन किन बातों से आपको सहायता मिल सकती है।

१. श्रद्धा :

सबसे पसले तो साधक में श्रद्धा की आवश्यकता है। जिस मन्त्र की साधना वह करने जा रहा है उसमें उसे पूरा विश्वास होना चाहिए तभी सफलता मिल सकती है नहीं तो साधन बीच में ही छूट जायेगा और साधना अधूरी रह जायेगी। अच्छा तो यही है कि यदि मन्त्र में पूरी श्रद्धा नहीं है तो साधना शुरू ही न की जाये। श्रद्धा की सबसे बड़ी शत्रु है 'शंका', सन्देह, भ्रम। मन में शंकायें उठ सकती हैं कि साधना पूरी हो सकती है या नहीं? फिर कार्य सिद्ध होगा या नहीं तथा अन्य लोग भी सन्देह उत्पन्न कर देते हैं। इसीलिए साधना के रहस्य किसी को नहीं बताये जाते। मन की शंकाओं का निवारण पहले ही कर लेना चाहिए और फिर जब पूरा विश्वास जम जाये तभी साधना प्रारम्भ करनी चाहिए। "विश्वास फलति सर्वत्र" मन्त्र में श्रद्धा, मन्त्र के देवता भगवान परमात्मा में श्रद्धा। पूर्ण व अनन्य श्रद्धा आवश्यक है।

२. धैर्य :

दूसरा गुण आपको अपने अन्दर पैदा करना होगा वह है धैर्य-धीरज जल्दीबाजी उत्तावलापन नहीं। शान्ति व सन्तोष से देर तक काम करते रहना थकना या ऊबना नहीं। सिद्धि तत्काल प्राप्त नहीं होती तो निराश या हतोत्साहित न हो कर धैर्य और विश्वास के साथ साधना में लगे रहने पर ही सिद्धि मिलती है। इस बात में पूरा विश्वास होना कि गुरु तथा शास्त्र ने बताया है कि इस मार्ग पर चलने से इस लक्ष्य पर पहुँच जाओगे यह वाक्य बिल्कुल ठीक है और इस में मेरी श्रद्धा है इसको ध्यान में रखते हुए साधना में लगे रहना—धैर्य है और यह गुण, साधक में अवश्य होना चाहिए। शान्त मन से किए गये कार्य ही विधिपूर्वक सिद्ध होते हैं।

३. शुद्धि :

स्थान शुद्धि, शरीर शुद्धि, मन शुद्धि, द्रव्य शुद्धि और क्रिया शुद्धि। साधना के लिए जिस स्थान का प्रयोग करो वह शुद्ध हो, गन्दा या अपवित्र न हो। गोबर से पानी से या गुलाबजल छिड़क कर शुद्ध कर लें। धूपबत्ती या अगरबत्ती जला लें। एकान्त तथा शान्त स्थान हो कोई भय या खटका

न हो। किसी जीव, जन्तु, पशु, पक्षी, दुष्ट जन का भय नहीं होना चाहिए। किसी प्रकार की बाहरी बाधा दिखाई दे तो स्थान बदल देना चाहिए।

४. शरीर शुद्धि :

इसके लिये शास्त्रों में पंचगव्य का विधान है। परन्तु गंगाजल या यह भी न मिले तो किसी अन्य नदी का पवित्र जल या भगवान के चरणामृत का पान या फिर पाँच बार गुरु मन्त्र का जप करके अभिमन्त्रित किया जल इन में से किसी भी जल को लेकर आचमन करना होता है। पहले तो नदी कूप तालाब या नल के पानी से जो शुद्ध बर्तन में रखा गया हो स्नान करना चाहिए और जप के लिए बैठने के समय पाँच आचमन उपरोक्त शुद्ध जल गंगाजल आदि के करके जप आरम्भ करना चाहिए।

५. मन शुद्धि :

मन शुद्धि में विचारों की शुद्धता बताई गई है। जप करते समय मन में बुरे विचार नहीं रहने चाहिएं। यों तो विचारों की शुद्धता का ध्यान तो २४ घन्टे ही रखना पड़ेगा तभी जप के समय भी उन्हें दूर करने में सफलता मिलेगी। परन्तु शुरू-शुरू में जप के समय मन को अपवित्र विचारों से हीन करना पड़ेगा। यह कुछ कठिन अवश्य है परन्तु असाध्य नहीं। मन बड़ा प्रबल होता है इस में कुछ न कुछ विचार उठते ही रहते हैं। यह खाली नहीं बैठता। शास्त्रों में इसके अन्दर हजार हाथियों का बल बताया गया है। इसको जीतने वाला इस पर काबू करने वाला इन्द्रियजित की पदवी पाता है, कुछ करके दिखा सकता है नहीं तो इन्द्रियों व मन के दास तो सभी होते हैं। बलपूर्वक खराब विचारों को हटाने के लिए मन में जबरन अच्छे विचार लाओ। जिनमें कुछ यहां दिए जा रहे हैं, कुछ आप अन्य महापुरुषों के विचार इनमें जोड़ सकते हैं। जो विचार यहां दिए जा रहे हैं वे भी महापुरुषों के व शास्त्रों के ही हैं। "मैं परम ब्रह्म परमात्मा का ही एक अंश आत्मा रूप हूं। और इस रूप में शुद्ध, बुद्धि, सनतान हूँ। इन इन्द्रियों तथा मन की बातों में आकर या कहिए माया के चक्कर में पड़कर मेरे ऊपर मल विक्षेप आवरण के मैल का परदा चढ़ गया है, जिसे मैं इस साधना के साबुन से साफ करना चाहता हूं। हे

परम ब्रह्म परमात्मा (या जिस देवता का इष्ट हो उससे प्रार्थना करो कि) मेरे इस मैले मन को निर्मल कर दे, ताकि इस में शुद्ध आत्मा का प्रतिबिम्ब साफ दिखाई दे सके। तुम्हारा प्रकाश प्रकाशित हो सके। मैं इस जप के द्वारा प्राप्त शक्ति को अपने तथा जन कल्याण के कामों में प्रयुक्त करूंगा। किसी की हानि या अकल्याण भावना से नहीं आदि आदि"। इस प्रकार जप करते समय मंत्र पर ध्यान रखो और अन्य फालतू विचार आवें तो उनको हटाने का प्रयत्न करो, तो साधना ठीक से आगे बढ़ती रहती है। यह संक्षेप में मन की शुद्धि हुई।

६. द्रव्य शुद्धि :

द्रव्य उचित साधनों से कमाया गया होना चाहिए। चोरी, ठगी, बेईमानी आदि अनुचित साधनों से कमाई गई रकम से साधना नहीं होती। साधना में उपयोग में आने वाली वस्तुएं शुद्ध धन से खरीदी गई होनी चाहिएं। ताजा पुष्प, ताजा दूध, ताजा फल आदि और पूजा के उपयोग में आने वाली सभी चीजें मंजी धुली साफ होनी चाहिएं।

७. क्रिया शुद्धि :

मन्त्र साधना करते समय जो क्रियायें की जाती हैं, वे सब शुद्ध रूप से की जानी चाहिएं। मन्त्र से सम्बन्धित न्यास, ध्यान, जप, प्रक्रिया, पुरश्चरण आदि विधिपूर्वक हों। यह क्रिया शुद्धि है।

८. आसन :

जप करते समय जिस वस्तु पर बैठ कर जप किया जाता है उसे आसन कहते हैं। आसन कुशा का, मृगछाला का या ऊन का होता है। इसमें जिस आसन पर बैठकर काफी देर जप किया जा सके और शरीर में दर्द कष्ट न हो वह सुखासन होता है। तपस्वी जनों के लिये कुशा या मृगछाला का आसन ठीक है परन्तु हम जैसे गृहस्थ लोगों के लिये ऊन के कम्बल का आसन ही उपयुक्त है। आसन इतना गद्दा तकिये वाला भी न हो कि उस पर नींद या आलस्य आने लगे। बैठने के ढंग को भी आसन कहा जाता है। जप करते समय सीधा तन

कर बेठना चाहिए। रीढ़ की हड्डी सीधी हो, सीना तना हुआ हो, दृष्टि नासाग्र पर हो और इस के लिए पद्मासन की मुद्रा में बैठना सबसे अधिक उपयुक्त होता है। कुछ विशेष साधनाओं में अन्य आसन भी निर्धारित किये गए हैं। अपने बैठने के आसन को जप के बाद उठाकर रख देना चाहिए, ताकि उस पर कोई अन्य नहीं बैठ जाए। आप मन में सोचेंगे कि बैठने के लिए पद्मासन से ही क्यों बैठा जाए हम तो आराम से विस्तर पर लेटकर भी जप कर सकते हैं तथा अपने आसन को उठाकर रखने और दूसरे को बैठने न देने का क्या अभिप्राय है। रीढ़ की हड्डी के मध्य इडा पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियाँ हैं और जब तक सीधा तनकर नहीं बैठोगे प्राण का संचार ठीक से नहीं होगा। मन पर नियन्त्रण करने के लिए व मन को एकाग्र करने के लिग प्राणों का नियमन करना आवश्यक है। इस से कुण्डलिनी शीघ्र जागृत होती है और सिद्धि भी जल्दी मिलती है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर से उसके संस्कारों के अनुसार शरीर से गन्ध निकलती है। जो उसके पहनने के बैठने के इस्तेमाल करने के वस्त्रों में भी व्याप्त हो जाती है। यह उस पसीने की गन्ध से भिन्न है जिसका आभास जल्दी हो जाता है। उन्हें संस्कार लहरें या चरित्र लहरें कह सकते हैं। किसी सज्जन पुरुष के पास बैठने से आपके अन्दर उसके अच्छे संस्कार प्रवेश करते हैं और किसी बुरे आदमी के पास बैठने से उसके बुरे विचारों का प्रवेश होता है। इसलिये महापुरुषों के चरण स्पर्श का चलन है ताकि उनके अच्छे गुणों का प्रभाव हमारे अन्दर आ जाये। आपके आसन पर कोई साधक सन्त पुरुष बैठ जाय यह तो अच्छी बात होगी। परन्तु बुरे संस्कार वाला व्यक्ति बैठ गया तो उस आसन के द्वारा उसके बुरे संस्कारों के कीटाणु आपके मन मस्तिष्क में प्रवेश कर जायेंगे और आप की मन शुद्धि में बाधा डालेंगे। आपकी साधना में बाधक होंगे। इसलिये आसन को उठाकर रख दो ताकि दूसरा न बैठे।

६. स्थान :

स्थान के बारे में हम ने इन्हीं अध्यायों में बताया है कि किस प्रकार का स्थान ठीक रहता है। एकान्त व शान्त वातावरण। यहां यह और बता दें कि जिन स्थानों पर पूर्व महापुरुषों ने बैठकर साधना की है वहां पर

उनकी अच्छी संस्कार लहरों का अभी तक प्रभाव मौजूद है, ऐसे पवित्र स्थलों में शान्त व एकान्त वातावरण में साधना करने पर शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

१०. प्राणायाम :

कुछ सरल प्राणायाम क्रियाओं का भी अभ्यास करना चाहिए। इनसे मन पर नियन्त्रण करने में सहायता मिलती है। प्राणों से जप करने की विधि में तथा राज योग के अभ्यास में और स्वरोदय के साधन में भी यह बहुत उपयोगी रहता है। इसका विस्तार से वर्णन हमारे स्वरोदय व राजयोग पाठ्यक्रम में है।

इस प्रकार आपने देखा कि तंत्र साधना के लिये अपने आपको तैयार करने के लिए आपको क्या-क्या चाहिए। अटूट श्रद्धा, विश्वास, गुरु, देवता, मंत्र की भक्ति, शरीर, मन, स्थान, द्रव्य तथा क्रिया की शुद्धि और आसन माला आदि उपकरण पूजा की सामग्री। हमारे सनातन वैदिक प्राचीन धर्म शास्त्रों, वेद, उपनिषद, स्मृति पुराण आगम तथा तन्त्र शास्त्रों में असंख्य मन्त्र थे, जिनमें अब कुछ के बारे में ही पूर्ण विधि का पता चलता है। मुख्य पांच देवता हैं, जिनके नाम पर अलग-अलग मत चले। गणेश, सूर्य, शिव, शक्ति व विष्णु। साकार उपासना इन पांच मुख्य देवताओं को आधार बनाकर ही की जाती रही। ब्रह्म के निराकार प्रकाशपुंज रूप की भी अराधना का विधान है और गायत्री मंत्र मुख्य रूप से निराकार उपासना का मन्त्र है। यों साकार उपासना करने वालों के लिए गायत्री देवी के ध्यान का भी स्वरूप निर्धारित है। गणेश जी की उपासना यों तो सामान्य रूप से समस्त भारत में प्रचलित है और प्रत्येक पूजा मंगल कार्य में पहले श्री गणेशजी की पूजा की जाती है, परन्तु महाराष्ट्र में इनकी पूजा पूरे विधि विधान से की जाती है। सूर्य की पूजा इष्टदेव के रूप में अब बहुत कम की जाती है। ग्रह-शांति के लिए ही कभी-कभी कहीं-कहीं होती है। वैसे सूर्य की विधिवत् आराधना करने से बल तेज पराक्रम व आत्मशक्ति का विकास बहुत शीघ्र होता है। शक्ति की उपासना का प्रचार व्यापक है और बंगाल में विशेष रूप से है। इसी प्रकार शिव व विष्णु की उपासना भी व्यापक है तथा भारत ही नहीं भारत

के बाहर के देशों में भी की जाती रही है। इन सभी देवताओं के मंत्रों की साधना का विशद वर्णन मत ग्रंथों में मिलता है। इनमें से जिस देवता के मंत्र का साधन करना हो तत्सम्बन्धी ग्रंथों में बताई गई विधि से ही करना चाहिए। और गुरु का इष्ट भी उसी देवता का हो तभी ठीक रहता है वैसे उच्च कोटि के महापुरुष इन सभी देवताओं को एक ही परम ब्रह्म परमात्मा के रूप समझते हैं और कोई भेद नहीं समझते। जैसे स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी ने सभी देवताओं की साधना की थी और निराकार ब्रह्म की भी साधना करने के बाद निर्विकल्प समाधि तक प्राप्त की थी। विष्णु भगवान के अवतार राम और कृष्ण की पूजा तथा आराधना भी भारत के बहुत से भागों में व्यापक रूप से की जाती है और इन के मंत्रों की साधना की विधि भी पूर्ण रूप से प्राप्त है तथा धार्मिक ग्रंथों से मिल जाती है। यह सभी देवता सांसारिक सुखों को ऋद्धि सिद्धि द्वारा देने वाले तथा साधक को सुगति मोक्ष तक देने वाले हैं। पूर्वोक्त पांचों देवों को मत देवता तथा अवतारों को आत्म देवता कहा जाता है।

११. इष्ट देवता :

मत देवता या आत्म देवता के अवतार या अवतरण देवता को इष्ट देवता कहा जाता है। परलोक सम्बन्धी ज्ञान देने के लिये, विपत्तियों से रक्षा करने के लिये, शत्रुओं को दण्ड देने के लिए एवं अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए, जिन देवताओं की साधना की जाती है, उन्हें इष्ट देवता कहते हैं। इनमें उपरोक्त मत देवता व आत्म देवता के अतिरिक्त हनुमान जी, बटुक भैरवजी, शक्ति के अनेक रूप महाकाली दुर्गा, महालक्ष्मी, महासरस्वती, बगलामुखी देवी आदि आती हैं।

कुल में जिस देवता की पूजा की जाती हो वह कुल देवता, घर में जिसकी पूजा होती हो, वह गृह देवता तथा ग्राम में पूजा जाने वाला ग्राम देवता कहलाता है। ब्रह्मा, प्रजापति, इन्द्र, मरुद्गण, वरुण, अग्नि, वायु, नवग्रह आदि लोक देवता कहे जाते हैं।

मंत्र साधना की दो रीतियां हैं :—वैदिक तथा तान्त्रिक।

इन अध्यायों में हम आपको वैदिक रीति से साधना की विधियाँ बतायेंगे। अपने मन प्रकृति स्वभाव आदि को देखकर अपने अनुकूल देवता या इष्ट का चयन कर लें और गुरु से सलाह करके उसका मंत्र ले लें। मंत्र दीक्षा संन्यासी को संन्यासी से, साधु को साधु से, वैष्णव को वैष्णव से, गृहस्थी को गृहस्थी से, उदासी को उदासीन से, वानप्रस्थी को वानप्रस्थी से लेनी चाहिए। गुरु जो मंत्र दे वह उसे या तो सिद्ध होना चाहिए या वह देने से पहले उसका विधिवत् पुरश्चरण करे। गुरु नहीं मिले तो इष्टदेव की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर उन्हीं से मंत्र की दीक्षा ले लें। शुभ मुहूर्त देख कर नित्य कर्म से निवृत होकर मंत्र को भोजपत्र या ताडपत्र पर लिखकर चांदी के पात्र में इष्टदेव के सामने पाटी पर रखें उसकी षोडसोपचार से पूजा करें और इष्टदेव का ध्यान कर उनसे मंत्र ग्रहण करें। उसकी उसी समय एक माला जाप करें।

मंत्र में जितने अक्षर होते हैं उसकी उतने ही लाख की जपसंख्या होती है। कम से कम सवा लाख जप तो करना ही चाहिए। यह भी न हो सके तो ग्यारह हजार से कम में तो पुरश्चरण नहीं होता। जप का दशांश हवन उसका दशांश तर्पण उसका दशांश ब्राह्मण या साधु को भोजन कराना होता है।

मन्त्र शास्त्रों में साधक को परामर्श दिया गया है कि किसी मन्त्र की साधना करने से पूर्व यह निर्णय करले कि उस साधक के लिए वह मन्त्र उपयोगी है या नहीं। इसको देखने के लिए कुलाकुल चक्र का प्रयोग किया जाता है। साधक जिस मन्त्र की साधना करना चाहता है उस मन्त्र का प्रथम अक्षर और साधक के नाम का प्रथम अक्षर दोनों यदि एक ही कुल (अर्थात् तत्व) के हों तो वह मन्त्र निश्चित रूप से फल देता है। क्योंकि मन्त्र और मन्त्र गृहीता इन दोनों की प्रकृति में समानता होती है।

यदि इन दोनों के प्रथम अक्षरों की एक ही प्रकृति न हो अर्थात् यह अलग-अलग प्रकृति (अर्थात् तत्व) के हों तो तत्व मैत्री चक्र में यह देखना चाहिए कि इन तत्वों में आपस में शत्रुता तो नहीं है। यदि शत्रुता हो तो ऐसे मन्त्र की साधना नहीं करना चाहिए। इसका फल अच्छा नहीं होगा।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए "ॐ" तो लगभग प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में होता ही है इसके बाद के वर्ण को मन्त्र का पहला अक्षर मानना चाहिए।

कुलाकुल चक्र

तत्व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
वर्ण	उ ऊ औ ग ज ड न ब ल छ	ऋ ॠ ओ घ झ ढ ध भ ब स	इ ई ए ख छ ठ थ फ र क्ष	अ आ ए क च ट त प य ष	ल ॡ अं ङ ञ ण न म श ह

तत्व मैत्री चक्रम्

तत व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
मित्र	आकाश जल	आकाश पृथ्वी	आकाश वायु	आकाश अग्नि	पृथ्वी जल अग्नि वायु चारों तत्व
शत्रु	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी	कोई नहीं

कुलाकुल चक्र की रचना के लिए 'अ' से 'क्ष' तक के पचास वर्णों को पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश— इन पांच तत्वों में बांटा गया है। आकाश तत्व के साथ सब तत्वों की मैत्री होती है। वायु की पृथ्वी तत्व से तथा अग्नि की जल व पृथ्वी तत्व से शत्रुता है। शेष सब मित्र हैं।

जिस प्रकार एक रोग के नाश के लिए अनेकों औषधियां होती हैं वैसे ही एक उद्देश्य की सिद्धि के लिए कई प्रकार के मन्त्र उपलब्ध हो जाते हैं अतः इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि मन्त्र निर्णय कैसे होगा।

इस सन्दर्भ में यह बात भी याद रखने की है कि कुछ मन्त्र स्वयं सिद्ध कहे जाते हैं उनके बारे में उपरोक्त कुलाकुल का विचार नहीं किया जाता। आठों बीज मन्त्र (जिनके सम्बन्ध में आगे बताया गया है), दस महाविद्याएं, आठ सिद्ध देवियां (रक्तकाली, महिषमर्दिनी, त्रिपुरा, दुर्गा, प्रत्यंगिरा, बाला, स्वप्नावती और मधुमती), शिवजी का पंचाक्षरी मन्त्र "ॐ नमः शिवाय", भगवान राम का मन्त्र "ॐ राम रामाय नमः" ये सब स्वयं सिद्ध तथा शुभ फलदायक मन्त्र होते हैं।

मंत्र दो प्रकार के होते हैं : आग्नेय व सौम्य। जिन मंत्रों में पृथ्वी, अग्नि व आकाश तत्व के वर्ण अधिक होते हैं वे आग्नेय मंत्र होते हैं और जिनमें जल तथा वायु तत्व के वर्ण अधिक होते हैं वे सौम्य बन जाते हैं तथा सौम्य मंत्र कहलाते हैं। आग्नेय मंत्रों के साथ नमः लगा देने से वे सौम्य बन जाते हैं तथा सौम्य मन्त्रों के साथ फट् लगा देने से वे आग्नेय बन जाते हैं। पुरुष देवता के या उग्र देवता के लिए आग्नेय मन्त्र व स्त्री देवता के लिए सौम्य मन्त्रों का व्यवहार किया जाता है। मारण, उच्चाटन, विद्वेषण, शत्रु दमन आदि कर्मों के लिये आग्नेय मन्त्र तथा शान्त कर्मों के लिये सौम्य मन्त्र काम में लाये जाते हैं। जिन मन्त्रों में अनेक वर्ण परस्पर मिले होते हैं उन्हें कूट मंत्र कहते हैं जैसे—ओ३म ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।

यदि शब्द रूपी दीपक का प्रकाश न हो तो यह विश्व अन्धकारमय हो जाये। शब्द ब्रह्म की महिमा अपार है। विज्ञान ने भी अनेक परीक्षणों द्वारा शब्द तत्व की महत्ता को स्वीकार किया है। जब कुछ विशेष शब्दों की वर्ण योजना किसी वैज्ञानिक पद्धति से की जाती है तब उन्हें मंत्र कहते हैं। प्रत्येक वर्ण की शक्ति तथा प्रभाव अलग अलग होता है। नीचे प्रत्येक वर्ण के विषय में बताया जाता है :—

(अ) मृत्युनाशक (वासुदेव स्वरूप, स्वर कण्ठ स्थान ह्रस्वाक्षर) (आ) आकर्षण करने वाला (स्त्री लिंग दीर्घ स्वर) (इ) पुष्टि कारक (नपुंसक लिंग ह्रस्व स्वर) (ई) आकर्षण करने वाला (उ) बल देने वाला (ऊ) उच्चाटन करने वाला है। किसी व्यक्ति या वस्तु को उसके स्थान से विचलित कर देने वाला है। (ऋ) लोभ तथा स्तम्भन करने वाला। (ॠ) मोहन करने वाला। (लृ) विद्वेष पैदा करने वाला। (ए) वशीकरण—किसी व्यक्ति को अपने अनुकूल

बनाने वाला। (ऐ) पुरुष वशीकरण। (ओ) लोक वश्य कारक। (औ) राज वश्य कारक (अं) हाथी आदि वन्य जीवों को वश करने के लिये (अ:) मृत्यु नाशक। (क) विष बीज। (ख) स्तम्भन बीज। (ग) गणपति बीज। (घ) स्तम्भन बीज (ङ) असुर बीज (च) चन्द्रमा बीज (छ) लाभ बीज तथा मृत्यु नाशक (ज) ब्रह्म राक्षस बीज। (झ) चन्द्र बीज धर्मार्थ काम मोक्ष प्रद है। (ञ) मोहन बीज। (ट) क्षोभण बीज चित्त को चंचल करने वाला। (ठ) चन्द्र बीज, विष तथा अपमृत्यु नाशक है। (ड) गरुड का बीज है। (ढ) कुबेर का बीज है उत्तर दिशा में मुख करके चार लाख जप करने से धन धान्य वृद्धि करता है। (ण) असुर बीज है। (त) आठ वसुओं का बीज है (थ) यम बीज है मृत्यु के भय को मिटाता है। (द) दुर्गा बीज है। वश्य एवं पुष्टि के लिए उत्तम है। (ध) सूर्य बीज है। यश व सुख की वृद्धि करता है। (न) ज्वर एकान्तर तिजारी को दूर करता है। (प) वीरभद्र और वरुण का बीज है। (फ) विष्णु बीज है। धन धान्य को बढ़ाने वाला है। (ब) ब्रह्म बीज है। वात पित्त श्लेष्म का नाश करता है। (भ) भद्रकाली का बीज है। भूत-प्रेत, पिशाच के भय को दूर करता है। (म) माला, अग्नि, तथा रुद्र का बीज है, स्तम्भन, मोहन कर्म के लिए अष्ट महा सिद्धि का देने वाला है। (य) वायु बीज तथा उच्चाटन कारक है। (र) अग्नि बीज है उग्र कर्मों की सिद्धि देने वाला है। (ल) इन्द्र बीज है। धन धान्य सम्पत्ति बढ़ाता है। (व) वरुण बीज है, विष तथा मृत्यु का नाशक है। (श) लक्ष्मी बीज है। एक लाख जप करते से लक्ष्मी प्राप्त होती है। (ष) सूर्य बीज है। धर्म, अर्थ काम मोक्ष देने वाला है। (स) वाणी बीज है। ज्ञान सिद्धि तथा वाक् सिद्धि देता है। (ह) आकाश एवं शिव का बीज है। (क्ष) पृथ्वी बीज है, नृसिंह तथा भैरव का भी यही बीज है। उपरोक्त वर्णों में अनुस्वार लगाकर आरम्भ में ओ३म् और कोई आठ मुख्य बीज मंत्रों में से एक दो लगाकर नमः या फट् जोड़कर मंत्र बनाये गए हैं। आठ मुख्य बीज इस प्रकार हैं।

आपने वट वृक्ष देखा होगा। बगगद का पेड़। कितना बड़ा होता है। और उसका बीज देखा है तिल और पोस्त जैसा। उसी छोटे से बीज में कितना बड़ा वृक्ष छिपा हुआ है। इसी प्रकार विभिन्न बीज अक्षरों में तत्सम्बन्धी देवताओं की महान् शक्ति छिपी रहती है। सर्वप्रथम ईश्वर की इच्छा से जब

सृष्टि की उत्पत्ति हुई तब परब्रह्म से ओंकार की ध्वनि पैदा हुई । फिर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश बने । मन, बुद्धि, अहंकार के तत्वों के मिश्रण से आठ मुख्य बीजाक्षरों की उत्पत्ति हुई इन्हें ही बीज मन्त्र कहते हैं । (आ, ऐ, म्) ऐं—गुरु बीज (ह, र्, इ, म्,) ह्रीं—शक्ति बीज, (क, ल, इ, म,) क्लीं—काली का बीज मंत्र है । (ट, र, इ, म) ट्रीं—तेजो बीज, (स्, त् र् इ म्) स्त्रीं—शांति बीज (क, र, ई, म,) क्रीं—योग बीज और (श, र, इ, म,) श्रीं—महालक्ष्मी का बीज है । आठ मुख्य बीज हुए—ऐं, ह्रीं, क्लीं, ट्रीं, स्त्रीं, क्रीं, श्रीं, ह्लीं (हिलरीम) (ह, ल, र्, ई, म्) 'हिलरीम' रक्षा बीज है ।

सामान्य वर्ण योजना वाले वर्ण समुदाय को अकूट मंत्र कहते हैं । किसी निश्चित दृष्टि व उद्देश्य को लेकर जो वैज्ञानिक वर्ण योजना की गई हो वह अकूट मंत्र है । वैदिक संहिताओं में दिए गये मंत्र वैदिक मंत्र, शिव पार्वती संवाद, भैरव संवाद में बताए गए मन्त्र तान्त्रिक मन्त्र, पुराणों में देवताओं की उपासना के लिए बताए गए मंत्र पौराणिक मंत्र होते हैं । बीस अक्षरों से बड़े मंत्र को माला मंत्र कहते हैं । सिद्ध पुरुषों द्वारा बताए गए मंत्र सिद्ध मंत्र कहलाते हैं और बड़े सौभाग्य से मिलते हैं । सिद्ध पुरुषों को कुण्डलिनी शक्ति के जागृत होने पर अन्तर में जो मंत्र प्राप्त होते हैं वे सिद्ध मंत्र होते हैं । मंत्र से लय और लय से राजयोग सिद्ध होता है । सिद्ध मंत्र सिद्ध गुरु के द्वारा प्राप्त होते हैं और या तो स्वतः सिद्ध होते हैं या सरलता से सिद्ध हो जाते हैं ।

द्वितीय श्रेणी में वे मंत्र आते हैं, जो श्री चैतन्य महाप्रभु, श्री रामानन्द जी, कबीर साहिब, स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे धर्म गुरुओं ने लोकोपकार के लिए बताए हैं । इनका जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है । तृतीय श्रेणी के मंत्र पुस्तकों में संग्रहीत हैं । क्योंकि इनमें गुरु के तप का प्रभाव नहीं होता, इसलिए ये निर्जीव कहे जाते हैं । सात्विक राजसिक तथा तामसिक नाम से भी मंत्रों के तीन भेद हैं :—सात्विक मंत्र आत्म शुद्धि, मोक्ष और निष्काम भाव से किये जाते हैं । राजसिक मंत्र यश, ऐश्वर्य, भोगादि इच्छित वस्तु प्राप्त करने के लिए किए जाते हैं । और तामसिक मंत्र मारण, उच्चाटन, शत्रु दमन, संहार आदि के लिए तांत्रिक क्रियाओं में प्रयोग किए जाते हैं ।

शाबर मन्त्र :

आधा शीशी, नेत्र पीड़ा, रोग निवारण, प्रेत बाधा निवारण, नजर झाड़ने का मन्त्र, बवासीर दूर करने का, डाढ़ झाड़ने का, बिच्छू उतारने का, पीलिया का, पागल कुत्ते के विष उतारने का। बहुत से ऐसे मन्त्र हैं जो बोलचाल की भाषा में हैं और उन्हें शाबर मंत्र कहा जाता है श्री मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्य तथा गोरखनाथ जी के गुरु भाई श्री शाबरनाथ जी के द्वारा इन मंत्रों को शक्ति प्रदान की जाने के कारण इन्हें शाबर मंत्र कहते हैं। इनमें हनुमान जी की हांक, लक्ष्मणकुमार की आन, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा आदि वाक्य प्रायः होते हैं। इनके सिद्ध करने में कोई विशेष हवन आदि भी नहीं करना पड़ता और बहुत यम नियम भी पालन नहीं करना पड़ता। भगवान शिव तथा पार्वतीजी ने जिस समय अर्जुन से किरात वेश में युद्ध किया था उस समय शिवजी ने आगम चर्चा में पार्वतीजी के प्रश्नों के उत्तर में यह मंत्र बताये थे जो भिल्ल प्रदत्त होने से शाबर मंत्र कहलाते हैं। तंत्रों में इनका वर्णन है। इन में अन्य योगियों महासंतों के मंत्र यहाँ तक कि मुसलमान फकीरों के मंत्र भी शामिल हो गए। इनको बताई गई बिधि से सिद्ध करने पर बहुत से लोकोपयोगी कार्य कष्ट बाधा निवारण किए जा सकते हैं, क्योंकि इनमें तत्संबंधी महापुरुषों संतों की शक्ति व आशीर्वाद मिला हुआ है। यह तत्काल सिद्ध होते हैं और प्रत्यक्ष फल देते हैं।

साधक के लिए कुछ उपयोगी बातें :

सूर्योदय से दो घण्टा पहले उठना, उठकर अपने दोनों हाथों को देखना चाहिए। "कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थिति ब्रह्मा, प्रभाते कर दर्शनन्।" इसके बाद पृथ्वी को नमस्कार करके शैय्या त्याग देनी चाहिए। तत्पश्चात् मल मूत्र त्याग कर दातुन करे और नदी, तालाब, कुंआ, बावड़ी या घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करें। स्नान के बाद धुले हुए वस्त्र पहनें। धोती और दुपट्टा या चादर। ये कपड़े रेशमी या ऊनी हों तो उत्तम रहता है। सूती हों तो सिले हुए, नील या मांडी लगे हुए नहीं होने चाहिए। नया वस्त्र हो तो उसे एक बार धोकर ही पहनना चाहिए। जिस वस्त्र में गन्दगी लगी हो या जिसे पहन कर मल मूत्र त्याग कर लिया हो उसे धोकर ही पहनना चाहिए।

रेशमी या ऊनी वस्त्र सदैव पवित्र माने गए हैं। इसलिए सर्वोत्तम होते हैं। उत्तम कर्मों के लिए पीले वस्त्र तथा देवी की उपासना में लाल वस्त्र पहनने का विधान है। ठण्ड के दिनों में ऊनी स्वेटर आदि पहना जा सकता है। कोट, पैन्ट, पाजामा आदि पहनकर जप करना ठीक नहीं। पूजा, जप आदि के लिए एकान्त, पवित्र और शुद्ध वायु वाला स्थान चुनना चाहिए। जहां कोलाहल हो, स्थान की कमी हो, आसपास दुर्गन्धपूर्ण वस्तुएं हों, किसी प्रकार का भय हो, वहां मन में स्थिरता नहीं आती। पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठने और जप पूजा करने से वशीकरण मंत्र, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके जप करने से अभिचार मंत्र, मारण उच्चाटन आदि मंत्र, पश्चिम दिशा में सम्पत्ति लाभ मन्त्र और उत्तम दिशा में सुख शान्ति प्राप्त करने के मन्त्र शीघ्र सिद्ध होते हैं। सामान्यतः पूर्व वा उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना ठीक रहता है। जिस आसन में शरीर बिना किसी कष्ट के साथ देता रहे, किसी प्रकार की बैचनी न हो वही सुखासन होता है। इसके लिए स्वास्तिकासन, वीरासन, सिद्धासन, या पद्मासन सबसे अच्छे बताये गये हैं। पालथी मारकर बैठने को स्वास्तिकासन कहते हैं और यह सबसे सरल व सुखप्रद है। आसन कुशा का, मृगछाला का या ऊनी कम्बल का उत्तम होता है। इसको लकड़ी के पटिए पर या तख्त पर फैला कर बैठा जा सकता है। शेर चीते के चर्म का आसन भी उत्तम होता है। परन्तु अन्य चमड़े के आसन पर नहीं बैठना चाहिए। पत्थर पर बैठ कर पूजा जप नहीं करना चाहिए। देवी की पूजा में लाल रंग का आसन, शिव की पूजा में श्वेत रंग का आसन, तथा मारण आदि अभिचार कर्म में काले रंग का आसन प्रयोग में लाया जाता है।

तीसरा अध्याय

जप ध्यान आदि की विधियां

यों तो यह यंत्र-मंत्र-तंत्र का विषय बहुत गहन है और प्रत्येक पर अलग-अलग पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है, परन्तु यहाँ हम इस विषय की ज्योतिष सम्बंधी उपादेयता तक ही अपने को सीमित रखना चाहेंगे। मंत्र सिद्धि से परम-पद मोक्ष की भी प्राप्ति होती है और सांसारिक भोग पदार्थों की भी। निष्काम साधना तथा सकाम साधना। इसमें निष्काम साधना तो परमार्थ की—अपने परम अर्थ सबसे बड़े स्वार्थ की सिद्धि आत्म कल्याण के लिए की जाती है और यह सर्वोत्कृष्ट साधना है। दूसरों को हानि न पहुंचाते हुए अपने सांसारिक लाभ सफलता के लिए की गई मंत्र साधना को निष्काम साधना से घटिया दरजे की साधना समझा जाता है। परन्तु अपने या दूसरों के सांसारिक लाभ व कल्याण भावना से की गई साधना की भी उपादेयता है। निष्काम साधना सात्विक और उपरोक्त सकाम साधना राजस यानी रजोगुण युक्त होती है। परन्तु मारण मोहन उच्चाटन विद्वेषण दूसरों को हानि पहुंचाने वाली साधनायें तामसिक होती हैं और इसलिये त्याज्य हैं।

स्नान से शरीर की शुद्धि हो जाती है। अंतःकरण की शुद्धि के लिए मन्त्र पढ़कर आचमन करना चाहिए। पूजा स्थान में किसी साफ मंजे हुए पात्र में आप ने शुद्ध जल रख लिया है उसे पंचपात्र कहते हैं उसमें एक छोटी चमची सी पड़ी रहती है उसके द्वारा बायें हाथ की हथेली में जल लो, मंत्र पढ़ो और उसे पान कर लो। यह मंत्र प्रत्येक देवता की उपासना में अलग अलग है। उसे देवता के नाम व बीज को लेकर कहते हैं। जैसे ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा आचमन कर लिया फिर दूसरा मंत्र बोला ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा आचमन किया फिर तीसरा मंत्र बोला ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा और तीसरा आचमन किया। तीन आचमन के बाद ओ३म् गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धो लिये। इसके बाद बायें हाथ में जल लेकर कुशा या दूर्वा से मस्तक पर जल छिड़कते हुए

अपने अन्तर व बाहर को शुद्ध किया : "ओ३म् अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोपिवा यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यान्तरः शुचिः फिर आसन पर जल छिड़क कर दायें हाथ से उसका स्पर्श किया। आसन पर जल छिड़कते हुए यह मंत्र बोला : "ओ३म् पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारथ मां देविं पवित्रं कुरु चासनम ॥"

मंत्र सिद्धि के बारे में बहुत सी उपयोगी बातें आप को बताई गई हैं। मंत्रों द्वारा आचमन करके आसन शुद्धि करने के बाद आप मंत्र का जप करने के लिए तैयार हैं। अब यहां पर शास्त्रों में संकल्प का विधान है जिसका भावार्थ यह है कि साधक संकल्प करता है कि अमुक समय अमुक स्थान पर अमुक कार्य की सिद्धि के लिए अमुक अनुष्ठान करने का संकल्प ले रहा है। अपना नाम गोत्र उच्चारण करता है। जैसे भारद्वाज गोत्र उत्पन्न भगवानदास शर्मा आदि-आदि। समय के लिए आजकल अंग्रेजी तारीख महीना, सन् का व्यवहार है। शास्त्र में विस्तार से इसे सृष्टि के आदि से अब तक कितने कल्प मन्वंतर युग आदि व्यतीत हो गए हैं और तिथिवार नक्षत्र योग करण सभी ग्रहों की क्या स्थिति है, इसके द्वारा समय की सूचना देता हुआ जिस स्थान पर जप आदि अनुष्ठान कर रहा है उसका वर्णन करता है। जैसे पृथ्वी पर जम्बू द्वीप में भारत खंड में अमुक अंचल अमुक नगर में—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष या किसी विशेष कार्य की सिद्धि के लिए वह अमुक मंत्र, जप, अनुष्ठान आदि करने का संकल्प लेता है। संकल्प संस्कृत भाषा में इस प्रकार है—ओ३म् विष्णुर्विष्णुर्विष्णु ओ३म् नमः परमात्मने पुराण पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्राह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविंशति तमे कलि-युगे प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारतवर्षे भारतखण्डे आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैक देशे पुण्य प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमान···सम्वत्सरे···अमुक अयने महा मांगल्यप्रदे मासानां उत्तमे-अमुक मासे अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायाम् अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुक राशि स्थितेषु चंद्रे भौमे बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनिषु सत्सु शुभे अमुक योगे शुभे अमुक करणे एवं गुण विशेषण विशिष्टायां अमुक शुभ पुण्य सत्सु तिथौ सकल शास्त्र श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामः अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक शर्मा वर्मा गुप्ता अहं ममात्पनः (सपुत्र स्त्री बान्धवस्य) श्री (देवता का नाम) अनुग्रहतो ग्रहकृत राजकृत पीड़ा निवृत्तिपूर्वकनैरुज्य दीर्घायु

पुष्टि धन धान्य समृद्धियर्थं सर्वापन्निवृत्ति सर्वाभीष्ट फलावाप्ति धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विधि पुरुषार्थं सिद्धि द्वारा अमुक देवता प्रीत्यर्थं न्यास ध्यान सहित संकल्पित कर्म करिष्ये । इस प्रकार संकल्प करके पंचपात्र से जल लेकर किसी अन्य पात्र में छोड़ दें । किसी भी काम को करने से पहले अपने निर्णय को स्पष्ट करने के लिए देवताओं की साक्षी में समय और स्थान का विशद वर्णन करत हुए अपने नाम गोत्र का उच्चारण करते हुए जो प्रतिज्ञा की जाती है उसे संकल्प कहते हैं । हाथ में जल कुशा पुष्प तुलसीदल और अक्षत (चावल) लेकर संकल्प वाक्य संस्कृत या हिन्दी में बोलें । इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह होता है कि आप यह कहकर कि "मैं यह कार्य करूँगा" अपने निश्चय को दृढ़ करते हैं । किसी भी काम को करने के लिए उपयुक्त मूड बनाना जरूरी होता है । मंत्र जाप के लिए भी आवश्यक वातावरण बनाने की यह आरम्भिक तैयारी है ।

इसके वाद शिखा बंधन करना चाहिए । आजकल चोटी रखने का तो रिवाज उठ गया है, परन्तु चोटी हमारे शरीर का एरियल है । शरीर के सबसे शीर्ष भाग में जहां परमात्मा का अंश आत्मा निवास करती है उसके मंदिर की ध्वजा है और वातावरण में से सूक्ष्म विद्युत लहरों को पकड़ने के लिए लाईटनिंग अरेस्टर जैसी चीज है । चोटी नहीं है, तो कुशा की एक चोटी बनाकर दाहिने कान पर रख लेनी चाहिए । उस समय यह मंत्र पढ़ा जाता है :

चिद्रूपिणी महामाये दिव्यतेज समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजो वृद्धि कुरुष्व मे ॥

इसका भावार्थ यह है कि हे चेतन्य दिव्य स्वरूपिणी महामाया देवि, अपने दिव्य तेज के साथ मेरी शिखा के मध्य यानि मस्तिष्क में बैठकर मेरे तेज की वृद्धि करो ।

इसके बाद नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के लिए जनेऊ पहनने का विधान है जनेऊ पहनने से कितने ही वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक लाभ हैं । कुछ पण्डितों को छोड़कर बाकी आम द्विज लोगों ने तो आजकल जनेऊ पहनना छोड़ दिया है । जो लोग जनेऊ नहीं धारण करना चाहें या नहीं कर सकें तो उन्हें कम से कम मौली कलावा के सूत्र अवश्य किसी द्विज से हाथ में बंधवा लेना चाहिए । जनेऊ को गायत्री मंत्र का दस बार जप कर इस मन्त्र के साथ धारण करना चाहिए :

"ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।"

जब मल मूत्र को त्यागें तो जनेऊ को दाहिने कान पर चढ़ायें और मौन रहें। पुराना पड़ जाने पर, सूतक, मृतक-काल, चांडालादि-स्पर्श और ग्रहण के बाद जनेऊ को बदल देते हैं। जनेऊ बायें कंधे से सीधी ओर को पहना जाता है। उतारते समय पहले उसे गले में कंठी की तरह करके पीठ की तरफ से निकालना चाहिए और किसी नदी, कूप, तालाब आदि में विसर्जन करना चाहिए। उतारते समय गायत्री मंत्र का जप करके आचमन किया जाता है। जनेऊ द्विज जाति का चिह्न है। पवित्र भावों को उदित करने वाला है।

जनेऊ धारण करने के बाद मस्तक (ललाट) बाहु और उदर पर भस्म या तिलक लगाना चाहिए। केसर चंदन को घिसकर बनाया तिलक, रोली सिंदूर का टीका या भस्म, जैसी उपासना हो, उसी अनुसार लगाई जाती है। जिस मन्त्र का अनुष्ठान या जाप करना हो उस मन्त्र के देवता की मूर्ति चित्र अथवा यन्त्र में पूजा करनी चाहिए। पूजा षोडश उपचार या पंचोपचार से करना चाहिए। षोडशोपचार पूजा की विधि विस्तार से बताते हैं :

(१) इष्ट देव का ध्यान करो और उनका मूर्ति चित्र अथवा यंत्र में आवाहन करो। यों तो इष्टदेव सामान्य रूप से सर्वत्र विराजमान हैं पर उनके ध्यान द्वारा, मूर्ति चित्र आदि में आवाहन करो और समझो कि वे आ गए हैं। उनको आसन दो, मुख हाथ, पैर धुलाओ और मन में मानसिक रूप से स्नान कराओ। श्लोक पढ़ो "पाद्यो पाद्यं हस्त्योर्धयं मुखे आचमनं सर्वांगे स्नानं समर्पयामि" पंचपात्र में से छोटी चम्मच या पान के पत्ते में जल लेकर दूसरी कटोरी या पात्र में डालो और कुछ इधर-उधर छिड़क दो। उसके बाद रोली या चंदन अनामिका की नोंक पर लगाकर मूर्ति चित्र या यंत्र पर यह श्लोक कहते हुए लगा दो या छिड़क दो 'स्नानान्ते गन्धं समर्पयामि' फिर हाथ में कुछ चावल लेकर "गन्धान्ते अक्षतं समर्पयामि" कहते हुए चावल छिड़क दो। समझो आपके इष्टदेव आपके बुलाने पर आ गए हैं आपने उनका मुख, हाथ-पैर धुला दिया है स्नान करा दिया है जल से पंचामृत से। उसके बाद शरीर को पोंछकर वस्त्र पहना दिये हैं। यज्ञोपवीत पहना दिया है। फिर उनके मस्तक पर तिलक लगाया है उस तिलक पर चावल लगा दिये हैं। इन सब क्रियाओं को मानसिक

रूप से करते हुए आप वस्त्रं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धं समर्पयामि अक्षतं समर्पयामि कहते हुए यह सब वस्तुएं अर्पण करते जा रहे हैं। इसी प्रकार पुष्प माला, गुलाल, अबीर हल्दी आदि सुगन्धित चूर्ण, धूप, दीप, नैवेद्य आदि क्रम से अर्पण करते हैं। 'पुष्पं समर्पयामि, धूपं आध्रापयामि'। फूल चढ़ाइये फूलमाला पहनाइये धूप अगरबत्ती जलाकर उसके धूम्र को इष्टदेव की ओर हाथ से ले जाइये। 'दीपं दर्शयामि' कहते हुए दीप की ओर कुछ अक्षत छोड़िए कुछ फल मिष्ठान का भोग लगाइये। दीपान्ते नैवेद्यम् समर्पयामि।

यहाँ पर यदि आप थोड़ा सा अग्नि होत्र यानि हवन भी करें तो अति उत्तम रहेगा। पक्की मिट्टी का एक छोटा सा हवन कुण्ड अम्बारी या लोहे का बना पात्र रख लो उसमें कन्डे गोबर के उपले या कीकर, खैर, आम, पीपल आदि की छोटी-छोटी लकड़ियां समिधाओं से रुई, घी, नारियल की गिरी हवन सामग्री की सहायता से ज्योति प्रज्वलित करके आहुतियां दो। अपने इष्ट मन्त्र की आहुतियां उस मन्त्र के साथ स्वाहा लगाकर दो और उस अग्नि देवता की भी उपरोक्त प्रकार से ही षोडषोपचार या पंचोपचार पूजा करो। ठीक वृक्ष की समिधा व लकड़ियां न मिलें तो गोले की गिरी से ज्योति प्रज्वलित कर बताशे चीनी तथा घी की आहुतियां देकर भी संक्षिप्त नित्य का हवन किया जा सकता है।

इष्ट देव को तथा अग्नि देव को नैवेद्यं समर्पयामि करके आचमनं समर्पयामि करिये और पंचपात्र से जल दूसरे पात्र में डालते हुए आचमनं समर्पयामि कहते हुए हाथ धुलाइये। आचमनांते ताम्बूलं पुंगीफलं सुदक्षिणां समर्पयामि कहते हुए पान सुपारी व दक्षिणा अर्पण करिए। यह सब कुछ न हो तो केवल चावल अर्पण कर दीजिए। फिर इष्ट देव की मूर्ति चित्र या यंत्र की तथा ज्योति की आरती उतारिए। उस इष्ट देवता की पूरी आरती गाकर कर सकें तो अति उत्तम है आरती के बाद पुष्पांजलि मन्त्र तथा समर्पण होता है। सभी देवताओं की आरतियां आपको बाजार में मिलने वाली धार्मिक पुस्तकों में मिल जायेंगी। पुष्पांजलि मन्त्र हम यहां पर दिए देते हैं :

"ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् तेहना कम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः। ॐ राजाधिराजायप्रह्य साहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामान्कामकामायमह्यं। कामेश्वरो वैश्रवणो

ददातु कुबेराय वैश्रवणाय राजाधिराजाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यं माधिपत्यमयं समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौम सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोभिगीतोमरुतः, परिवेष्टारो मरुत्तस्या वसन्गृहे आवीक्षितश्च कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद् इतिॐविश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्व तस्पात्ः। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पत्रेदर्यावा भूमि जनयन्दे एकः।।" मन्त्र पुष्पांजलि समर्पयामि नमः सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पै। विल्वप्रवाल तुलसी दल मञ्जरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद। पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः, त्राहि मां सर्वदा देव सर्व पाप हरा भव।" कहकर पुष्पांजलि फूल अर्पण कर दो।

इतना अधिक पूजन न बन सके तो स्नान गन्ध अक्षत पुष्प धूप अगरबत्ती तथा दीपक जलाकर पंचोपचार से ही पूजन कर दें तथा आरती उतार दें।

इसके बाद न्यास किया जाता है। न्यास का अर्थ अंगों में मन्त्र देवता की स्थापना करना है। मुख्य न्यास तीन प्रकार के होते हैं। ऋषिन्यास, करन्यास, और अंग न्यास। ऋषि न्यास में मन्त्र के देवता छंद बीज शक्ति कीलक व ऋषि की अपने शरीर के अंगों सिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य भाग तथा दोनों पैरों में स्थापना की जाती है।

करन्यास में हाथ की विभिन्न उंगलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठभाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापन) किया जाता है। इसी प्रकार अंगन्यास में हृदय सिर, शिखा, दोनों भुजाओं, दोनों नेत्रों और भ्रू मध्य में मन्त्रों की स्थापना होती है। मंत्रों को चेतन व मूर्तिमान जान कर उन अंगों का नाम लेकर उन मंत्रमय देवताओं की ही वन्दना और स्पर्श किया जाता है। ऐसा करने से जप करने वाला स्वयं मंत्रमय होकर मंत्र देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर भीतर की शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है। न्यास करते समय पद्मासन लगाकर बैठना चाहिए। मुख्य रूप से ये तीन ही न्यास होते हैं। न्यासों को करने के बाद ताली बजाई जाती है।

ध्यान

इसके बाद इष्ट देवता या मंत्र देवता का ध्यान किया जाता है। प्रत्येक देवता के ध्यान के श्लोक अलग-अलग हैं। उनमें उनके स्वरूप वर्ण कान्ति वस्त्र भूषण अलंकारों का तथा उन्होंने हाथों में क्या आयुध आदि धारण किए हुए हैं इनका वर्णन होता है जिसके द्वारा इष्ट देवता का स्वरूप मानस चक्षुओं के सम्मुख उपस्थित हो जाता है। जिस देवता का मंत्र जप कर रहे हो उस देवता का श्लोक के सहारे मन में ध्यान करो। अब जैसे श्री रामचन्द्रजी के ध्यान का श्लोक निम्नलिखित है।

नीलाम्बुज श्यामलकोमलांगं सीतासमारोपित वाम भागं।
पाणौ महासायक चारुचापं नमामि रामं रघुवंश नाथं॥

अर्थ :—आपका नीले कमल के समान कोमल श्याम वर्ण है। बाम भाग में श्री सीता महारानी शोभित हैं। हाथों में धनुष बाण हैं। हे रघुवंश के नाथ श्रीराम, मैं आपको नमस्कार करता हूं।

इसी प्रकार अन्य देवी-देवताओं के ध्यान मंत्र अलग-अलग हैं जो उनके स्तोत्रों में दिये रहते हैं।

माला से जप

अब आप मंत्र जप करने के लिए तैयार हैं। मंत्र जप की संख्या रखने के लिए आपके पास माला का होना आवश्यक है। माला आम तौर से १०८ मनकों की होती है। इन १०८ मनकों के अलावा एक बड़ा मनका और होता है जिसे सुमेरु कहते हैं। मनकों का आकार बड़ा हो तो ५४, २७, १२ या ९ मनकों की भी मालाएं होती हैं। माला शंख की, कमल गट्टे की, मूंगे की, मणियों की, रुद्राक्ष की, स्फटिक की या तुलसी की होती है। प्रत्येक मनके के बीच में गांठ लगी होनी चाहिए। माला को गूंथने के लिए सोने, चांदी, तांबे या लाल पीले सफेद रंग के रेशमी धागे का प्रयोग करना चाहिए। जप का प्रत्येक मनका उत्तम प्रकार गोल बिना टूटा-फूटा होना चाहिए। जप प्रारम्भ करने से पहले माला की पूजा करें 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः। ॐ मां माले महामाये सर्व शक्ति स्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव। ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृहणामि दक्षिणे करे। जपकालेतु सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व मंत्रार्थ साधिनि साधय साधय सर्व सिद्धिं परिकल्पय मे स्वाहा' इन मंत्रों व श्लोकों को पढ़ कर मंत्र जप प्रारम्भ करें। मंत्र जप को गुप्त रखने का विधान है। इसलिए दाहिने हाथ को वस्त्र के द्वारा ढक कर जप प्रारम्भ करना चाहिए। इसके लिए कपड़े की बनी गोमुखी प्रयोग में लाई जाती है जिसके अन्दर हाथ व माला डालकर जप किया जाता है। शास्त्रों में तो ऐसा कहा गया है कि यक्ष राक्षस पिशाच सिद्ध विद्याधर आदि खुली माला से जप करने पर जप का प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं। इसका यह भी कारण हो सकता है कि खुली माला से जप करने पर आपका ध्यान जाने अनजाने सुमेरु की ओर यानी माला पूरी होने की तरफ जा सकता है। अब माला कितनी हो गई कब तक पूरी होगी आदि विचार विघ्न पैदा कर सकते हैं। प्रातः काल माला से जप करते समय माला को नाभि के पास रख-कर जप करना चाहिए, मध्यान्ह काल में हृदय के समीप रखकर तथा सायं-काल में नासिका के सामने रखकर जप करना चाहिए। जप करते समय मंत्र का उच्चारण स्पष्ट एक दूसरे वर्ण का आपस में अकारण मिश्रण न करते हुए तथा ओठों को हिलाना बन्द करके करना चाहिए। माला को मध्यमा उंगली के मध्य पर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखो और अंगूठे के पहले पर्व से एक एक मनके को एक मंत्र बोलने के पश्चात् घुमाओ व तर्जनी को इस प्रकार रखो कि वह माला का स्पर्श न करे। माला से नखों का स्पर्श भी न होना चाहिए। माला जपते समय छींक बलगम या अन्य व्यवधान आ जाए तो आचमन करें और नेत्र व दाहिने कान को जल लगाकर स्पर्श करें। मंत्र जप के बीच में बोलना, बातचीत करना मना है। माला के सुमेरु का उल्लंघन करना भी मना है। सुमेरु के पास पहुंचने पर माला के उसी मनके से घुमाकर जप करना आरम्भ करना चाहिए। क्रम बदलते समय मनके को अपने हृदय की ओर घुमायें सामने की ओर नहीं। माला में १०८ मनके होते हैं। १०९ वां सुमेरु एक बड़ा मनका होता है। सुमेरु यह बताने के लिए लगाया जाता है कि आपकी जप संख्या १०८ हो गई यानी एक माला पूरी हो गई। सुमेरु पर जप नहीं किया जाता अतएव उसकी गिनती नहीं की जाती। जब १०८ बार मंत्र जप हो जाता है और १०८ वां मनका आता है तब फिर माला को लौटकर फिर उसी मनके से जाप आरम्भ करते हैं अर्थात् १०८ वां मनका ही

अगली माला का पहला मनका हो जाता है। घुमाते समय उसे बाईं से दाईं ओर घुमाते हैं और माला की दिशा बदल देते हैं। माला का खटखटाना बार-बार सुमेरु कब आयेगा यह देखना, जप करते समय सिर या शरीर को हिलाना, ऊंघना, माला को हाथ से गिरा देना मना है। यह जप के दोष माने गए हैं। इनसे बचना चाहिए।

सुखासन से अर्थात् पद्मासन या सिद्धासन से बैठकर एकाग्रचित होकर मंत्र व उसके देवता का ध्यान चिंतन करते हुए न अधिक शीघ्रता से न बहुत मंद गति से जप करना चाहिए। मंत्र के अर्थ को समझते हुए जप करने से एकाग्रता बनी रहती है। गुदा स्थान से मस्तिष्क तक रीढ़ की हड्डी के अन्दर छः चक्र हैं (१) मूलाधार चक्र गुदा व लिंग के मध्य में हैं जहां कुण्डलिनी सर्प की तरह कुण्डली मारे सोई पड़ी है। (२) स्वाधिष्ठान चक्र लिंग के ऊपर पेडू के पास (३) मणिपुर चक्र नाभिस्थान में है। (४) अनाहत हृदय प्रदेश में (५) विशुद्ध चक्र कण्ठस्थल तालूमूल में (६) आज्ञा चक्र दोनों भौंहों के बीच में। इसमें किसी एक चक्र पर ध्यान करते हुए जप करना चाहिए। अच्छा तो यही है कि यह क्रिया मूलाधार चक्र से प्रारम्भ की जाय। इसके विषय में राजयोग के पाठों में विस्तार से बताया गया है। कुण्डलिनी शक्ति के जागृत होने से सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।

जपकर्त्ता को चाहिये कि वह जप करते समय प्रसन्नता का अनुभव करे, जिस अनुष्ठान में लगे हों उसके लिए अपने को पूर्ण समर्थ समझे, जप करते समय मौन रहे, मन्त्र के अर्थ व सामर्थ्य का चिंतन व उस पर श्रद्धा रक्खे, किसी समय बेचैनी का अनुभव नहीं करे। एकाग्रता से जप करे और अपने कार्य में अनुष्ठान में जप में उत्साह बनाए रक्खे। बेगार या बोझ समझ कर जप करने का कोई फल नहीं होता। मंत्र का जप करते समय मन में ऐसी भावना करनी चाहिए कि परमात्मा की शक्ति अद्भुत है, वह सबसे बड़ा है। उससे बड़ा कोई नहीं है। वह सबका कल्याण करने वाला है, इस जप साधना में वह अवश्य ही अपनी कृपा व ईश्वरी शक्ति प्रदान करेगा ऐसा दृढ़ विश्वास रखना चाहिए। अहंकार गर्व घमण्ड मद का भाव मन में न लावे, इष्टदेव पर पूरी तरह निर्भर रहे, तथा किसी शुभ संकल्प को लेकर ही अनुष्ठान करे।

मन्त्र सिद्धि के लिए किए जाने वाले कर्मों को पुरश्चरण कहते हैं और

इसके पांच अंग हैं। (१) जप (२) हवन (३) तर्पण (४) मार्जन और (५) ब्राह्मण भोजन। मन्त्र में जितने अक्षर हों उतने ही लाख की प्रायः उसकी जप संख्या होती है। उसका दसवां भाग हवन आहुति, उसका दसवां भाग तर्पण संख्या तथा उसका भी दसवां भाग मार्जन तथा उसका दसवां भाग ब्राह्मण भोजन संख्या होती है। जैसे ॐ राम रामाय नमः इसमें ॐ और नमः को छोड़ कर पांच अक्षर हैं और ॐ नमः शिवाय में ॐ को छोड़ कर पांच अक्षर हैं। इन दोनों मन्त्रों को पंचाक्षरी कहते हैं। इनकी जप संख्या पांच लाख हुई हवन संख्या ५०,००० तर्पण संख्या ५,००० मार्जन ५०० और ब्राह्मण भोजन संख्या ५० इतने ब्राह्मण भोजन कराने की सामर्थ्य न हो तो आटे की इतनी गोलियां बनाकर मछलियों को खिलावे। गोलियां बनाते समय मन्त्र जप करता रहे और जल में गोलियां डालते समय भी एक-एक गोली एक-एक बार मन्त्र का जाप करते हुए ही डाले। हवन, तर्पण मार्जन भी निर्धारित संख्या तक नहीं कर पाये तो मछलियों को उतनी ही संख्या में गोली खिलाने से काम चल जाता है।

मन्त्र जप करने से पहले जो पूजा, ध्यान न्यास आदि करने होते हैं उसकी विधि आपको बताई गई है। आप एक निश्चित संख्या प्रतिदिन जप करें। मान लो आप को पांच लाख संख्या का जप करना है और अधिक-से-अधिक ४० दिन में अनुष्ठान पूरा करना है तो प्रतिदिन आप कम से कम १२० माला जाप करें। दशांश हवन आप नित्य भी कर सकते हैं अथवा अन्त में एक ही दिन भी कर सकते हैं। इसी प्रकार तर्पण मार्जन भी आप नित्य कर सकते हैं अथवा अन्त में एक ही दिन भी कर सकते हैं। इसी प्रकार मछलियों को आटे की गोली बनाने या खिलाने का काम भी नित्य करें या इकट्ठा, जैसी सुविधा हो। हवन करते समय इष्ट मन्त्र के अन्त में स्वाहा लगाकर घी की या हवन सामग्री की या दोनों की आहुति दी जाती है। घी गाय भैंस का शुद्ध होना चाहिए वनस्पति नहीं और हवन सामग्री में चीनी, जौ, चावल, धूप अन्य सुगन्धित औषधियां जैसे कपूर, केसर, कस्तूरी अगर तगर लाल व श्वेत चन्दन गोरोचन, कपूरकचरी, गुग्गल आदि सामर्थ्य के अनुसार मिलायें। कामना भेद, कर्म भेद, देवता भेद से इन सामग्रियों में कुछ उलट फेर भी किया जाता है। सामग्री कम हो तो आहुति थोड़ी थोड़ी दें। तर्पण करते समय किसी शुद्ध धातु के मंजे

हुए पात्र में शुद्ध जल भर लें उसमें थोड़े से पुष्प, तिल, चावल, जौ, चीनी आदि डाल लें और पहले देवताओं को तर्पण करें जैसे ब्रह्मा तृप्यन्तामि, विष्णु तृप्यन्तामि, रुद्र तृप्यन्तामि आदि आदि । इन्द्र, कुबेर, वरुण, मरुद्गण, दिक्पाल आदि देवताओं का तर्पण किया जाता है । इसके लिए बाजार में मिलने वाली कोई भी तर्पण विधि की पुस्तक से प्रारम्भिक भाग में बताये गये देवताओं को तर्पण करने के बाद अपने इष्ट मन्त्र के अन्त में तृप्यन्तामि कहते हुए, अंजुलि में जल लेकर पात्र के अन्दर ही दोनों हाथों की अंगुलियों से जल अर्पण करो। जनेऊ को माला के समान करके हाथ की अंगुलियों में ले लो । बैठक उकड़ू होती है यानी घुटनों के बल पर बैठा जाता है । दोनों हाथ घुटने के अन्दर रहते हैं । जनेऊ करपृष्ठों के नीचे रहता है । केवल अंगूठे बाहर रहते हैं । तर्पण प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके पूर्वाभिमुख होकर किया जाता है । (पितरों का तर्पण दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए) मन्त्रों का तर्पण पूर्व की ओर मुख करके करते हैं । तर्पण करने के उपरान्त पात्र के जल को किसी वृक्ष की जड़ में डाल देना चाहिए । नाली में नहीं बहाना चाहिए । तर्पणोपरान्त अपने ही स्थान पर खड़े होकर एक बार घूमकर परिक्रमा करो और तर्पण किए गए जल को नेत्रों तथा मस्तक आदि पर लगाओ । तर्पण करते समय हाथों की दोनों अनामिका उंगलियों में तथा शिखा में कुशा से बनी हुई गुंजीठियां पहनी जाती हैं । कुशा सरकण्डे के पत्ते को बंटकर बनाई जाती है । सरकण्डा या सरपत्ता जिसकी धार बहुत पैनी होती है और हाथ चिर जाता है, खेतों की मेढों पर आम उगाई जाती है और जिससे देहात में छप्पर बनाए जाते हैं । उसके सरकण्डे के ऊपर लिपटे हुए पत्ते या छाल जैसी वस्तु को कुशा कहते हैं और कुछ हरी अवस्था में उसको बंट कर उंगलियों आदि में पहनने योग्य बना लेते हैं । संस्कृत भाषा में इसको पवित्री कहते हैं और कोई भी पण्डित इस बारे में आपको बता देगा और उसके पास बनी हुई होगी तो दे भी देगा । मार्जन किसी पात्र में जल लेकर कुशा से पवित्री से पान के पत्ते से मन्त्र जप करते हुए दशों दिशाओं में अपने शरीर पर, आसन पर जल के छींटे देने से होता है ।

ब्राह्मण भोजन के स्थान पर मछलियों को भोजन कराने के विषय में जौ के आटे की गोलियां बनाई जाती हैं । गोलियां बनाने के आटे को गीला कर

लिया जाता है। कागज पर मन्त्र को लिखते हैं और उस कागज के छोटे टुकड़े को गोली के अन्दर रखते हैं। लिखने के लिए अनार की टहनी से बनाई गई कलम तथा चन्दन आदि अष्टगन्ध की स्याही प्रयोग में लाते हैं। यदि इतना सब कुछ किया जाय तो अति उत्तम है। पतले कागज पर पहले मन्त्र को निर्धारित संख्या में लिख लो, फिर कैंची से काट कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े बना लो और एक-एक कागज का टुकड़ा एक-एक गोली में रखते जाओ। इसके लिए पहले कागज की भी एक गोली सी बना लो। कागज की गोली बनाने का सुभीता न बन सके तो गोलियां बनाते समय मन्त्र का जप करते जाओ। अभिप्राय तो दोनों तरह से मन्त्र के जाप का है। इसी प्रकार दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन आदि की पूरी व्यवस्था न हो सके तो उतनी ही संख्या में मन्त्र का जाप करना चाहिए। या कुछ संख्या में हवन तर्पण भोजन आदि कर सको तो बाकी की संख्या का जाप कर देना चाहिए। यथा शक्ति दान भी करना चाहिए।

साधना के अन्य आवश्यक नियम भी पूर्व अध्यायों में यथा स्थान बताए गए हैं। उनका पालन करते हुए विधि विधान से साधना करने पर मन्त्र सिद्ध होता है और अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। साधन में कोई त्रुटि रह जाने पर या कार्य की गुरुता के कारण हो सकता है कि एक बार के पुरश्चरण में मन्त्र सिद्ध न हो तो दुबारा फिर से उसी प्रकार से पुरश्चरण करने का विधान है, दुबारा भी न हो तो तीसरी बार करना चाहिए। तीन बार करने पर भी मन्त्र सिद्ध न हो तो भ्रामण, रोधन, वशीकरण, पीड़न, शोषण, पोषण, दाहन आदि क्रियाएं की जाती हैं। इस से यह सिद्ध होता है कि मन्त्र सिद्ध करना कोई सामान्य कार्य नहीं है। काफी परिश्रम के बाद व धैर्य से ही सफलता मिलती है। किसी दुरूह व दुष्कर कार्य के लिए अनुष्ठान किया जाय तो उतना ही अधिक परिश्रम करना पड़ता है। पूरा मन लगाकर विधि से सब काम किए जायें तो प्रबल इच्छा शक्ति के द्वारा शीघ्र सफलता मिलती है। यदि किसी सिद्ध गुरु के द्वारा उनका सिद्ध मन्त्र ही मिल जाये तो कम साधना से भी शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो जाती है। मन्त्र का जाप प्राण पर किया जाये तो भी शीघ्र फल देने वाला होता है। इसको विस्तार से तो राजयोग के पाठ में बताया गया है। जप बैठ कर ही करना चाहिए। संक्षेप में इसकी विधि यह है कि

स्वांस को अन्दर लेते समय श्वांस पर ही मन्त्र का जाप करो। पद्मासन पर बैठ जाओ। मन्त्र छोटा है तो प्रारम्भ में श्वांस अन्दर लेते समय एक बार मन्त्र का जाप करो फिर स्वांस को रोको और मन्त्र की एक आवृत्ति करो उसके बाद स्वांस को छोड़ो और मन्त्र की एक आवृत्ति करो फिर स्वांस को रोको और एक बार मन्त्र पढ़ो। स्वांस अन्दर लेने को पूरक, अन्दर फेफड़ों में स्वांस रोकने को कुम्भक, स्वांस बाहर निकालने को रेचक और फिर स्वांस को बाहर रोकने को भी कुम्भक कहते हैं। आरम्भ में चार सैकिण्ड में पूरक करो, सोलह सैकिण्ड सांस रोको यानी कुम्भक करो, आठ सैकिण्ड रेचन करो वायु को बाहर निकालो। बाहर का कुम्भक चार सैकिण्ड काफी होता है। आप का इष्ट मन्त्र छोटा है तो चार सैकिण्ड में उसकी एक आवृत्ति आसानी से हो जाएगी। इसलिए थोड़ा अभ्यास हो जाने पर पूरक में एक, कुम्भक में चार, रेचक में दो आवृत्ति हो जाती हैं। प्राणों पर मन्त्र जाप बहुत जल्दी सिद्धि देता है।

चौथा अध्याय

तन्त्र साधना

तान्त्रिक साधना भारतवर्ष में तथा विश्व के अन्य देशों में बहुत प्राचीन-काल से प्रचलित है। वैदिक काल से भी पहले जो आदिम जातियां इस भूभाग पर रहती थीं उनमें लिंग और योनि की पूजा प्रचलित थी। उन लोगों ने देखा कि मनुष्यों के प्रजनन में इन इन्द्रियों का प्रमुख हाथ है तो वे इनकी प्रतीकात्मक रूप से पूजा करने लगे। आर्यों में जिस प्रकार सूर्य चन्द्र अग्नि वायु तेज वर्षा आदि के देवताओं की पूजा होती थी उसी प्रकार आर्येतर जातियों में लिंग पूजा का प्रचलन था। जब आर्यों का सम्पर्क इन अनार्य जातियों से हुआ तो उन्होंने इस प्रचलित लिंग योनि पूजा को अपने धर्म ग्रन्थों में शिव व शक्ति की पूजा के रूप में सम्मिलित कर लिया। कालान्तर में इसी का विकास होते-होते शैव तथा शाक्त सम्प्रदायों का गठन हुआ। बाद में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रसार हुआ और उस समय के बहुत से शैव व शाक्त मतावलम्बी भी इस धर्म में दीक्षित हो गये। कालान्तर में उन लोगों ने बौद्ध धर्म में अपनी पूजा पद्धतियों का प्रवेश करा दिया। बुद्ध-धर्म कई शाखा प्रशाखाओं में विभक्त हो गया और उनकी वह शाखा जो तान्त्रिक पूजा अनुष्ठानों में विश्वास रखती थी वज्रयान कहलाई। मुसलमानों के राज्यकाल में हिन्दू मन्दिरों मठों तथा बौद्ध विहारों पर बहुत अत्याचार हुए और इनके प्रसिद्ध मठ विहार आदि भूमिसात कर दिये गये। यह लोग अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भाग गये और इनकी बहुत बड़ी संख्या नेपाल, चीन तथा तिब्बत की ओर चली गई। बिहार तथा आसाम के भागों में भी बहुत से लोग भूमिगत हो गये। शनै-शनै यह तान्त्रिक साधना लुप्त होती चली गई। आज तो बहुत कम तन्त्रवेत्ता रह गये हैं जो प्रच्छन्न रूप में तिब्बत, नेपाल, बिहार, आसाम आदि के कुछ भागों में पाये जाते हैं।

तन्त्र की साधना अति गोपनीय तथा दुष्कर साधना है। यह मूलतः कुण्डलिनी योग पर आधारित है। मेरुदण्ड के अन्दर इडा, पिंगला, सुषुम्ना तीन

मुख्य नाडियां तथा वज्रा चित्रणी व ब्रह्म नाडियां मस्तिष्क से लेकर लिंग व गुदा के मध्य स्थान तक जहां मेरुदण्ड समाप्त होता है आपस में लिपटी हुई होती हैं। इस स्थान को तन्त्र की भाषा में योनि कहा जाता है। यहां पर स्वयंभूलिंग है और कुण्डलिनी नाडी इस स्वयंभूलिंग के साढे तीन कुण्डल मारे हुए नीचे की ओर मुख किये अधोमुख पड़ी रहती है। पूरे मेरुदण्ड यानी रीढ की हड्डी के अन्दर कई स्थानों पर ग्रन्थियां हैं जहां से निकल कर नाडियों का जाल सारे शरीर में फैला हुआ है। सबसे नीचे जहां गुदा के पास कुण्डलिनी है वहां पर चार दल का एक कमल है यानि वहां से चार ओर को नाडियों का विस्तार हुआ है। इसे मूलाधार चक्र कहते हैं। इसका वर्ण लाल (रक्त रंग) है इसकी ज्ञानेन्द्रिय नासिका और कर्मेन्द्रिय गुदा है। यहां पृथ्वी तत्व का वास है और इसे भूलोक की संज्ञा दी गई है। यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में सात लोक माने गये हैं, उसी प्रकार शरीर में भी सात लोक हैं। योगी लोग और योग की साधना करने वाले साधक जन इन चक्रों पर ध्यान लगाकर प्राणायाम के द्वारा सोई हुई कुण्डलिनी को जगाने का प्रयत्न करते हैं। शरीर व मन की शुद्धि होने पर ब्रह्मचर्य पालन से प्राणों पर नियन्त्रण होने पर गुरु कृपा से जब यह सोई हुई कुण्डलिनी जाग जाती है तो उसका मुख या फन जो नीचे की ओर होता है साधना से ऊपर की ओर उठ जाता है और वह ब्रह्म नाडी के अन्दर ऊपर की यात्रा आरम्भ कर देती है। जितने भी साधन परिश्रम तपस्या योग क्रियायें हैं वे सब इस सोई हुई कुण्डलिनी को जगाने के लिए किये जाते हैं। जिस साधक की कुण्डलिनी जागृत हो जाती है वह सबसे नीचे के मूलाधार चक्र पर ध्यानावस्थित हो जाता है और उसमें काफी अलौकिक शक्तियां आ जाती हैं। वह उत्तम वक्ता लेखक कवि संगीतकार और उत्तम विद्याओं का ज्ञाता हो जाता है। उसका स्वर मधुर और बुद्धि तीव्र हो जाती है। प्रसन्नचित्त व स्वस्थ रहता है। उसके मुख पर तेज का निवास रहता है। परन्तु इसके साथ-साथ काम वेग भी बहुत बढ़ता है। काम चेष्टा कामोद्दीपन तीव्र हो जाता है और उसके मार्ग में अनायास ही स्त्रियां बाधा रूप में उसको इस मार्ग से गिराने के लिए आ जाती हैं। परमार्थ के मार्ग पर चलने वाले साधकों की परीक्षा लेने के लिए समझें या उसको परमार्थ के मार्ग से विमुख करने के लिये प्रलोभन स्वरूप समझें उसको कुछ अलौकिक सिद्धियां

प्राप्त हो जाती हैं। जो साधक इनके चक्करों में नहीं पड़ते और इन बाधाओं को पार करके आगे बढ़ते जाते हैं, अपनी साधना जारी रखते हैं, वे क्रमशः आगे के चक्रों पर पहुँचते हैं तथा और अधिक अलौकिक शक्तियों के स्वामी बनते हैं। प्राणायाम के द्वारा मन्त्र का श्वांस सुरति पर जाप करते हुए निराकार प्रकाश का या इष्ट देवता का ध्यान करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र तक पहुँचने में सफल होते हैं।

स्वाधिष्ठान चक्र का स्थान पेडू में है। यहां पर सिन्दूरी वर्ण का षटदल कमल है, जहां से छै ओर को नाडियों का जाल निकल कर शरीर में फैलता है। इसकी ज्ञानेन्द्रिय रसना तथा कर्मेन्द्रिय लिंग है। यहाँ पर भुवः लोक है और जल तत्व का वास है। यहाँ पर साधक के स्थित होते ही उसके काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का प्रायः नाश हो जाता है। उसकी स्मरण शक्ति बहुत प्रखर हो जाती है, उसे कई अलौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है और उच्च लोक की देवात्माओं के उसे दर्शन होते रहते हैं। उन सिद्धियों के द्वारा यदि वह यहाँ पर भी प्रलोभनों का शिकार हो गया तो नीचे गिर जाता है।

सिद्ध पुरुषों ने अपने शिष्यों के इन प्रलोभनों से मार्ग भ्रष्ट होने की संभावनाओं पर विचार किया और अनेक साधन उपाय क्रियायें आविष्कृत कीं जिनके द्वारा साधक इन बाधाओं को पार कर सके। साधना का अन्तिम लक्ष्य सहस्रसार में शिव व शक्ति तक पहुँचना है। शिव निष्क्रिय शव रूप में हैं तथा शक्ति इस सारे शरीर की क्रियाओं का संचालन करती है और समष्टि रूप में इस सारे ब्रह्माण्ड का संचालन करती है। बालक भाव से उस शक्ति की मां के रूप में साधना करना और उससे याचना करना कि वह इन सब विघ्न बाधाओं से पार कराके अपने पास तक पहुँचाने में सहायता करे। माँ की साधना में पथभ्रष्ट होने की आशंका नहीं रहती। माता बालक को खेलने के लिए कोई खिलौना दे भी देती है, उसको रोने से चुप कराने के लिए या उसे बहलाने के लिये तो बालक कुछ देर उससे खेल कर ऊब जाता है फिर रोने लगता है माँ का दूध पीने के लिये या माँ का सान्निध्य प्राप्त करने के लिये तो माँ सब काम छोड़कर बालक की ओर ध्यान देती ही है।

आज तक इस पृथ्वी पर और विशेष कर भारत भूमि पर सहस्रों की संख्या में इस तान्त्रिक साधना से सिद्ध होने वाले योगी महापुरुष हो चुके हैं।

अभी पिछली शताब्दी में कलकत्ता के दक्षिणेश्वर मन्दिर में जिस महापुरुष ने अन्य अनेक साधनाओं के साथ-साथ तान्त्रिक साधना से भी सिद्धि को प्राप्त किया था उनका नाम व यश सारे संसार में व्याप्त हो गया है। वह सिद्ध महापुरुष स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे। भैरवी ब्राह्मणी ने उनसे सभी तान्त्रिक साधनायें कराई थीं। परमहंस ठाकुर के अपने ही शब्द उनकी जीवनी से यहां उद्धृत कर रहा हूँ। "मुख्य-मुख्य चौंसठ तन्त्रों में जो-जो साधनायें बतलाई गई हैं, उन सभी साधनाओं को ब्राह्मणी ने मुझसे एक के बाद एक कराया। कितनी कठिन हैं वे साधनायें। उन साधनाओं का अभ्यास करते समय बहुतेरे साधक पथभ्रष्ट हो जाते हैं, पर माता की कृपा से मैं उन सभी साधनाओं को पूरा कर सका। मुझे किसी भी साधना के लिये तीन दिन से अधिक समय नहीं लगा।" इससे स्पष्ट है कि साधनायें बहुत कठिन होती हैं और इनमें पथभ्रष्ट होने का भय रहता है। साधक के आत्म संयम की बहुत कठिन परीक्षा होती है। इस परीक्षा में सफल होने पर ही सिद्धि प्राप्त होती है।

तान्त्रिक साधनाओं को बहुत गुप्त व गोपनीय रखा जाता है। इस कारण उनके प्रामाणिक विवरण आसानी से सुलभ नहीं होते। साधना की जो विस्तृत प्रक्रियायें हैं, वे तो गुरुमुख से ही प्राप्त होती हैं और गुरु जब तक साधक के अधिकारी होने के विषय में पूर्ण आश्वस्त नहीं हो जाता, वे सब बातें नहीं बताता। अतएव स्वामी राम कृष्णजी की जीवनी से तान्त्रिक साधना के विषय में जो बातें हमें ज्ञात होती हैं, उनको संक्षेप में यहां इसलिए दिया जा रहा है कि आपको उनकी दुष्करता का और महत्व का ज्ञान हो जाये। ब्राह्मणी भैरवी ने दो वेदियां बनवाई थीं। एक बिल्व वृक्ष के नीचे और दूसरी पंचवटी के नीचे। श्री रामकृष्ण जी ने जप ध्यान करने के लिए अपने ही हाथ से पांच वृक्ष दक्षिणेश्वर मन्दिर के अहाते में लगाये थे। अश्वत्थ (पीपल), बिल्व, बड, अशोक और आंवला। बिल्व वृक्ष के नीचे वाली वेदी के नीचे तीन नरमुण्ड गाड़े गये थे और पंचवटी वाली वेदी के नीचे पांच जीवों के मुण्ड गाड़े गए थे। तन्त्र विधि से जगन्माता की यथाविधि पूजा कराने के लिए जिन साम-ग्रियों की आवश्यकता होती है, उनका प्रबन्ध भैरवी ब्राह्मणी कर देती थी और यथाविधि पूजा कराने के बाद उन वेदियों के ऊपर बिठाकर जप ध्यान कराती थी। एक दिन संध्या के समय अंधेरा होने पर ब्राह्मणी कहीं से एक सुन्दर

युवती को अपने साथ लेकर आई और श्री रामकृष्ण जी को पुकारकर कहा कि इसे देवी मानकर इसकी पूजा करो। पूजा समाप्त होने पर उस स्त्री को निर्वस्त्र करके उनसे कहा कि अब इसकी गोद में बैठकर जप करो। श्री रामकृष्ण जी यह सुनकर डर के मारे व्याकुल हो गये और रोने लगे। उन्होंने मां से प्रार्थना की कि :—'हे मां अपने इस दीन बालक को तू यह कैसी आज्ञा दे रही है। इस दीन बालक में ऐसा दुस्साहस करने का साहस कहां है?"

श्री रामकृष्ण जी ने यह साधनायें जगन्माता का दर्शन लाभ प्राप्त हो जाने के बाद की थीं और जैसा कि वह अपने श्रीमुख से अपने शिष्यों को बताया करते थे कि इस प्रकार प्रार्थना करते ही उनके शरीर में कोई प्रवेश कर गया और उस युवती स्त्री की गोद में बैठते ही उनकी समाधि लग गई। जब ब्राह्मणी की सुश्रूषा से उनकी समाधि उतरी, तो ब्राह्मणी ने उनसे कहा कि बाबा डरो मत क्रिया सम्पूर्ण हो गई। अन्य साधक तो इस अवस्था में बड़े कष्ट से धैर्य धारण करते हैं और किसी प्रकार थोड़ा सा जप करके क्रिया को शीघ्र समाप्त कर देते हैं पर तुम तो अपनी देह की स्मृति भूलकर समाधिमग्न हो गए। ब्राह्मणी से यह सुनकर श्री रामकृष्ण जी के हृदय का बोझ हल्का हुआ और वे कृतज्ञतापूर्वक शुद्ध अंतःकरण से जगन्माता का धन्यवाद करने लगे कि इस कठिन साधना से सफलतापूर्वक पार करा दिया।

उपरोक्त विवेचन से आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि यह कितनी कठिन है। एक सुन्दर युवती एक स्वस्थ पुरुष की गोद में बैठी हो और उस परिस्थिति में वह काम विकार से विकल न होकर मन्त्र जाप करे व ध्यान करे। जो इसमें सफल होते हैं, वे निश्चय ही कामजित इन्द्रिय जित होते हैं और उनकी साधना सफल होती है। परन्तु इस परीक्षा में असफल होने की ही अधिक सम्भावना रहती है। मां जगदम्बा की कृपा का सहारा न मिले तो सफलता संदिग्ध ही समझिए। यह वीरभाव की साधनायें हैं। कोई-कोई दुःसाहसी साधक ही इसमें सफल हो पाते हैं और इसमें फिसलने का डर ही अधिक रहता है। पर जो सफल होते हैं, सिद्धियां उनके चरण चूमती हैं। तन्त्र की यह साधनाएं साधक को अग्नि परीक्षा से निकाल कर खरा सोना बना देती हैं।

जीव को सांसारिक साधनों में बांधने वाले अष्टपाश होते हैं जिनमें लज्जा,

घृणा, भय मुख्य तीन पाश हैं। तन्त्र की साधनाओं में साधक को इन्हीं पाशों से मुक्त कराने के उपाय किए जाते हैं। लज्जा का निवारण करने के लिए साधक को नग्न होकर कई प्रकार की साधनायें, जप आदि करने होते हैं। कभी-कभी हम लोग भगवत प्रेम में सुधबुध खोये हुए लोगों को नाचते गाते, मस्त होते हुए देखते हैं तो हमारा भी मन करता है कि उसके प्रेम आनन्द में हम भी वैसा ही करें, परन्तु यह लज्जा रूपी पाश हमको रोकता है कि लोग क्या कहेंगे। हम इतने बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति इस प्रकार पागलों की तरह नाचें गायें, कितनी लज्जा की बात है। तो यह लज्जा का भाव हमारा सबसे बड़ा पाश है। सबके सामने नंगा होकर विचरण करना तो बहुत बड़े साहस का काम है। हम अकेले में भी नंगे होकर ध्यान आदि करने में शरमाते हैं। जिन सम्प्रदायों में नंगे होकर विचरण करने की प्रथा है, उसके मूल में लज्जा पाश से मुक्त होने की भावना है। श्री रामकृष्ण परमहंस जी अपनी साधनावस्था में जप ध्यान करते समय निर्वस्त्र होकर भजन करते थे और प्रभु प्रेम में मतवाले होने पर तो उन्हें इसका ध्यान ही न रहता था कि कब उनके वस्त्र खुलकर अलग हो गए हैं। उनके शिष्य भक्त लोग ही उनके वस्त्रों को ठीक किया करते थे।

भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ जो चीरहरण लीला की है, उसका रहस्य भी यही है। भगवान श्री कृष्ण महान् योगेश्वर अवतारी पुरुष थे और सांसारिक दृष्टि से भी देखें तो उनकी अवस्था उस समय मात्र दस वर्ष के लगभग थी। गोपियों ने माता कात्यायिनी का व्रत किया था और यह व्रत श्रेष्ट सुन्दर पति को प्राप्त करने के लिए किया था। गोपियों ने श्रीकृष्ण जैसा सुन्दर श्रेष्ठ पति प्राप्त करने के लिए मां कात्यायिनी से प्रार्थना की थी। ब्रज अंचल में उस समय स्त्रियों में यह प्रथा थी कि वे जल में नंगी होकर स्नान करती थीं। अतएव गोपियां अपने वस्त्रों को किनारे पर रखकर जल में स्नान करने के लिए पैठ गईं। कुछ आचार्यों का मत है कि जल में नंगे स्नान करना बुरी बात है। इससे जल देवता का अपमान होता है और इस बुरे रिवाज या प्रथा को मिटाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों को शिक्षा देकर सुधारने की दृष्टि से चीर हरण लीला की थी। यह मत भी ठीक है। परन्तु दूसरा अधिक सम्मत मत यह है कि भगवान गोपियों को लज्जापाश से मुक्त करना

चाहते थे। भगवान की उपासना कितने ही भावों से की जाती है। यथा स्वामी सेवक भाव जैसी हनुमान जी की है, भगवान को पिता और अपने आपको पुत्र मानकर—जैसी भक्तराज ध्रुव ने की। तीसरी वात्सल्य भाव की भगवान को पुत्र मानकर, माता कौशल्या, माता देवकी और कितने ही भक्त जो भगवान की बालगोपाल रूप में उपासना करते हैं इस कोटि में आते हैं। सखा भाव से भगवान को अपना परम सखा सुहृद मानकर जैसा अर्जुन ने माना था। सखी भाव की, जिसमें भगवान को पति भाव में माना जाता है और गोपियों का यही भाव था। मीराबाई का भी यही भाव था। शत्रु भाव की भी उपासना होती है इसमें शत्रु का ध्यान सदा रहता है चाहे शत्रु भाव ही हो और कहते हैं कि रावण का यही भाव था। एक वीर भाव की उपासना है जो तन्त्र में की जाती है। इसमें भगवान को या स्त्री रूप शक्ति को पत्नी रूप में मानकर स्वयं को पति भाव से माना जाता है। अपने को शिव रूप समझ कर और स्त्रियों को शक्ति रूपिणी समझ कर। यह अन्तिम भाव बहुत कठिन भाव है, इसका निर्वाह दुष्कर होता है, अस्तु।

गोपियों की भावना भक्ति सखी भाव की थी और वे भगवान की भक्ति पति भाव से करती थीं। भगवान के सामने या पति के सामने स्त्री को सम्पूर्ण लज्जा का परित्याग करके ही जाना होता है। जब तक जीव में लज्जा का पाश या आवरण है तब तक उस परम पुरुष का सामीप्य प्राप्त नहीं होता। ब्रज-बालाओं ने जल में खड़ी होकर जब श्रीकृष्ण भगवान से प्रार्थना की कि उनके वस्त्र उनको लौटा दिये जायें, तो भगवान ने उनसे जल से निकल कर अपने पास तक आने को कहा। भगवान उनके वस्त्र और चीर हरण करके उन वस्त्रों सहित पास के एक वृक्ष की डाल पर बैठे हुए मुस्करा रहे थे। गोपियां सकुचाईं परन्तु जब उन्होंने देखा कि कोई चारा नहीं है, तो वे जल से बाहर निकलीं। वे निर्वस्त्र थीं, स्वाभाविक है कि लज्जा का थोड़ा बहुत अंश उन में अभी बाकी था। अतएव अपने गुह्य अंग पर हाथ रखकर उसे दृष्टि से छिपाते हुए वे जल से बाहर निकलीं। भगवान तो चाहते थे कि उनके लज्जा पाश का निवारण पूर्ण रूप से हो जाए। गोपियां भगवान की जन्म जन्मांतर से भक्ति करती चली आ रही थीं और इस जन्म में उनको अपने आराध्य का सामीप्य लाभ प्राप्त हुआ था। अब वह समय आ गया था, जब उनको अपनी

साधना का चरम लक्ष्य प्राप्त हो। वे अपने आराध्य के सम्मुख अपना सर्वस्व अर्पण करके अपने सभी पाशों और बन्धनों से मुक्त होकर भगवान की ही हो जायें।

अतएव श्रीकृष्ण ने उनसे कहा कि तुमने व्रत के समय बिल्कुल नंगी होकर जल में स्नान किया है, इससे वरुण देवता का अपमान हुआ है। इस अपराध की क्षमा मांगने के लिए तुम को अंजुलि बांध कर प्रार्थना करनी चाहिए। फिर मेरे पास आकर अपने वस्त्र धारण कर लो। अंजुलि बांध कर प्रार्थना करने के लिए गोपियों को अपने दोनों हाथ ऊपर उठाने पड़े और इससे उनके गुप्त अंग पर रखा हुआ उनका हाथ भी ऊपर उठ गया। इस प्रकार वे अपने स्वामी आराध्य के सामने बिल्कुल निरावरण होकर समर्पित हो गईं। वे इसी दशा में भगवान के समीप पहुंचीं। भगवान कृष्ण ने उनके वस्त्र लौटा दिए। भागवत में उल्लेख है कि कृष्ण भगवान इससे बहुत प्रसन्न हुए और गोपियों को अपनी वंशी वादन सुनाकर आनन्द विभोर कर दिया। श्रीकृष्ण के प्रसन्न व आनन्दित होने का एक कारण तो यह था कि उन्होंने अपनी अनुगामिनी गोपियों को लज्जा के पाश से मुक्त कर दिया था और दूसरा कारण तान्त्रिक दृष्टि से यह था कि उन्होंने अपनी एक साधना में भी सिद्धि प्राप्त कर ली थी।

जितने भी अवतारी पुरुष हुए हैं उनको भी सभी विद्याओं की शिक्षा विधिवत लेनी पड़ी है। यह अलग बात है कि उनको बहुत थोड़े प्रयत्न व साधना से ही इनमें सिद्धि प्राप्त होती रही है। भगवान राम ने गुरु विश्वामित्र के पास रहकर धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की थी। गुरु वशिष्ठ के पास रहकर आध्यात्म की शिक्षा ली थी। चाहे ये सब ज्ञान उन्हें स्वयं सिद्ध रहा हो। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गुरु सांदीपनी के आश्रम में रहकर विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी और सभी प्रकार की तान्त्रिक साधनायें भी की थीं तथा अनेक प्रकार की अलौकिक सिद्धियों को प्राप्त किया था, जो उनके बाद के जीवन में बहुत काम आई थीं। भगवान राम कृष्ण परमहंस को तो माता जगदम्बा के दर्शन के बाद भी सभी तान्त्रिक साधनायें व योग की साधनायें विधिवत करनी पड़ी थीं। भगवान श्रीकृष्ण ने चाहे बाद में कितने ही विवाह किए और गृहस्थ धर्म का पालन किया, परन्तु इस सब के होते हुए भी वे महान योगीश्वर, इन्द्रिय-जित व काम पर विजय प्राप्त करने वालों में से थे। तान्त्रिक साधनाओं का

मुख्य उद्देश्य काम पर विजय प्राप्त करना और इन्द्रियों की वासना पर विजय प्राप्त करना होता है। अपने ब्रज प्रवास काल में गोपियों के साथ जो लीलाएं उन्होंने कीं, वे सब काम देव पर उनकी महान विजय की द्योतक हैं। वीरभाव की साधना के वे सबसे उत्कृष्ट नायक हैं। रस सम्राट् हैं। शिव और शक्ति का जो महारास सारे विश्व के कण-कण में हो रहा है, उसी की अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी महारास लीला के द्वारा कराई। नंगी युवती स्त्रियों को जो सब भांति सुडौल व सुन्दर शरीर की थीं उनको निर्वस्त्र देख कर भी उनको कोई काम विकार उत्पन्न नहीं हुआ। वे निर्विकार रहे और इस प्रकार अपने को निर्विकार सिद्ध करने में सफल रहे, इसका उन्हें आनन्द हुआ। उनकी यह तान्त्रिक साधना जिसे गवाक्ष योग साधन कहा जाता है सफल रही। लोग अपने दृष्टिकोण से देखते हैं और उन्हें यह बड़ा दुष्कर प्रतीत होता है कि कैसे कोई इतनी सारी सुन्दर व नंगी स्त्रियों को देखकर भी अपने पर नियंत्रण रख सकता है। अज्ञानी जन भगवान के पावन चरित्र पर लांछन लगाने में भी नहीं हिचकिचाते।

परन्तु यह दुष्कर कार्य विरले ही महापुरुषों और प्रबल आत्म शक्ति वाले अवतारी सिद्ध पुरुषों के द्वारा ही सम्भव है। भगवान श्रीरामकृष्ण परमहंस जो अभी पिछली शताब्दी में ही हुये हैं और जिनके बारे में बहुत से तथ्य प्रामाणिक रूप से उपलब्ध हैं, वे आजन्म गृहस्थ रहे परन्तु अपनी धर्मपत्नी मां शारदा के साथ एक शैय्या पर सोते रहते हुए भी सदा उनमें मातृभाव ही रखा। कभी काम के वश होकर शरीर संभोग की इच्छा तक नहीं की।

तान्त्रिक साधना का मुख्य उद्देश्य जीव का शिव शक्ति से मिलन है और जो तान्त्रिक क्रियायें हैं वे साधक को कामवासना पर विजय प्राप्त कराने के लिये की जाती हैं। इन्हीं में एक साधना षोडशी पूजन की है। इसमें एक सर्वांग सुन्दरी सोलह वर्षीय कन्या की पूजा साक्षात् भगवती त्रिपुर सुन्दरी की भावना रख कर की जाती है। अमावस्या की रात्री को उस कन्या को उत्तम वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित करके उच्चासन पर बिठाया जाता है और उसके अन्दर मां जगदम्बा की प्रतिष्ठा की जाती है। यदि साधक की सच्ची भावना होती है तो उस षोडशी कन्या में साक्षात् जगदम्बा का आविर्भाव हो जाता है।

तत्पश्चात् उस सशरीरी जगदम्बा की षोडशोपचार से पूजा की जाती है। अपने हाथ से नेवैद्य खिलाया जाता है और आत्म निवेदन किया जाता है।

वैष्णवोक्त तन्त्र साधनाओं में तो मद्य मांस का प्रयोग नहीं किया जाता और यह सब मधुर भाव से की जाती है। कितने ही ऐसे सम्प्रदाय वैष्णवों में हैं जिनमें स्त्रियां गोपी भाव या राधा भाव से साधना करती हैं और कृष्ण को ही पति मानती हैं। कहीं-कहीं किसी सुन्दर युवक में कृष्ण की भावना करके भक्ति करने का चलन है। ऐसी साधनाओं में मन पर नियंत्रण नहीं रहने पर बहुधा दोनों के ही पथ भ्रष्ट होने की पूरी आशंका रहती है। इसलिए इस प्रकार के सम्प्रदाय लोगों में बदनाम हो गये हैं। जिन महापुरुषों ने यह सम्प्रदाय चलाये थे, उनका उद्देश्य यही था कि कृष्ण पर ध्यान लगाना या एक अव्यक्त पर प्रेम भावना को केन्द्रित करना अपेक्षाकृत कठिन होता है, इसलिए उसे पहले एक सशरीर व्यक्ति पर केन्द्रित किया जाये और बाद में उसे श्रीकृष्ण की ओर बदल दिया जाये परन्तु इसमें यही खतरा रहता है कि साधक भौतिक प्रेम में ही लिप्त होकर अवनति की ओर चला जाता है। सूफी मत में भी कुछ ऐसी ही साधना होती है।

शाक्त सम्प्रदाय में प्रधानतः वीर भाव की साधना है। इसमें मद्य मांस का प्रयोग किया जाता है और साधक अपने में शिव भाव आरोपित करके शक्ति रूपिणी स्त्री को ग्रहण भी करते हैं। क्योंकि यह मार्ग सभी सीधे मार्गों से हट कर एक उल्टा रास्ता है, इसलिये इसे वाम मार्ग कहा जाता है। जैसे कोई आपसे मिलने सामने के सदर दरवाजे से आता है, कोई खिड़की के रास्ते से आता है और कोई शौचालय के मार्ग से आता है। षोडशी पूजा में यह साधक भगवती रूपी कन्या या स्त्री को कारण वारि यानी मद्य अर्पण करते हैं और स्वयं भी प्रसाद रूप में इतनी अधिक मद्य पीते हैं कि इन्हें अपना होश तक नहीं रहता। पीत्वा-पीत्वा पुनर्पीत्वा पीत्वा पतति भूतले। इतनी पियो कि पृथ्वी पर गिर पड़ो। यह इनका मूल मन्त्र होता है। मद्य पीने से मनुष्य अपने होश हवास खो बैठता है, उसे अपने शरीर की सुधि नहीं रहती और यह भी सत्य है कि स्त्री संभोग में जो विषयानन्द आता है, वह परम्मात्मा से आत्मा के मिलने के परमानन्द से कुछ ही कम है। स्त्री पुरुष के संभोग के समय जो चरम आनन्द की स्थिति होती है, उसे विषयानंद की संज्ञा दी गई है। आप कोई वस्तु खाते

हैं और उस समय आपका ध्यान या मन कहीं और है तो आपको उस वस्तु का स्वाद या उससे आने वाले आनन्द का पता नहीं चलेगा। इसी प्रकार आप कोई मधुर संगीत सुन रहे हैं। यानी संगीत बज रहा है या कोई गायक गा रहा है परन्तु यदि बीच में आपका ध्यान कहीं और चला जाता है, तो उस संगीत का आनन्द आपको नहीं आयेगा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भोगों का भी आनन्द लेने के लिये ज्ञानेन्द्रिय भोग्य वस्तु और आपके मन का एकाग्र होना आवश्यक है। किसी भी नशीली वस्तु के सेवन से शरीर के तन्तुओं में एक विशेष प्रकार की तीव्रता आ जाती है और मद्य में यह प्रभाव है कि शरीर व मन की अच्छी, बुरी प्रवृत्तियों को भी उभार देती है। क्रोधी व्यक्ति के क्रोध को, कामी व्यक्ति के काम को इसी प्रकार उस व्यक्ति के शरीर व मन में बसने वाले गुणों व दुर्गुणों को उभार देती है। विषयानन्द को परमानन्द का सहोदर बताया गया है। जिस समय संभोग क्रिया की चरम परिणति होती है, उस समय कुछ क्षणों के लिये प्रतीत होता है कि परमानन्द प्राप्त हो गया। क्योंकि यह क्षणिक होता है, नाशवान अस्थायी है और इससे शरीर व मन की हानि अवनति होती है, इस कारण सज्जन पुरुषों ने, महापुरुषों ने इसे हेय माना है। कुण्डलिनी शक्ति जहां सोई पड़ी है योनी व लिंग की इन्द्रियां उस स्थान के सबसे समीप हैं। हो सकता है किसी योगी साधक की कुण्डलिनी शक्ति स्त्री संभोग करते समय किये गये जप ध्यान आदि क्रियाओं के करने से जागृत हो गयी हो और उसने तन्त्र में वाम मार्ग का चलन प्रारम्भ कर दिया हो। और बाद में इस प्रकार की विचारधारा के योगी साधक योग सम्बन्धी सफलता पाने के लिये व कुछ इन्द्रिय सुख की लालसा से इसमें सम्मिलित हो गये हों। यों तो अच्छे बुरे सभी प्रकार के लोग सभी सम्प्रदायों में होते हैं परन्तु तान्त्रिकों के नाम से आज आम लोग यही जानते हैं कि यह पूरी तरह से वाम मार्गी लोगों की ही जमात है।

बुद्ध धर्म के आने से पहले भारतवर्ष में भी मांस खाने का आम रिवाज था और यज्ञों में पशुबलि व कहीं-कहीं नरबलि तक दी जाती थी। बलि मांस को सब लोग यहां तक कि उस समय का ब्राह्मण ऋषि वर्ग भी निसंकोच ग्रहण करता था। सुरा का भी समाज में और पूजा यज्ञ आदि कार्यों में प्रचलन था। असुर कही जाने वाली जातियों में तो सारी पूजा उपासना मद्य मांस

जैसी वस्तुओं के द्वारा ही होती है। और यह भी सर्व विदित है कि असुरों के पास कितनी ही विलक्षण आसुरी शक्तियां थीं, जो चाहे विध्वंसक ही हों, परन्तु इससे यह तो साबित हो ही जाता है कि मद्य मांस सुरा सुन्दरी को लेकर की जाने वाली तांत्रिक साधनाओं से अलौकिक सिद्धियां तो मिल ही सकती हैं। इसका साधन करने वाले लोग आसुरी शक्तियों पर अधिकार रखने, नियंत्रण करने में सफल होते पाये गए हैं। अहं ब्रह्मास्मि और शिवोहं यानी मैं ब्रह्म हूं या मैं शिव हूं, यह सिद्धांत हमारे शास्त्रों में एक मान्य सिद्धांत के रूप में प्राचीनकाल से ही प्रतिपादित है, परन्तु यह बहुत कठिन मार्ग है। अपने में शिवत्व की भावना का आरोपण भी यदि पूरी तरह से कोई करले, तो वह शिवरूप ही हो जाता है। वाम मार्गी तांत्रिक साधनाओं में अपने शरीर में शिवत्व का और नारी शरीर में शक्ति तत्व का आरोपण करके अपने उस विश्वास को पक्का करता है। वाम मार्ग में एक चक्रानुष्ठान किया जाता है जिसे भैरवी चक्र भी कहते हैं। इसमें कुछ पुरुष साधक तथा उतनी ही स्त्री साधिकायें सम्मिलित होती हैं। कोई बाहर का आदमी जो इनके सिद्धांतों में विश्वास नहीं रखता उपस्थित नहीं रहने दिया जाता। ये लोग स्त्री साधिकाओं की शक्ति रूप में स्थापना करके उनका पूजन करते हैं और कारण वारि (मद्य) का भोग लगाते हैं। प्रसाद रूप में सब साधक उसे पान करके शिवत्व को प्राप्त हो जाते हैं। तब वे सब नग्न हो जाते हैं। शक्तियों (स्त्रियों) के अधोवस्त्र एक स्थान पर एकत्र कर दिए जाते हैं। जिस शिव (पुरुष) के हाथ में जिस स्त्री (शक्ति) का वस्त्र आ जाये वही उसकी उस अनुष्ठान के लिए शिव शक्ति होती है। वह शिवरूप पुरुष अपनी शक्ति को साथ लेकर मद्यपान करता है तथा काम क्रीड़ा, रास क्रीड़ा, करने में सब के साथ सामूहिक रूप से निमग्न होकर विषयानन्द रूपी परमानन्द की प्राप्ति करता है। उन लोगों का कहना है कि काम वासना की प्रवृत्तियों को बलपूर्वक शमन करने से वे उतने ही उग्र रूप से और अधिक मात्रा में जाग्रत होती हैं। इससे उनकी पूर्ति करके उनका उपराम हो जाता है और फिर इस अनुष्ठान में कामवासना न रहकर शिवत्व की भावना उत्तरोत्तर प्रबल होती जाती है।

अघोरपंथ की साधना में घृणा के पाश से मुक्त होने पर अधिक जोर दिया गया है और भय भाव से भी मुक्ति मिलती है। इसमें श्मशान में बैठ-

कर साधना करना, शव पर बैठकर साधना करना, शव मांस ग्रहण करना, विष्ठा, मूत्र, कीचड़ जैसे घृणित समझे जाने वाले पदार्थों में भी समभाव रखना और ऐसे मलिनवेश व रौद्र भेष में रहना जो शिवजी के गणों का शास्त्रों में वर्णित है आदि बातें मुख्य हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि जीव के अष्ट-पाशों में लज्जा घृणा भय तीन मुख्य पाश हैं। सब में उस चेतना तत्व का निवास है और परमार्थ साधन करने वाले को संसार के सभी जीवों व पदार्थों में समभाव रखना चाहिए। अन्य सम्प्रदायों में इसका अभ्यास अपने-अपने ढंग से कराया जाता है। इस सम्प्रदाय में इसके लिए बड़े उग्र साधन हैं जो देखने सुनने में बड़े भयानक और वीभत्स प्रतीत होते हैं. परन्तु देखा यह गया है कि इनसे अलौकिक सिद्धियां चाहे वे निम्न कोटि की ही हों, बहुत शीघ्र प्राप्त हो जाती हैं।

श्मशान एक ऐसा स्थान होता है जहां जाते ही संसार की नश्वरता का आभास तत्क्षण होता है, संसार से वैराग्य की भावना एकदम जाग्रत होती है, भोजनान्ते मैथुनान्ते श्मशानान्ते च या मते। सामते सर्वदा चेतसात् नरो नारा-यणा भवेत्। भोजन के उपरान्त पेट भर जाने पर जिस प्रकार भोजन से उप-राम हो जाता है, मैथुन कर्म करने के बाद उस कर्म से तबीयत हट जाती है और जिस प्रकार श्मशान में किसी दाहकर्म में जाने के बाद इस संसार से वैराग्य हो जाता है; तो शास्त्रकार कहता है कि जिस प्रकार की यह मति या बुद्धि थोड़ी देर के लिए होती है उसी प्रकार की बुद्धि यदि सदा बनी रहे तो यह नर साक्षात नारायण हो जाय। श्मशान में जाकर साधना करने का यही अभिप्राय होता है कि यहां पर संसार से वैराग्य भावना का उदय होता है और मन यदि एक बार इस संसार की मोह माया से हट जाय तो दूसरी ओर जल्दी लग जाता है। दूसरा लाभ यह होता है कि शमशान में जाने से भय का नाश होता है। श्रीरामकृष्ण परमहंस जी अपने साधनकाल में रात के बारह बजे श्मशान में जाकर नग्न होकर बैठते थे और अपनी शक्ति साधना करते थे। श्मशान में बहुत सी प्रेतात्मायें निवास करती हैं। उनका पार्थिव शरीर तो नहीं होता परन्तु सूक्ष्म शरीर होता है। यह वह आत्मायें होती हैं जिनकी वासनायें अतृप्त रह जाती हैं जिनकी गति नहीं हो पाती या अकाल मृत्यु हो गई होती है। उन्हें प्रेत योनी में रहना पड़ता है और ऐसी अधिकतर आत्मायें शमशान में ही

वास करती हैं। ऐसी प्रेतात्माओं के शरीर नहीं होता तो मुख आदि इन्द्रियां भी नहीं होतीं और वे कुछ खा पी नहीं सकतीं। परन्तु उनकी इच्छित वस्तु मिलने पर उन्हें तृप्ति अवश्य होती है और वे इस प्रकार की वस्तुयें उन्हें अर्पण करने वाले पर शीघ्र प्रसन्न भी हो जाती हैं। नहीं तो वे तंग करती हैं और कमजोर आत्मशक्ति वाले लोग तो इन भयावह क्रियाकलापों से डर कर बेहोश हो जाते हैं। कभी-कभी तो उनके हृदय की गति रुक कर मृत्यु भी हो जाती है। श्रीरामकृष्ण जी (उस काल में उनका नाम गदाधर था) भी इसी लिए उन प्रेतात्माओं की वासना शान्ति के लिए अपने साथ एक खप्पर या हंडिया में उनको प्रसन्न करने वाली वस्तुयें ले जाते थे और उसे शमशान में एक स्थान पर रख देते थे। वह पात्र वहां से किसी वृक्ष की ओर उड़ जाता था और प्रेतात्मायें शान्त हो जाती थीं और उनको शान्ति से अपना भजन करने देती थीं। श्रीरामकृष्ण जी को तो प्रेतात्मायें सिद्ध करनी नहीं थीं। उनको तो अपना साधन निर्विघ्न करना था। परन्तु अन्य शमशान साधक प्रेतात्माओं को इसी प्रकार भेंट आदि देकर सिद्धकर लेते हैं और फिर उनके द्वारा अपने बहुत से स्वार्थ सिद्ध करते हैं। कुछ आत्मायें भूतकाल की तथा वर्तमान काल की बातें ठीक बता देती हैं। कुछ अच्छी शुद्ध आत्मायें जो श्मशान में नहीं रहतीं, भविष्य के बारे में ज्ञान दे देती हैं। शमशान साधक जो भूत प्रेत सिद्ध करते हैं उनकी गति नहीं होती। वे उसी प्रेत योनी में जाते हैं। उनकी मृत्यु के समय वे ही प्रेत मल, मूत्र, विष्ठा जैसी घृणित वस्तुएं उनके मुख में भर देते हैं।

लज्जा घृणा भय कुल शील जाति मान अभिमान यह अष्टपाश हैं। इन्हीं से मुक्त कराने के लिये भिन्न सम्प्रदायों में उनके प्रवर्तकों ने तरह तरह के साधन निर्धारित किये हैं। श्रीरामकृष्ण परमहंस जी शमशान में या पंचवटी में सारे वस्त्र उतार कर, यहां तक कि जाति सूचक जनेऊ भी उतार कर भजन करते थे। एक हाथ में सिक्के, दूसरे में कुछ मिट्टी के ढेले लेकर दोनों को गंगाजी में फेंक देते थे। इस भावना को दृढ़ करने के लिये कि दोनों ही समान हैं। अपवित्र स्थान को साफ करना, भिखारियों तक की झूठन को प्रसाद रूप में ग्रहण करके और इसी प्रकार की साधनाओं से अष्ट पाशों से मुक्ति पाई जाती है। संसार में भांति भांति के लोग हैं और भांति भाति के

पन्थ हैं। जो जिसे अच्छा लगता है वह उसी की ओर आकर्षित होता है। रास्ते सब उस ईश्वर की ओर ही ले जाने वाले हैं। कोई सुगम कोई दुर्गम हो सकता है। किसी को दुर्गम मार्ग ही पसन्द होता है और कोई मार्ग ऐसा भी हो सकता है कि जिसमें मार्ग के प्रलोभन मंजिल तक पहुँचने की इच्छा को ही समाप्त कर सकते हैं। इसलिये सही मार्ग चुनना चाहिये। महाजनो येन गत: स पन्था। जिस मार्ग पर चल कर महापुरुषों ने लक्ष्य की प्राप्ति की है वही मार्ग सही है।

शाक्त तन्त्र के अन्तर्गत वाम, अघोरी, वामाचारी, कौलाचारी व कापालिक सम्प्रदाय हैं, उन सबकी साधानायें गूढ रहस्य से भरी हुई तामसिक क्रियाओं से युक्त होती हैं। वाम मार्ग की साधनाओं में चक्रानुष्ठान, शव साधना, चिता साधना मुख्य साधनायें हैं। इनसे अलौकिक सिद्धियां बहुत शीघ्र प्राप्त हो जाती हैं परन्तु इनमें प्राणों तक का खतरा रहता है। एक तो इनमें गुरु के निर्देशन की पूरी आवश्यकता है। दूसरे इन साधनाओं को करने से पहले मन्त्र अभ्यास, कुण्डलिनी, योग ध्यान आदि के द्वारा इतना अधिक आत्म बल इकट्ठा कर लेना चाहिये कि भयभीत न हों और साधना का फल जिस रूप में भी सामने आये उसे ग्रहण करने की शक्ति शरीर, मन व आत्मा रूपी पात्र में हो। नहीं तो साधक विक्षिप्त हो जाता है, उस निधि को संभाल नहीं पाता या कभी-कभी प्राणों तक की आहुति भी देनी पड़ती है। अभी हाल में ही एक ऐसे ही साधक की मृत्यु इसी प्रकार की साधना करते समय हो गई थी जिसका विवरण मनोहर कहानियाँ नाम की पत्रिका में छपा था।

तांत्रिक साधना का राजमार्ग राजयोग की पद्धति से साधना करना ही अधिक श्रेयस्कर है जिसमें साधक गुरु के निर्देशन में चाहे धीरे-धीरे ही आगे बढता हो, पर पथभ्रष्ट होने की आशंका नहीं होती और इसकी क्रियायें भी सात्विक होती हैं। प्राणायाम के सीधे, सरल अभ्यासों के द्वारा यम नियम का पालन करते हुये स्वांस सुरति पर मंत्र जप करते हुये शनैः शनैः एक-एक चक्र को पार करते हुए साधक आगे बढ़ता जाता है। जिस प्रकार रीढ की हड्डी के अन्तर्गत सात मुख्य चक्र हैं, उसी प्रकार इस जीव के सात शरीर हैं। आप चाहें तो भी इन शरीरों में अपने को नहीं बदल सकते, परन्तु कुण्डलिनी योग का साधक जब शरीर के अन्दर के चक्रों को पार कर लेता है, तो उसको यह शक्ति प्राप्त हो जाती है। उसकी सभी इन्द्रियों की शक्ति बढ़ जाती है। जैसे हम

अपने इस स्थूल शरीर के चर्म चक्षुओं के द्वारा अपने सामने के दृश्यों को अधिक से अधिक क्षितिज तक देख सकते हैं और उन्हीं स्वरूपों को देख सकते हैं जो हमारी तरह स्थूल शरीरधारी हैं। परन्तु यदि हमारी कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार से उठकर स्वाधिष्ठान चक्र तक भी पहुंच जाती है तो हमें कुछ ऐसे लोक की आत्माओं के दर्शन होने लगते हैं जो हमसे ऊपर के लोक के निवासी हैं। हमें काफी दूर तक दिखाई देने लगता है। अन्तर्चक्षुओं से काफी दूर के दर्शन सुलभ हो जाते हैं। इसी प्रकार हमारे कानों के श्रवण यंत्र जो बहुत पास की आवाज ही सुन सकते हैं, दूर तक की ध्वनियों को सुनने में सक्षम हो जाते हैं और बहुत सी ऐसी ध्वनियां जिनकी फ्रीक्वेन्सी यानी ध्वनि तरंग गति स्थूल कानों को सुनाई नहीं दे सकती, सुनाई देने लगती है। हमारे कानों का यंत्र २००० से १५००० तक गति की ध्वनियों को ही सुनने की क्षमता रखता है। परन्तु जैसे-जैसे साधक साधना में आगे के चक्रों की ओर बढ़ता जाता है, उसे वे ध्वनियां भी सुनाई देने लगती हैं जो इससे कम या ज्यादा गति के वायुमण्डल में रहती हैं। जैसे आप किसी रिकार्ड को बजायें और उसको निश्चित गति से अधिक या कम पर बजायें तो उसमें से चिर-फिर की आवाज आयेगी आपकी समझ में कुछ नहीं आयेगा। एक झींगुर की झंकार आपको झंकार जैसी सुनाई देती है, परन्तु दूसरे झींगुर के लिए जिसकी कर्णेन्द्रिय उसी फ्रीक्वेन्सी पर सैट हैं वे ध्वनियां हैं अर्थपूर्ण हैं। कहने का तात्वर्य यह है कि जैसे-जैसे साधक अन्तर अभ्यास में मणि पूरक, अनाहत आदि चक्रों को पार करता जाता है, उसका अतीन्द्रिय ज्ञान बढ़ता जाता है। वह सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करके अदृश्य होकर हवा में उड़ सकता है तत्काल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच सकता है। इस प्रकार के सिद्ध योगी हुये हैं और कदाचित अब भी तिब्बत, हिमालय जैसे स्थानों में हों। इस प्रकार के सिद्ध योगी जन क्योंकि संसार से विरक्त होते हैं, अपने चमत्कारों का, अपनी अलौकिक सिद्धियों का प्रदर्शन नहीं करते। अनायास आवश्यकता वश किसी चमत्कार का प्रदर्शन हो जाने पर ही वह दूसरों की दृष्टि में आ जाता है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के जीवनवृत्त से हमें पता चलता है कि एक बार वे शरीर से अपने शिष्यों के बीच में समाधिमग्न थे और उसी समय वे काफी दूर मां के उत्सव में भी सम्मिलित हुए थे तथा वहां पर उपस्थित लोगों ने उन्हें देखा था।

पांचवां अध्याय

श्री महा लक्ष्मी मंत्र सिद्धि की विधि

हमारे शास्त्रों में जन कल्याण और विपत्ति निवारण के लिए बहुत से यंत्र-मंत्र-तंत्र-जप अनुष्ठानों का वर्णन है जिन्हें गुरु के निर्देशन में विधिपूर्वक करने से सफलता व सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है। यहां एक अनुभव सिद्ध लक्ष्मी मंत्र का अनुष्ठान बताया जा रहा है। संसार में रहने वाले गृहस्थ जनों को लक्ष्मी की आवश्यकता पग-पग पर होती है और प्रत्येक मनुष्य लक्ष्मी की चाहना में रहता है। तो कौन नहीं चाहेगा कि उसे लक्ष्मी की प्राप्ति न हो। सबसे पहले तो यह बता देना जरूरी है कि नीचे लिखे प्रयोग को सिद्ध करने से ऐसा नहीं है कि लक्ष्मी छप्पर फाड़कर अनायास प्रकट हो जाए या बिना कुछ करे धरे छप्पन करोड़ की चौथाई आपको मिल जाये। मिलेगी परिश्रम से ही। पहला परिश्रम तो आप को मंत्र सिद्ध करने का ही करना पड़ेगा। आपने देखा होगा कि जीवन संघर्ष में बहुधा धन कमाने के लिए बहुत परिश्रम करना होता है और फिर भी कभी-कभी सफलता नहीं मिलती। कभी-कभी हानि भी हो जाती है और परिश्रम निष्फल जाता है। इस मंत्र को सिद्ध कर लेने पर आपका परिश्रम निष्फल नहीं होगा और सफलतायें सरलता से मिलेंगी। सफलता दिलाने वाले अवसर स्वमेव आपके सामने आयेंगे।

मन्त्र जप अनुष्ठान आदि करने के लिए श्रद्धा तथा विश्वास का होना बहुत आवश्यक होता है और इसके लिए बताने वाले पर यानी गुरु पर श्रद्धा होना अनिवार्य है। यदि कोई भिक्षुक आपसे कहे कि उसको लक्ष्मी मन्त्र आता है तो क्या आपको विश्वास होगा ? नहीं होगा। इसलिए उचित है कि अपने तथा अपने गुरु के बारे में कुछ विवरण यहां दे दिया जाये। इस को आत्म प्रशंसा न समझ कर आप इसी संदर्भ में लें कि यह आपकी श्रद्धा को बलवती करने के लिए है। मेरे गुरु श्री आनन्द शरण जी स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के शिष्य थे और एक रियासत के दीवान पद से सेवा निवृत्त हुए थे और मैंने

१७ वर्ष की अवस्था से २५ वर्ष की अवस्था तक उनकी शरण में रहकर परमार्थ साधना की थी। अभी कुछ वर्ष पूर्व १९७५ में ६० वर्ष की आयु पूर्ण हो जाने पर जीवन बीमा निगम से सेवा निवृत हुआ हूं। इस लक्ष्मी मन्त्र से मुझे क्या लाभ हुआ इसको संक्षेप में बताने के लिए इतना ही काफी है कि सेवा निवृत्ति के समय मेरा मासिक वेतन २५०० रु० से ऊपर ही था। मैंने मां से इतना ही मांगा कि "सांई इतना मांगियो जामें कुटम समाय। मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय।" परमार्थी होने के कारण मन की शांति और सन्तोष धन को प्राथमिकता दी जो निधि मुझे मिल गई है। यदि मांगता तो कह नहीं सकता कि अपार धन सम्पत्ति भी मिलती या नहीं परन्तु अब तक की संसार यात्रा आर्थिक दृष्टि से सरल व सुगम रही। अब मैं भारतीय ज्योतिष, सामुद्रिक, अंक विद्या, रमल, स्वप्न, शकुन, प्रश्न, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, राजयोग, स्वरोदय आदि विद्याओं की शिक्षा पत्राचार द्वारा लोगों को घर बैठे उपलब्ध कराता हूं जिससे लोग अपनी इन प्राचीन विद्याओं को जानें-पहचानें उनका प्रचार प्रसार हो। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के पाठ्यक्रम में इस प्रकार के ही बहुत से अनुभूत प्रयोग विस्तार से बताये गए हैं।

मन्त्रानुष्ठान में सबसे पहले मन्त्र की दीक्षा ली जाती है। मैं अपने सभी मन्त्रों की दीक्षा अपने गुरु के भी गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के द्वारा ही दिलवाता हूं। मेरे गुरुदेव ने मुझे भी ठाकुर परमहंसजी को ही गुरु रूप में मानने का आदेश दिया था। दीक्षा परमहंसजी के चित्र को सामने रखकर ले लेनी चाहिए। श्री महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र सामने रखकर उसकी षोडशोपचार पूजा करके अंगन्यास, करन्यास, ध्यान मुद्रा आदि करके नियमपूर्वक मन्त्र का जाप किया जाता है। एकान्त स्थान में धूप-दीप जलाकर पवित्र आसन पर बैठकर इस लक्ष्मी मन्त्र की कम से कम १६००० आवृत्तियां करनी होती हैं। यह यदि ४० दिन के अन्दर हो जाये तो उत्तम रहता है। इसके बाद इस संख्या का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन, उसका दशांश ब्राह्मण भोजन कराके पुरश्चरण सम्पूर्ण होता है और मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तब मंत्र जाप करते समय दीपक की लौ या हवन की ज्योति की ओर ध्यान लगाते समय वह ज्योति या लौ नेत्रों के द्वार से शरीर के अन्दर प्रवेश करती प्रतीत होती है। साधना करते समय सात्विक आहार, ब्रह्मचर्य

श्री महालक्ष्मी

पालन, भूमि पर शयन आदि नियमों का पालन आवश्यक होता है। एक निश्चित संख्या, कहिये ३००० के लगभग, नित्य जप करना चाहिए। शुद्ध घृत का दीप साधना के समय निरन्तर जलते रहना चाहिए। अखण्ड दीपक का प्रवन्ध हो सके तो अति उत्तम है। साधना के बीच में अलौकिक दर्शन, ध्वनियों का श्रवण व अन्य अनुभव होते हैं। देवी देवताओं के दर्शन होते हैं। चित्र में दी हुई लक्ष्मीजी की छवि प्रकाशमय हो जाती है। हो सकता है कि किसी प्रकार के विघ्न बाधा भी उपस्थित हों और आपको अनुष्ठान से विचलित करने का प्रयास करें। परन्तु मन्त्र जप पर बैठने के बाद उसे उस दिन की संख्या पूरी किये बिना किसी भी हालत में उठना नहीं चाहिए।

ॐ कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्रां ज्वलन्तीम् तृप्ताम् तर्पयन्तम्। पद्मेस्थितां पद्म वर्णाम् तामिहोप ह्वयेश्रियम् ॥

उपरोक्त मन्त्र श्री सूक्त के १६ मन्त्रों में से एक मन्त्र है। श्री सूक्त का पाठ दिवाली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन के समय किया जाता है। इस मंत्र के सिद्ध कर लेने पर न केवल दरिद्रता का नाश होता है वरन सुख, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, प्रखर बुद्धि भी प्राप्त होती है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसका थोड़ा बहुत जाप करते रहना चाहिए और महारात्रि, काल रात्रि, मोहरात्रि यानी होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के समय भी जाप करके उसे दुहराते रहना चाहिए और मन्त्र के साथ यथा शक्ति हवन भी करते रहना चाहिए। इससे आपको आपकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की कमी कभी नहीं रहेगी। जब भी आपको अपनी किसी उचित आवश्यकता के लिए धन की कमी महसूस हो तो इस मन्त्र की कुछ आवृत्तियां कीजिए, धन आगमन का कोई न कोई साधन तुरन्त बन जायेगा और आप अनुभव करेंगे कि किस प्रकार से दैवी सहायता प्राप्त होती है। आप स्वयं चमत्कृत होंगे। इसका अनुभव मैंने स्वयं अपने जीवन में कितनी ही बार किया है।

जैसा कि पिछले अध्याय में विस्तार से बताया गया है किसी भी मन्त्र को सिद्ध करने के लिये जिन प्रारम्भिक बातों की आवश्यकता होती है उसको फिर ध्यान से एक बार पढ़ जाइये। श्रद्धा, धैर्य, गुरु भक्ति, शरीर शुद्धि, मन शुद्धि, द्रव्य शुद्धि, क्रिया शुद्धि, आसन जप के नियम आदि की बातें हृदयंगम कर लीजिए और उनका पालन करिये। गुरु भक्तिविहीनस्य, तपो विद्या व्रतं

जपम व्यर्थं सर्व । शवस्यैव, नानालंकार भूषणम् । बिना दक्षिणा दिये लिया गया मन्त्र या ज्ञान, बेमन से बताया गया मन्त्र तन्त्र फलदायक नहीं होता। इसलिए गुरु को दक्षिणा द्वारा या सेवा से या खुशामद से प्रसन्न करके ही ज्ञान लेना चाहिए तभी वह फलदायक होता है। आजकल विश्वविद्यालयों में जो विद्यार्थीगण अपने गुरुओं का मजाक, घेराव, अपशब्द यहाँ तक कि मारपीट तक कर देते हैं तो उन्हें वैसी ही विद्या प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त मन्त्र के वर्णों पदों का न्यास शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में उसकी धारणा करना, प्राणायाम के द्वारा मन्त्र की शक्ति को बढ़ाना, इष्ट देवता का ध्यान, उनके भिन्न-भिन्न आयुधों की हाथ की उंगलियों से मुद्रा बनाना। यह सब जहाँ तक हो सके करना चाहिए। मुद्रा बनाना लिखकर नहीं समझाया जा सकता उसे आप अपने यहां के ही किसी पण्डित से सीखने का प्रयत्न करें। मुद्रा नहीं बना सकें तो उसका ध्यान ही करें। आवाहन विसर्जन दशांश हवन, शतांश तर्पण मार्जन या तो नित्य करते जायें या अंत में इकट्ठा कर दें। हवन में जौ, सफेद तिल, चावल, शुद्ध घी, शक्कर या चीनी यथा शक्ति सामग्री तथा कुछ मेवा व धूप मिला लें। प्रसाद नैवेद्य मिष्ठान्न बरफी बतासे या किसी श्वेत रंग की मिठाई का लगायें। माला कमल गट्टे की या तुलसी की होनी चाहिए। सफेद डोरे में पिरोई गई प्रत्येक मनके के बाद गांठ लगी हुई हो। कमल गट्टे की माला २७ मनकों की हो, तुलसी की माला १०८ मनकों की हो। सुमेरु का मनका बड़ा होता है और गिनती में नहीं लिया जाता।

पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठना चाहिए। यदि पूर्व की ओर मुख करके बैठो तो देवी का चित्र अपने सीधे हाथ की ओर रखो जिससे देवी उत्तराभिमुख रहेंगी। यदि उत्तर की ओर मुख करके बैठो तो चित्र को अपने बांई ओर रखना चाहिए जिससे देवी का मुख पूर्व की ओर रहे। दक्षिण दिशा की ओर देवी का मुख नहीं होना चाहिए और पूर्व की ओर सर्वोत्तम, उत्तर की ओर उत्तम तथा पश्चिम दिशा की ओर मुख सामान्य होता है। पूजा के लिए उपयुक्त स्थान गौशाला, गुरु का घर, देव मंदिर, पुण्य क्षेत्र, तीर्थस्थान, नदी का किनारा, पर्वत की चोटी, गुफा, बेलपत्र, पीपल, अशोक, वट वृक्ष के नीचे का स्थान, घर का एकान्त कमरा या स्थान होना चाहिए। समय ब्रह्म मुहूर्त का प्रातः चार बजे के लगभग से सूर्योदय तक अथवा आधी रात के बाद

का समय सबसे उपयुक्त होता है। परन्तु यदि स्थान शान्त एकान्त हो तो प्रातः मध्याह्न, सायं काल का समय भी ठीक रहता है। वस्त्र सूती रेशमी या ऊनी सफेद रंग के पहनें। सूती हों तो सिले हुए या फटे हुए न हों जैसे धोती और चादर वगैरा सिले हुए नहीं होते। बिल्कुल नया हो तो एक बार धोकर पहनना चाहिए। पाजामा या पैन्ट आदि पहनकर जप नहीं किया जाता।

सबसे पहले मन्त्र की दीक्षा लेनी चाहिए। मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर देवी के और हो सके तो गुरुदेव श्रीरामकृष्ण परमहंस जी के चित्र के सामने रख दो। उसके बाद तीन बार आचमन करो और शरीर की शुद्धि कर लो। ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा, ॐ महासरस्वत्यै नमः स्वाहा, ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा, इन मन्त्रों को कहकर बांये हाथ से सीधे हाथ में जल लेकर आचमन करो और ओ३म् हिरण्यवर्णा नमः कहकर धो लो। उसके बाद ॐ अपवित्रो पवित्रोवा मंत्र कहकर अपने मस्तक पर जल डालो और आसपास की पृथ्वी पर छिड़को। यह जल कुशा से या पान के पत्ते से छिड़कना चाहिए। पांच बार रेचक पूरक कुम्भक करके लक्ष्मी मंत्र का जाप पांच बार करो। सांस को धीरे-धीरे अन्दर भरो, कुछ देर रोको और धीरे-धीरे बाहर निकाल दो। यह एक प्राणायाम होता है। इस एक प्राणायाम में पूरे लक्ष्मी मंत्र को एक बार मन में प्राणों पर जाप करो और ऐसा पांच बार करो। इसके बाद हाथ में पुष्प अक्षत जल तुलसीदल लेकर प्रथम दिन अपना नाम गोत्र तिथि वार नक्षत्र मास पक्ष देवताओं की साक्षी लेकर पहले बताया हुआ संकल्प बोलो। यह संकल्प पिछले पाठों में "ॐ विष्णु विष्णु विष्णु। अथ श्री श्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविशंतितमे कलियुगे···इस प्रकार दिया हुआ है। संस्कृत में नहीं पढ़ सको तो हिन्दी में ही संकल्प लो कि मैं अमुक समय अमुक स्थान पर अपने कल्याणार्थ श्री महालक्ष्मी मंत्र को सिद्ध करने का अनुष्ठान करता हूं। ऐसा कहकर हाथ में लिये हुये पदार्थ जल अक्षत पुष्प आदि को नीचे रखे किसी पात्र में छोड़ दो। यदि शिखा हो तो शिखा बांध लो। नहीं तो एक पवित्री कुशा की बनी हुई अपने दाहिने कान पर रखकर लपेट लो। नया यज्ञोपवीत धारण कर लो। माथे पर केसर का या श्वेत चन्दन का तिलक लगा लो। इसके बाद देवी का आवाहन करो और पिछले अध्यायों में बताई

गई विधि से षोडशोपचार विधि से या पंचोपचार विधि से माता लक्ष्मी का पूजन करो ।

श्री महालक्ष्मी मंत्र के लिए महालक्ष्मी की षोडशोपचार पूजा विधि

शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहनें पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके पद्मासन या स्वास्तिकासन से कुशा या ऊन के आसन पर बैठें। आचमन और प्राणायाम के बाद गुरु का स्मरण करें । ॐश्री गुरुभ्यो नमः कह कर मस्तक झुका कर प्रणाम करो । मध्यमा अनामिका और अंगूठे को मिलाकर तत्वमुद्रा बनाकर नीचे लिखे मंत्र बोलते हुए शरीर के अवयवों को स्पर्श करते जाओ (१) ॐगुं गुरुभ्यो नमः कहकर बाँये कन्धे को स्पर्श करो (२) ॐ गँ गणपतये नमः कहकर दांये कंधे को स्पर्श करो (३) ॐ दुं दुर्गाये नमः कहकर बाँई जांघ का स्पर्श करो (४) ॐक्षँ क्षेत्रपालय नमः कहकर दाँई जांघ का स्पर्श करो (५) ॐश्री महालक्ष्म्यै अस्त्राय फट् कहकर दांई हथेली से बांये हाथ की कोहनी से हथेली तक तथा बांये हाथ की हथेली से दाहिने हाथ की कोहनी से हथेली तक स्पर्श करो । अन्तिम मंत्र ॐश्री महालक्ष्म्यै अस्त्राय फट् बोलते हुए तीन बार ताली बजाइये । इसके बाद अपने इष्ट मंत्र महालक्ष्मी मंत्र को बोलते हुए दशों दिशाओं का दिग्बन्धन करो । मुख से मंत्र पढ़ते जाओ और पूर्व दिशा की ओर, पूर्व उत्तर की ओर, उत्तर की ओर, उत्तर पश्चिम की ओर, पश्चिम; पश्चिम दक्षिण, दक्षिण दक्षिणपूर्व दिशा आकाश तथा पृथ्वी की ओर चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन किया जाता है । चुटकी बजाते हुए साथ-साथ इन दिशाओं की ओर प्रणाम भी करते जाओ । इसके बाद बायें पैर की ऐडी से तीन बार हलके से आधात करो । अनुष्ठान की निर्विघ्न समाप्ति के लिए, शीघ्र सिद्धि प्राप्ति के लिए, श्री काल भैरव की प्रार्थना करो । यह मंत्र बोलो, "तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पांत दहनापम । भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातु मर्हसि ।" इसके बाद दीपक की स्थापना करो । इसके बाद महालक्ष्मी का निम्नलिखित ध्यान मंत्र कहकर महालक्ष्मी का ध्यान करो ।

'ओ३म् अक्षस्रक् परशुं गदेषु कुलिषं पदमं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्ति मसिं च चर्म जलजं घण्टां सुरा भाजनम् । शूलं पाश सुदर्शनेच दधतीं हस्तै प्रसन्नाननां । सेवे सैरिभ मर्दिनींमिह महालक्ष्मी सरोजस्थितां ।"

प्रत्येक बार अपना लक्ष्मी मंत्र कहकर निम्न १६ उपचार से पूजा करो।

(१) आवाहनम् समर्पयामि। पंचपात्र से जल छिड़क दो और प्रत्येक उपचार के साथ जल छिड़कते जाओ। (२) आचमनं समर्पयामि (३) पाद्यं समर्पयामि (४) अर्घ्यं समर्पयामि (५) आचमनीयं समर्पयामि (६) स्नानं पचामृत सहितं समर्पयामि (७) वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि (८) यज्ञोपवीतं समर्पयामि (९) गन्धं समर्पयामि (१०) पुष्पं समर्पयामि (फूल माला अर्पण करो) (११) धूपं समर्पयामि (१२) दीपं समर्पयामि (१३) नेवैद्यं समर्पयामि (१४) नीराजनं समर्पयामि (१५) नमस्कारं समर्पयामि (१६) प्रदक्षिणां समर्पयामि। यह १६ उपचार हैं। इसमें नीराजन आरती उतारने को कहते हैं। नमस्कार में पुष्पांजलि होती है। उसके बाद एक परिक्रमा की जाती है जो सुविधा न हो तो अपने स्थान पर खड़े होकर घूम कर भी से की जा सकती है। प्रथम आवाहन मंत्र से देवी का आवाहन यानी बुलाया जाता है और स्थान ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की जाती है। (२) के द्वारा उनको आसन ग्रहण करने के लिए निवेदन किया जाता है (३) के द्वारा चरण पखारे जाते हैं (४) के द्वारा अर्घ्य दिया जाता है। प्रत्येक बार पंचपात्र से जल लेकर किसी दूसरे पात्र में डालते जाना चाहिए। (५) के द्वारा देवी के हाथ धुलाये जाते हैं। (६) के द्वारा स्नान कराया जाता है। चित्र पर जल नहीं डालते आचमनी से इधर-उधर छिड़कते जाते हैं। धातु की मूर्ति हो तो उसे पंचामृत से गंगाजल से शुद्ध जल से स्नान कराते हैं। (७) व (८) में कोई सूत का धागा कलावा मौली चुनरी वस्त्र अर्पण करते हैं। (९) से श्वेत चन्दन अक्षत (चावल के साबत दाने) हल्दी का चूर्ण, गुलाल, अबीर, सिन्दूर, काजल दूर्वादल विल्वपत्र आदि में से जितने पदार्थ हो सकें अर्पण किए जाते हैं। कुछ न हो तो सबके स्थान पर केवल अक्षतों से काम चला लिया जाता है। (१०) में पुष्प पुष्पमाला रत्नमाला सुगंधित दृव्य व (११) में धूप अगर बत्ती जलाकर उसके धूयें को चित्र की ओर प्रवाहित करो (१२) में दीपक की ओर अक्षत छोड़कर घण्टी बजाजो। शुद्ध घी का दीपक जिसमें सफेद रंग की रुई की बत्ती हो देवी के बांये भाग में रखो और उसकी ओर अक्षत छोड़कर घण्टी बजाओ। (१३) में नेवेद्य भोग प्रसाद अर्पण करो धेनु मुद्रा योनि मुद्रा तथा ग्रास मुद्रा का प्रदर्शन करो। घण्टी बजाकर आचमन कराओ हस्त प्रक्षालन कराओ ऋतुफल निवेदन

करो फिर ताम्बूल पुंगीफल (सुपारी पान) दक्षिणा द्रव्य अर्पण करके आरती उतारो पुष्पांजलि अर्पण करो। इसके बाद न्यास सहित श्रीसूक्त का पाठ करो। श्री सूक्त में केवल १६ मंत्र हैं। श्री सूक्त की पुस्तक बाजार में आसानी से मिल जाती है। **अंगन्यास निम्न प्रकार से हैं—**

श्री महालक्ष्मी मन्त्र का अक्षरन्यास—

ॐकांसोस्मितां नमः शिखायाम् ॐहिरण्य नमः दक्षिण नेत्रे, ॐप्रकारा-मार्द्रां नमः वाम नेत्रे, ॐज्वलन्ती नमः दक्षिण कर्णे, ॐ तप्तां नमः वाम कर्णे, ॐ तर्पयन्तीम् नमः दक्षिणनासापुटे, ॐ पद्मेस्थिताम् नमः वामनासापुटे, ॐ पद्मवर्णां नमः मुखे, ॐ तामिहोपह्व्येश्रियं नमः गुह्ये।

शिखायां कहकर सीधे हाथ के अंगूठे से शिखास्थान का स्पर्श किया जाता है। दक्षिणनेत्रे के साथ सीधी आँख पर, वामनेत्रे के साथ बाँई आँख पर, इसी प्रकार दाहिने कान, बाँये कान, दाहिने नथुने, बाँये नथुने पर, मुख पर, गुह्य स्थान की ओर केवल इंगित करते हैं। सीधे हाथ की उंगलियों के प्रथम पर्व से स्पर्श किया जाता है।

इसी मन्त्र का दिगन्यास—

ॐ कांसोस्मितां प्राच्यै नमः (पूर्व दिशा) ॐ हिरण्य आग्नेय्यै नमः, (अग्नि कोण पूर्व दक्षिण के बीच का), ॐ प्रकारामाद्रां दक्षिणायै नमः, ॐ ज्वलन्तीम् नैऋत्यै नमः (दक्षिण पश्चिम के मध्य), ॐ तृप्ताम् प्रतीच्यै नमः (पश्चिम दिशा), ॐ तर्पयन्तीम् वायव्यै नमः (पश्चिम उत्तर के मध्य), ॐ पद्मवर्णाम् ऐशान्यै नमः (उत्तर पूर्व के मध्य), ॐ तामिहोप ऊर्ध्वायै नमः (आकाश की ओर), ॐ ह्व्येश्रियम भूम्ये नमः (भूमि की ओर) उपरोक्त न्यास में मन्त्रों को बोलकर उनके सामने लिखी दिशाओं की ओर चुटकी बजाते हुए न्यास करो।

ॐ हिरण्यमये नमः हृदयाय नमः कहकर हृदय को स्पर्श करो। (सीधे हाथ की उंगलियों के प्रथम पर्व से)

ॐ चन्द्राय नमः शिरसे स्वाहा कहकर सिर (मस्तक) का स्पर्श करो। (सीधे हाथ की उंगलियों के प्रथम पर्व से)

ॐ रजतस्रजाये नमः शिखाये वषट् कहकर शिखा का स्पर्श करो। (सीधे हाथ के अंगूठे से)

ॐ हिरण्यस्रजाये नमः कवचाय हुम् कहकर दोनों हाथों से दोनों बाहुओं का स्पर्श करो। सीधे हाथ से बांई भुजा का और बांये हाथ से सीधी भुजा का मध्यमा प्रथम पर्व से।

ॐ हिरण्याये नमः नेत्रत्रायाय वौषट् कहकर सीधे हाथ की उंगलियों से दोनों नेत्रों का तथा मस्तक में तीसरे नेत्र स्थान का स्पर्श करो।

ॐ हिरण्यवर्णाय नमः अस्त्राय फट् कहकर बाँई हथेली पर सीधे हाथ से ताली बजाकर फट की ध्वनि निकालो।

करन्यास इस प्रकार हैं—

ॐ काँसोस्मितां अंगुष्ठाभ्यां नमः दोनों हाथों की तर्जनी से दोनों अंगुष्ठ-मूलों का स्पर्श करो।

ॐ हिरण्यप्रकारामाद्रीं तर्जनीभ्यां नमः कहकर दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनी उंगलियों का स्पर्श करो।

ॐ ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् मध्यमाभ्यां नमः कहकर दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनी उंगलियों का स्पर्श करो।

ॐ पद्मेस्थितां पद्म वर्णां अनामिकाभ्यां नमः कहकर दोनों अंगूठों से दोनों अनामिका उंगलियों का स्पर्श करो।

ॐ तामिहोपहव्येश्रियम् कनिष्ठकाभ्यां नमः कहकर दोनों हाथों से कनिष्ठिका उंगलियों का स्पर्श करो।

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामाद्रीं ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपहव्येश्रियम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः कहकर दोनों हाथों की हथेलियों से दोनों हाथों के करपृष्ठों को बारी-बारी से स्पर्श करो।

मन्त्र का अंगन्यास

ॐ कांसोस्मितां हृदयाय नमः। ॐ हिरण्यप्रकारामाद्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ज्वलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम् शिखाये वषट्। ॐ पद्मेस्थितां पद्मवर्णां कवचाय हुम्। ॐ तामिहोपहव्ये श्रियम् नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ कांसोस्मितां

हिरण्यप्रकारामाद्रीं ज्वलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मेस्थितां पद्मवर्णाम् तामिहोपह्व्येश्रियम् अस्त्राय फट् । इन मन्त्रों से शरीर के तत्सम्बन्धी अंगों का उपरोक्त प्रकार से ही स्पर्श करो । जैसा कि ऊपर के अंगन्यास में बताया गया है। हृदय का मस्तक का शिखा स्थान का बाहुओं का शरीर का तीनों नेत्र स्थानों का स्पर्श करो और फट् की ध्वनि निकालो ।

महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता मैय्या जय लक्ष्मी माता ।

आदि शक्ति कहें तुमको सुरगण हैं ध्याता । जय कमलालय वासिनि, हरीप्रिया कमले । काली गिरा समेते, जय लक्ष्मी विमले ।।०।। जय लक्ष्मी माता ।। इन्द्राणि रुद्राणि ब्रह्माणि तुम हो । सकल लोक की माता पालनहारि तुम हो ।।०।। जिस घर वास तुम्हारा उसका क्या कहना । रम्य भवन हैं उसके रत्न मणि गहना ।।०।। महानिशा में घर घर पूजा हो तेरी । जय कमले हरि भामिनि अब सुधि ले मेरी ।।०।। रिद्धि सिद्धि समेता बसियो मम घर में । यही प्रार्थना मेरी स्वीकारो उर में ।।०।। पूत कपूत भले हों पर तू है माता । यही सोचकर मुझ पर करुणा कर त्राता ।।०।। नहीं पाठ पूजा मैं जानू महतारी । केवल तव चरणों का हूं आश्रयकारी ।।०।। भक्ति भाव पूजा का ज्ञान नहीं मुझको । अनुचर की लज्जा का ध्यान रहे तुझको ।।०।। जय लक्ष्मी माता ।

इसके बाद माला की पूजा करो । इसके लिये पिछले अध्यायों में माला पूजा का जो मन्त्र ॐ महामाये महामाले आदि जो श्लोक मन्त्र है उसको पढ़ो । फिर माला को गोमुखी में रखकर इष्टदेवी का ध्यान करते हुए जप आरम्भ कर दो । जैसाकि पहले बताया है आरम्भ में जप जिह्वा से कण्ठ से करो । प्रतिदिन के लिए या प्रति बैठक के लिए अपनी सुविधा के अनुसार कुछ संख्या निर्धारित कर लो और वह पूरी होने पर माला को सिर से लगाकर जप समाप्त कर दो तथा निम्न श्लोक के साथ जप को देवी को अर्पण कर दो ।

गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहणास्मत्कृतं जपम् सिद्धर्भवतुमेदेवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।। इस मन्त्र का पुरश्चरण (सोलह हजार) मन्त्र संख्या का होता है । हवन यदि थोड़ा-थोड़ा नित्य करो या फिर इकट्ठा करो । नित्य करना हो तो आरती से पहले ज्योति जगाकर कर दिया करो । हवन में कुछ आहुतियाँ

पहले घी से ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा, ॐ वरुणाय नमः स्वाहा, ॐ रुद्राय नमः स्वाहा, ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा, ॐ आग्नये नमः स्वाहा, ॐ सोमाय नमः स्वाहा, ॐ बं बटुकाय नमः स्वाहा, ॐ क्लीं महाकाल्यै नमः स्वाहा, ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः स्वाहा ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा, ॐ ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्त-कारी भानु शशि भूमि सुतोबुधश्च गुरोश्च शुक्रो शनि राहु केतुवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु स्वाहा, इस प्रकार कुछ आहुतियाँ आरम्भ में घृत की दें फिर मंत्र पढ़कर अन्त में स्वाहा लगाते हुए मन्त्र से हवन करें और जितनी आहुतियाँ मन्त्र की दे सकें जितनी समय-सुविधा हो जितनी सामग्री हो उसके अनुसार नित्य का हवन करें। कुल दशांश हवन हो जाये इसका ध्यान रखें।

इसी प्रकार तर्पण में स्वाहा के स्थान पर तृप्यन्ताम् शब्द लगाया जाता है। पहले देवताओं को ॐ ब्रह्मा तृप्यन्ताम्, ॐ विष्णु तृप्यन्ताम्, ॐ रुद्र तृप्य-न्ताम् आदि उपरोक्त मन्त्रों के साथ तर्पण किया। उसके बाद मन्त्र के बाद तृप्यन्ताम् कहते हुए मंत्र के साथ तर्पण किया जाता है। हवन के अन्त में पूर्णाहुति से पहले कुछ आहुतियाँ इस प्रकार दी जाती हैं जो घृत से होती हैं। ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ मन बुद्धि चित्त अहंकाराय स्वाहा। बची हुई हवन सामग्री तथा घृत को अग्नि में छोड़ते हुए पूर्णाहुति की जाती है और ॐ पूर्ण मिदं पूर्णमिदः पूर्णतपूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णं मेवावशिष्यते कहते हुए पूर्णाहुति कर दो। हवन के अंतिम दिन या समाप्ति पर नारियल की सूखी गिरी जिसे गोला भी कहते हैं उसमें छेद करके घी भर लो और लाल या सफेद घुंघची के ग्यारह दाने डाल लो और पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णापुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहाइष मूर्ज शतक्रतो स्वाहा इति अग्नां पाणिद्वयेन प्रक्षिपेत् कहकर पूर्णाहुति करो। सोना तोलने के काम में जो रत्ती आती है उसे लाल घुंघची कहते हैं। ऐसी ही सफेद गोंगची होती है। वैद्यक की दवायें जहाँ मिलती हैं उस दुकान पर अत्तार के यहाँ से मिल जायेगी इसको संस्कृत में लक्ष्मणा जड़ी कहते हैं। यह हिन्दुस्तानी मनी प्लांट है। इसको घर में लगाना बहुत शुभ व लक्ष्मी के आगमन के लिए है। तंत्र में भी इससे कई उपाय बताए गए हैं। यह तुलसी की ही भाँति हर घर में नहीं लगती; इसकी बेल होती है पत्ते इमली के पत्ते की तरह होते हैं और स्वाद में मीठे होते हैं। सफेद रंग की

घोंगची को मिट्टी में बोने से आठ-दस दिन के बाद पौधा निकल आता है। परन्तु चिड़ियों से इसकी रक्षा करनी होती है क्योंकि मीठे पत्ते के लालच में चिड़ियाँ इसके छोटे पौधे को खा जाती हैं।

हवन सामग्री :—जौ से दूना चावल उससे दुगना सफेद तिल उससे दुगना भाग शक्कर (चीनी हो तो पीस लो) शक्कर के बराबर भाग घी उसमें थोड़ी सी धूप, मेवा या अष्टगन्ध मिला लो। अगर तगर कपूर केसर कस्तूरी गोरोचन लाल चन्दन सफेद चन्दन गूगल कपूर कचरी बालछड़ आदि सुगन्धित द्रव्य हवन सामग्री में मिला लो, जितनी श्रद्धा हो, जितनी आसानी से मिल जाये, प्रबन्ध कर लो।

समिधा :

हवन में प्रयोग के लिए आम अनार ढाक आक छोंकर पीपल की सूखी पतली टहनियाँ गिलोय की कुछ डालें लक्ष्मणा की कुछ शाखायें लेकर समिधा बनाओ। उनको पहले धोकर साफ कर लो। कीड़ों की खाई हुई मकड़ी का जाला लगी हुई न हों। लक्ष्मणा की डाली पुष्य नक्षत्र में तोड़ो जो जो मिले वही इकट्ठी कर लो।

पुष्पांजलि मंत्र पीछे दिया हुआ है उसको पूरा पढ़ सको तो श्रद्धापूर्वक आरती के बाद पुष्प समर्पित कर देते हैं।

तर्पण करते समय उकड़ू बैठा जाता है, पंजों के बल और दोनों हाथों को दोनों घुटनों के बीच में रखते हैं। तर्पण के लिए शुद्ध जल लिया जाता है, उसमें सफेद तिल चावल अक्षत सफेद पुष्प दूर्वा लक्ष्मणा के पत्ते डाले जाते हैं। तर्पण के बाद जल को पौधों में देते हैं, नाली में नहीं फेंकते। ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति कराना चाहिए, बाकी के लिए मछलियों को मन्त्र लिखी जौ के आटे की गोलियाँ खिला दी जाती हैं। मार्जन खड़े हो कर या बैठकर मन्त्र पढ़ते हुए जल के छींटे चारों ओर तथा अपने शरीर पर दूर्वा कुशा पान के पत्ते या हाथ से भी छिड़क सकते हो। अभिप्राय मन्त्र जप का ही है।

इस प्रकार आपको लक्ष्मी मंत्र सिद्ध करने की पूरी विधि बता दी गई है। इसको पूरे विधिविधान से किया जाये तो सफलता भी पूरी मिलती है। परन्तु यदि कहीं कुछ कमी रह जाए तो सफलता तो मिलती है, परन्तु कम तादाद में

मिलती है कुछ देर से मिलती है। जितना गुड़ डालो उतना ही मीठा होता है वाली उक्ति के अनुसार लाभ ही लाभ है, हानि कुछ नहीं। सबसे मुख्य तो पूरे मनोयोग के साथ मंत्र का जाप है। आगे पीछे के जो अन्य पुरश्चरण साधन हैं वे मन में श्रद्धा विश्वास के लिए हैं। अगर आप से कुछ भी न बन पड़े तो प्राणों पर मंत्र का जाप किसी भी शारीरिक स्थिति में रह कर करें, हर समय निरन्तर और जितनी अधिक संख्या हो जाये करते जायें। इस बात की गारंटी है कि आपको लक्ष्मी मां की कृपा अवश्य प्राप्त होगी। चलते फिरते उठते बैठते सोते जागते मंत्रजाप चलता रहे तो आप देखेंगे कि बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। निरन्तर जाप में कुछ समय के बाद सचमुच सोते में भी जाप होता रहता है। यह आपको अनुभव ही बता देगा। कोई काम विधि से तरीके से किया जाता है तो ठीक होता है विधि से नहीं किया जाता तो ठीक नहीं होता। जैसा कि आपको एक गोल घेरा खींचना है, अब यदि आप परकार की सहायता से ठीक बिन्दु पर खींचेंगे तो घेरा साफ सुन्दर ठीक आयेगा और यदि हाथ से खींचेंगे तो उतना अच्छा नहीं आयेगा। इसलिए उपरोक्त विधि में और आगे बताई जाने वाली सभी विधियों में हमारी सलाह आपको यह है कि आरम्भ में आप अवश्य सब काम पूरे विधि विधान से करें। यदि आपको संस्कृत नहीं आती तो पूजा के संस्कृत के श्लोक व मंत्रों को न बोलें उनका भावार्थ समझ लें। माँ की पूजा आरती हवन आदि यथा शक्ति करें। और जप चालू रखें। आपको कुछ दिन बाद ही दीपक की लौ या हवन की ज्योति अपने शरीर में नेत्रों में प्रवेश करती प्रतीत होगी। यह सात्विक साधना है इसमें भय की कोई बात नहीं है। आपको धन आगमन के समाचार साधन मिलेंगे और विश्वास जमता चला जायेगा। आपके उत्साह में वृद्धि होगी। इस मन्त्र का पुरश्चरण १६००० का हो १६०० हवन १६० तर्पण १६ मार्जन और एक से ग्यारह तक श्रद्धानुसार ब्राह्मण भोजन कुल सख्या १७७७७ हुई। इसको ४१ दिन में करना है तो ४ माला रोज से करने से ही हो जायेगा ४ माला एक घन्टे में हो जाती हैं। समय सुविधा जितनी हो उसी हिसाब से अपना कार्यक्रम बना लो। २१ दिन में करना है तो ८ माला नित्य जप हवन आदि के लिए चाहिए। हवन तर्पण मार्जन आदि नित्य भी किया जा सकता है और अन्तिम दिनों में

इकट्ठा भी किया जा सकता है। कुछ संख्या कम रह जाये तो मछलियों को गोली खिला दी जाती हैं। मेरा यह लक्ष्मी मंत्र सम्बन्धी लेख ज्योतिष्मती पत्रिका, ज्योतिष ज्ञान दर्पण पत्रिका, श्री विश्व विजय पंचांग २०३५ में निकला था। सन् १९७८ से १९८१ के मध्य अन्य अनेक सज्जनों को इस मंत्र के जप पुरश्चरण से लाभ हुआ है। इस प्रकार के अनेकों पत्र मेरे पास आये हैं।

दीवाली की रात होली की रात चंद्र या सूर्य ग्रहण का समय शिवरात्रि और ज्योतिष के अनुसार कुछ खास योग ऐसे हैं कि इन पर्वों में मंत्र का जाप करने से हजार गुना फल होता है और मंत्र तंत्र आदि शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं। और मंत्र वेत्ता लोग अपने सिद्ध मंत्रों को भी इन रात्रियों तथा पर्वों पर जप करके पुनर्जीवित करते रहते हैं।

छटा अध्याय

बटुक भैरव साधना

पिछले अध्याय में आपको लक्ष्मी मंत्र के सिद्ध करने की पूरी विधि बताई गई है। यदि कोई साधक एक मंत्र सिद्ध कर ले तो उसे दूसरे उसी परिवार के अन्य मंत्रों को सिद्ध करने में विशेष कठिनाई नहीं होती। पहली बार की साधना ही कठिन होती है। उसके बाद तो साधक को विश्वास हो जाता है कि रास्ता ठीक है और इस पर चलने से मंजिल पर पहुँचेंगे जरूर। आप किसी से पहली बार मिलने जाते हैं तो उसका घर ढूंढने में देर लगती है रास्ता भी लम्बा प्रतीत होता है। परन्तु उसके बाद बिना पूछे बताये आप उस घर तक चले जाते हैं और रास्ता भी पहचाना हुआ लगता है। मंत्र सिद्धि के लिए कम से कम सवा लाख जप और उसका पूरा पुरश्चरण करने के लिए काफी धैर्य, परिश्रम, उत्साह, दृढ़ इच्छा शक्ति हो तभी साधक मंजिल तक यानी सिद्धि तक पहुँचता है और कभी-कभी यह भी हो सकता है कि कहीं न कहीं कोई बड़ी कमी रह जाने से परिश्रम व्यर्थ हो जाये और सफलता नहीं मिले, तो फिर दोबारा या तिबारा भी साधन करना पड़े। मंत्र की सिद्धि का चरम फल तो उस देवता के साक्षात् दर्शन होना है और यही चरम उपलब्धि है। परन्तु इसके लिए बहुत लगन भक्ति श्रद्धा विश्वास से साधना की आवश्यकता होती है और इस सफलता तक बहुत कम साधक पहुँच पाते हैं। इष्ट देवता का दर्शन लाभ मंत्र जप के द्वारा उन्हीं को होता है जो निष्काम भाव से साधना करते हैं, और मोक्ष प्राप्ति जिनका लक्ष्य होता है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चार पदार्थों में से जो अर्थ तथा कामना से साधना करते हैं, उनको इष्टदेव का दर्शन प्रायः नहीं होता। जिस कामना को लेकर अनुष्ठान कर रहे हैं, वह यदि पूर्ण हो जाये तो समझ लेना चाहिए कि मंत्र साधना सिद्धि तक पहुँच गई है और अनुष्ठान सफल हो गया है। पिछले अध्याय में बताये गये लक्ष्मी मंत्र के बारे में ज्ञातव्य है कि साधक दारिद्रय से छुटकारा पाने के लिए और धन का

श्री बटुक भैरव

अभाव न रहे इसी लक्ष्य को सामने रखकर मंत्र की साधना आरम्भ करते हैं। यदि आपको जरूरत के मुताबिक पैसा मिलना आरम्भ हो जाये और धनाभाव समाप्त हो जाये उसके साधन बन जाएं तो समझो कि आपकी साधना सफलता की ओर जा रही है। आप निश्चित संख्या पूरी हो जाने पर भी उसको अपने नित्य नैमित्तिक साधन का अंग बना लें और मन्त्र का जाप यदाकदा पर्व आदि पर अवश्य करते रहें।

तो इतनी भूमिका के बाद आपको अपना दूसरा अनुभूत मन्त्र प्रयोग बताता हूं। धन की कमी के कारण लक्ष्मी मन्त्र की कृपा से धनाभाव के कारण तो कभी कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा। एक औसत गृहस्थ की तरह सुविधा-पूर्वक जीवन यापन होता रहा। मध्यम स्तर पर और सच पूछो तो इससे अधिक मैंने कभी इच्छा भी नहीं की। अगर कभी किसी लौटरी के टिकट को लेकर इस मन्त्र का अनुष्ठान करता तो कह नहीं सकता कि सफल होता या नहीं, परन्तु आवश्यकता के लिये सदा उपयुक्त धन मिलता ही रहा। धन के अलावा जीवन में अन्य समस्यायें भी आती रहती हैं। कभी कोई दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति आपको तंग कर सकता है। गलत आरोप लग सकते हैं, अकारण कोई शत्रुता मानकर उत्पात कर सकता है। परमसन्त तुलसीदास जी तक को जिन्हें संसारी प्रपंचों से कोई लगाव नहीं था, अकारण तत्कालीन राजा ने कैद कर दिया था। केवल इस कारण कि वह उसे कोई चमत्कार दिखा कर प्रभा-वित नहीं कर सके थे और तब उन्होंने मजबूरी में ही सही, हनुमान बाहुक की रचना की थी और उस राजा सूबेदार या बादशाह के किले पर बन्दरों की सेना ने आक्रमण कर दिया था। सभी के जीवन में इस प्रकार के अवसर आ सकते हैं। दुष्ट जन अकारण सता सकते हैं या ग्रहों के विपरीत होने पर संकट आ सकते हैं तो उनसे बचने के लिए शास्त्रों ने और गुरुओं ने जो उपाय बताए हैं वह करने चाहिएं। श्री हनुमान जी और श्री बटुक भैरव जी दो ऐसे उग्र देवता हैं, जिनकी आराधना से ऐसे संकटों से मुक्ति प्राप्त होती है। तो पहले आपको श्री बटुक भैरव जी की साधना का एक अनुभूतमन्त्र प्रयोग बताता हूं। इसको मैंने अपने जीवन में कई बार किया है और सफलता के साथ किया है। एक बार मेरे दफ्तर के चपरासी ने अपने अफसर की कार साफ करने से इन्कार कर दिया, तो वे अफसर साहब उससे बहुत नाराज हो गये और उसको

निकलवाने या तबादला कराने पर तुल गए। उस पर कई झूठे लांछन लगा-कर उसकी रिपोर्ट कर दी। उसकी जांच करने बड़े दफ्तर से एक अफसर आए और उन्होंने उस दफ्तर का सुपरिन्टेडेन्ट होने के नाते सबसे पहले मेरा ही बयान लिया। मेरी अन्तरात्मा किसी प्रकार भी झूठी बात कहने के लिए तैयार नहीं हुई और मैंने सच बात लिखा दी। मेरे बयान के बाद उन जांच अधिकारी ने जांच बन्द कर दी कि कहीं मेरे मातहत काम करने वाले भी इसी प्रकार का बयाद न दे दें और शिकायत करने वाले उन अफसर का ही बिस्तरा गोल न हो जाए। एक अफसर अपने बिरादरी के दूसरे अफसर का इतना ख्याल तो रखता ही है। नतीजा यह हुआ कि सारी अफसर बिरादरी मेरे खिलाफ हो गई। वह चपरासी तो बच गया पर मुझे तबादलों बगैरा से काफी तंग करने की कोशिशें काफी दिनों तक जारी रहीं। इस मन्त्र प्रयोग से यदि मेरे ऊपर दैवी छत्रछाया न होती तो उस समय की अफसर बिरादरी के आक्रमणों का सामना करना मेरे लिए संभव न होता। एक बार तो मेरा तबादला राजस्थान के बाडमेर इलाके में करवाया गया और आज्ञा पत्र भी सबसे ऊंचे दफ्तर से जारी हुआ। मेरी पहुंच बड़े दफ्तर तो क्या किसी छोटे दफ्तर तक भी नहीं थी, परन्तु हां जगन्नियन्ता के यहां उनके दरबार में थोड़ी बहुत थी और दैवी सहायता से ही यह संभव हुआ कि वे आज्ञा पत्र रुके और सब अचम्भे से देखते रह गए कि यह सब कैसे हो गया। इन सब बातों से आप यह न समझें कि मैं अपना आत्म प्रचार कर रहा हूं। इसमें मेरी कोई महत्ता नहीं है। यह सब उस मन्त्र का मंत्रदेवता का प्रताप है और आपको इसलिए बता रहा हूं कि आपको मंत्र शक्ति पर विश्वास हो। मेरे गुरुदेव के जीवन में भी ऐसे कितने ही अवसर आये थे और जिस प्रकार उन्होंने अपने शत्रुओं प्रतिद्वन्द्वियों के षडयन्त्रों को विफल किया था मुझे बताया था।

आप बाजार से श्री बटुक भैरव स्तोत्र की एक पुस्तक ले आइए। पुस्तक बहुत सरल संस्कृत में है और यदि आप संस्कृत नहीं जानते तो टीका सहित पुस्तक मिल जाये तो वह ले लें। वैसे मैं उसका भावार्थ इस पाठ में लिख रहा हूं। एक समय भगवान शंकर देवाधिदेव जगदगुरु कैलाश पर्वत पर माता पार्वती के साथ बैठे हुए थे। माता पार्वती ने उनसे प्रश्न किया कि आप सब धर्म शास्त्रों के प्रणेता हैं कृपया कोई ऐसा मन्त्र बताइये जो आपदाओं से

उद्धार करने वाला हो और सर्व सिद्धियों का देने वाला हो। तब भगवान शंकर ने कहा कि हे देवी सुनो मैं तुम्हें वह मंत्र बताता हूं, जो सब दुखों का दूर करने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला, मिरगी ज्वर आदि रोगों को दूर करने वाला, ग्रहों को शांत करने वाला, राजभोग देने वाला और आपदा विपदाओं से रक्षा करने वाला है। जो अभी तक किसी को ज्ञात नही था, जिसके स्मरण मात्र से भूत प्रेत पिशाच दूर भाग जाते हैं, वह मन्त्र यह है :—

ॐ ह्रीं बटुकाय आपद्उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

इस मंत्र के जाप करने से अग्नि, चोर, महामारी, भय दूर रहते हैं, आयु पूर्ण होती है, शरीर स्वस्थ रहता है, पुत्र पौत्र सम्पदा प्राप्त होती है, दारिद्रय दुर्भाग्य आपत्ति भय मिट जाता है।

उस परम ब्रह्म परमात्मा के तीन मुख्य रूप हैं। ब्रह्मा जी संसार की उत्पत्ति का काम करते हैं, विष्णु भगवान पालन का तथा शिवजी संहार का कार्य संभालते हैं। जिस प्रकार आप जब दफ्तर जाते हैं तो आपका रूप स्वरूप कुछ और होता है, घर में दूसरी तरह का होता है। घर की सफाई या बागवानी करते हैं तो किसी और रूप में होते हैं। इसी प्रकार भगवान शंकर का जो भैरव रूप है उन्हीं में एक रूप बटुक भैरव नाम से बताया गया है। यह मन्त्र रुद्रायमल तंत्र में दिया हुआ है। इस बटुक भैरव स्तोत्र में आरम्भ में महात्म्य दिया है जिसमें ५१ श्लोक हैं तथा मूल स्तोत्र में केवल ३१ श्लोक हैं। दोनों का ही पाठ अधिक से अधिक १०-१५ मिनट में हो जाता है और नित्य एक बार पाठ करना चाहिए। जिन दिनों इस मन्त्र का पुरश्चरण चल रहा हो उन दिनों नित्य एक पाठ अवश्य करें। इस मंत्र का पुरश्चरण केवल ३१ हजार आवृत्ति का है। इसकी पुरश्चरण विधि विस्तार से लिखते हैं।

किसी भी मंत्र को सिद्ध करने के लिए जो प्रारम्भिक बातें पिछले अध्यायों में बताई गई हैं वही सब इसके लिए भी लागू होती हैं। बटुक भैरव जी का कोई चित्र मिल जाये तो उसे ले आओ, नहीं तो भगवान शंकर और पार्वती का चित्र ले लो और उसे दक्षिण दिशा की ओर मुख कर के रखो अथवा ध्यान में बटुक भैरव जी की मूर्ति जैसी आगे चल कर ध्यान के श्लोकों में बताई गई है निर्मित कर लें। तो सबसे पहले तो भोजपत्र पर इस मन्त्र को लिखकर चित्र के सामने रखो और मंत्र की दीक्षा ले लो। आप चाहें तो इस

प्रकार लिखा हुआ मन्त्र हम से लेकर दीक्षा ले सकते हैं। माला काले रंग के या लाल रंग के १०८ मनकों की लो। स्थान व समय जैसे पहले बताये हैं वही हों। आसन काले रंग का या लाल रंग का होना चाहिए। वस्त्र काले रंग के न हो सकें तो लाल के भी ठीक रहेंगे। प्रसाद नेवैद्य में लाल रंग के फल व मिष्ठान प्रयुक्त करें। पुष्प भी लाल रंग के चढ़ायें। इसमें लाल रंग का मिश्रण करने से जो हल्के शेड बनते हैं वे भी चल जाते हैं। जैसे गुलाबी सुनहरा आदि। मिठाई में लड्डू भी हो सकता है और फूलों में लाल या गुलाबी कमल का फूल सबसे उत्तम रहेगा। कनेर भी अच्छा है। दीपक में बत्ती भी लाल या काले रंग की प्रयोग में लायें।

दीक्षा लेने के बाद शरीर शुद्धि के लिये इन मंत्रों से आचमन करो। :— ॐ भैरवाय नमः स्वाहा, ॐ भूतनाथाय नमः स्वाहा, ॐ बटुकनाथाय नमः स्वाहा कहकर तीन बार आचमन करो और ॐ नमः शिवाय कहकर हाथ धो लो। इसके बाद ओ३म् अपवित्रो पवित्रोवा मंत्र से स्थान की शुद्धि कर लो। पांच बार प्राणायाम करके मंत्र का पांच बार जाप करो। इसके बाद संकल्प बोलो। यह संकल्प पहले दिन ही बोला जाता है उसके बाद नहीं। शिखाबंधन यज्ञोपवीत धारण उसी प्रकार से करो, जैसा पिछले अध्यायों में बताया गया है। यज्ञोपवीत को रोली से रंग लो, और तिलक भी रोली या सिंदूर का भ्रूमध्य में लगाओ या भस्म को लगाओ।

ओ३म् श्री गुरुभ्यो नमः कह कर गुरु का स्मरण करो और प्रणाम करो। गुरु के स्थान पर यदि आपने श्री रामकृष्ण परमहंस जी की तस्वीर चित्र रखा है तो ठीक है नहीं तो शिवजी को ही गुरु मानकर प्रणाम करो। तत्व मुद्रा मध्यमा अनामिका और अंगूठे को मिलाकर अन्य उंगलियों को अलग करके बनाई जाती है। तत्व मुद्रा बनाकर शरीर के निम्न अंगों का स्पर्श करो। ओ३म् गुँ गुरुभ्यो नमः कहकर बांये कंधे का, ओ३म् गं गणपत्ये नमः कहकर दांये कंधे का, ओ३म् भं भैरवाय नमः कहकर बांई जांघ का, ओ३म् बं बटुकाय नमः कह कर दांई जांघ का तथा ओ३म् नमः शिवाय अस्त्राय फट् कहकर दाईं हथेली से बाएं हाथ की कोहनी से हथेली तक के अंग का तथा बांये हाथ की हथेली से दांई कोहनी से हथेली तक के अंग का स्पर्श करो। ओ३म् नमः शिवाय को तीन बार कहते हुए तीन बार ताली बजाओ। इसके बाद बटुक भैरव जी

के इष्टमंत्र को कहते हुए दशों दिशाओं का दिग्बंधन करो। इसके बाद तीन बार एड़ी से पृथ्वी पर हल्के से आघात करो और जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है पृष्ठ ७३ पंक्ति २२ काल भैरव का प्रार्थना मंत्र बोलो। अब श्री बटुक भैरव का ध्यान करो और आह्वान करो। श्री बटुक भैरव जी के ध्यान मंत्र श्लोक बटुक भैरव स्तोत्र पुस्तक में ४८, ४९, ५०, ५१ वें श्लोकों में दिये हुए हैं और मुख्य श्लोक ५१ वां है जो इस प्रकार है :—करकलित कपाली कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती। क्रतुसमयसपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति बटुक नाथः सिद्धिदा साधकानाम्॥ बाल रवि के समान जिनकी अरुण कान्ति है, तीन नयन हैं, नील ग्रीवा (गरदन) है, जो बरफ के सफेद शिलाखण्ड पर विराजमान हैं। मुण्डमाला गले में है। पीले रंग के घुंघराले बाल हैं, पैरों में किंकणी और नूपुर हैं। हाथों में शूल खडग दण्ड और कपाल है, दिगम्बर वेश है। नीले रंग के सर्पों का यज्ञोपवीत है, शूल में (यानी त्रिशूल में) डमरू बंधा हुआ है, बड़े-बड़े दांत हैं गले में सर्प पड़े हुए हैं। हाथों में नागपाश (कोड़ा) है, मस्तक पर चंद्रमा है, ऐसे साधकों को सिद्धि देने वाले श्री बटुकनाथ जी मेरे ऊपर कृपालु हों। इस प्रकार ध्यान करके उनकी मूर्ति को ध्यान में लाओ।

इसके बाद षोडशोपचार से बटुक भैरव जी की पूजा करो। प्रत्येक उपचार के साथ अपना बटुक भैरव इष्टमंत्र बोलते जाओ। षोडशोपचार पूजा विधि विस्तार से पिछले अध्याय में बताई गई है इसमें ७, ८, व ९ वें उपचार में लाल, नीले, काले रंग के वस्त्र कलावा मौली यज्ञोपवीत लाल चंदन सिंदूर बिल्वपत्र दूर्वा इसी रंग के पुष्प पुष्पमाला आदि का प्रयोग किया जाता है। दीपक चित्र के दक्षिण भाग में रखते हैं। नैवैद्य अर्पण करते समय ग्रास मुद्रा और शूलखडग दण्ड मुद्राएं बनाते हैं—नैवैद्य में भांग की बरफ़ी जरूर रखनी चाहिए। बाजार में नहीं मिले तो घर पर बना सकते हैं।

पान सुपारी के स्थान पर भांग धतूरा आक पोस्त अर्पण करते हैं। पुष्पों में भी आक के फूल विशेष प्रिय हैं।

बटुक भैरव मंत्र का करन्यास—

ओ३म् ह्रीं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः दोनों तर्जनीओं से अंगुष्ठमूल का स्पर्श करो।
ओ३म् बटुकाय तर्जनीभ्यां नमः दोनों अंगूठों से तर्जनीमूल का स्पर्श करो।

ओ३म् आपदुद्धारणाय मध्यमाभ्यां नमः " मध्यमा मूलों का स्पर्श करो।
ओ३म् कुरु-कुरु अनामिकाभ्यां नमः " अनामिका मूलों का "
ओ३म् बटुकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः " कनिष्ठिका मूलों का "
ओ३म् ह्रीं ओ३म् नमः शिवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः कहकर दोनों हाथों से हथेलियों के अगले पिछले भागों का स्पर्श करो।

करन्यास के बाद हृदयादिन्यास, उसके बाद अक्षरन्यास उसके बाद दिग न्यास किया जाता है। जो निम्न प्रकार से हैं:...

हृदयादिन्यास

ओ३म् ह्रीं बटुकाय हृदयाय नमः कहकर हृदय प्रदेश का स्पर्श करो। ॐ अपाद् उद्धारणाय शिरसे स्वहा कहकर ललाट का स्पर्श करो। ओ३म् कुरु-कुरु बटुकाय शिखाये वौषट् कहकर शिखास्थान का स्पर्श करो। ओ३म् ह्रीं नमः कवचाय हुम् कहकर दोनों हाथों से दोनों बाहुओं का स्पर्श करो। ओ३म् नमः शिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् कहकर सीधे हाथ की उंगलियों से तीनों नेत्रों को बारी बारी से स्पर्श करो। ओ३म् ह्रीं बटुकाय आपद् उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ओ३म् ह्रीं नमः शिवाय अस्त्राय फट् कहकर बांई हथेली पर सीधे हाथ से ताली बजाकर फट् की ध्वनि निकालो।

अक्षरन्यास इस प्रकार से करो...

आ३म् ह्रीं नमः शिखायाम् कहकर दाहिने हाथ के अंगूठे से शिखा स्पर्श।
ओ३म् बटुकाय नमः दक्षिण नेत्रे " " की उंगलियों के प्रथम पर्व से सीधी आंख का स्पर्श
ओ३म् आपद उद्धारणाय नमः वामनेत्रे " बांई आंख का "
ओ३म् कुरु-कुरु नमः दक्षिण कर्णे " दांये कान का "
ओ३म् बटुकाय नमः बाम कर्णे " बांये " "
ओ३म् ह्रीं नमः दक्षिणनासा पुटे " दांये नथुने का "
ओ३म् ह्रीं नमः बाम नासा पुटे " बांये नथुने का "
ओ३म् नमः शिवाय मुखे " मुख का "
ओ३म् नमः शिवाय गुह्ये " गुह्य अंग का "

दिगन्यास

ओ३म् ह्रीं प्राच्ये नमः कहकर	पूर्व दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करो।
ओ३म् बटुकाय आग्नेय्यै नमः ,,	अग्नि कोण में ,,
ओ३म् आपदुद्धारणाय दक्षिणायै नमः कहकर	दक्षिण दिशा में ,,
ओ३म् कुरु-कुरु नैऋत्य नमः कहकर	नैऋत्य कोण में ,,
ओ३म् बटुकाय प्रतीच्यै नमः ,,	पश्चिम दिशा में ,,
ओ३म् बटुकाय वायव्यै नमः ,,	वायव्य कोण में ,,
ओ३म् ह्रीं उदीच्यै नमः ,,	उत्तर दिशा में ,,
ओ३म् ह्रीं ऐशान्यै नमः ,,	ईशान कोण में ,,
ओ३म् ह्रीं शिवाय ऊर्ध्वायै नमः कहकर	आकाश की ओर ,,
ओ३म् ह्रीं शिवाय नमः भूम्यै नमः ,,	पृथ्वी की ओर ,,

इसके बाद माला की पूजा करो और गोमुखी में माला को रखकर जप आरम्भ कर दो। जप जिह्वा से, कण्ठ से और यदि अभ्यास हो गया है तो प्राणायाम द्वारा सुरति से करो। इस मन्त्र का पुरश्चरण ३१००० मंत्र का है। इसका दशांश हवन दशांश तर्पण दशांश मार्जन तथा दशांश ब्राह्मण भोजन करना होता है। कुल माला जप के लिए ३१००० की २८७ बनती है जो ११ दिन में करनी है तो २६-२७ बनती है, २१ दिन में करनी है तो १३-१४ बनेगी और ३१ दिन का पुरश्चरण करना है तो ९-१० माला रोज के हिसाब से तथा ४१ दिन के पुरश्चरण में ७-८ माला के हिसाब से करना चाहिए। जो नियम रखो उतनी माला रोज कर लेना चाहिए तथा अन्तिम दिन शेष को पूरा कर लेना चाहिए। तर्पण हवन आदि के लिए समय बचाकर रखना चाहिए। यह भी हो सकता है कि दस दिन में जप समाप्त कर लिया जाए और अन्तिम दिन हवन आदि पूरा कर दिया जाए। यदि नित्य कुछ हवन का नियम बनाओ तो शेष को अन्तिम दिन कर देना चाहिये। तात्पर्य यह है कि जितने दिन का पुरश्चरण निर्धारित करो यह सब संख्यायें उतने दिनों में पूरी कर लेनी चाहिएं। जैसा कि पहले बताया गया है यदि निश्चित संख्या में हवन तर्पण ब्राह्मण भोजन नहीं हो सके तो जौ के आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खला देनी चाहिए। उन गोलियों में साफ सफेद कागज पर, अनार की कलम

से लाल चन्दन मिली अष्टगन्ध की स्याही से, मंत्र को लिखकर आटे के अन्दर रख देना चाहिए।

हवन में आहुतियों से पहले यदि आप बटुक भैरव स्तोत्र के प्रत्येक मन्त्र को बोलते हुए उसके पहले ओ३म् तथा बाद में स्वाहा लगाकर भी आहुतियां दें तो अच्छा रहेगा। शिवजी के १०८ नामों में प्रधान नामों के साथ भी स्वाहा लगा कर हवन करना चाहिए। जैसे बं बटुकाय नमः स्वाहा, भं भैरवाय नमः स्वाहा, ओ३म् भूं भूतनाथाय नमः स्वाहा आदि। श्लोक की आहुति इस प्रकार दी जाती है : ओ३म् ह्रीं अति तीक्ष्ण महाकाय कल्पान्त दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातुमर्हसि स्वाहा।

बटुक भैरव स्तोत्र में केवल ३१ लोक हैं। प्रत्येक की आहुति इसी प्रकार से दें। इसी प्रकार तर्पण में स्वाहा के स्थान पर तृप्यन्ताम् लगाकर तर्पण किया जाता है। पूर्णाहुति उसी प्रकार की जाती है जैसे लक्ष्मी मंत्र में बताई गई है। इसमें लक्ष्मणा के स्थान पर लोग, इलायची डालते हैं। हवन सामग्री में काले तिल, सरसों, गूगल, लोबान, सौंफ, सुरमा आदि पदार्थों को और मिलाया जाता है। अन्य सामग्री चावल, जौ, चीनी, घी आदि और धूप, अगरबत्ती, मेवा आदि तो होता ही है। समिधा में अन्य लकड़ियों के साथ आक की लकड़ी विशेष रूप से ली जाती है। धतूरे व भांग के बीज पूर्णाहुति के समय गोले में डाले जाते हैं। पूर्णाहुति के समय यदि तांबे के सिक्के या टुकड़े हवन में डाल दिए जाएं तो बाद में उन्हें निकाल कर रख लेना चाहिए। बच्चों व स्त्रियों के गले में पहनाने से भूत प्रेत बाधा दूर हो जाती है। मार्जन उसी प्रकार से मंत्र पढ़कर जल छिड़कने से होता है।

इस विधि से पुरश्चरण करने से यह बटुक भैरव मंत्र सिद्ध हो जाता है। महारात्रि, मोहरात्रि, कालरात्रि, ग्रहण के समय इसका जाप यथा शक्ति करते रहना चाहिए। जब आप इसको अपने या अपने किसी प्रेमी, हितैषी के लिए प्रयोग में लाना चाहें तो अनुष्ठान रूप में इसका प्रयोग करें। कार्य की गम्भीरता के हिसाब से संख्या पूरी होते ही वह कार्य सिद्ध होगा। अनुष्ठान करते समय दीपक जलाकर केवल जाप किया जाता है और थोड़ा हवन भी। यदि कोई भारी आपत्ति विपत्ति आ गई हो तो अखण्ड जाप किया जाता है। व्रत रखकर। कम से कम २४ घण्टे का। नहीं तो मामूली सहज कार्यों के लिए नित्य २-३ घंटे

का जप अनुष्ठान काफी होता है। अनुष्ठान के दिनों में या पुरश्चरण के दिनों में सात्विक जीवन संयम से रहना ब्रह्मचर्य से रहा जाता है। सात्विक भोजन किया जाता है, जमीन पर सोया जाता है, यम नियमों का पालन किया जाता है। पहले इस मंत्र की ३१००० आवृत्तियाँ करके उपरोक्त प्रकार से सिद्ध कर लीजिएगा। मालाओं की गिनती नोट करते जाते हैं और यों कुछ अधिक हो जाए तो कोई हानि नहीं होती, अच्छा ही रहता है। जब भी आप पर कोई आपत्ति विपत्ति आये, भगवान करे न आये, पर आ ही जाये, तब उस समय या किसी से कोई काम निकालना हो, किसी को अपने अनुकूल करना हो, परीक्षा साक्षात्कार में प्रभावित करके सफल होना हो, अथवा किसी भी उचित कार्य के लिए दैवी सहायता लेनी हो तो बैठकर या चलते फिरते मन में इस मंत्र का निरंतर जाप आरम्भ कर दीजिए। यदि आपकी प्रार्थना उचित व न्यायोचित कार्य के लिए है तो बहुत शीघ्र सफलता प्राप्त होगी। मैंने इसे अपने जीवन में कई बार प्रयुक्त किया है और देर से या सवेर से सफल अवश्य रहा हूं। जितनी भी परीक्षायें दीं इन्टरव्यू दिये कभी असफल नहीं हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मंहगाई बढ़ जाने पर स्टेट की नौकरी में गुजर नहीं होती थी, तो मैं पक्की आठ वर्ष की सेवा को छोड़कर हवाई सेना में भरती हो गया था। वहां कुछ ठीक से मन नहीं लगा तो किसी प्रकार डिस्चार्ज लेकर चला आया। उस समय सेना में से निकलना बहुत मुश्किल था, पर भगवती की कृपा से छुटकारा मिल गया था। तब मैं दिल्ली में नौकरी की तलाश में फिरने लगा। उस समय मैंने इस बटुक भैरव मन्त्र का निरन्तर जाप आरंभ किया और चमत्कार यह हुआ कि २४ घंटे के अन्दर ही बहुत उत्तम नौकरी तथा एक पार्टटाइम काम एक ही दिन मिल गए और काम ठीक से चलने लगा। और भी अनेक बार इसी मंत्र की कृपा से बाधा व कठिनाईयों को पार किया है। इस मार्ग में सफलता का गुर यही है कि कुछ मंत्रों को ही छाँट लिया जाये और उनका अधिक से अधिक जप करके शक्ति का भंडार जप संख्या का भंडार इकट्ठा किया जाय। बजाय इसके कि बहुत से मन्त्रों को सिद्ध करो, २-४ मंत्र ही काफी होते हैं। उन्हीं से सब प्रकार की बाधा कठिनाई दूर की जा सकती है। उन मंत्रों को यथा अवसर और जब भी समय मिले जप करते रहने से उनमें शक्ति पैदा होती है और यं यं चिन्तये कामं तं तं प्राप्नोति

निश्चितं । चलते फिरते उठते बैठते खाते पीते सोते जागते हर समय मानसिक जाप करने से शीघ्र सिद्धि होती है । ऐसे जप के लिए शरीर शुद्धि की जरूरत नहीं होती ।

हनुमान चालीसा का अनुष्ठान

यों तो भगवान परमात्मा एक ही है परन्तु उसके अनेक रूप हैं और जिसको जो रुचे उसी ओर प्रयत्न करना चाहिए । इसलिए अब मैं आगे श्री हनुमान जी का एक अनुष्ठान लिख रहा हूं जिसको मैंने स्वयं भी तथा मेरे बताये अनुसार २-४ अन्य व्यक्तियों ने भी सफलतापूर्वक किया है । हनुमान जी की उपासना में एक बात तो ध्यान में रखने की यह है कि हनुमान जी ब्रह्मचारी हैं । उनसे स्त्री की मांग करने या विवाह की प्रार्थना करने से वे नाराज होते हैं । विवाहित स्त्रियों को भी उनकी पूजा नहीं करना चाहिए, करें तो पूर्ण संयम से रह कर करें । दूसरे उन्हें धन का लोभ नहीं है । माता सीता जी ने मणियों की माला उन्हें दी तो उन्होंने उसे तोड़कर यह देखने का प्रयत्न किया कि इनमें श्री राम की छवि है या नहीं । उनके लिए स्वर्ण रत्न धूल के समान हैं । अतएव धनवान बनने की प्रार्थना भी उनसे नहीं करनी चाहिए । हाँ भक्ति ज्ञान वैराग्य विद्या बुद्धि माँगो । तुम्हारा कोई शत्रु तुम्हें तंग कर रहा हो तो उससे रक्षा मांगो तो अवश्य देते हैं । गृहस्थ धर्म में गुजारे लायक जीविका की मांग भी की जा सकती है ।

आपने हनुमान चालीसा अवश्य देखी होगी । बहुत सरल हिन्दी अवधी भाषा में है और ५-१० मिनट में एक पाठ हो जाता है । उसमें अन्त में यह चौपाइयां आती हैं—"यह शत बार पाठ कर जोई, छूटे बंध महा सुख होई । जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा" इन चौपाइयों में ही अनुष्ठान बता दिया गया है । अर्थात् इस हनुमान चालीसा का जो १०० बार पाठ करेगा उसके सभी बन्धन छूट जायेंगे और उसे महासुख होगा, कार्य सिद्धि होगी । इस बात की गवाही, साक्षी स्वयं गौरीश महादेव जी करते हैं । गोस्वामी तुलसीदास जी की बात भी कुछ कम वजनी नहीं है । और फिर शंकर जी आपको आश्वासन दे रहे हैं कि इस अनुष्ठान के करने से आपको अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी, फिर भी आपको विश्वास न हो तो क्या किया जा

सकता है। इसमें शत की संख्या से १०८ की संख्या लेनी चाहिए। क्योंकि माला १०८ मनकों की होती है और पूरा अनुष्ठान १०८ आवृतियों का है। यह १०८ आवृतियां एक ही बैठक में एक साथ करनी होती हैं। इसलिए यदि हनुमान चालीसा आपको अच्छी तरह याद नहीं है तो पहले उसे १००-५० बार पढ़ कर याद कर लो। ताकि सरलता से कम से कम समय में १०८ आवृतियां कर सको। फिर किसी मंगलवार को इस अनुष्ठान को कर सकते हो। किसी दूसरे के लिए करो तो अनुष्ठान से पहले उससे संकल्प बुलवा कर प्रारम्भ करो। यानी उसके कार्य का पुरोहित्व ले लो, पावर आफ एटोरनी प्राप्त करलो। संकल्प मंत्र पहले दिया जा चुका है उसमें उस व्यक्ति का नाम, गोत्र कार्य का विवरण, अपने नाम, गोत्र के साथ मिलाकर संकल्प करा लो। हिन्दी में कहना है तो इस प्रकार कह दो "मैं अमुक व्यक्ति के लिए अमुक कार्य की सिद्धि के लिए इस अनुष्ठान के करने का संकल्प करता हूं।" अन्य बातें सब वही रहती हैं, स्थान समय आदि के बारे में। सबसे पहले तो रामचंद्र जी की पंचायतन का ऐसा चित्र लो जिसमें श्री राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, माता सीता पांचों के चित्र के साथ ही हनुमान जी का चित्र भी हो। साथ ही हनुमान जी का एक बड़ा सा चित्र भी लेकर पूजा में रखो। पहले विधिपूर्वक पूजा करो, उसी विधि से जो बताई गई है। हनुमान जी को कन्द मूल फल तथा मिष्ठान्नों में लड्डू मोती चूर का, बेसन के पदार्थ रोट पूये आदि प्रिय हैं। फूलों में जंगली पीले लाल सुनहरी फूल प्रिय हैं। सिंदूर का टीका और लाल लंगोट प्रिय हैं। आपके वस्त्र भी इन्हीं रंगों के होने चाहिए।

ॐ बं बजरंगाय नमः, ॐ मं महावीराय नमः ओ३म् हं हनुमताये नमः कहकर तीन बार आचमन करो और शरीर शुद्धि करो और ओ३म रामरामाय नमः कहकर हाथ धो लो। ओ३म अपवित्रो पवित्रोवा मंत्र कहकर अपने मस्तक पर जल डालो आसपास छिड़को। पांच बार फिर आसन शुद्धि पांच बार रेचक पूरक कुम्भक करके श्री राम मंत्र ॐ रामरामाय नमः का प्राणायाम से जाप करो। इसके बाद हनुमान जी के चित्र के सामने ॐ रामरामाय नमः मंत्र को भोजपत्र पर लिखकर रखो और उनको गुरु मानकर मंत्र दीक्षा लो। फिर संस्कृत या हिन्दी में संकल्प लो कि आप अमुक कार्य के लिए

हनुमान चालीसा के १०८ पाठ करने का अमुक समय अमुक स्थान पर संकल्प लेते हैं, 'अमुक कार्य सिद्धार्थं हनुमान चालीसा अनुष्ठान कर्म करिष्ये' और हाथ के अक्षत आदि अन्य पात्र में छोड़ दो। संकल्प मंत्र आपको बताया जा चुका है। उसी में उपयुक्त संशोधन करके पढ़ो। शिखा बन्धन, यज्ञोपवीत धारण सिंदूर का तिलक टीका लगाओ और हनुमान जी की तथा रामपंचायतन के सभी देवताओं की श्रीराम लक्ष्मण माता सीता भरत शत्रुघ्न जी की षोडषोपचार से पूजा करो।

शुद्ध जल से स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर, पद्मासन या स्वास्तिकासन पर बैठो। आचमन और प्राणायाम से बाद गुरु का या गुरु रूप में बजरंगबली का स्मरण करो। प्रणाम करो। तत्वमुद्रा बनाकर ॐ गुँ गुरुभ्यो नमः से मस्तक का, ॐ गँ गणपतये नमः से दांये कंधे का, ओ३म वं बजरंगाय नमः से बाईं जांघ का, ओ३म् क्षं क्षेत्रपालाय नमः से दांई जांघ का, ॐ राम रामाय नमः अस्त्राय फट् कहकर दोनों कोहनियों का स्पर्श करो और ताली बजाओ। ओ३म रामरामाय नमः मंत्र से चुटकी बजाते हुए दशों दिशाओं का दिग्बन्धन करो। उसके बाद बांये पैर की एड़ी से तीन बार पृथ्वी पर हल्के-से आघात करो। दक्षिण भाग में दीपक की स्थापना करो। हनुमान जी का चित्र इस प्रकार रखो कि उनका मुख दक्षिण दिशा की ओर हो। निम्नलिखित मंत्र से हनुमान जी का ध्यान आवाहन करो।

अतुलित बल धामं हेम शैलाभ देहं, दनुज बन कृशानं ज्ञान नामग्र गण्यं।
सकल गुण निधानं बानराणामधीशं, रघुपति प्रिय भक्तं बातुजातं नमामि।

उसके बाद श्रीरामचन्द्र जी का आवाहन मंत्र पढ़ो और उनका ध्यान करो।

"नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं सीता समारोपति बाम भागं, पाणौ महा-सायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं"

षोडषोपचार पूजन करो। इसमें पहले आवाहन किया श्रीराम का फिर सीता जी का फिर लक्ष्मण जी का फिर भरत जी का फिर शत्रुघ्न जी का फिर हनुमान जी का बारी-बारी से आवाहन किया। माता सीता जी का आवाहन ध्यान मन्त्र निम्न है: —उद्भव स्थिति संहारकारिणी क्लेश हारिणीं। सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोहं राम बल्लभां" सब देवताओं का (लक्ष्मण जी भरत जी

शत्रुघ्न जी का) वारी-बारी से आवाहन करो फिर आचमन कराओ और इसी प्रकार बारी-बारी से क्रमानुसार सभी उपचार करो। गंधाम में हनुमानजी को सिन्दूर का टीका, वस्त्रों में लाल वस्त्र, लालफूल, धूप में गुग्गुल, नैवेद्य में फल केले लड्डू आदि प्रिय हैं वही अर्पण करो। आरती जय जगदीश हरे वाली ठीक रहेगी। आरती के बाद थोड़ा हवन भगवान राम के व हनुमानजी के मंत्रों के साथ और कर सको तो हनुमान चालीसा के सभी मन्त्रों के साथ प्रत्येक चौपाई के बाद स्वाहा लगाकर आहुतियां दे दो। श्री राम जी के मंत्र ॐ राम रामाय नमः की एक माला से हवन कर दो। माला का पूजन पहले कर लो। पंच मुखी हनुमत्कवच का न्यास सहित एक पाठ कर सको तो करो। हनुमान चालीसा की गिनती रखने के लिए १०८ रुद्राक्ष या लाल रंग के मनके रख लो जिन्हें प्रत्येक पाठ के अन्त में एक पात्र से दूसरे पात्र में रखते जाना। माला रुद्राक्ष की अथवा लाल मनकों की होनी चाहिये। समय प्रथम प्रहर के बाद का कोई रख सकते हो और यदि रात का हो तो बहुत उत्तम है। उस दिन बहुत हल्का भोजन करो। निराहार रहने से तो ठीक नहीं रहेगा, दूध या फलों का आहार अल्प मात्रा में अवश्य कर लेना चाहिए। भूख प्यास आलस लघुशंका आदि न सतायें और आप लगातार ५-६ घंटे बैठ कर अनुष्ठान कर सको इसका ध्यान रखना होगा। एक पाठ ३ मिनट में हो जाता है। १०८ पाठ के लिए आराम से ५-६ घंटे लग सकते हैं और आगे पीछे की पूजा आदि के लिए भी एक घंटा रख लो तो कम-से-कम ७ घंटे का अनुष्ठान तो है ही। इतनी देर आपने आसन से उठना नहीं है, कैसी ही कोई बाधा आये, अनुष्ठान जारी रखना है। इसमें बाधायें आती हैं, विघ्न आते हैं, आप को आसन से उठाने के लिए जैसे कोई बहुत निकट का सम्बन्धी मित्र आ जाये। कोई अन्य आवश्यक कार्य का समाचार आ जाये। यह भी हो सकता है कि बीच में ही समाचार आ जाये कि जिस काम के लिए आप अनुष्ठान कर रहे हैं वह हो गया है। एक बार मेरे साथ यही हुआ था कि अनुष्ठान पूरा भी नहीं हुआ था कि कार्य सिद्ध होने का समाचार प्राप्त हो गया। परन्तु मैं ने अनुष्ठान को पूरा करके ही आसन छोड़ा था। एक बार मेरे बहुत निकट के सम्बन्धी बाहर गांव से आ गये और मुझसे बिना मिले ही चले गये, परन्तु मैंने कह रक्खा था कि मुझे न छेड़ा जाय चाहे कोई भी परिस्थिति हो। इसलिए रात का समय

९-१० बजे से आरम्भ करने का ठीक रहता है। हनुमान चालीसा शुद्ध पाठ वाला बड़े अक्षरों के छापे वाला लावें। गिनती का प्रबन्ध करलें, आवश्यकता के सभी सामान अपने पास रख लें, किसी प्रकार की घण्टी आदि से ऐसा भी प्रबन्ध कर लें कि बुलाने पर यानी घण्टी बजाने पर कोई आपके पास आ जाए। उसको इशारे से या लिखकर अपनी बात कहें बोलें नहीं। गला सूखने लगे तो पास में पानी का गिलास रख लो और थोड़ा-थोड़ा पाठ की समाप्ति पर अर्थात् एक पाठ हो जाए और दूसरा शुरू करने से पहले ले सकते हो। १०८ आवृतियां हो जायें तब हनुमान जी की आरती उतारो। हो सके तो संकटमोचन हनुमान अष्टक तथा हनुमान बाहुक का एक-एक पाठ भी कर दो। यदि शक्ति व सामर्थ्य हो तो नहीं तो आरती उतार दो और अपराध क्षमा कराओ। कहो कि दास से कोई भूल चूक रह गई हो तो स्वामी क्षमा करें। किसी को हानि पहुंचाने का अभिप्राय नहीं है और अपने किसी लाभ व कल्याण कामना से ही किया है तो भूल चूक हो जाने से किसी प्रकार के भय अनिष्ट की कोई आशंका नहीं होती।

हनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ लला की।
जाके बल से गिरवर काँपे। रोग शोक जाके निकट न झाँके।
अञ्जनि पुत्र महा बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाए।
लंका कोट समुद्र की खाई। जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर सब मारे। सीता राम के काज संवारे।
लक्ष्मण मूर्छित परे धरणि में। लाय संजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि यमकातर। अहिरावण के भुजा उखारे।
बांये भुजा सब असुर संहारे। दाहिने भुजा सब संत उबारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर की बाती। आरती करत अञ्जनी माई।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ अमर पद पावै।

सातवाँ अध्याय

बगला मुखी साधना

इस अध्याय में आपको श्री बगलामुखी देवी के बारे में बताया जायेगा। बगला मुखी देवी भगवती माँ के ही अनेक स्वरूपों में से एक हैं। जैसे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती माँ के तीन मुख्य रूप हैं। फिर नवदुर्गायें हैं शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणि, चन्द्रघण्टादेवी, कूष्माण्डा देवी, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री। विशेष प्रयोजन के लिए धारण किए गये भगवती के अनेक रूप हैं। जैसे रक्तबीज राक्षस पैदा हो गया था। जब माँ का उससे युद्ध हुआ तो राक्षस के रक्त से अनेकों रक्तबीज पैदा हो गए। महामाया माँ ने उस समय अपने ही अंश से चामुण्डा काली का रूप धारण किया जो उस राक्षस के शरीर से रक्त की बूंदों को गिरने से पहले ही पी जाती थी और इस प्रकार माँ ने उन अनेकों रक्तबीजों को समाप्त किया। चामुण्डा काली की उपासना माँस मदिरा से ही की जाती है।

भगवती बगलामुखी देवी की उत्पत्ति के बार में तन्त्र शास्त्रों में लिखा है कि एक समय सतयुग में भयंकर तूफान आया और समस्त चराचर सृष्टि नष्ट होने लगी तो शेषनाग की शैय्या पर लेटे हुए भगवान विष्णु को चिन्ता हुई। उन्होंने भगवती त्रिपुरसुन्दरी की आराधना प्रार्थना की। उन देवी ने प्रसन्न होकर बगलादेवी के रूप में अवतार लिया। सौराष्ट्र (काठियावाड़) देश में हरिद्रा नाम के पीले सरोवर में जलक्रीड़ा करती हुई प्रकट हुईं और उनका अपूर्व तेज चारों ओर फैल गया। उस दिन मंगलवार था तथा चतुर्दशी तिथि थी। उस रात्रि का नाम वीररात्रि पड़ा। पंचमकार से सेवित देवी ने अर्धरात्रि के समय उस गहरे पीले सरोवर में निवास किया और त्रैलोक्य का स्तम्भन करके भयंकर तूफान बवंडर से सृष्टि की रक्षा की। तान्त्रिक जन तभी से मंगलवार को जब चतुर्दशी पड़ती है पंच मकार का सेवन करके भगवती बगलामुखी देवी की आराधना करते हैं। भगवती के विद्या जनित तेज से

श्री पीताम्बरा (बगला)

दूसरी त्रैलोक्य स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र विद्या उत्पन्न हुई। उस ब्रह्मास्त्र विद्या का तेज भगवान विष्णु के तेज में विलीन हुआ तथा वह तेज विद्या तथा अनु-विद्याओं में लीन हुआ। अर्थात् उत्पात की शान्ति के पश्चात् देवी का तेज भगवान विष्णु में विलीन हो गया और उनकी ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी विद्या, अन्य विद्या अनुविद्याओं में मिल गई। संसार के कल्याण के लिए प्रचलित हो गई।

इस पाठ में श्री बगलामुखी की उपासना बताई जा रही है। अपने शत्रु को, प्रतिद्वन्द्वी को, अपने विरुद्ध निरपराध सजा मिलने से रोकने के लिए, बन्धन मुक्ति के लिए, किसी उच्च अधिकारी को अपने अनुकूल निर्णय की प्रेरणा देने के लिए, इस अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है। मैंने इस अनुष्ठान का आयोजन अपने जीवन में २-३ बार सफलतापूर्वक किया है। सन् १९५६ से १९५९ तक मैं कानपुर में नियुक्त रहा था। मेरा परिवार दिल्ली में था और किन्हीं कारणों से बच्चों की पढ़ाई का ध्यान रखते हुए सबको कानपुर ले जाना सम्भव नहीं था। जीवन बीमा निगम तब बना ही था और कानपुर में उसका प्रादेशिक कार्यालय बनाया गया था। उस समय उस क्षेत्र में अनुभवी प्रशिक्षित अधिकारियों की बहुत कमी थी। मेरी उपयोगिता को देखते हुए बड़े अधिकारी किसी प्रकार भी मुझे छोड़ने को तैयार नहीं थे और मैं अपने परिवार के साथ रहने को बहुत उत्सुक था। जीवन बीमा निगम के मुख्य कार्यालय ने अपने कागजात का सभी प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद करवाया था और हिन्दी अनुबाद का काम कानपुर क्षेत्र को सौंपा गया था। वहाँ पर मैंने निगम में प्रयुक्त होने वाले सभी प्रपत्रों, विवरण पत्रिकाओं, पालिसी की दस्तावेजों आदि का हिन्दी अनुवाद कार्य किया था। ऐसे ही अनेक महत्त्वपूर्ण उपयोगी कार्य किए थे। अधिकारियों की बहुत कृपा थी मुझ पर। इसी कारण वे किसी भी परिस्थिति में मुझे छोड़ने को तैयार नहीं थे। जब वहाँ पर नए स्टाफ की भरती हो गई, नए अफसर भी नियुक्त होकर आ गए, तो मैंने फिर प्रार्थना की। मेरे वरिष्ठ अधिकारी जी ने एक शर्त रक्खी कि कानपुर क्षेत्र के जिसमें उस समय पूरा उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश था और कई हजार कर्म-चारी थे और जिनकी भविष्य निधि का लेखा जोखा उनकी अपनी विभिन्न बीमा कम्पनियों से आया था, उसका हिसाब बनाकर पूरा कर जाऊँ तो वे मुझे

छोड़ देंगे। यह कार्य भी मैंने कई मास परिश्रम करके पूरा कर दिया पर उनका मन फिर भी मुझे निवृत्त करने का नहीं हुआ। तब मैंने इस अनुष्ठान को किया था। यह सब विवरण संक्षेप में ही इस कारण लिखा है कि किन परिस्थितियों में मैंने यह अनुष्ठान किया था। मेरे गुरुजी ने कभी बताया था परन्तु मुद्रायें बनाना मैं भूल गया था तो वहीं कानपुर में एक विद्वान तान्त्रिक पंडित से मुद्रायें बनाना भी सीखा था। माँ की इच्छा नहीं थी कि मेरा वहाँ से तबादला हो परन्तु मैंने माँ से विशेष अनुरोध किया। कुछ जबरदस्ती सी की थी। इस कारण दिल्ली आकर मुझे बहुत परेशानियाँ और कष्टों का सामना करना पड़ा था। माँ से लड़ झगड़ कर काम करना उत्तम फल दायक नहीं होता। फिर बाद में कभी मैंने ऐसा नहीं किया। आप शायद सोचेंगे कि माँ की ऐसी इच्छा का ज्ञान मुझे कैसे हो गया तो मैं निवेदन करूँगा कि माँ आत्मा रूप में इसी शरीर में वास करती है और साधकों को अन्तर में दैवी संदेशों व संकेतों का अनुभव हो जाता है। माँ का संकेत मिला था कि मेरा कानपुर में रहना ही मेरे लिए श्रेयस्कर है परन्तु मैंने जिद्द की और माँ की आज्ञा का पालन न करने के अपराध का थोड़ा बहुत दण्ड भी भोगा। आपको यह सब बताने का विशेष तात्पर्य है। जिस काम के लिए अनुष्ठान करो उसके औचित्य का पहले पूरा विचार कर लो। यह अच्छी तरह देख लो कि आप निरपराध हैं और कोई आपको अकारण सता रहा है या आपका पक्ष सत्य है। यदि ठीक से अनुष्ठान करने के बाद भी आपका काम नहीं हुआ है या आपको संकेत मिलते हैं कि आपका पक्ष उचित नहीं है तो माँ से जिद्द करने पर काम तो हो जाएगा पर हो सकता है कि माँ जिद्दी बालक को चाँटा भी लगा दे। हठी बालक के रोकर किसी वस्तु के माँगने पर मां झुंझला कर वस्तु दे तो देती है पर कभी-कभी हल्की फुल्की चपत भी लगा देती है। इसलिए जब माँ एकाध बार माँगने पर न दे तो बुद्धिमान बालक वही है जो माँ का संकेत समझ जाय, नहीं तो उसे माँ की चपत का भी ध्यान रखना चाहिए। अस्तु।

पुस्तक विक्रेताओं के पास बगलामुखी स्तोत्र बगलातन्त्र के नाम से पुस्तकें मिल जाती हैं। कोई भी अच्छी पुस्तक ले आइए। उसमें स्तोत्र कवच हृदय शतनाम सहस्रनाम आदि होंगे। यहाँ हम अनुष्ठान का विधि विधान विस्तार से लिख रहे हैं।

बगला के समान श्वेत वर्ण की मुख कांति वाली देवी को श्री बगलामुखी देवी कहते हैं। इनका अनुष्ठान मोहन उच्चाटन वशीकरण, अनिष्ट ग्रहों की शाँति, मन चाहे व्यक्ति से मिलन, धनप्राप्ति, मुकद्दमे में धन प्राप्ति, विजय प्राप्ति, किसी व्यक्ति को अपने अनुकूल करने के लिए किया जाता है। कलौ चण्डी विनायकौ। इस युग में माता की उपासना से शीघ्र फल प्राप्त होता है। सन्तोषी माता की उपासना भी इसी प्रकार से बहुत सरल और शीघ्र फल देने वाली है।

स्थान के विषय में नियम पहले ही बता दिये गये हैं। यदि श्री बगलामुखी देवी का मन्दिर हो तो वहाँ करें या देवी के किसी भी मन्दिर में करें। खुले आकाश के नीचे नहीं करें। एक वस्त्र से भी नहीं। कम से कम दो वस्त्र धोती चादर अवश्य हों। एक गमछा भी हो तो अच्छा है।

इस अनुष्ठान में सभी वस्तुएं पीले रंग की ही प्रयोग में लाई जाती हैं। धोती चादर दुपट्टा पीले रंग के, माला भी हल्दी की गांठों से बनी प्रयोग में लाई जाती है। किसी बढ़ई से हल्दी की बड़ी-बड़ी गाठों में से गोल मनके निकलवा कर माला बनवा लो। ऐसी माला पूरी १०८ मनकों की न बन सके तो ५४ या २७ या नौ मनकों की बनवा लो और उसी के अनुसार गिनती पूरी करो। आसन भी पीले रंग की ऊन का हो। जितने भी फूल पूजा में प्रयुक्त करो पीले रंग के होने चाहिए।

आहार—जिन दिनों अनुष्ठान चल रहा हो दिन में दोपहर को एक बार दूध चाय फल मेवा आदि लो। रात को केसरिया खीर वेसन के लड्डू बूंदी हल्दी पड़ा हुआ शाक सब्जी जिनमें सैंधा नमक काली मिर्च पड़ी हो लो। लकड़ी के तख्त पर या भूमि पर शयन करो और ब्रह्मचर्य से रहो। लाल मिर्च वर्जित हैं।

इस मन्त्र का पुरश्चरण १०००० जप का है। इसका दशांश १००० हवन १०० तर्पण १० मार्जन, एक ब्राह्मण भोजन है। इसे अधिक से अधिक २१ दिन में पूरा कर लेना होता है। वैसे कोई करना चाहे तो ७, ९ या ११ दिन में भी कर सकता है। स्नान करके शुद्ध पवित्र होकर आसन शुद्धि दिशा बन्धन आदि किया जाता है। एक चौकी पर या लकड़ी के पट्टे पर पीला कपड़ा बिछाकर बगलामुखी का चित्र रख लो। जो पुस्तक आप लाये हैं उसमें

देवी का चित्र भी होगा। उसको मंढवा कर या गत्ते पर चिपका कर खड़ा करके रखो। उसका मुख दक्षिण या पश्चिम की ओर रखो।

ॐ जगद्धात्री नमः स्वाहा ओ३म् महामाई नमः स्वाहा ओ३म् मातेश्वरी नमः स्वाहा कहकर तीन बार आचमन करो। ओ३म् बगलामुखी पीताम्बरा देवी नमः कहकर हाथ धो डालो। इसके बाद ओ३म् अपवित्रो पवित्रो वा मंत्र से शरीर शुद्धि और ओ३म् पृथ्वीः त्वया धृता देवि आदि मन्त्र से आसन शुद्धि कर लो। बगलामुखी देवी का मन्त्र इस प्रकार है—

ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं

इस मन्त्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध से लिखकर देवी के सामने रखें और दीक्षा की प्रार्थना करके दीक्षा ले लें। किसी गुरु से लो तो भी देवी से विधि पूर्वक दीक्षा ले लो। मन्त्र का उच्चारण शुद्ध हो बीजमंत्र ह्लीं (ह्लिरीम्) है। बगलामुखी का यंत्र भी भोजपत्र पर उसी प्रकार से बनाकर भगवती बगलामुखी के सामने रखो। भोजपत्र या अष्टगंध का प्रबन्ध न हो सके तो पीले कागज पर हल्दी से मन्त्र व यन्त्र बनाकर रखो। यन्त्र का नमूना आगे पृष्ठों में दिया गया है। अब आप निम्न मंत्र से संकल्प लो। हाथ में द्रव्य अक्षत पुष्प जल लेकर संकल्प करो। संकल्प मंत्र पूरा पहले दिया जा चुका है। उसके अन्त में इस प्रकार जोड़ो :—मम समस्त सद अभीष्ट सिद्ध्यर्थ—यहाँ कार्य प्रयोजन को कहे। श्री भगवती पीताम्बराया श्री बगलामुखी देव्याः यथा लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये। कह कर जल आदि सामग्री छोड़ दें।

हाथ में पीला पुष्प लेकर पद्मासन से बैठकर माँ बगलामुखी का ध्यान करें। ध्यान मन्त्र इस प्रकार है—

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां सिंहासनो परिगतां परि पीत वर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषितांगीं, देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम्।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शत्रून परिपीड्यन्तीम्
गदाभि घातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजां नमामि।

इस श्लोक का अर्थ यह है कि माँ बगलामुखी देवी मणि जडित पीत मण्डप में रत्न जडित सोने के पीत वर्ण सिंहासन पर विराजमान है। पीले रंग के

वस्त्र आभूषण माला पहने हैं, सीधे हाथ में मुगदर है, बांये से वैरी की जिह्वा पकड़े हुए है। मुगदर से वैरी को मारने की मुद्रा है और जिह्वा को बाहर की ओर खींचते हुए वैरी को पीड़ा देने की मुद्रा है। कुछ मिनटों तक माँ का उपरोक्त रूप अपने मस्तिष्क में रखते हुए मां को नमस्कार करो।

इसके पश्चात् देवी का आह्वान किया जाता है और आसन समर्पित करने के पश्चात् शोडषोपचार पूजा की जाती है। इन सब के लिए अलग-अलग मन्त्र हैं जो ग्रन्थों में दिए हुए हैं। जो पाठक इतने मन्त्र नहीं पढ़ना चाहें वे नीचे दिए हुए संक्षिप्त मन्त्र पढ़कर अपना कार्य सिद्ध कर सकते हैं।

श्री बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि नमः बोलकर आवाहन करे। श्री बगलामुख्यै नमः आसनं समर्पयामि कहकर आसन समर्पित करे। इसके पश्चात् शोडषोपचार पूजा ये मन्त्र बोलकर करे—श्री बगलामुख्यै नमः पाद्य समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। पंचामृत स्नानं समर्पयामि। उदवर्तन् (उबटन) शुद्धोदक स्नानै समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। वस्त्रादिकं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि। अक्षत हरिद्रा कुंकुम सिंदूर कज्जल पुष्प पुष्पमाला धूप दीप नेवैद्य फलताम्बूल पुंगीफल दक्षिणा पुष्पांजलि समर्पयामि कहकर शोडषोपचार पूजा कर देनी चाहिए।

अन्त में देवी के समक्ष कुछ दृव्य दक्षिणा अर्पित करके उनके चरणों में पुष्पांजलि समर्पण करो।

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च, तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे। बोलकर देवी की एक प्रदक्षिणा करे। देवी के चारों ओर प्रदक्षिणा करने की सुविधा न हो तो अपने स्थान पर ही घूमकर प्रदक्षिणा कर लो।

प्रार्थना—आराध्ये जगदम्ब दिव्य कविभिः सामाजिकैं स्तोतृभि माल्यैश्चन्दन कुंकुमैः परिमलैरर्म्यचिते सादरात्। सम्यग्न्यासि समस्त भूत निवहे सौभाग्य शोभाप्रदे। श्री मुग्धे बगले प्रसीद बिमले दुःखापहे पाहिमाम्॥ अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रीयतां नमः। बोलकर देवी को प्रणाम करो।

इसके बाद कर सको तो बगलामुखी स्तोत्र का जिसमें केवल १७ श्लोक हैं पाठ करो और न्यास सहित बगलामुखी कवच का पाठ भी करो। यदि यह

नित्य नहीं कर सको तो आरम्भ व अन्त के दिन ही कर लो। यह स्तोत्र तथा कवच बगलामुखी पाठ की पुस्तक में मिल जायेंगे। यदि संस्कृत न आती हो तो पाठ की पुस्तक के छापे को तथा अपने उच्चारण को किसी पंडित या शास्त्री की सहायता से शुद्ध कर लेना चाहिए। नहीं तो हिन्दी भाषा में ही शोडषोपचार पूजा करके मन्त्र का जाप शुरू कर देना चाहिए। जप से पहले मंत्र का न्यास करो।

अथ विनियोग—ह्लीं ॐ अस्य श्री बगला मुखी मन्त्रस्य नारद ऋषि वृहती छंदो बगलामुखी देवता सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः कहकर पंचपात्र से जल दूसरे पात्र में डालें ॥

ऋष्यादिन्यास—नारद ऋषये नमः शिरसि। वृहती छन्दसे नमः मुखे। बगलामुख्ये देवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्य। स्वाहा शक्तये नमः पादयो। न्यास करने की विधि पिछले पाठों में विस्तार से बताई जा चुकी है उसी के अनुसार सारे न्यास करो।

करन्यास—ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओ३म् बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओ३म् सर्वदुष्टानाँमध्यमाभ्यां वौषट। ओ३म् वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। ओ३म् जिव्हां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। ओ३म् बुद्धि विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः—ओ३म् ह्लीं हृदयाय नमः। ओ३म् बगलामुखि शिरसे स्वाहा। ओ३म् सर्वदुष्टानां शिखायै बौषट्। ओ३म् वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ओ३म् जिव्हां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। ओ३म् बुद्धि विनाशाय ह्लीं ओ३म् स्वाहा अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यास—ओ३म् ह्लीं नमः शिखायाम्। ओ३म् बगलामुखी नमः दक्षिण नेत्रे। ओ३म् सर्वदुष्टानां नमः वामनेत्रे। ओ३म् वाचं नमः दक्षिण कर्णे। ओ३म् मुखंनमः वामकर्णे। ओ३म् पदं नमः दक्षिण नासा पुटे। ओ३म् स्तम्भय नमः वाम नासापुटे। ओ३म् जिव्हां कीलय नमः मुखे। ओ३म् बुद्धि विनाशय नमः गुह्ये।

दिगन्यासः—ओ३म् ह्लीं प्राच्यै नमः। ओ३म् बगलामुखी आग्नेयै नमः। ओ३म् वाचं दक्षिणायै नमः ओ३म् मुखं नैऋत्यै नमः। ओ३म् पदे प्रतीच्यै नमः ॐ स्तम्भय वायव्यै नमः। ओ३म् जिव्हां उदीच्यै नमः। ओ३म् कीलय ऐशान्यै नमः। ओ३म् बुद्धिं ऊर्ध्वायै नमः ओ३म् विनाशय भूम्यै नमः।

उपरोक्त न्यास करने के बाद निम्न मन्त्र से देवी ध्यान कर लें और उसके बाद हल्दी की माला से देवी के मंत्र का जाप आरम्भ कर दो।

ध्यान मन्त्रः—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं।
हेमाभांगरुचि शशांक मुकुटाँ सच्चम्पक स्रग्युताम्।।
हस्तैर्मुद्गर पाशबद्ध रसना संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तांगी बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिंतये।।

प्रथम दिन जितनी संख्या में जप करो उसी क्रम से प्रतिदिन करना चाहिए। बीच में कम ज्यादा करने से जप खण्डित हो जाता है। यदि किसी विशेष कार्य के लिए अनुष्ठान कर रहे हो या किसी दूसरे के लिए कर रहे हो तो इस नियम का पालन अवश्य करना चाहिए। यदि मंत्र को सिद्ध करने के लिए अनुष्ठान कर रहे हो तो ऐसी संख्या निर्धारित कर लो जिसे सुविधापूर्वक निबाह सको।

जप का दशांश हवन नित्य या बाद में इकट्ठा करने के लिए हल्दी की गाँठों का जौ व अन्य सामग्री तिल श्वेत चावल बूरा पिसा हुआ, गुड़ का चूरा, देवदार की लकड़ी आदि पीत द्रव्यों से करना चाहिए। हवन का दशांश तर्पण किया जाता है। तर्पण के जल में हल्दी पीले पुष्प तिल हरताल, चावल,इलायची डाली जाती है। तर्पण का दसवाँ भाग मार्जन करने का भी विधान है और उसका दसवां भाग ब्राह्मण भोजन करा देना चाहिए।

जब मंत्र सिद्ध हो जाये और किसी शत्रु का स्तम्भन करना हो तो मंत्र में इस प्रकार से उस व्यक्ति का नाम जोड़कर जप किया जाता है। इस मंत्र के द्वारा बुद्धि का, शास्त्र का देव दानव भूत प्रेत सर्प आदि का भी स्तम्भन किया जाता है।

ओ३म् ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं········नामक शत्रुं स्तम्भय स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा।

रिक्त स्थान में जिसका स्तम्भन करना हो उसका नाम लगा देने से और उसी प्रकार जप करने से कार्य सिद्ध होता है।

आकर्षण वशीकरण के लिए ९ इंच चौड़ी नौ इंच लम्बी योनि की शकल की वेदी बनाओ। यह ऊपर के भाग में ९ इंच चौड़ी होगी और नीचे के भाग में

कम होती हुई ३ इंच रह जायेगी। इसके चारों ओर तीन घेरे हल्दी के चूर्ण के बनाओ। जंगल में पशुओं के गोबर के कण्डे जो अपने आप बन जाते हैं उन्हें अरने कण्डे कहते हैं। उन कण्डों से या गाय के गोबर से बनाये गए कंडों से तिल शहद घी शक्कर मिली हुई हवन सामग्री से उसमें थोड़ा नमक मिलाकर पीली सरसों के साथ हवन करने से वशीकरण व आकर्षण होता है। वशीकरण करने के लिए मंत्र में शत्रु शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता व्यक्तिं वश्य कहा जाता है।

तेल में डूबी हुई नीम की पत्ती हवन सामग्री में विशेष मात्रा में डालने से दो व्यक्तियों में उच्चाटन कराया जा सकता है। हल्दी नमक हरताल मिलाकर हवन करने से शत्रु का स्तम्भन होता है। इसमें मंत्र में दोनों व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ विनाशाय के बाद विद्वेषणं शब्द भी जोड़ा जाता है।

हवन करते हुये यदि गीध व कौवे के पंख भी सरसों के तेल में भिगोकर बहेड़ा मिलाकर आहुति में डाल दिये जांय तो उच्चाटन तीव्र होता है। बहेड़ा त्रिफला का एक अंग होता है।

मंत्र सिद्धि के लिए तथा भगवती की कृपा प्राप्ति के लिए चम्पा के फूलों से हवन करना चाहिये। किसी मनुष्य या मानुषी के वशीकरण के लिए भी चम्पा के पुष्पों से व्यक्ति का नाम मंत्र में लगा कर हवन करने से वशीकरण होता है। कोई व्यक्ति घर से चला गया है उसको वापिस बुलाने के लिए, रूठे हुए पति या पत्नी को मनाने के लिए भी चंपा के पुष्पों से ही हवन करना चाहिए। जहाँ आवश्यकता हो यानी आप किसी दूसरे के लिए अनुष्ठान कर रहे हों तो दोनों ही व्यक्तियों का नाम मंत्र में लेकर हवन करें तो सफलता मिलेगी। इस प्रकार के अनुष्ठान पीले वस्त्र धारण करके केसरिया चंदन का टीका लगा कर हल्दी की माला से जप व हवन करना चाहिए। शहद गाय का घी तथा शक्कर मिश्रित तिलों से हवन करने से मनुष्य बश में होता है। उपरोक्त सभी सामग्री में नमक मिला कर हवन करने से प्राणी मात्र का वशीकरण व आकर्षण होता है।

शत्रु का स्तम्भन करने के लिए ताड़ के पत्तों, नमक और हल्दी का चूरा मिला कर हवन करने से शत्रु वश में होता है। राई, भैंस का घी, गुग्गल मिला कर रात में या शमशान में हवन करने से शत्रुता का नाश हो जाता है। शत्रु

अनुकूल हो जाता है। गीध और कौवे के पंखों को सरसों के तेल में मिलाकर रात के समय किसी जलती हुई चिता में मंत्र के साथ आहुति देने से शत्रुओं में आपस में लड़ाइं कराई जा सकती है। शत्रु को पीड़ा भी पहुँच जाती है। मंत्र में सभी शत्रुओं का नाम जोड़ना पड़ता है और उनको देखा हुआ हो तो उनका ध्यान भी करना चाहिए।

रोग नाश के लिए—शहद और चीनी गिलोय दूब (हरी घास), गुडच, धान की लावा, खीले, अरण्ड की लकड़ी, हवन करने पर समस्त रोगों का नाश होता है। रोगी का नाम मंत्र में लगाकर रोग नाशाय शब्द जोड़कर हवन करने से और उस हवन के दर्शन रोगी को कराने तथा हवन का धूम रोगी को सुंघाने से रोग का नाश होता है।

ऐसी गाय जिसका सारे शरीर का रंग एक जैसा ही हो पीला वसन्ती हो तो उत्तम है उसका दूध लो और उसमें चीनी तथा शहद मिलाकर उस दूध को बगलामुखी मंत्र से ३०० बार अभिमंत्रित करो। यानी मंत्र को पढ़ो और प्रत्येक मंत्र की आवृति के बाद उस दूध में फूँक मारते जाओ। ३०० बार करने के बाद दूध को पी लो। मंत्र में अपने शत्रु का नाम जोड़ते रहो तो उस दूध को पीने से शत्रुओं या प्रतिद्वन्दियों की शक्ति पराक्रम नष्ट होकर तुम्हारे शरीर में उनकी शक्ति आ जायेगी। शत्रुओं का पराभव हो जायेगा।

अन्य कार्यों की सिद्धि के लिए साधक को चाहिए कि वह किसी पर्वत की चोटी पर या घनघोर जंगल में या नदी के तट पर संगम पर या भगवान शिव के मन्दिर में ब्रह्मचर्यपूर्वक बगलामुखी देवी के मंत्र का एक लाख जाप करे तो कैसा ही कठिन कार्य हो पूरा हो जाता है।

दूध मिले हुए तिल व चावल से हवन करने से यथेच्छ धन प्राप्ति होती है। अशोक तथा करवीर के पत्तों व समिधाओं से हवन करने से सन्तान प्राप्ति होती है।

गूगल तथा घी से हवन करने से अधिकारी वश में होता है।

गूगल व तिल से हवन करने से कारागार व बन्धन से मुक्ति होती है।

अड़ूसे के पत्तों से मार्जन करने से देवताओं की कृपा प्राप्त होती है।

जिस कार्य के लिए अनुष्ठान किया जाये उसमें मंत्र में उसी प्रकार नाम व अभिप्राय जोड़ दिया जाता है। मन्त्र सिद्धि के लिए पूर्व की ओर मुख करके

बैठना और जप करना चाहिए और अभिचार कर्म के लिए दक्षिण दिशा की ओर मुख करके अनुष्ठान करना चाहिए। बगलामुखी देवी को पीले रंग के पुष्प प्रिय हैं इनमें पीला कनेर और मालकांगनी के पुष्प चंपा के पुष्प विशेष रूप से प्रयोग में लाने चाहिएं। अनुष्ठान पुरश्चरण तो १०००० मन्त्र का है परन्तु एक लाख जप समाप्ति पर मंत्र सिद्ध हो जाता है। कहीं-कहीं कलयुग के लिए संख्या चारगुनी भी बताई गई है। यानी चार लाख।

बगला यन्त्र

बगला यन्त्र का चित्र यहाँ दिया जा रहा है। इसको सोने चाँदी या पीतल के पत्तर पर खुदवा लो या कागज पर हल्दी केसर अष्टगन्ध से अनार की कलम से लिख लो। सबसे पहले बीज मन्त्र ह्लीं (हिलीम् या हिलरीम्) लिखो उसके चारों ओर प्रथम त्रिकोण बनाओ। उसके ऊपर दो त्रिकोण और बनाओ इन दोनों त्रिकोणों के षटकोण बन जायेंगे। इनके चारों ओर एक वृत बनाओ। इस प्रथम वृत पर आठ कमल दल बनाओ। इस प्रथम वृत्त के चारों ओर दूसरा वृत्त बनाओ। इस दूसरे वृत्त पर सोलह कमल दल बनाओ। इसके चारों तरफ एक चतुरस्र चित्र के अनुसार बनाओ जिसमें चारों ओर चार द्वार होंगे।

यंत्र के मध्य में बीजाक्षर "ह्लीं" लिख लो। भगवती की सुवर्ण या पीतल की मूर्ति हो तो इस स्थान पर रखी जा सकती है। यहाँ माँ के बीज मन्त्र की पूजा होती है। प्रथम त्रिकोण के तीनों कोणों में सत्वाय नमः रजसे नमः और तमसे नमः कह कर तीनों गुणों की पूजा की जाती है। दूसरे व तीसरे त्रिकोण से बने षटकोणों में क्रमशः हृदयायनमः, शिरसे नमः शिखायै नमः कवचाय नमः नेत्रत्रयाय नमः और अस्त्राय नमः कह कर षड़ांगों की पूजा की जाती है। आरम्भ ऊपर बायें हाथ के कोण से करके सीधी तरफ करते हैं। उसके बाद प्रथम वृत्त के आठ कमल दलों में क्रम से—

ॐ भैरवायै ब्राह्मयै नमः ॥१॥ ॐ रुद्रायै माहेश्वर्यै नमः ॥२॥
ॐ चण्डिकायै कौमार्य्यै नमः ॥३॥ ॐ क्रोधायै वैष्णव्यै नमः ॥४॥
ॐ उन्मत्तायै वाराह्यै नमः ॥५॥ ॐ कपालायै इन्द्राण्यै नमः ॥६॥
ॐभीषणायै चामुण्डायै नमः ॥७॥ ॐसंहारायै महालक्ष्म्यै नमः ॥८॥

श्री बगलामुखी यन्त्रम्
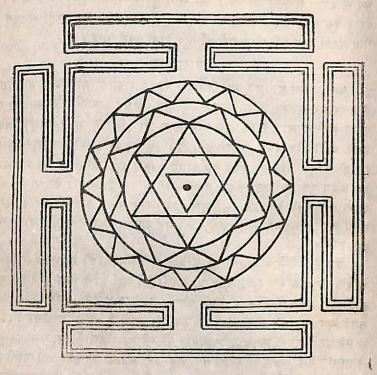
नोट

इस यन्त्र के केन्द्र में जहां बिन्दु बना हुआ है वहां बगलामुखी देवी का बीज मन्त्र "ह्लीं" लिख लेना चाहिए।

इस प्रकार कह कर आठों दलों में भैरव मातृः की पूजा की जाती है। फिर दूसरे वृत्त के १६ दलों में षोडश मातृकाओं की पूजा इस क्रम से करें—

ॐ मंगलायै नमः ॥१॥ ॐ स्तम्भिन्यै नमः ॥२॥ ॐ जृम्भिण्यै नमः ॥३॥ ॐ मोहिन्यै नमः ॥४॥ ॐ वेश्यायै नमः ॥५॥ ॐ चलायै नमः ॥६॥ ॐ बालाकायै नमः ॥७॥ ॐ भूधरायै नमः ॥८॥ ॐ कल्मषायै नमः ॥९॥ ॐ धात्र्यै नमः ॥१०॥ कलनायै नमः ॥११॥ ॐ काल कर्षिण्यै नमः ॥१२॥ ॐ भ्राभिकायै नमः ॥१३॥ ॐ मन्द गमनायै नमः ॥१४॥ ॐ भोगस्थायै नमः ॥१५॥ ॐ भाविकायै नमः ॥१६॥

उपरोक्त षोडश मातृकाओं का पूजन करने के बाद चतुरस्त्र के चारों द्वारों पर पूर्व में ॐ गणेशाय नमः दक्षिण में ॐ बटुकाय नमः पश्चिम में ॐ योगिन्यै नमः तथा उत्तर में ॐ क्षेत्रपालाय नमः कह कर पूजन करें। दशों लोकपालों का पूजन उनके आयुधों सहित इस प्रकार करें।

पूर्व में ॐ इन्द्राय नमः वज्राय ॐ नमः ॥१॥ अग्नि कोण में ॐ अग्नयै नमः ॐ शक्तये नमः ॥२॥ दक्षिण में ॐ यमाय नमः ॐ दण्डाय नमः ॥३॥ नैऋत्य कोण में ॐ नैऋत्यै नमः ॐ खड्गाय नमः ॥४॥ पश्चिम में ॐ वरुणाय नमः ॐ पाशाय नमः ॥५॥ वायव्य कोण में, ॐवायवे नमः ॐ अंकुशाय नमः ॥६॥ उत्तर में ॐ कुबेराय नमः ॐ गदायै नमः ॥७॥ ईशान कोण में ॐ ईशानाय नमः ॐ त्रिशूलाय नमः ॥८॥ पूर्व ईशान मध्य में ॐ अनन्तायै नमः ॐ चक्राय नमः ॥९॥ नैऋत्य पश्चिम मध्य में ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ पद्माय नमः ॥१०॥

इस प्रकार यन्त्र बना कर विधिवत पूजा करने और मंत्र जप अनुष्ठान पुरश्चरण करने से यक्ष राक्षस पिशाच भूत-प्रेत डाकिनी शाकिनी मनुष्य पशु पक्षी स्थावर जंगम स्वेदज अण्डज उद्भिज सारी प्रकृति स्तम्भित वशीभूत की जा सकती है। इस मंत्र में इतनी अपार शक्ति शास्त्रों में ऋषियों महापुरुषों गुरुओं ने बताई है। अनुष्ठान की अवधि में पीले कपड़े पहनने चाहियें पीला ही आसन पीली माला पीला चंदन पीले पुष्पपूजन व सामग्री सभी पीली वस्तुओं को ही प्रयोग में लाया जाता है। पूरा पुरश्चरण एक लाख मंत्र जप दस हजार

हवन एक हजार तर्पण १०० मार्जन १० ब्राह्मण भोजन का होता है। परन्तु इतनी सुविधा अवकाश साधन नहीं तो दस हजार जप के हिसाब से भी अनुष्ठान फलीभूत हो जाता है। पूरे श्रद्धा विश्वास लगन के साथ कालरात्रि मोहरात्रि महारात्रि ग्रहण समय पर जितने मंत्र जप किये जायेंगे उनका दस गुना फल होता है। ध्यान में सुरति पर प्राण पर जप का फल भी १० गुना होता है। यन्त्र के बीच में जो षटकोण है उसके कोणों में शत्रु का नाम और बीज मंत्र हरताल हल्दी मिले धतूरे के रस से पूरा बगला मुखी मंत्र बीज मन्त्र शत्रु के नाम सहित लिख कर यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा करें और पीले धागे से चारों ओर लपेट दें तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। मत्त गजराज तक वश में हो जाता है।

आठवां अध्याय

वशीकरण मन्त्र

इस अध्याय में आपको वशीकरण मन्त्र के बारे में बताने जा रहे हैं। 'वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर' 'जुबां शीरी मुल्क गिरी'। यह कहावतें अपने सुनी होंगी। यदि आप मिष्ठभाषी हैं तो लोगों को मोहने की एक कला तो आपके पास है ही। आप ने जीवन यात्रा के मध्य में कुछ ऐसे व्यक्ति भी देखे होंगे जो बहुत मीठी वाणी बोलते हैं तथा जो सदा प्रसन्न रहते हैं, सदैव मुसकरा कर बात करते हैं। तो पहला मन्त्र तो यह हुआ कि सदा प्रसन्न रहो और सबसे प्रेम से हंस कर मुसकरा कर बात करो। आप यदि किसी से क्रोध में बात करेंगे तो सामने वाले व्यक्ति पर उसकी प्रतिक्रिया क्रोध की ही होगी। इसी प्रकार यदि आप किसी से प्रेम से बात करेंगे तो सामने वाले व्यक्ति की प्रतिक्रिया भी प्रेम की ही होगी।

आपने मैस्मेरिज्म या हिप्नोटिज्म के बारे में सुना होगा और अकसर इन लोगों के तमाशे भी देखे होंगे। आपने देखा होगा कि इस विद्या के जानने वाला किस प्रकार अपने शरीर से निकलने वाली प्रभाव लहरों के द्वारा तथा अपनी प्रबल आत्मशक्ति के द्वारा किसी कमजोर आत्मशक्ति के व्यक्ति को अपने प्रभाव में लाकर बेहोश कर देता है सुला देता है या अपनी आज्ञा का पालन करवा लेता है। यदि किसी की आत्मशक्ति प्रबल है और वह दूसरों के प्रभाव में नहीं आता या आसानी से नहीं आता तो ऐसे व्यक्तियों पर मैस्मेरिज्म करने वालों का प्रभाव नहीं पड़ता या मुश्किल से पड़ता है। मशहूर जादूगर गोगिया पाशा एक बार लाल किले के सामने अपना प्रदर्शन कर रहा था और मैं भी उसे देखने गया था। वह दर्शकों में से कुछ व्यक्तियों को बुलाता था और उन्हें हिप्नोटाइज करके उनसे मनमानी हरकतें अपनी आज्ञा पर करवा कर दिखाता था। पब्लिक में से जो आदमी स्टेज पर जाते थे उनमें से कुछ को वह वापिस कर देता था। यह कहकर लौटा देता था कि बहुत हो गए आप

जाइये। गोगिया पाशा महान जादूगर था और आदमी पहचानने में भी माहिर था। जिनके बारे में समझता था कि यह जिद्दी किस्म के इनसान हैं या प्रबल आत्म शक्ति का है और इनको हिप्नोटाइज करने में देर लगेगी मुश्किल होगी उनको छाँटकर वापस भेज देता था। मुझे भी उसने इसी प्रकार अयोग्य समझकर वापिस कर दिया था। तो तात्पर्य यह है कि किसी को प्रभावित करने के लिए यह आवश्यक है कि अपने अन्दर प्रबल आत्म शक्ति पैदा की जाय। इसको दृढ़ इच्छा शक्ति कहते हैं। मैस्मेरिज्म करने वाला दृढ़ता के साथ यह कहता है कि आप को नींद आ रही है आप सो रहे हैं और आप सचमुच सो जाते हैं। उस समय आप यदि उसके विचारों का विरोध करें और कहें या सोचें कि नहीं मुझे नींद नहीं आ रही है मैं नहीं सोऊंगा तो आप पर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अपने मन्त्र तन्त्र शास्त्र में भी वशीकरण की प्रक्रिया कमोवेश इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है। मैस्मेरिज्म की साधना में एक काले बिन्दु पर दृष्टि केन्द्रित करके ध्यान किया जाता है और इस प्रकार चित्तवृत्ति को एकाग्र करने का साधन किया जाता है। जैसे हमारे योग साधन में राजयोग के अभ्यास में ध्यान को नासाग्र पर बाहर या अन्दर त्रिकुटी पर केन्द्रित करते हैं। दूसरा साधन अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से अपने शरीर में से अपनी मन चाही प्रभाव लहरें उत्पन्न करके फेंकना होता है। किसी भी बात को बार-बार कहने से उसमें शक्ति उत्पन्न हो जाती है। अपने अन्दर वशीकरण की शक्ति उत्पन्न करने के लिए मेहनत तथा साधना करनी होती है। पहला काम तो वशीकरण मन्त्र को निश्चित संख्या तक जप करके उसमें शक्ति पैदा करना यानी उसको सिद्ध करना होता है।

राजयोग के साधन से अपने अन्दर की प्रभाव लहरों को प्रेषित करने की शक्ति पैदा करनी होती है। तो सबसे पहले तो मैं आपको यह वशीकरण महामन्त्र बताता हूं जिसे श्री कृष्ण भगवान वंशी में बजाते थे और सारी सृष्टि वशीभूत हो जाती थी। गोपियां सुध-बुध बिसरा कर भागी चलीं आती थीं। जैसे शिकारी के तीर देखने में छोटे लगते हैं परन्तु घाव करें गम्भीर उसी प्रकार यह महामन्त्र देखने में बहुत छोटा है परन्तु बहुत शक्तिशाली है। यह महाकाली का भी बीज मन्त्र है और श्री कृष्ण का भी। इसको पहले विधि-

पूर्वक जप करने के बाद चलते-फिरते उठते-बैठते निरन्तर भी जप किया जा सकता है। भगवान श्री कृष्ण के चित्र के सामने या महाकाली के चित्र के सामने बैठकर गुरुदेव ठाकुर रामकृष्ण परमहंस जी से दीक्षा ले लो और जिस प्रकार अन्य मन्त्रों के बारे में बताया है उसी प्रकार देवता या देवी की पूजा अर्चना करके मन्त्र जाप करो। सवा लाख इसकी जाप संख्या और उसी के अनुसार दशांश हवन, उसका दशाँश तर्पण, दशाँश मार्जन, दशांश ब्राह्मण भोजन संख्या है। महाकाली के इष्ट से करो तो दुर्गा सप्तशती के प्रथम चरित्र का पाठ करना विशेष लाभदायक रहेगा और श्रीकृष्ण भगवान के इष्ट से करो तो गोपाल सहस्रनाम का पाठ सहायता करेगा। अंगन्यास करन्यास सप्तशती में बताई विधि से या गोपाल सहस्रनाम के अनुसार कर लिया जाता है। तो वह महामन्त्र यह है : ओ३म् क्लीं क्लीं नमः।

इसका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। क् ल ई और म् की संयुक्त ध्वनि निकलनी चाहिए (किलीम)। इसका जाप वाणी से, कण्ठ से, स्वांस से, सुरति से करने से अपार शक्ति पैदा होती है। इसका जप करते समय पूर्व की ओर मुख करके बैठना चाहिए। आसन देवी की उपासना में लाल रंग की ऊन का तथा श्रीकृष्ण की उपासना में पीले या श्वेत रंग की ऊन का या कुशा का हो। आचमन मन्त्र श्रीकृष्णोपासना में ॐ केशवाय नमः स्वाहा, ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, ओ३म माधवाय नमः स्वाहा, ओ३म गोविन्दाय नमः स्वाहा। अथवा महाकाली की उपासना में ॐ ऐं आत्म तत्वं शोधयामि नमः स्वाहा, ओ३म ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा, ओ३म क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा। पवित्रीकरण, संकल्प, शिखा-बन्धन यज्ञोपवीत पहनने का मंत्र दोनों में एक जैसे हैं। पूजन मंत्र शोडषोपचार के दोनों के एक जैसे हैं। पदार्थों में भिन्नता है। देवी को लाल तिलक श्री कृष्ण को कस्तूरी केसर का तिलक, देवी को लाल पुष्प, श्रीकृष्ण को पीले पुष्प देवी को कुँकुम तथा वैसे ही वस्त्र आदि अर्पण करते हैं। अंगन्यास करन्यास आदि में इस मंत्र का बीज लगाकर किया जाता है। करन्यास, अक्षरन्यास, दिगन्यास, सब इसी बीज मंत्र को लगाकर करने चाहिए। माला तुलसी की या मोती की लाल पीले या सफेद रंग के धागे में पिरोई होनी चाहिए। देवी

भक्त बिन्दी या त्रिशूल चिह्न का लाल रंग का तिलक लगायें, कृष्ण भक्त श्री का उर्ध्वपुण्ड्रतिलक मस्तक भुजा वक्षस्थल पर लाल पीला या श्वेत लगाएं।

महाकाली का ध्यान मंत्र—खडगं चक्र गदेषु चाप परिघांछूलं भुशुण्डीं शिर: शंख संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांग भूषावृताम्।। नीलाश्मद्युति मास्य पाद दशकां सेवे महा कालिकां यामस्तोत्स्वपितो हरौ कमलजो हन्तुं मधुकैटभं।।

भगवान कृष्ण का ध्यान मन्त्र—कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभं। नासाग्रे वर मौक्तिकं करतले वेणु: करे कंकणम्।। सर्वांगे हरि चंदन सुललितं कण्ठे च मुक्तावली गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणि:।।

हृदयादिन्यास—ॐ क्लौं हृदयाय नम:, ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लूं शिखाये वषट, ॐ क्लै कवचाय हुम्, ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्ल: अस्त्राय फट्।।

ऋष्यादिन्यास—ॐ नारद ऋषये नम: शिरसि, ॐ वृहति छन्दसे नम: मुखे, ॐ श्रीकृष्ण: परमात्मा देवताये नम: हृदये:, ॐ क्लीं बीजाय नम: गुहये, ॐ क्लीं शक्तये नम: पादयो, ॐ क्लीं कीलकाय नम: नाभौ। यह न्यास तब करो जब आप भागवत या गोपाल सहस्रनाम का पाठ करो। महाकाली के इष्ट में ऋष्यादिन्यास:—ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋष्भ्यो नम: शिरसि, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दोभ्यो नम: मुखे, महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नम: हृदि, क्लीं बीजाय नम: गुह्ये, क्लीं शक्तये नम: पादयो। क्लीं कीलकाय नम: नाभौ।

करन्यास—ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नम:, ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नम:, ॐ क्लै अनामिकाभ्यां नम:, ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:, ॐ क्लीं क्लीं महाकाली करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। अथवा ॐ कृष्णाय गोविन्दाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अक्षरन्यास—ॐ क्लां नम: शिखायाम, ॐ क्लीं नम: दक्षिण नेत्रे, ॐ क्लीं नम: वाम नेत्रे, ॐ क्लू नम: दक्षिण कर्णे, ॐ क्लूं नम: वाम कर्णे, ॐ क्लै नम: वाम नासापुटे, ॐ क्लै नम: दक्षिण नासापुटे, ॐ क्लों नम: मुखे, ॐ क्लौं नम: गुह्ये।

दिगन्यास—ॐ क्लां प्राच्ये नम:, ॐ क्लां आग्नेय्यै नम:, ॐ क्लीं दक्षिणायै नम:, ॐ क्लीं नैऋत्यै नम:, ॐ क्लूं प्रतीच्यै नम:, ॐ क्लूं वायव्यै नम:, ॐ क्लौं

उदीच्यै नमः, ॐ क्लीं ऐशान्यै नमः, ॐ क्लीं क्लीं उध्वार्यै नमः, ॐ क्लीं क्लीं भूम्यै नमः ।।

न्यासों के बाद उपरोक्त ध्यान मन्त्र पढ़ कर देवता का ध्यान करो ।

इसके बाद देवी या देवता की षोडसोपचार से पूजा करो ।

श्री महाकाली देव्यै नमः आवाहनं समर्पयामि अथवा श्री कृष्ण परमात्मने नमः आवाहनं समर्पयामि, आसनं समर्पयामि, पादयं समर्पयापि, अर्ध्य समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं उबटन स्नानं समर्पयामि, वस्त्र उपवस्त्रसमर्पयामि, गन्धं समर्पयामि, अक्षतं समर्पयामि, देवी की पूजा में सौभाग्य सूत्र कुंकुम सिन्दूर कज्जलं समर्पयामि, पुष्पं समर्पयामि, पुष्पमालां समर्पयामि, धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं ऋतुफलं समर्पयामि, ताम्बूलं पुंगीफलं सुदक्षिणां समर्पयामि, इसके बाद पुष्पांजलि मन्त्र पढ़ कर पुष्प अर्पित करो अथवा आरती उतारो । फिर पुष्पांजलि करो । प्रदक्षिणा करो । नित्य हवन करने का नियम रखो तो जोत जला कर ॐ क्लीं क्लीं नमः स्वाहा की आहुतियां जप के दशांश संख्या की दे दो । हवन घी नारियल का गोला बतासे धूप आदि से करते हैं । कुछ बड़ा हवन हो तो अर्थात बाद में इकट्ठा करना हो तो आम पीपल अशोक बेलपत्र छोड़कर अन्य वृक्षों की लकड़ी की समिधा से जौ चावल चीनी हवन सामग्री धूप सफेद तिलों में मिलाकर सफेद गोंगची चिरमिटी मिला कर हवन करते हैं। देवी को लाल वस्त्र, कृष्ण भगवान को पीले वस्त्र देवी को सिन्दूर रोली लाल चन्दन का गन्ध कृष्ण भगवान को पीले चन्दन कस्तूरी गोपी चन्दन का गन्ध अर्पण करते हैं ।

यदि महाकाली तथा श्रीकृष्ण दोनों के ही चित्र सामने रखकर पूजा की जाय तो भी कोई हानि नहीं है । तन्त्र में काली व कृष्ण में कोई भेद नहीं है । महाकाली का चित्र वह लो जिसमें शिवजी शव रूप में लेटे हुए हैं और चतुंभुजा महाकाली उनके ऊपर नृत्य कर रही हैं तथा कृष्ण भगवान का चित्र त्रिभंगी मुद्रा में खड़े हुए वंशीवादन कर रहे हैं वह लो । शिवजी के शरीर से जब महाशक्ति काली निकल कर बाहर आ जाती है तो शिवजी शव रूप हो जाते हैं । पूजा में एक यन्त्र भी रखा जाता है । इसमें १५ का यन्त्र भोजपत्र या ताम्रपत्र पर लिख कर रखो । १५ का यन्त्र बनाने व सिद्ध करने का विधान आगे अध्याय में दिया गया है । मन्त्र की दीक्षा देवी से या गुरु रूप में

भगवान रामकृष्ण परमहंस जी के चित्र से विधिपूर्वक ले लेनी चाहिए। पूजा का क्रम वही होगा जो पहले अध्यायों में अन्य मन्त्रों के सिद्ध करने के बारे में बताया गया है। यथा—पहले आचमन करके आत्म शुद्धि फिर संकल्प कि आप इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिये सवा लाख जप करने का तथा उसका पुरश्चरण करने का संकल्प लेते हैं। उसके बाद देवी या देवता की षोडसोपचार पूजा हवन आरती माला की पूजा अंगन्यास करन्यास आदि करके मंत्र का जप आरम्भ कर दो। जैसे कि बताया गया है इस मन्त्र का पुरश्चरण सवा लाख का है। ९ दिन २१ दिन ४१ दिन जितने दिन में जप संख्या पूरी की जा सके उतने दिन के हिसाब से नित्य जप की संख्या निश्चित करलो और उसी हिसाब से नित्य का जप पूरा कर देना चाहिए। इसके लिए एक बैठक में पूरा न हो सके तो २ या ३ बार बैठकर भी पूरा किया जा सकता है। दीपक अखण्ड नहीं जला सको तो केवल जप के समय ही जलाना चाहिए। आप जिह्वा से फिर कण्ठ से फिर श्वास से फिर प्राणायाम पर सुरति से करोगे तो शीघ्र सिद्धि प्राप्त होगी। जप के समय दीपक की लौ से ज्योति निकलकर तुम्हारे शरीर में प्रवेश करती प्रतीत हो, अंतर में ध्यान करते हुए ज्योति के दर्शन या देवीदेवता का आवेश शरीर में हो जाये, श्वेदपसीना शरीर कम्पन अश्रूआँसू छाती हृदय प्रदेश लाल हो जाये तो घबराना नहीं चाहिए। समझो तुम्हारी साधना ठीक तरह से प्रगति कर रही है। यदि कभी शरीर की सुधि जाती रहे तो अन्य जनों को बता दो कि कोई सात्विक जीव ही स्पर्श करे और कृष्ण काली कृष्ण काली नाम से हृदय पर हाथ फेरे तो सुधि वापस आजायेगी। यह नाम कान के पास लेने से भी चेतना लौट आती है। जब जप संख्या पूरी हो जाये तो उसका दशाँश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन जैसा कि पहले मन्त्रों के साधन में बताया गया है करके पुरश्चरण पूरा कर दो। उसके बाद इस मन्त्र का जाप चलते फिरते उठते बैठते सोते खाते पीते सब समय मन में किया जा सकता है और अन्तर की शक्ति बढ़ती रहती है। जब भी किसी के काम के लिए इसका अनुष्ठान करने की आवश्यकता पड़ जाय तब देवी या देवता के चित्र के सामने दीपक जलाकर बैठकर उस व्यक्ति का नाम साथ लगाकर जप करने से तत्काल वशीकरण होता है। जैसे—ॐ क्लीं क्लीं अमुक व्यक्ति वशीकरण कुरु कुरु स्वाहा। इसमें अमुक व्यक्ति के

स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लगाकर जप व हवन करना चाहिए। हवन घी और नारियल के गोले व बताशों से करना चाहिए। जैसे किसी व्यक्ति का नाम रामदास है तो उसका जप हवन इस प्रकार से होगा। ऊं क्लीं क्लीं रामदासं मम वश्यं कुरु स्वाहा रामदास नाम के व्यक्ति को आपने अपने अनुकूल करना है उससे कोई काम अपने मन माफिक कराना है, या वह आपका पैसा लेकर नहीं देता या उससे अपने अनुकूल कोई आज्ञा पत्र लिखवाना है या आप किसी से प्रेम करते हैं। उससे विवाह करना चाहते हैं उसके माता-पिता राजी नहीं हैं तो इस प्रयोग को कर सकते हैं। इन सभी प्रयोगों में आपका पक्ष न्यायोचित होना चाहिए।

यह वशीकरण महामन्त्र देवताओं तथा महादेवियों को वश में करने के लिए शास्त्रों में बताये गए हैं। देवताओं को वश में करने से तात्पर्य यह है कि उनको अपने पर कृपालु करने के लिए होते हैं। जिस देवता का बीजमंत्र लगा कर जप किया जाता है उसी देवता की कृपा प्राप्त होती है। इनका असली ध्येय तो निर्वाण पद की मोक्ष की प्राप्ति इष्ट देवता का दर्शन है और सात्विक साधना तो यही है जो इस ध्येय को सामने रखकर की जाती है। परन्तु संसार में रह कर हम संसारी जीव धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चार पदार्थों में से अर्थ व काम के लिए भी सकाम साधना कर सकते हैं। परन्तु उसमें भी यह आवश्यक है कि अपने बुद्धि विवेक से यह निर्णय अवश्य कर लेना चाहिए कि जिस कामना से साधन किया जा रहा है वह धर्म समाज लोकाचार न्याय आदि की दृष्टि से उचित की संज्ञा में आती है या नहीं। पाप व पुण्य की व्याख्या व्यास जी ने इस श्लोक में की है : अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं। परोपकाराय पुण्याय पापाय परिपीडिनम्। जिस काम को करने से किसी को दुख पहुँचे किसी की हानि होती हो वह पाप है। जिस काम को करने से किसी को सुख पहुँचे बिना किसी को हानि पहुँचाये वह पुण्य है। इस मंत्र का प्रयोग जीवन में आने वाली बहुत-सी समस्याओं को हल करने में किया जा सकता है। मान लो किसी का बालक या युवा पुत्र पुत्री घर से रूठ कर भाग गया है या किसी का पति या पत्नी घर छोड़ कर चली गई है या किसी को आप किसी गंतव्य स्थान पर वापस बुलाना चाहते हैं। अथवा कोई आप से इस प्रकार का प्रयोग करने की प्रार्थना करता है तो आप उस व्यक्ति

विशेष का कोई पहना हुआ कपड़ा मंगवायें। कोई ऐसा वस्त्र जो उसने पहना हो और उसके बाद धुला न हो जिसमें उस व्यक्ति के शरीर की गन्ध हो मंगवायें। ऐसा वस्त्र न मिले तो धुला हुआ भी चल सकता है। यानी पहन कर धुल गया हो उसमें भी कुछ न कुछ गन्ध उसके शरीर की होगी ही। भोजपत्र पर पन्द्रह का यन्त्र तथा इस मन्त्र को उस व्यक्ति के नाम के साथ लिखो। प्राय तो ऐसा होता है कि मन्त्रवेत्ता लोग होली-दिवाली शिवरात्रि ग्रहण आदि के अवसरों पर इस प्रकार के यन्त्र अष्टगन्ध की स्याही से व अनार की कलम से लिखकर इकट्ठे बनाकर रख लेते हैं तथा उनको समय आने पर प्रयोग में लाते रहते हैं। इन विशेष अवसरों पर बनाए गए यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदि अधिक प्रभावशाली होते हैं। जब किसी के लिए उपरोक्त प्रकार का प्रयोग करना होता है तो उस व्यक्ति के नाम के साथ तन्त्र व मन्त्र किसी साफ कागज पर लिखकर भोजपत्र वाला यंत्र हो तो उसके साथ उस वस्त्र के अन्दर रख दिया जाता है। अब मान लो कोई प्रदीप कुमार नाम का लड़का घर छोड़ कर चला गया है तो उसके लिए भोजपत्र पर या कागज पर पन्द्रह का यंत्र बनाओ। उसके चारों ओर अपने इस वशीकरण मन्त्र के चारों अक्षरों को लिख दो। उसके साथ-साथ प्रदीपकुमारं वशीकरण कुरु-कुरु स्वाहा शब्द जोड़ दो।

इस प्रयोग में यदि आपने पहले बताया हुआ श्री बटुक भैरव जी का मन्त्र सिद्ध किया हुआ है तो वह भी या केवल वही मन्त्र भी लिख सकते हो। यह सब लिख कर भोजपत्र तथा कागज पर लिखे यन्त्र व मन्त्रों को भगवती के सामने धूप जला कर उसे धूप दो। अन्तर में प्रार्थना करो कि माँ उस व्यक्ति को बुला दे। जो व्यक्ति आपके पास आया है उसे कुछ द्रव्य भगवती के सामने रखने को कहो। क्योंकि ऐसा विधान है कि यंत्र को खाली हाथ नहीं लेते। इस लिए जो श्रद्धा हो उसे रखने को कहो। इस द्रव्य को आप दान पुण्य प्रसाद आदि में लगा दें। उस व्यक्ति को भगवती के सामने खड़ा करके उससे कहो कि वह अपने मन में मनौती माने कि उसका भागा हुआ लड़का लड़की या सम्बन्धी वापस आ जाएगा तो वह माता के प्रसाद के लिए इतना देगा या अमुक वस्तु चढ़ायेगा। यह वह अपने मन में ही संकल्प कर ले आपको न बताये। इसके बाद उस यन्त्र मन्त्र के भोजपत्र व कागज को आप उस व्यक्ति

के वस्त्र में रखकर लपेट दीजिए और उसके अभिभावक से कहिए कि उस वस्त्र को घर जाकर किसी भारी वस्तु के नीचे दबा कर रख दे। जैसे कि बड़े बक्से के नीचे या घर में चक्की या मसाले पीसने की सिल हो तो उसके नीचे। और वह यंत्र इसी प्रकार रखा रहना चाहिए।

अनुभव तो यह है कि वह भागा हुआ व्यक्ति बहुत शीघ्र इस यन्त्र के प्रभाव से घर वापस आ जाता है। बशर्ते कि वह रोगी अशक्त न हो, बन्धन में न हो और घर आने के लिए स्वतन्त्र हो। इस यन्त्र का असर ४० दिन तक रहता है। यदि इतने दिन तक गया हुआ व्यक्ति वापस न आये तो यन्त्र को निकाल लेना चाहिए और वापस आ जाये तो भी यन्त्र को कपड़े में से निकाल लेना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना होगा कि यन्त्र ले जाने वाला यन्त्र को इस प्रकार न फेंक दे कि उसका अपमान हो और वह पैरों में या गन्दी जगह में न फेंका जाए। यदि यन्त्र के द्वारा कार्य हो जाता है तो उस व्यक्ति को मनौती की राशि देने के लिए कहो। वह स्वयं ही देगा। उसका प्रसाद आदि वितरण कर दो। अक्सर होता यह है कि अभिभावक लोग एक से अधिक यंत्र और उपाय कराते हैं और भगोड़े के वापस आ जाने की खुशी में सारे संकल्प और वायदे भूल जाते हैं तथा यंत्र को लौटाना तक भूल जाते हैं। अपने यंत्र को अपमान से बचाने के लिए तुमको इसका ध्यान रखना होगा कि उसे वापिस ले लिया जाए, काम होने पर भी और किसी कारणवश कार्य न हो तो भी, क्योंकि यदि भागा हुआ व्यक्ति बन्धन में है, किसी ने रोक रखा है, किसी मजबूरी में है, वापिस आने की राह नहीं है, रोगी है, अशक्त है, सूचना तक नहीं दे सकता तो उसका वापिस आना संभव नहीं होता। ऐसी दशा में प्रश्न लग्न द्वारा भगोड़े व्यक्ति की वर्तमान दशा का ज्ञान कर लेना चाहिए। यदि भगोड़े व्यक्ति का फोटो प्राप्त है तो उस को सामने रखकर उसका ध्यान करते हुए मंत्र जाप व अन्तर में त्राटक करते हुए उसका आकर्षण प्रयोग किया जा सकता है।

किसी अन्य व्यक्ति का अपने या किसी अन्य व्यक्ति के लिए आकर्षण वशीकरण प्रयोग करने के लिए मंत्र का जाप उस व्यक्ति या व्यक्तियों के नाम के साथ करना चाहिए। जैसे मान लो आप किसी रूप किशोर नाम के व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित या अनुकूल करना चाहते हैं तो आप इस प्रकार से

यंत्र का जाप करेंगे : ओ३म क्लीं क्लीं रूपकिशोर मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा और यदि रूपकिशोर को शान्ति बाई की ओर आर्काषित करने का प्रयोग करना है तो मंत्र जाप इस प्रकार से होगा : ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर शान्तिबाई वश्यं कुरु कुरु स्वाहा । इसमें रूप किशोर को अपनी ओर आर्कषित करने के लिए दृढ़इच्छा शक्ति के साथ कहो । बार-बार मंत्र जप करते हुए भावना व धारणा इसी प्रकार की करो । फोटो सामने रखने का कारण यह है कि उस व्यक्ति का ध्यान बराबर रहे । यदि तुमने उस व्यक्ति यानी रूपकिशोर को अच्छी तरह देखा है तो उसका स्वरूप ध्यान में अंतर नेत्र के सामने स्वयमेव आ जायेगा । देखा नहीं है तो फोटो जरूरी है । फोटो के ऊपर दृष्टि जमाकर ध्यान करने से त्राटक करने से और साथ-साथ मंत्र जप करने से भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है । मतलब यह कि ध्यान चाहे अन्तर में करो या बाहर करो दोनों का ही फल होता है । यों फोटो न हो तो भी प्रयोग तो किया जा सकता है और फलदायक भी रहता है परन्तु फोटो होने से अधिक प्रभावशाली प्रयोग हो जाता है ।

दुर्गा सप्तशती का पाठ करते समय इस मंत्र का सम्पुट लगा कर पाठ करने से देवी की प्रसन्नता शीघ्र होती है । किसी अनुष्ठान को करने के लिए सौ पाठों की शतचण्डी या हजार पाठों की सहस्र चण्डी की जाती है या कराई जाती है । लक्ष चण्डी और अधिक पाठों की सहस्र लक्ष चण्डी भी कराई जाती है । सप्तशती दुर्गापाठ की पुस्तक है जिसमें ७०० श्लोक हैं इसी कारण नाम सप्तशती है । इसका प्रत्येक श्लोक ही मन्त्र है । कुछ श्लोकों से अनुष्ठान भी किये कराये जाते हैं । यह श्लोक अधिक प्रभावशाली हैं । सम्पुट लगाकर पाठ करना हर एक पण्डित जानता है । फिर भी इस मन्त्र का सम्पुट लगाकर पाठ कैसे होता है अथवा इस मन्त्र का सम्पुट लगाकर मन्त्र श्लोकों को कैसे जपा जाता है यह नीचे उदाहरण देकर समझाया गया है । यथा :—

ॐ क्लीं सर्व मंगल मांगल्यै शिवै सर्वार्थे साधिके, शरण्ये त्रयम्बिके गौरी नारायणि नमोस्तुते क्लीं नमः ।। यह सम्पुट लगा कर श्लोक मन्त्र की एक आवृत्ति हुई ।

इस मन्त्र श्लोक का जाप करने से सब प्रकार का कल्याण प्रगति वैभव

प्राप्ति होती है। आपत्ति विपत्ति से छुटकारा पाने, शत्रुपीड़ा भय आदि से त्राण पाने के लिए निम्न मन्त्र श्लोकों का जाप करने से तत्काल लाभ होता है :

ॐ क्लो शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते क्लीं नमः ।। अथवा ॐ क्लीं सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते, भयेभ्यस्त्राहिनो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते क्लीं नमः ।

रोगनाश के लिए निम्न मन्त्रों का जाप करने से तत्काल लाभ होता है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि आपका कोई निकट सम्बन्धी जीवन मृत्यु में लटक जाय तो आप नीचे लिखे मन्त्रों को या इनमें से किसी एक का निरन्तर बीच-बीच जाप आरम्भ कर दीजिये। विश्वास रखिए संकट टल जायेगा, रोग का डाक्टरी या वैद्यक इलाज बंद न करिये। यह आध्यात्मिक इलाज साथ में चालू रखिए। वे ही दवायें जो प्रभावहीन थीं आपके इस प्रयोग से लाभ करना आरम्भ कर देंगी। इन मंत्रों का चमत्कारी प्रभाव मैंने अपने जीवन में कितनी ही बार देखा है। जैसा कि इन अध्यायों में ही कई बार वर्णन आया है कि मैं अपने गुरु की सेवा में ८ वर्ष तक रहा था। उन दिनों प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर शौच आदि से निवृत्त होना कुंए से जल निकालना, स्नान करना, काली के मंदिर में सफाई करना पूजा करना आरती करना तथा सप्तशती का एक पाठ नित्य करना और प्रसाद पाकर अपनी नौकरी पर चले जाना, यह मेरा नित्य नियम था। इस प्रकार सप्तशती के सभी श्लोकों की हजारों ही आवृत्तियाँ स्वयमेव हो गयी थीं तथा विशेष मन्त्रों को अलग से भी कहता रहता था। यों विधिपूर्वक किसी श्लोक का पुरश्चरण नहीं किया था।

कहने का तात्पर्य यह है कि इन मन्त्र श्लोकों की भी सहस्रों आवृत्तियाँ मेरे द्वारा हो चुकी थीं और उनमें कुछ न कुछ शक्ति आ ही गयी थी। कई बार मेरे पुत्र पौत्री के जीवन पर संकट आया, डाक्टरों ने भी निराशा सी ही व्यक्त कर दी तब हारे को हरिनाम, मैंने इन्हीं मन्त्रों का जाप सम्पूर्ण मनः शक्ति के साथ किया और मां की कृपा से संकट टल गया था। हाँ उस समय मैं इन मंत्रों का जाप करते हुए साथ-साथ अपने हाथ से उनके शरीरों को स्पर्श द्वारा भी अपने शरीर की जीवनी शक्ति पहुंचा रहा था यानी अपने हाथों से उनके शरीर को पकड़े हुए जाप कर रहा था यह याद आता है। कहने का भावार्थ है कि इन या अन्य मन्त्रों का सफलता पूर्वक प्रयोग करने से पहले

आपने इनको काफी संख्या में जप करके कुछ सिद्धता तक पहुँचाया हुआ है तो इनका प्रभाव तत्काल होता है और निश्चित रूप से होता है। रोगनाश के लिए सप्तशती के महामन्त्र श्लोक :—

ॐ क्लीं रोगान शेषान पहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयान्ति क्लीं नमः

ॐ क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते क्लीं नमः ।।

यदि किसी व्यक्ति का विवाह नहीं होता और उसको विवाह की इच्छा है गृहस्थ धर्म का पालन करने के लिए एक सुलक्षणा पत्नी की चाह है तो वह विश्वासपूर्वक निम्न मन्त्र श्लोक का जाप करें, केवल ४० दिन, और निश्चित है कि उसे मन चाही पत्नी की प्राप्ति होगी। जिन दिनों मैं अपने गुरुद्वारे पर माँ की साधना में निमग्न था उस समय मेरी पहली पत्नी का स्वर्गवास यक्ष्मा की भयंकर बीमारी के फलस्वरूप हो चुका था। उस जमाने के रिवाजों के अनुसार मेरा पहला विवाह १४ वर्ष की छोटी आयु में ही हो गया था। मेरे परिवार में मेरी माताजी, चाचीजी, ताईजी, मेरी पत्नी और बाद में मेरी तीन छोटी बहिनें इसी रोग से ग्रसित होकर काल कवलित हुईं। उस समय यह राजरोग सचमुच ही असाध्य था। चिकित्सा विज्ञान ने इतनी प्रगति नहीं की थी और उस छोटे शहर में चिकित्सा सुविधाएँ भी आज की तरह उपलब्ध नहीं थीं तो जब मैं दुर्गा सप्तशती का पाठ नित्य करता और उसमें जब वह श्लोक पाठ आता था उस समय अनायास ही मेरा ध्यान इस ओर चला जाता था और मैं भी इस श्लोक के अर्थ के साथ अपने को तदाकार कर लेता था कि मां मुझे भी संसार से तारने वाली सुलक्षणा पत्नी दे। वह श्लोक इस प्रकार से है :—

ॐ क्लीं पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् क्लीं नमः ।।

और सचमुच माँ ने मुझे वैसी ही पत्नी दी। वह अब भी मुझसे अधिक माँ की पूजा पाठ व्रत उपवास करने वाली है और संसार सागर को पार करने में बहुत सहायक रही है। इसके बाद मैंने इस मन्त्र श्लोक को कई व्यक्तियों को बताया और उनका विवाह मनोनुकूल शीघ्र हो गया था।

कन्याओं को मनोनुकूल पति प्राप्त करने के लिए जो अनुष्ठान व तन्त्र

मैंने आज तक कितने ही व्यक्तियों को बताया और वे लोग सफल हुए हैं वह मैं अपनी पुस्तक 'तन्त्रविद्या' में लिख चुका हूं।

तो अब सप्तशती के ही कुछ अन्य अनुभूत मन्त्र श्लोक लिखकर इस पाठ को समाप्त करूँगा।

आरोग्य तथा सौभाग्य के लिए :

ओ३म् क्लीं देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखं। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि क्लीं नम ।।

बाधा शांति के लिए :

ओ३म् क्लीं सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी। एवमेव त्वया कार्यं मस्मद्वैरि विनाशनम् क्लीं नमः ।।

दारिद्रय दुःख नाश के लिए :

ओ३म् दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽर्द्र चित्ता क्लीं नमः ।।

विद्या प्राप्ति के लिए :

ओ३म् ह्रीं विद्याः समस्ता स्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ता, सकला जगत्सु। त्वयै कया पूरितमम्ब यैतत् का ते स्तुतिः स्तव्य परा परोक्तिः ह्रीं नमः ।।

स्वप्न में उत्तर पाने के लिए :

ओ३म् क्लीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्व कामार्थ साधिके। मम सिद्धमसिद्धि वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय क्लीं नमः

बाधा शांति तथा धन पुत्रादि के लिए :

ओ३म् क्लीं सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः। मनुष्यो मत्-प्रसादेन भविष्यति न संशयः क्लीं नमः।।

ओ३म् क्लीं देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद, प्रसीद्र मातर जगतो अखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य क्लीं नमः।।

नौवां अध्याय

यन्त्रों को सिद्ध करना

इस अध्याय में सब से पहले यंत्र सिद्ध करने उनको बनाने व प्रयोग करने की विधियों के बारे में बताते हैं। यंत्रों के बारे में यंत्र चिन्तामणि में बिस्तार से बताया गया है कि किस प्रकार से अंक तथा बीज मंत्रों के अक्षर हमारे जीवन व प्रकृति पर प्रभाव डालते हैं। यहां हम कुछ अनुभूत यंत्रों के सिद्ध करने के बारे में बतायेंगे। जिस प्रकार मंत्रों को सिद्ध करने के लिए उनको लाख सवा लाख जपा जाता है उसी प्रकार यंत्रों को सिद्ध करने के लिए उनको इतनी या कम ज्यादा संख्या में लिखा जाता है। इसके लिए प्राचीन प्रचलित विधि तो यह है कि एक लकड़ी के पट्टे पर बालू बिछा ली और उस पर यंत्र लिखकर बार-बार मिटा दिया। इस प्रकार संख्या पूरी की जाती है। पहले बच्चों को बाराखड़ी की प्राथमिक शिक्षा इसी प्रकार से दी जाती थी। तो आप भी एक लकड़ी का समतल पट्टा ले आइए। एक डेढ़ फुट चौड़ा तथा दो फुट लम्बा काफी होगा। उस पर थोड़ी सी साफ रेत बिछा लीजिए। यह रेत किसी नदी की तलहटी की हो तो अच्छा है। इसमें कंकड़ पत्थर या कोई कूड़ा करकट नहीं होना चाहिए। ईंट का पिसा हुआ पाउडर भी ठीक रहता है। सेलखड़ी या चाक खरिया मिट्टी का पिसा हुआ पावडर भी ठीक रहता है। पट्टे पर थोड़ा सा पाउडर या रेत बिछा लो, उस पर यंत्र लिखो। लिखने की विधि नीचे बताई गई है। लिखकर मिटा दो फिर लिखो फिर मिटा दो। इस प्रकार एक बैठक में कोई संख्या निश्चित कर लो और उतनी संख्या होने के बाद समाप्त कर दो। पटरे व रेती को संभाल कर दूसरी अगली बैठक के लिए रख दो। जिस प्रकार मंत्र सिद्ध करने के लिए जप करने से पूर्व कुछ विधान हैं उसी प्रकार से यंत्र के लिए भी हैं। देवी देवता गुरु के चित्र के सामने दीक्षा ली जाती है। उनका आवाहन उसी प्रकार से करना होता है। उसके बाद यन्त्र लिखने का साधन आरम्भ करते हैं। किसी शुभ दिन शुभ मुहूर्त में आरम्भ

करते हैं। नवरात्रि, कालरात्रि, मोहरात्रि, महारात्रि, ग्रहण काल, सर्वार्थ सिद्धि योग, इष्ट देवता या देवी के वार से इस शुभ कार्य का आरम्भ करना ठीक रहता है और बाद में भी होली दिवाली तथा ग्रहण के अवसर पर इनको लिखा जाता है। लिखने के लिए स्लेट की पेंसिल या अनार की लकड़ी तथा तर्जनी उंगली से भी काम लिया जा सकता है। यंत्र लिखते समय एक दीपक जलता रहना चाहिये।

सबसे पहले पन्द्रह का यंत्र बताते हैं। इसमें नौ खानों में एक से लेकर नौ तक की संख्याओं को इस प्रकार से लिखा जाता है कि सीधे आडे तिरछे कैसे भी जोड़ो जोड़ पन्द्रह ही होता है। यह बहुत शक्तिशाली यन्त्र है और सबसे ज्यादा प्रयोग में भी आता है। आपने व्यापारियों के संस्थानों में इसे सिंदूर से लिखा हुआ देखा होगा। इसका मूल रूप इस प्रकार से है।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इसमें पहली पंक्ति में ६१८ की संख्या है दूसरी में ७५३ की तथा तीसरी पंक्ति में २९४ की संख्या है। इसी को अदल बदल कर कई प्रकार से लिखने से इसके कई रूप हो जाते हैं। जैसे २९४, ७५३ व ६१८ को पहली दूसरी तीसरी पंक्ति में लिखने से एक और शक्ल बन जाती है। ८३४, १५९, ६७२ से दूसरी शक्ल और ६७२, १५९ व ८३४ से तीसरी शक्ल बनती है। और इन सभी रूपों में यंत्र १५ का ही रहता है क्योंकि जोड़ सब ओर से इन सभी रूपों

में तीनों संख्याओं का १५ ही आता है। आप स्वयं जोड़कर देख लीजिएगा। जैसे ६, १, ८ का जोड़ १५, ७, ५, ३ का जोड़ १५ तथा २, ९, ४ का जोड़ पन्द्रह व तिरछे से छः, पाँच, चार का जोड़ पन्द्रह और दो, पाँच, आठ का जोड़ पन्द्रह होता हैं। ६, ७, २=१५, १, ५, ९=१५, ८, ३, ४=१५ इस प्रकार से इस यंत्र के ऊपर लिखे सभी रूप पन्द्रह के ही बनते हैं और भिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। इसका मूल रूप वही है जो ऊपर चित्रित किया गया है क्योंकि इनमें एक की संख्या ऊपर की पंक्ति के बीच में है।

जब आप यन्त्र को सिद्ध करने का संकल्प करें तब किसी शुभ दिन शुभ मुहूर्त में भगवती के तथा गुरु चित्र के सामने इसको भोजपत्र पर लिखकर या किसी धातु के सोने या चांदी तांबे के पत्तर पर खुदवा कर देवी के सामने रखें और जिस प्रकार मन्त्र की दीक्षा ली जाती है उसी प्रकार से इसकी दीक्षा लो। आत्म शुद्धि, स्थान शुद्धि, संकल्प मंत्र के बाद देवता की विधिवत षोड़सोपचार पूजा करो। नित्य पाठ पूजन करते हो तो पुस्तक पूजा मंत्र के न्यास जप आरती हवन आदि कर्म यथावत करते रहना चाहिए। उसके साथ-साथ इस यंत्र की भी पूजा की जाती है। तत्पश्चात इसको लिखने का अभ्यास किया जाता है। पटड़े पर बालू रेत या पावडर बिछा कर उस पर हाथ की तर्जनी से या अनार की कलम से या स्लेट की पेंसिल से लिखना शुरू कर दो। इसमें कलम की नोक मोटी रखनी होती है। सबसे पहले चार आडी रेखायें बराबर के फासले पर (दूरी पर) खींचो और उसके बाद चार खड़ी रेखायें भी बराबर की दूरी पर खींचो। इन आठ रेखाओं के द्वारा ९ खानों का यंत्र बन गया। अब इसमें संख्यायें लिखो। सबसे पहले ऊपर की पंक्ति में बीच के खाने में एक की संख्या लिखो, उसके बाद तीसरी पंक्ति के पहले खाने में दो की संख्या लिखो, उसके बाद दूसरी पंक्ति के तीसरे खाने में तीन की संख्या लिखो। इसी प्रकार क्रम से चार, पांच, छः, सात, आठ की संख्यायें उनके खानों में लिख दी जाती हैं। ऐसा नहीं है कि पहले छः लिखा फिर एक लिखा फिर आठ लिखा फिर दूसरी लाइन का सात, पांच, तीन, और तीसरी का दो, नौ, चार। इसका नियम व विधान यही है कि पहले एक की संख्या फिर दो की फिर तीन की लिखी जाती है और इसी का अभ्यास किया जाता है।

अपनी सुविधा व समय के अनुसार नित्य की निश्चित संख्या लिखते-लिखते

जब पूर्ण संख्या हो जाये तो हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन आदि करा देना चाहिए। हवन तर्पण मार्जन आदि ओ३म् क्लीं क्लीं नमः के गुरु मंत्र या इष्ट मंत्र से कराना ही ठीक होगा। वैसे लक्ष्मी मंत्र या सरस्वती मंत्र या बटुक भैरव मन्त्र या बगलामुखी मन्त्र जो भी आपने सिद्ध किया हो, इन सभी मंत्रों के साथ यथाशक्ति हवन तर्पण मार्जन कराया जा सकता है। सवा लाख की संख्या लिखने के बाद यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध करते समय या सिद्ध हो जाने पर तो अन्तर में तथा बाहर भी कुछ न कुछ अलौकिक अनुभव होते हैं। परन्तु यन्त्र सिद्ध करते समय ऐसा कुछ नहीं होता। हां बाधाएँ आती हैं। आपको साधन से हटाने के लिए कई प्रकार की रुकावटें आ सकती हैं। यन्त्र सिद्ध हो गया है या नहीं इसकी परीक्षा तो उसको प्रयोग में लाने पर ही होती है। मान लो आपके घर में बिजली लगी हुई है और आप बिजली की प्रेस लाइन पर लगा देते हैं। बिजली का करेंट लाइन में आ रहा है या नहीं अथवा आपकी प्रेस ठीक है या नहीं या डोरी स्विच आदि सब ठीक हैं या नहीं ? इसकी जाँच तो तभी हो सकेगी जब प्रेस गरम हो जाएगी और इसमें कुछ समय लगेगा। प्रेस पाँच-दस मिनट तक देखने के बाद भी गरम नहीं होती तो आप जान जायेंगे कि कहीं न कहीं खराबी है। लेकिन यदि आप लाइन पर बल्ब या पंखा जैसी चीज लगा कर देखें तो आपको फौरन पता चल जायेगा कि तारों में बिजली का करेंट है या नहीं ? क्योंकि यह चीजें कनेक्शन होते ही चालू हो जाती हैं। अगर तारों का स्पर्श होते ही बल्ब न जले तो समझ लेना चाहिये कि करेंट नहीं आ रहा है और उसका प्रबन्ध करना चाहिए और यदि बल्ब जल जाता है लेकिन प्रेस उसी जगह पर लगाने से गरम नहीं होती तो यही समझा जायेगा कि प्रेस में या डोरी में कुछ खराबी है। तो कहने का मतलब यह है कि प्रेस से जांच करने में देर होती है और तुरंत जलने वाले बल्ब आदि से जांच जल्दी हो जाती है। आपका यंत्र सिद्ध हो गया है या नहीं इसकी जाँच भी इसी से होगी कि आप जिनको उसे देते हैं उनका काम होता है या नहीं। तो पहले आप यंत्र को ऐसे लोगों को दीजिए जिन पर उसके प्रभाव को तुरंत ज्ञात किया जा सके।

प्रयोग करने के लिए औरों को देने के लिए जो यन्त्र आदि बनाये जाते हैं उनको ताबीज, रक्षा कवच आदि कहते हैं। यह विशेष अवसरों पर बनाए जा

सकते हैं। जैसे होली दिवाली शिवरात्रि जिन्हें महारात्रि मोहरात्रि कालरात्रि कहा जाता है तथा ग्रहण के समय इन तावीजों-यंत्रों को बनाने का सबसे उपयुक्त अवसर होता है। यदि बहुत आवश्यक हो और इनमें से कोई भी पर्व जल्दी आने वाला न हो तो सर्वार्थ सिद्ध योग में अमृत योग में पुष्प नक्षत्र में अमावस्या की रात्रि में भी बनाकर काम चलाया जा सकता है। बाजार से भोजपत्र लाओ। भोजपत्र ऐसा हो जिसका पत्र साफ हो गांठदार न हो और उसमें दो इंच लम्बा चौड़ा पत्र साफ निकल आये, जिस पर आप आसानी से मंत्र आदि लिख सकें। बाजार से लाए गए भोजपत्र में से संभाल संभाल कर पतले-पतले पत्र उतार लो। उनको साफ धोकर कैंची से टुकड़े काट कर रख लो। फालतू कतरनों गांठदार भाग को फेंक दो। लिखने के लिए अनार के पेड़ में से पतली टहनी तोड़कर लाओ और जब वे सूख जायें तो उनको चाकू से छील कर कलमें बना लो। तुम्हें एक ही कलम की जरूरत होगी परन्तु दो तीन बनाकर रख लेनी चाहिए जिनमें मोटी पतली नोक बनाकर रख लेना चाहिए और आवश्यकता से अनुसार प्रयोग में लाते रहना चाहिए। यन्त्र के चारों ओर की रेखाओं के लिए कुछ मोटी नोक की, अंक लिखने को कुछ कम मोटी नोक तथा मन्त्रों के अक्षर लिखने के लिए कुछ पतली नोक की कलम ठीक रहती है।

कुछ समय पहले तक यानी हमारी पीढ़ी तक प्राथमिक पाठशालाओं में लिखाई कलमों से तख्ती पर ही कराई जाती थी और आप में से कुछ व्यक्ति कलमें बनाना जानते भी होंगे। उन कलमों को बनाने के बाद खत को बीच में से चीर दिया जाता था परन्तु अनार की कलम को जो यंत्र लिखने के काम में आती है बीच में से नहीं चीरा जाता। अब रह गई स्याही। तो स्याही अष्टगन्ध से बनाई जाती है। यह आठ चीजें हैं:—लाल चन्दन, सफेद चन्दन, कपूर, केसर, कस्तूरी, गोरोचन, अगर और बालछड़। चन्दन घिसने की एक पत्थर की गोल चकलिया होती है। उस पर लाल चन्दन को घिसो उसमें फिर सफेद चन्दन को घिसो। सफेद चन्दन व लाल चन्दन के मुट्ठे बाजार में आसानी से शुद्ध मिल जाते हैं। चन्दन के घिसे लेप में ही कपूर केसर को भी चन्दन की मुट्ठी से ही घिस लो। कस्तूरी व गोरोचन शुद्ध मुश्किल से मिलते हैं। अच्छी विश्वास की दुकान से यह चीजें लो। मंहगी भी होती हैं। अतएव थोड़ी लो

पर शुद्ध लो । और इन को भी थोड़ी तादाद में उसी लेप में घिस दो । अगर तगर बालछड़ आदि सुलभ हैं । यह पंसारी या अत्तार के यहाँ उसी दुकान पर जहां वैद्यक की दवायें मिलती हैं मिल जायेंगी । यह चीजें भी चंदन के मुट्ठे की सहायता से उसी लेप में घिस देनी चाहिए । आपको अपनी स्याही यानी लिखने के लिए लेप लाल रंग में बनाना है । इसलिए इसमें लाल चन्दन अधिक प्रयोग करो जिससे उसमें लाल रंग आ जाये । लेप को गाढ़ा ही रखो परन्तु इतना गाढ़ा भी मत करो कि वह लेखनी पर चिपक जाय । गाढ़ा अधिक हो तो उसमें पानी मिला लो । पानी शुद्ध प्रयोग में लाना चाहिए । देवता भेद, मन्त्र भेद और यन्त्र भेद से अष्टगंध पदार्थों में कुछ परिवर्तन भी किया जाता है और हल्दी रोली सिंदूर आदि अन्य पदार्थ भी मिलाये जाते हैं । परन्तु आपके इस यंत्र के लिए उपरोक्त पदार्थ ठीक रहेंगे ।

यन्त्र बनाने के लिए स्थान एकान्त शान्त वातावरण का होना चाहिए । पूजा स्थान पर ही ठीक रहता है । देवी देवता के सामने बैठकर ही यन्त्र बनाना उचित है । उचित स्थानों की परिभाषा विस्तार से पहले बताई जा चुकी है । जहां पर आपने मन्त्र को सिद्ध किया है वही स्थान हो तो उत्तम है । यदि वह न हो तो शुद्ध पवित्र एकान्त शांत स्थान होना चाहिए जहां आपका ध्यान न बंटे और आप यंत्र को विधि से सही-सही लिख सकें । यन्त्र बनाने के लिए उपयुक्त समय रात के बारह बजे से तीन बजे तक का है । ग्रहण काल जिस समय भी हो जितने समय तक ग्रहण पड़े उतने समय तक इस कार्य के लिए उपयुक्त समय है । भोजपत्र के सही नाप के टुकड़े पहले से तैयार करके रख लो, स्याही समय से कुछ पहले ही बनालो और अष्टगन्ध की स्याही उतनी ही बनाओ जितनी आप प्रयोग में ला सकें । मान लो आपको पचास यंत्र बनाने हैं तो पचास यंत्रों के लायक ही स्याही बनाओ बहुत अधिक नहीं, क्योंकि बची हुई स्याही बेकार हो जायेगी । वैसे स्याही का शब्दार्थ तो काले रंग की लेखन सामग्री से है, परंतु यहां हम उसका प्रयोग लिखने के रंगीन द्रव पदार्थ के रूप में कर रहे हैं । हमारी स्याही वस्तुत: लाल रंग की है ।

पर्व काल में यंत्र लिखो । भोजपत्र का एक पत्र लो । उस पर अनार की कलम से अष्टगन्ध की बनाई गई स्याही से पहले चार आड़ी रेखा खींचो फिर उन पर चार खड़ी रेखायें खींचो । इस प्रकार आपके नौ खानों का कोष्ठक

बन जायेगा। इसके लिए मोटी कलम प्रयोग में लाओ। क्योंकि कलम का पेट चिरा हुआ नहीं है इसलिए उसको बार-बार स्याही में डुबोना पड़ेगा। साव-धानी से धीरे-धीरे यंत्र लिखते जाओ। जब नौ कोष्टक बन जायें तो उनमें बारी-बारी क्रमानुसार अंक भरो। पहले एक का फिर दो का इसी प्रकार नौ तक के अंक उनके उचित स्थान पर लिखो। क्योंकि आपने अब तक लाख सवा लाख बार लिख कर इसका काफी अभ्यास कर लिया है और यंत्र सिद्ध हो गया है। फिर भी आप अपने सामने धातु पत्र पर खुदे हुए यन्त्र को अथवा कागज पर बड़ा-बड़ा लिखा हुआ यन्त्र रख लो। इससे कोई गलती नहीं होगी। फिर भी कोई गलती हो जाय तो उसको उंगली से मिटा दो और दुबारा यन्त्र शुरू से बनाओ। एक यन्त्र लिख जाय तो उसको सामने के पट्टे पर रखते जाओ। वे धीरे-धीरे सूखते रहेंगे। जब आप दस बीस यन्त्र लिख चुको तो आपने जो यन्त्र पहले लिखा है वह सूख गया होगा। उसको दुबारा लो और उसके चारों ओर अपने मंत्र के चारों अक्षर लिख दो। ऊपर ओ३म् लिखो दांई ओर क्लीं तथा बाँई ओर क्लीं और नीचे नमः लिखो। इसी प्रकार अन्य सभी यंत्रों पर लिख दो और उनको सूखने दो। यदि आप निश्चित संख्या तक यंत्र बना चुके हैं तो इस काम को बन्द कर दो नहीं तो यदि और बनाने हैं तो इसी प्रकार से बाकी के यन्त्र भी बना लो। थोड़ी देर में इन यन्त्रों की स्याही सूख जायेगी। तब आप धूप जला लीजिए और मन्त्र पढ़ते हुए बारी-बारी से इन यंत्रों को धूप दे लें। यन्त्र को बीच में से मोड़ कर घरी कर दीजिए फिर उसको भी बीच में मोड़कर घरी करते जाइये और तब तक मोड़कर घरी करते जाइए जब तक उसकी शक्ल छोटी न हो जाय। ध्यान रहे कि आप ने बाद में इस यन्त्र को किसी ताबीज में रखना है तो इस यन्त्र की कम से कम आठ घरी (तहें) तो कर ही लीजिए। और ताबीज में रखना है तो उसे ताबीज में रखकर ताबीज के मुँह को मोम से बन्द कर दीजिए। कुछ लोग ताबीज पहनने में लज्जा अनुभव करते हैं और कुछ लोग अपनी पसन्द का सोना चाँदी या ताम्बे का ताबीज बनवाना पसन्द करते हैं। अतएव आप चाहें तो यन्त्र को ताबीज में उसी समय न रखें और उन पर लाल रंग का डोरा बांधकर उनको सुरक्षित रख सकते हैं। आजकल बाजार में प्लास्टिक के पतले कागज आते हैं। उसमें से छोटे-छोटे टुकड़े काट लो। शुद्ध जल से धोकर उनको पहले ही साफ कर लो। यानि काटने से पहले

धो लो और अपने यन्त्रों को उन टुकड़ों में लपेट कर लाल डोरे से बाँध कर रख लो। बड़ा यन्त्र भोज पत्र पर लिखना हो तो लाल रंग की बाल पाइण्ट पेन से ही लिखा जा सकता है। अनार की कलम से लिखने के लिए भोजपत्र का बहुत बड़ा टुकड़ा चाहिए। यन्त्र यदि सिद्ध है तो लाल पेंसिल से लिखा गया यंत्र भी प्रभाव दिखायेगा।

अब जैसे आप के पास जरूरतमन्द लोग आते जायें उनको यह यंत्र देते जाओ। मान लो आपके पास कोई व्यक्ति आता है और वह बताता है कि उस की पत्नी पर भूत व्याधा है। भूत व्याधा ग्रस्त व्यक्ति की हरकतें असामान्य हो जाती हैं। उनमें असाधारण शक्ति आ जाती है, कई आदमियों से भी वह वश में नहीं आता। ऐसी बातें करता है कि जो वह होश में होता तो नहीं करता। ऐसी भाषा बोलता है जो उसने कभी सीखी हुई नहीं होती। माँस मदिरा खाने को माँग सकता है। गाली गलौच प्रलाप करता है। जिस तरह की प्रेतात्मा का आवेश उस शरीर में होता है उसी प्रकार के प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति के क्रिया कलाप हो जाते हैं और सबसे मुख्य बात यह है कि कोई भी वैद्यक या डाक्टरी औषधि उस पर काम नहीं करती। पहले तो वह पियेगा ही नहीं और औषधि ले भी लेगा तो उससे कोई लाभ नहीं होगा। इस प्रकार का विवरण मिले तो समझ लो कि प्रेत बाधा है। ऊपर मैंने बताया था कि बिजली का करेंट आ रहा है या नहीं यह जाँचने के लिए आप बिजली का बल्व लगाइए जो तुरन्त उत्तर देता है। प्रेस तो देर में गरम होकर बतायेगी कि करेंट है या नहीं। तो आपको तुरन्त यह जांच करने का कि आपके यन्त्र में शक्ति है या नहीं यह सिद्ध हो गया है या नहीं, यही अवसर हैं।

मूल यंत्र तो आप विशेष पर्व के अवसर पर बना चुके हैं। परन्तु कार्य भेद से एक और यन्त्र बनाना पड़ता है जिसमें सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम उनकी मनोकामना तथा उपयुक्त मन्त्र अलग से लिखा जाता है। इन सबको लिखने के लिए तो काफी बड़ा भोजपत्र चाहिए और यदि आप दूसरे यन्त्र को भोजपत्र पर ही अष्टगन्ध से लिखें तो अति उत्तम है। नहीं तो साफ सफेद कागज लो जिस पर किसी गन्दी वस्तु के दाग धब्बे न हों और लाल रंग की स्याही या बालपैन लेकर इस दूसरे यंत्र को बना दो। इस दूसरे यंत्र में भी जो मन्त्र लिखा जाय वह यदि सिद्ध न हो तो भी उसकी कम से कम

११००० आवृति तो आपने की हुई होनी चाहिए। यदि आप दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं तो उसके मंत्रों का प्रयोग करें। रामायण का पाठ करते हैं तो उसकी चौपाइयाँ लिखें। गायत्री मंत्र का पाठ करते हैं तो गायत्री मंत्र, बटुक भैरव जी का मंत्र सिद्ध किया है तो उनका मंत्र लिख दें। तो उपरोक्त उदाहरण में आप प्रेतबाधा ग्रस्त व्यक्ति का नाम पूछिए और सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि एवमेव त्वया कार्य मस्मद्वैरि विनाशनम् ओइम ह्रीं बटुकाय आपद्उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ओइम नमः स्वाहा आदि कोई मन्त्र भूत बाधा शान्ति के लिए बनाए गए यन्त्र के साथ भोजपत्र पर या कागज पर लिखकर उसमें मूल यंत्र को लपेट कर प्लास्टिक के कवर में डोरे से बांधकर उसमें एक बड़ा डोरा या गन्डा लाल डोरे का उस व्यक्ति के हाथ से बाँधने के लिए या डालने के लिए बना दीजिए। यदि वह व्यक्ति आपके पास आया है या आप उसके पास गए हैं तो उसे स्वयं उसके शरीर पर बाँध दीजिए। पहले तो वह व्यक्ति आपके यंत्र को पहनने से इन्कार करेगा। हठपूर्वक विरोध करेगा। जैसे कई रोगी कड़वी दवा पीने से मना करते हैं। और यदि वह ऐसा ही करता है तो निश्चित है कि उस पर प्रेत बाधा है। ओझा सयानों के प्रेत बाधा उतारने के तरीके कुछ और तरह के होते हैं। हम जो यहाँ बता रहे हैं वह कुछ और बात है। उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति को किन्हीं अन्य उपायों द्वारा बढ़ाया है। बहुधा तो उनमें भी बहुत से ढोंगी पाखण्डी व ठग ही होते हैं। अस्तु।

आप ऐसा करिये कि बाधाग्रस्त व्यक्ति का हाथ या पैर या शरीर का कोई भी अन्य भाग जैसे मस्तक कंधा जोर से पकड़ लीजिए। अन्य लोगों से यदि वह ऊधम कर रहा है तो, वश में रखने में सहायता ले सकते हैं। आप उसके शरीर के किसी भाग को पकड़ कर आराम से बैठ जाइये और अपने सबसे प्रभावशाली मन्त्र का जिसका आपने सबसे ज्यादा जाप किया है, हनुमान चालीसा का अथवा बटुक भैरव जी के मंत्र का मन में जाप आरम्भ कर दीजिए। यदि आपने राजयोग का कुछ अभ्यास किया है (यह अभ्यास विस्तार से स्वरोदय व राजयोग के पाठों में बताया गया है) तो स्वांस व सुरति से मंत्र का जाप करते हुए उस व्यक्ति के शरीर में अपनी प्रभाव लहरों को दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ प्रवाहित करें तथा जोर देकर पूछें कि तू कौन है क्या

चाहता है। वह प्रेतात्मा जो भी होगी जिस भी अभिप्राय से आई होगी बता देगी और जाने की जिद्द करेगी। कभी-कभी तो वह यंत्र तथा आपके स्पर्श से ही चली जाती है। नहीं तो अपना अता पता अभिप्राय बताकर जाने की इच्छा व्यक्त करती है। यदि उसकी कोई ऐसी इच्छा है जिसे आप आसानी से पूरा कर सकते हैं तो वादा करवा देने में कोई हानि नहीं होती। कभी-कभी तो उसी घर के पूर्वज आते हैं जो अपने क्रिया कर्म के बारे में प्रार्थना करते हैं। कभी-कभी उस व्यक्ति के मामूली अपराध पर क्रोधित होने वाले होते हैं। जैसे इसने मेरे स्थान पर पेशाब कर दिया था मैं नहीं छोड़ूंगा या इसने मेरे लिए चौराहे पर भेंट की गई पूजा सामग्री पैरों से हटा दी थी आदि आदि बातें भी बताते हैं। क्योंकि वह आपके प्रभाव से शरीर से बाहर आ गया है आप उसकी कोई नाजायज मांग न मानें और उसको चले जाने के लिए जोरदार शब्दों, ऊंची आवाज और गाली गलौच वाली भाषा में कहें और धमकी भी दे दें कि यदि कभी उसने आपका कहा न माना तो उसको बहुत कष्ट दिया जायेगा। वैसे तो आपके यंत्र में इतनी शक्ति है कि दुष्ट से दुष्ट प्रेतात्मा भी इसके स्पर्श होते ही चली जायेगी। कुछ दुष्टात्मायें थोड़ा बहुत विरोध करने के बाद चली जायेंगी। वे ठहर ही नहीं सकतीं। उसके बाद ऐसा बन्दोबस्त करें कि वह यन्त्र रोगी व्यक्ति के शरीर पर पक्की तरह से धारण करा दिया जाय। यदि यंत्र हट गया तो उस प्रेतात्मा के फिर प्रवेश की आशंका बनी रहेगी। यदि यंत्र ताबीज के अन्दर है या प्लास्टिक के खोल में भी है तो भी उसको किसी भी हालत में उतारने की जरूरत नहीं होती। लोगों में यह आम विश्वास है कि मासिक धर्म के दिनों में, मौत-गमी शमशान में जाने पर या टट्टी पेशाब जाने पर पहना हुआ यंत्र दूषित हो जाता है ऐसी कोई बात नहीं है। हाँ यह अवश्य है कि उसे रोज सवेरे पूजा के बाद या सप्ताह में एक बार और होली दिवाली पर्व के अवसरों पर धूप देते या दिलवाते रहना चाहिए।

भूत प्रेत आदि आत्माओं से साधक को डरना नहीं चाहिए। यह उसी पर अपना रौब जमाती है जो कमजोर प्रकृति के होते हैं। मिरचों की धूनी देना डण्डों से पीटना यह निकृष्ट उपाय है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि उस समय शरीर में प्रेतात्मा का वास है तो यह कष्ट उसी को होगा और कष्ट या मार के डर से वह भाग जायेगी। परन्तु कभी कभी रोगी भूत बाधा ग्रस्त

न होकर सचमुच किसी रोग से आक्रांत होता है और इस प्रकार मार से मर तक जाता है। कहावत यह है कि मार से भूत भी भागता है। और यह कहावत ओझा सयानों के द्वारा प्रेतबाधा ग्रस्त व्यक्ति की पिटाई करने से ही प्रचलित हुई होगी। परन्तु आप इस प्रकार के तरीके जैसे मार लगाना या मिरचों की धूनी देना प्रयोग में न लायें। अपने मन्त्रों के प्रयोग से ही इस प्रकार की हीन आत्माओं को भगाने का प्रयत्न करें। जिस समय ऐसे व्यक्ति को स्पर्श करें आप शरीर से शुद्ध हों, स्नान किया हुआ हो और वस्त्र भी साफ धुले हुए पहने हों। हनुमान जी या बटुक भैरव जी या महाकाली का मन्त्र या तो सिद्ध हो अथवा उस समय लगातार हनूमान चालीसा या बीजमंत्रों का जाप करते रहें। भय की कोई बात नहीं है। फिर भी यदि कोई दुष्ट प्रेतात्मा आपके वश में न हो पाये तो आप उस प्रयोग से अलग हो जायें और समझ लें कि अभी आपकी आत्म शक्ति इतनी विकसित नहीं हुई है कि उस पर काबू पा सको। यदि आपका दिया तावीज प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्ति उतार देता है और प्रेतात्मा फिर प्रवेश कर जाती हो तो उसको स्थायी रूप से हटाने का उपाय थोड़ा कष्ट साध्य है।

जो यंत्र आपको बताया गया है उसको अन्य बहुत से कामों में भी प्रयोग में लाया जा सकता है। किसी रोगी के स्वास्थ्य लाभ के लिए यंत्र के साथ अलग से कागज या भोज पत्र पर 'रोगान् शेषान्' मंत्र लिखकर उसके साथ रोगी का नाम माँ से आरोग्य की प्रार्थना लिखकर उस यंत्र व मंत्र को किसी तावीज में रखकर रोगी के शरीर पर धारण कराने से शीघ्र आराम आता है।

इसी प्रकार लक्ष्मी मंत्र ओ३म कांसोस्मितां या सर्व मंगल मांगल्ये वाला श्लोक अलग से भोज पत्र या कागज पर लिखकर तावीज में रख कर या कपड़े में सी कर इसे १५ के यंत्र के साथ दिया जाता है। इसे गल्ले में कैश बाक्स में रखने से बहुत बरकत होती है। यदि यंत्र से धन लाभ हो तो उसका दशांश या कम से कम शतांश धर्मार्थ देना चाहिए। नहीं तो श्री चली जाती है। मेरे एक विद्यार्थी श्री रघुवीर सिंह जी यादव जो जमना पार दिल्ली की एक बस्ती में रहते हैं, मेरे से यह यंत्र ले गये थे। उनका चाय का रेस्टोरैंट था। जब भी आते थे तो बताते कि बिक्री बहुत बढ़ गई है परन्तु पता नहीं चलता कि आमदनी चली कहाँ जाती है। परन्तु उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि कुछ पान फूल

भगवती को चढ़ाने के लिए भी साथ लेते चलें। थोड़े दिन बाद वह बढ़ी हुई बिक्री भी बन्द हो गई। अब उन्हें ज्ञान हो गया है और माँ की उन पर पूरी कृपा है। सुबह दूकान खोलते समय रोज इस यन्त्र को धूप देना चाहिए और भगवती का ध्यान करके काम शुरू करना चाहिए। रोजगार धन्धे में अवश्य बरकत होती है। अब यदि कोई एक दिन में लखपती बनना चाहे तो उसे निराशा ही होगी परन्तु यदि इसमें श्री वृद्धि की शक्ति न होती तो व्यापारी गण बरसों से इसे दिवाली वाले दिन क्यों अंकित करवाते। यन्त्र किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा जाना चाहिए जिसने इसे विधिपूर्वक सिद्ध किया हुआ हो।

एक बार एक नवयुवक मेरे पास आया। उसका विदेश जाने का प्रोग्राम था और कागजात सरकारी दफ्तरों में चल रहे थे। अप्रत्याशित विलम्ब बाधायें पड़ रही थीं। फाइल नहीं मिलती थी कहीं खो गई थी। वह युवक मुझसे यंत्र लेकर गया और उसका सब काम २-३ दिन में हो गया। उसे विदेशी राज्य की नागरिकता तक मिल गई। शायद वह कनाडा जाना चाहता था या पश्चिम जर्मनी। यहाँ राजेन्द्र नगर में उसके माता पिता रहते हैं। उसके बाद वह मुझसे जन्मपत्री बनवाकर ले गये थे और यथा शक्ति भेंट पूजा भी चढ़ा गये थे तभी ज्ञात हुआ था। इसी प्रकार एक और युवक की बात भी याद आती है। उसकी पत्नी ने उसके खिलाफ तलाक का केस किया हुआ था और यदि वह समन ले लेता जो जारी हो गए थे तो उसका विदेश जाना असम्भव था। वह यंत्र लेकर गया और उसी दिन हवाई जहाज से विदेश चला गया, लौटकर नहीं आया। धन्यवाद की सूचना अपने सम्बन्धियों के द्वारा भिजवाई थी।

इस प्रकार इस यन्त्र को दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों के साथ लिखकर विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किया जाता है। किसी से किसी की लड़ाई विद्वेषण उच्चाटन कराना है या किसी का किरायेदार मकान खाली नहीं करता, किराया भी नहीं देता और तंग करता है तो इस प्रकार की परिस्थितियों में इस यंत्र को आक के बड़े से पत्ते पर या ताड़ के पत्ते पर बबूल के कांटे से छेद करके बनायें। पहले छेद करके चार लकीरें बनायें उसके बाद आड़ी चार पंक्तियाँ बनायें। उस के बाद नौ खानों में नौ अंक लिखें। पहले नौ का अंक फिर आठ का इस प्रकार उल्टे क्रम से अंक लिखें। उस में ओ३म लूं टं क्षं यह बीजाक्षर लिखो। यह भी पत्ते पर कांटे से ही लिखो तो ठीक है। आक (अकौआ) का

पौधा आम मिल जाता है। यह नहीं मिले तो ताड़, खजूर, अरबी का बड़ा सा पत्ता ले लो। यदि कौवे या गिद्ध का पंख मिल जाये तो उसकी नोक से लिखने से भी बहुत प्रभावकारी रहता है। बबूल का कांटा इस प्रकार से तोड़ो या चाकू से वृक्ष द्वारा अलग करो कि वह दो कांटों की जुड़ी हुई शक्ल में अंग्रेजी अक्षर वी की तरह से हो। एक गुलाबी कागज पर काली स्याही से लोहे की कलम से ओ३म् लृं टं क्षं अमुक व्यक्ति का अमुक व्यक्ति से विद्वेषण क्षोभन या उच्चाटन कुरु कुरु स्वाहा लिखकर उस पत्ते को कागज में लपेट कर बबूल के कांटे से ही उसको बन्द कर के इस यंत्र मंत्र तंत्र के प्रयोग को उस व्यक्ति को दे दो। इसको डोरे से बन्द करने के बजाय कांटे से ही छेद करके बन्द करते हैं। इस तन्त्र को उस व्यक्ति के घर में किसी ऐसे स्थान पर रखना होता है जहाँ किसी की दृष्टि न पड़े।

एक जानवर होता है उसको हमारी तरफ सेई कहते हैं। उसके शरीर पर बहुत बड़े-बड़े मोटे कांटे होते हैं। उसका कांटा छह इंच तक लम्बा होता है। यह जानवर पहाड़ी चूहे से भिन्न होता है। जैसे मोर के शरीर पर पंख होते हैं और वह उनको नाचते समय फैला लेता है इसी प्रकार से सेई भी बड़े-बड़े वन्य जन्तुओं से अपनी रक्षा इन्हीं कांटों की बदौलत करती है। यह खेतों में फसल को नष्ट करती है। अन्न खाती है और वहीं बिल बनाकर रहती है। किसी ग्रामीण भाई से अथवा दिल्ली में जामा मस्जिद के इलाके में या अन्य स्थानों में इसी प्रकार की जड़ी बूटी बेचने वाले के पास यह कांटे जिन्हें सेही के कांटे कहते हैं मिल जायेंगे। इन पर सफेद काली धारी होती है। बीच में मोटे और सिरों पर नोंकदार होते हैं। उच्चाटन विद्वेषण क्षोभन लड़ाई झगड़ा कराने मन को फिराने के लिए इन कांटों का प्रयोग तंत्रों में बहुत किया जाता है। उपरोक्त तंत्र में बबूल के कांटे के स्थान पर इसी से सब काम किया जाए और एक कांटा उस तंत्र के साथ शत्रु के या उस व्यक्ति के जिससे विद्वेषण कराना है घर में कहीं छिपा कर रख दिया जाय तो अच्छा रहता है। जिस घर में सेही का कांटा इस प्रकार से रखा जायेगा उसमें कलह क्लेश बिना बात आपस में झगड़ा होना प्रारम्भ हो जाता है। केवल इस कांटे को ही इसके दोनों सिरों को सिंदूर से रंग कर शत्रु के घर में रख देने से उस के यहां कलह शुरू हो

जाएगी । इसको घर के किसी ऐसे स्थान दीवाल छान छप्पर टीन या सन्धों में छिपाकर रखते हैं कि दिखाई न दे और रखा रहे ।

आकर्षण वशीकरण के लिए आपको कई प्रयोग पिछले अध्याय में बताए गए हैं । कुछ तंत्र तो ऐसे हैं जिनको लिखकर नहीं बताया जा सकता । जो बताये जा सकते है उनमें से एक यह भी है कि जिस व्यक्ति को अपनी ओर आर्कषित करना हो उसको वशीकरण मंत्र से अभिमन्त्रित इलायची सुपारी या चीनी दूध में या चाय में डालकर पिलाया जाय । यदि आपने स्वयं किसी को वशीकरण करना है तो आप उस व्यक्ति का नाम लेकर वशीकरण मंत्र से उस खाद्य पदार्थ को अभिमन्त्रित कीजिए और उस व्यक्ति को खिला दीजिए । अब जैसी आपको सुविधा है और जो वस्तु वह खाता रहता है उसी के अनुसार आप पदार्थ को अभिमन्त्रित कीजिए । मंत्र आपको पहले सिद्ध होना चाहिए । जैसे वह व्यक्ति चाय पीता है तो चीनी डालकर, पान खाता है तो सुपारी इलायची द्वारा । इलायची वैसे भी पेश की जा सकती है और पान में व चाय में भी डाल कर दी जा सकती है । आपको यदि अपने लिए करना है तो मंत्र उसी प्रकार बोलिए जैसे ओ३म् क्लीं क्लीं अमुक व्यक्ति मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

और यदि किसी अन्य के लिए करना है तो अमुक व्यक्ति अमुक वश्यं कुरु कुरु स्वाहा कहते हुए उस वस्तु को अभिमन्त्रित करो । यहां पर यह बता देना फिर जरूरी है कि आपके यह प्रयोग उचित कारणों को लेकर होने चाहिए । जैसे किसी का पति किसी दूसरी जगह आसक्त हो गया है और अपनी पत्नी को नहीं चाहता तो पत्नी की ओर से यह प्रयोग किया जा सकता है या कराया जा सकता है । या कोई वर कन्या विवाह के लिए राजी है परन्तु उनके माता पिता या कोई अभिभावक बाधक है तो उनको राजी करने के लिए भी किया जा सकता है । वैसे अपने हिन्दू समाज में होता तो नहीं परन्तु यदि किसी की पत्नी किसी अन्य पुरुष की ओर आसक्त हो गई हो तो उसको उससे विमुख करने और अपने पति की ओर अनुरक्त करने के लिए भी इस तंत्र का प्रयोग किया जा सकता है ।

तन्त्रों में अपने शरीर से निकली हुई वस्तुओं का प्रयोग होता है । जब पति पत्नी आपस में मिलते हैं तो चम्बन भी करते हैं उनके मुख का रस भी आपस में मिलता है । और इससे उनके प्रेम में आकर्षण में वृद्धि होती है तो

यदि ऊपर बताई गई अभिमन्त्रित वस्तुओं को अपने मुख में रखकर उनको झूठी कर दिया जाए, उनमें अपने मुख की लार (थूक) मिला दिया जाए तो अधिक प्रभावशाली हो जाता है। या वह व्यक्ति अपनी पत्नी को या पत्नी पति को अपनी ओर अनुरक्त करना चाहती है तो अपने मुख में इलायची या सुपारी आदि वस्तुएं रख कर दे तो ठीक रहता है। पति पत्नी सम्बन्धों में इस में कोई अनुचित बात भी नहीं है। उस चाय को जिसमें इस प्रकार की चीजें इलायची आदि पड़ी हों साथ में बैठकर स्वयं भी पिया जा सकता है। कोई हानि नहीं होती। बंगाल बिहार में तन्त्र का प्रचलन बहुत पहले से रहा है। वहां अब भी यह रिवाज है कि विवाह के अवसर पर वधू एक साबुत सुपारी २४ घंटे तक अपने मुख में रखती है और उसी सुपारी को काट कर पान के बीड़े में डाला जाता है और वर को खिलाया जाता है ताकि वर आजीवन वश में रहे।

वेश्यायें बहुधा धनी व्यक्ति को अपने चुंगल में फंसाने के लिए एक तन्त्र करती हैं। उससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, उसको आगा पीछा नहीं सूझता और वह अपना सब कुछ धन दौलत उस वेश्या पर न्यौछावर कर देता है। वेश्यायें जब मासिक धर्म से होती हैं तो वह कुछ इलायची सुपारी आदि खाद्य पदार्थ उस कपड़े में जिसे वह बांधती हैं रख लेती हैं और उनके शरीर से निकला रक्त लगातार तीन चार दिन तक उन वस्तुओं पर प्रवाहित होता रहता है। उन चीजों को वह रख लेती है और अपने यहां आने वाले विशिष्ट लोगों को पान में रखकर खिला देती है। वह आदमी फिर उसके चुंगल से निकल कर नहीं जा सकता। आपके पास यदि कोई ऐसी दुःखी पत्नी या उसके अभिभावक सहायता के लिए आवें तो आप क्या करेंगे? वेश्या या वेश्या के ही समान किसी स्त्री ने किसी बेचारी का पति छीन लिया है, उसका परिवार छिन्न-भिन्न हो गया है। घर की सुख शान्ति चली गई है, तथा उस मोहित व्यक्ति का भी भविष्य नष्ट हो गया है या बरबाद होने वाला है। उस दुखी पत्नी को उपरोक्त तन्त्र प्रयोग करने की सलाह दे सकते हैं।

जहर को जहर से ही काटा जा सकता है। यदि वह दुखी स्त्री इस प्रकार का प्रयोग करने के लिए राजी नहीं होती तो समस्या कठिन है क्योंकि वेश्यायें इस प्रकार की इलायची मोहित व्यक्ति को बहुधा खिलाती रहती हैं और जब

तक एक बार के खिलाये गये पदार्थ का प्रभाव समाप्ति पर आये दुबारा वैसा ही पदार्थ खिलाकर उस प्रभाव को बनाये रखने के लिए बार-बार वैसा ही प्रयोग करती रहती हैं। ऐसे केसों में सबसे पहले तो जरूरी होता है कि वह व्यक्ति वहां जाना छोड़ दे और दुबारा उनको खिलाने पिलाने का अवसर न मिले। तो आप उस दुखी महिला को सलाह दीजिये कि जहर को जहर से काटने में कोई हानि नहीं होगी। उससे वैसा प्रयोग करने के लिये सलाह दीजिए। अथवा अपने मुख में रखी और कुचली या चबाई हुई इलाइचियां चाय में खाने के पदार्थों में देने की बात कहिए। पति पत्नी सम्बन्धों में अपना झूठा खिलाने में कोई अनुचित बात नहीं होती। यह बात भी न माने तो कहिये कि अपने पति का फोटो सामने रखकर वशीकरण मंत्र का जाप करे। वह नहीं कर सकती तो उसके लिए आप करें। उस व्यक्ति का कोई कपड़ा रूमाल गंजी आदि यन्त्र के साथ दबाकर रखें। इन सब प्रयोगों से वह व्यक्ति वेश्याओं के कुप्रभाव से मुक्त हो जाएगा। परन्तु जैसे नशे की आदत मुश्किल से छूटती है वैसे ही उसके फिर लौट जाने की संभावना रहती है। इसलिए अपने प्रयोगों को जिनसे इस कार्य में सफलता मिली है करते रहना चाहिए।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आप किसी व्यक्ति को अपने किसी उचित कार्य के लिए अपने अनुकूल करना चाहते हैं परन्तु आपको इतनी सुविधा प्राप्त नहीं है कि आप उसको अपनी मनचाही वस्तु खिला-पिला सकें और ऊपर बताये गये तंत्रों में से कुछ भी करने में असमर्थ हैं, तो आप वशीकरण मंत्र में उसका नाम लगाकर जाप कर सकते हैं। उसके फोटो पर या यदि उसे देखा है तो उसका ध्यान करके उस पर त्राटक तो कर ही सकते हैं। दूसरे के लिए करें तो दोनों का फोटो या ध्यान करके त्राटक करें और दोनों का नाम मन्त्र में लगा कर जप करें। इसके साथ सामने जाने पर टीका तिलक काजल (स्त्रियों के लिए) सिंदूर लगाकर जायें। इस काम के लिए जो भस्म टीका सिंदूर काजल आदि बनाए जाते हैं, वे भगवती की मूर्ति या चित्र को सामने रख कर वशीकरण मन्त्र का सम्बन्धित व्यक्तियों का नाम लगाकर जप करते हुए और उन पर फूंक मारते हुए उन्हें अभिमन्त्रित करके बनाये जाते हैं।

तिलक : सफेद गोंगची के पत्तों के रस में केसर कस्तूरी मिला कर तिलक बनायें। या मैनसिल कपूर तथा केसर को केले के रस में पीसकर तिलक

बनायें। या हरताल असगन्ध व गोरोचन को केले के पत्ते के रस में पीस कर तिलक बनायें। या छाया में सुखाये गए बेलपत्र के फल के गूदे को कपिला गाय के दूध में पीस कर गोली बनाकर रख लें उसका तिलक बनायें। तुलसी के बीजों को सहदेई के रस में पीस कर तिलक करें। अथवा वेलपत्र के फल, बीजों वाले नींबू को बकरी के दूध में पीस कर तिलक बनाया जाता है।

सिंदूर : सफेद आक की जड़ लें और सिंदूर को केले के रस के साथ या आक की जड़ के साथ पीस कर सिंदूर बनाकर रख लें। अथवा सिंदूर व रोली को गोरोचन के साथ आंवले के रस में पीस लें। अथवा सफेद बच को सिंदूर के साथ पान के रस में पीसकर सिंदूर बना लें।

काजल : गूलर के सूखे फूलों को पीसकर रूई में रखकर बत्ती बनाओ और मक्खन में डुबोकर उसका काजल पारो। काजल सिंदूर व तिलक बनाते समय अपने वशीकरण मंत्र का जाप करते जाओ। इनको लगाते समय भी या उससे पहले भी वशीकरण मन्त्र का सम्बन्धित व्यक्ति/व्यक्तियों के नाम सहित कम से कम सात बार जाप करो।

ऊपर तन्त्रों में बताई गई जड़ी बूटी सभी आसानी से मिल जाती हैं। यदि आप नित्य भगवती की पूजा करते हैं तो भगवती को लगाया तिलक सिंदूर काजल भी मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है।

बीसा यन्त्र

१५ के यंत्र के समान ही प्रभावशाली व शक्तिशाली बीसा यंत्र है। नौ कोठों में आवे बीसा, ताकी सहाय करे जगदीशा। नौ कोष्ठकों में एक से लेकर नौ तक के अंकों को लिख कर बनाया गया ऐसा यंत्र जिस में सब तरफ से जोड़ने पर जोड़ बीस आवे असली बीसा यंत्र होता है। इसका प्रमाणिक रूप निम्न प्रकार से है। इस को सिद्ध करने की विधि तथा प्रयोग में लाने के तरीके रीतियां सब वही हैं जो पन्द्रह के यन्त्र के विषय में बताई गई हैं। इन दोनों महान यंत्रों को पीतल तांबा या अष्ट धातु के पत्र पर खुदवा कर पूजा में रख लेना चाहिए। बीसा यंत्र लक्ष्मी यन्त्र धन सम्पत्ति वैभव के लिए लाभकारी होता है। वैसे इसे सिद्ध कर लिया जाए तो सभी प्रकार के शुभ अभिप्रायों के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। इसकी शकल आगे लिखे अनुसार बनाई
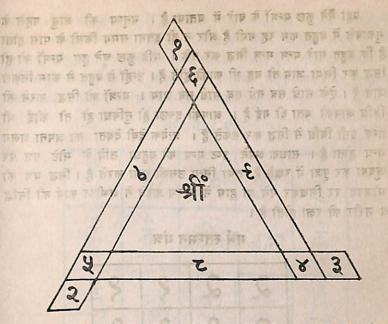
जाती है। पहले सीधी ओर की तिरछी रेखायें नीचे से ऊपर की ओर फिर बांई ओर की तिरछी रेखायें यन्त्र को अपनी तरफ घुमाकर नीचे से ऊपर की ओर यानी बाँई ओर से सीधी तरफ को खीची जाती हैं। उसके बाद दोनों सीधी रेखायें बांई ओर से आरम्भ करके सीधी ओर खींचो। सीधी रेखाओं को खींचने की रीति यही होती है कि उनको बांई ओर से सीधे हाथ की तरफ खींचा जाता है, तथा आड़ी तिरछी रेखाओं को भी बांई ओर से सीधी तरफ खींचा जाता है। जब इन रेखाओं से यंत्र का त्रिकोण बन जाए तो आप देखेंगे कि इस में नौ कोष्ठक बन गए हैं। इनके मुख बन्द कर देने चाहिए। इनमें चित्र के अनुसार पहले एक का अंक लिखें फिर दो का फिर तीन का। इसी प्रकार नौ अंक अपने-अपने स्थान पर लिख दो। बीच में "श्रीं" का बीज लिख दो। यंत्र तैयार है। बिना सिद्ध किए प्रयोग में लाना निरर्थक होता है। और यदि यह दो यंत्र ही सिद्ध कर लिए जायें तो बहुत काफी है। सभी कार्यों की सिद्धि के लिए प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

यहां मैंने कुछ यन्त्रों के बारे में बताया है। मनुष्य की आयु पहले के मुकाबले में बहुत कम रह गयी है और न ही इतना समय किसी के पास होता है कि बहुत सारे यन्त्र मन्त्र सिद्ध कर सके। यदि कुछ चुने हुए यन्त्रों को ही सिद्ध कर लिया जाय तो वह भी काफी होते हैं। उन्हीं से बहुत से काम निकल जाते हैं। ऐके साधे सब सधे सब साधे सब जाय। यन्त्रों को सिद्ध करने की विधि आपको बता दी गई है। आपकी इच्छा हो सुविधा हो तो कोई भी यन्त्र इसी विधि से सिद्ध कर सकते हैं। प्रत्येक देवी देवता का अपना अलग यन्त्र होता है। साधक अपने इष्ट यन्त्र को बहुधा तांवे के मोटे पत्र पर खुदवा कर पूजा में रखते हैं तथा नित्य उसकी पूजा करते हैं। सिद्ध यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर गले या हाथ में धारण करने से अभीष्ट कार्य की सिद्धि व शरीर की रक्षा होती है।

गर्भ स्तम्भन यंत्र

२	२	१	१
२	१	१	१
१	१	१	१
१	१	१	१

जिस स्त्री का गर्भपात हो जाता हो उसको उपरोक्त यंत्र धारण करना चाहिए। प्रसव होने के बाद इसे उतारकर कुएं या नदी के जल में प्रवाहित कर देना चाहिए। यह यन्त्र ११०० बार लिखने से सिद्ध हो जायेगा। फिर पर्व काल में भोजपत्र पर अनार की कलम से सफेद चन्दन, लाल चन्दन, कपूर, केसर, कस्तूरी पीस कर स्याही बनाकर ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं स्वाहा मंत्र से १०८ आहुतियां देकर हवन करो। हवन के धुएँ पर यंत्र को धूपित कर

लाल धागे से बांधकर तांबे के तावीज में भरकर स्त्री की कमर में बांधने के लिए दे दो। जब गर्भ दा मास का हो जाए उस समय से इसे धारण कराया जाता है और प्रसव काल तक बराबर पहनना पड़ता है। तांबे के ताबीज में यदि असुविधा हो तो यंत्र भोजपत्र पर लिखकर मोमी कागज में लपेटकर फिर कपड़े में सीकर भी धारण किया जा सकता है।

सन्तानप्रद यंत्र

ह्लुं	क्रुं	ॐ	क्रुं	ह्लुं
ह्लुं	क्रुं	स्त्री का नाम		ह्लुं
ह्लुं	क्रुं	क्रुं	क्रुं	ह्लुं

विवाहोपरान्त काफी समय बीत जाने पर भी जिनके यहां सन्तान नहीं होती है उनके लिए उपरोक्त यंत्र बहुत लाभप्रद है। स्त्री पुरुष के सन्तानोत्पादक अंगों में कोई कमी भी हो तो इस यन्त्र के धारण करने पर उपचार द्वारा दूर होकर सन्तान उत्पन्न होती है। इस यन्त्र को होली-दिवाली ग्रहण के समय पर १५०० बार लिख कर सिद्ध कर लें। फिर ऐसे ही किसी पर्वकाल में भोज पत्र पर लिखकर परोपकारार्थ बना लें। लाल भोजपत्र पर लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम से लिखें। बीच के दो कोष्ठकों में उस स्त्री का नाम लिखा जाता है जिसको सन्तान पाने की अभिलाषा है।

इस यंत्र को लाल धागे से बांधकर तांबे के ताबीज में रखकर रविवार के दिन कमर में पहना दिया जाता है। पहनने से पहले ॐ क्रुं, ह्लूं स्वाहा से २१ बार हवन करके तावीज को धूप देनी चाहिए। साल भर के अन्दर गर्भ धारण हो जाता है।

मुकदमे में विजय प्रदान कराने वाला यंत्र
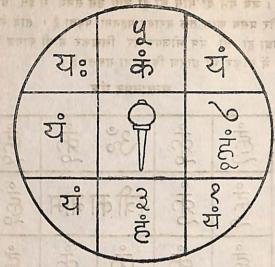
उपरोक्त यंत्र को लाल भोजपत्र पर सफेद चन्दन, तथा हल्दी में केसर पीसकर उससे लाल भोजपत्र पर लिखें। भृंगराज (भांगरा) की टहनी की या अनार की कलम बनाकर उससे यंत्र को लिखा जाना चाहिए। रविवार को जब पुष्प नक्षत्र पड़ता है तब रवि पुष्प योग में यदि प्रातः ब्राह्म मुहुर्त में ४-५ बजे के समय में लिखा जाय तो सर्वोत्तम है यानी ब्राह्ममुहूर्त काल में भी रवि पुष्प योग होना चाहिए। रविवार की रात में सोमवार सूर्योदय से पहले पुष्प नक्षत्र में यंत्र लिखने से सिद्धिदायक होता है। यंत्र को तांबे या चांदी के ताबीज में रखकर लाल धागे में या तांबे की जंजीर में गले में पहनकर अदालत में जाएं या प्रतियोगिता, मुकाबले, वाद विवाद आदि में जाय तो बिजयी होगा।

प्रवासी आकर्षण यंत्र

कोई व्यक्ति घर से लड़कर चला गया हो, भाग गया हो, परदेस से वापिस नहीं आता हो तो उसको वापिस बुलाने के लिए निम्न यंत्र व तंत्र करने से सफलता प्राप्त होती है। उस व्यक्ति के घर पर उसी के रहने के कमरे
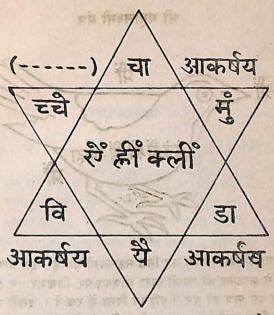
में यह तंत्र करना चाहिए अथवा जहां उसे वापिस बुलाना हो वहां कर। अर्थात् जहां यह यंत्र तंत्र किया जायेगा व्यक्ति वहीं वापिस आयेगा और वह स्थान ऐसा हो जो उसने देखा हो जाना हुआ हो नहीं तो वापिस कैसे आयेगा। घर के या कमरे के पूर्व तथा उत्तर के मध्य ईशान कोण में बैठकर अनार की कलम से लाल चन्दन पीसकर उसके द्वारा भोजपत्र पर इस यंत्र को लिखें। यह दुर्गा सप्तशती के नवार्ण मंत्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै पर आधारित बहुत प्रभावशाली यंत्र है। इसमें खाली स्थान पर खोये हुए व्यक्ति का नाम लिखा जाता है।

एक मिट्टी की हंडिया ढक्कन सहित लेकर उसमें उपरोक्त यंत्र को रख कर ढक्कन पर नौ तांबे के पैसे रखो। हांडी को कमरे के ईशान कोण में रख दो। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै स्वाहा इस नवार्ण मंत्र का ९ बार जाप कर हवन करो। हांडी को हवन के ऊपर दायें से बाईं ओर ९ बार घुमाकर ईशान कोण में रख दो। कोई उस हांडी को नहीं छुये। नौ दिन के अन्दर वह व्यक्ति वापिस आ जायेगा या उसके बारे में समाचार मिल जायेगा।

श्री महालक्ष्मी यंत्र

चिड़िया की आकृति का यह सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र है। इस यन्त्र को अनार की कलम से अष्टगंध की स्याही द्वारा भोजपत्र पर लिखकर एक तांबे के पात्र पर रखकर इस पात्र को घर में पश्चिम दिशा में रख दें। इसके पश्चात् पीले वस्त्र तथा पीला जनेऊ धारण करके "श्रीं प्रीं प्रीं प्रीं" इन बीजाक्षरों का १००० बार जप करके यन्त्र का पूजन करना चाहिए। पूजन में सफेद रंग के फूल यंत्र को अर्पित करें तथा पूजा के बाद यंत्र को खीर का नैवेद्य अर्पित करें। पूजन के पश्चात् "वं वं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा" इन बीज मन्त्रों से १०८ बार हवन करें। इसी प्रकार प्रतिदिन पूजन व हवन ४१ दिन तक करने पर यन्त्र सिद्ध हो जाता है। तब इसको सामर्थ्य के अनुसार चांदी या सोने के तावीज में भरकर दाहिनी भुजा में तावीज को बांधें। इस यन्त्र से साधक के घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है।

दसवां अध्याय

ग्रह शांति के लिए अनुष्ठान

गोचर में जब जौनसा ग्रह प्रतिकूल चलता है तब वह राशि से किस भाव में चल रहा है उसी के अनुसार उसी भाव सम्बन्धी चिन्ता बाधा पीड़ा आदि उत्पन्न करता है तथा उस ग्रह की शान्ति के उपाय करना जरूरी हो जाता है। हमारे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव शनि का पड़ता है और यह ग्रह बहुधा प्रतिकूल चलता है। जब इसकी साढ़े साती आती है तब कम ज्यादा यह साढ़े सात वर्ष तक प्रतिकूल ही रहता है। इसके अतिरिक्त चौथा सातवां आठवां दसवां भी कण्टक शनि के नाम से खराब ही होता है। यह ग्रह ३, ६, ११वें भाव में ही अच्छा फल देने वाला रहता है। इसकी शान्ति के उपायों में जोशी को शनिवार के दिन तांबे के पैसे (अब तांबे के पैसे प्रचलित नहीं हैं अतः कोई भी छोटे सिक्के या तांबे का कोई टुकड़ा) सरसों के तेल में अपना मुख देख कर तेल दान करना चाहिए। इसके अलावा लोहे की बनी हुई कोई उपयोगी वस्तु जैसे चिमटा संडासी चाकू-छुरी आदि साबत उड़द काला कपड़ा काले या नीले फूल पुराने उतरे हुए जूते सतनजा भी जोशी को शनिवार के दिन यथाशक्ति यदा-कदा देते रहना चाहिए। मंगलवार शनिवार को हनुमान जी का पूजा प्रसाद चढ़ाते रहना चाहिए। सुन्दर काण्ड का या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। हो सके तो मंगल का व्रत भी रख लेना चाहिए। शनि का मन्त्र : ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः है—इसका २३००० जाप है। जप समय सन्ध्या काल है। शमी यानी छोंकर के वृक्ष की समिधा से २३०० आहुतियां देकर हवन करने से शनि का दोष निवारण हो जाता है। ऊपर बताये गये उपायों में से जितने भी कर सको उत्तम रहते हैं। जब शनि खराब होता है तब नीलम धारण करने से लाभ होता है परन्तु इस नग को धारण करने से पहिले यह देखना पड़ता है कि आपको माफिक है या नहीं। नीलम के नग को पंचामृत में धोकर रात को सोते समय अपने सिरहाने तकिये के नीचे रखकर

सो जाओ। वह स्वप्न में संकेत देगा और स्वप्न के अनुसार ही विचार करो या कराओ कि यह कैसा फल देगा शुभ या अशुभ। यह तीन घंटे में या तीन दिन में ही अपना कोई न कोई चमत्कार शुभ या अशुभ प्रभाव दिखा देता है। परन्तु जोखिम लेने से पहिले अच्छा है कि इसके स्वप्न के संकेत समझ लिए जाएं और यदि संकेत ठीक नहीं है तो दूसरा नग लेकर उसकी इसी प्रकार परीक्षा की जाए। इसके स्थान पर यदि सिद्ध रक्षा कवच पहना जाए या लोहे का कड़ा या अष्टधातु की अंगूठी पहनी जाए तो सुरक्षित रहती है। नीलम प्रायः ४ रत्ती का स्टील की अंगूठी में दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में (स्त्रियों के बांये हाथ में) सूर्यास्त से दो घण्टे पूर्व शनिवार के दिन प्रथम बार धारण किया जाता है। धारण करने से पहिले अंगूठी को पंचामृत में धोकर गंगाजल या शुद्ध जल से साफ करके पहनना चाहिए।

राहु-केतु :

शनि के बाद जो सबसे अधिक अनिष्टकारक ग्रह हैं वे राहु और केतु हैं। जो अपने इष्ट देव की पूजा-पाठ करते हैं उनके अनन्य शरणागत हैं, हनुमान जी या बटुक भैरव जी की या देवी की पूजा करते हैं उन पर ग्रहों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। यह निश्चित बात है। यदि देश का राजा आपसे प्रसन्न हो जाए मुख्यमंत्री या प्रधानमन्त्री जी ही आप पर प्रसन्न हो जायें तो नगर के कोतवाल दरोगा सिपाही और छोटे-मोटे अधिकारी नाराज होकर भी कुछ खास नुकसान नहीं पहुंचा सकते। यों दुष्ट प्रकृति के अधिकारीगण कभी-कभी अपना दाव लगने पर शैतानी से बाज नहीं आते। फिर भी उनको भय रहता है कि यह तो राजा का आदमी है। अस्तु सभी ग्रहों के दुष्ट प्रभाव से बचने के लिए जरूरी है कि किसी बड़ी ताकत का सहारा लिया जाए। देवों के देव परम पिता परमात्मा या जगन्माता या इनके ही रूपों की शरण ली जाए। जिसका कोई सहारा नहीं होता ऐसे कमजोर असहाय व्यक्ति को सभी सताते व ठोकर मारते हैं।

फिर भी मान लो आपको किसी बड़ी शक्ति का सहारा है और आप उस के बलबूते पर निशंक हैं तो भी अच्छा है कि छोटे-मोटे अधिकारीगणों को भी संतुष्ट कर दिया जाय उनका अहं भी संतुष्ट हो जायेगा और वे अपनी दुष्टता

आप पर नहीं चलायेंगे। इससे क्या लाभ कि जब यह ग्रह कोई दुष्टता करें तब आप इनकी शिकायत लेकर अपने इष्टदेव के पास जायें। किसी सरकारी दफ्तर में आप अपना कोई काम निकलवाने जाते हैं और मान लो आपकी उस कार्यालय के सबसे बड़े अफसर से जान पहचान है तो आपका काम सरलता से हो जायेगा। परन्तु उस दफ्तर में यदि कोई छोटा बाबू या अधिकारी आप से किसी कारण रुष्ट है तो वह कोई विघ्न बाधा डाल ही देगा। इसलिये इन छोटे अधिकारियों को भी उचित आदर मान दे देने में ही भलाई होती है।

राहू का मंत्र : ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः संख्या १८००० हवन सूखी दूब मिला कर १८०० आहुतियाँ सरसों काले तिल आदि की हवन सामग्री से करें। दान पदार्थ—सीसा (लैड) काले तिल सरसों सरसों का तेल नीले फूल नीला कपड़ा चाकू छुरी या लोहे का खड़ग या खिलौनेनुमा तलवार, कम्बल या ऊनी बिछावन का टुकड़ा, घोड़ा या घोड़े के प्रतीक लकड़ी या लोहे का बना घोड़े का खिलौना यह सब चीजें नीले कपड़े में बाँध कर छाज या सूप में रख कर शनिवार के दिन जोशी को दान कर देनी चाहिए। सतनजे का दान भी कर देना चाहिए। सतनजा में यह सात धान्य होते हैं—साबत उड़द, साबत मूंग गेहूं, चने, जौ, चावल और कंगनी या बाजरा।

केतू मंत्र : ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः संख्या १७००० जप समय राहू केतु का रात्रि में है। हवन सामग्री में कुशा का विशेष मिश्रण किया जाता है। दान पदार्थ लोहा काले तिल सतनजा सरसों का तेल धूम्रवर्ण के वस्त्र का टुकड़ा व इसी रंग के पुष्प नारियल कंबल ऊनी कपड़ा कोई हथियार या उसका प्रतीक बकरा या उसका प्रतीक एक लकड़ी का खिलौना बकरा।

राहू का रत्न गोमेद है जिसको चाँदी या अष्टधातु की अंगूठी में पहना जाता है। सूर्यास्त के दो घण्टे बाद दाहिने हाथ की मध्यमा में पहनना चाहिये। वजन ४ रत्ती। केतु के लिए लहसुनिया पहना जाता है। वजन ४ रत्ती। दाहिने हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा में अर्धरात्रि के समय पहनना चाहिए। शनि राहू व केतु के रत्न शनिवार के दिन ही प्रथम बार पहनना आरंभ करना चाहिये। आम तौर से इन रत्नों का जो वजन लिया जाता है वह दे दिया है। परन्तु राशि के हिसाब से प्रत्येक व्यक्ति के लिये इनकी कम या ज्यादा रत्ती

भी बताई जाती है। राहू केतु के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए हाथी दाँत पहनने से भी काम होता है।

बृहस्पति

महत्व की दृष्टि से अगला ग्रह बृहस्पति ही है।

गुरु एक शुभ ग्रह है। परन्तु गोचर में कभी-कभी यह भी खराब आ जाता है और विघ्न बाधा पीड़ा व्यर्थ व्यय आदि कराने वाला हो जाता है। इसकी शान्ति के लिए इसका मन्त्र है—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः इसकी जप संख्या १९००० है। हवन में पीपल के वृक्ष की समिधायें विशेष प्रयोग की जाती हैं। दान पदार्थों में काँसा धातु का टुकड़ा चने की दाल खांड चीनी घी पीला कपड़ा पीला फूल हल्दी पुस्तक पीले फल केले अमरूद आदि घोड़ा या घोड़े का प्रतीक खिलौना। बृहस्पति जब खराब हो या जन्म पत्री में गुरु नीच या शत्रु राशि का हो या वृहस्हति की दशा खराब चल रही हो अथवा जन्म सूर्य की राशि का हो तो पुखराज धारण कराया जाता है। यह आम तौर से सवा पाँच रत्ती का सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में पहना जाता है। सूर्यास्त से एक घंटे पहिले प्रथम बार गुरुवार के दिन पहनना आरम्भ करें।

शनि एक राशि पर ढाई वर्ष रहता है। राहू केतु करीब डेढ वर्ष तक रहते हैं और प्रायः प्रतिकूल रहते हैं। गुरु भी एक राशि पर एक वर्ष तक रहता है और प्रतिकूल भी हो जाता है। राशि से तीसरा चौथा छटा आठवाँ बारहवाँ तो खराब होता ही है अतएव इन चारों ग्रहों के अनुष्ठान उपाय कराने की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। अब अन्य ग्रहों के उपाय लिखते हैं।

सूर्य :

सूर्य सब ग्रहों का राजा है। यदि जन्मपत्री में नीच राशि का पड़ जाय तो सब ग्रहों के शुभ फलों में न्यूनता ला देता है। इच्छा शक्ति कम कर देता है। क्योंकि एक राशि पर केवल एक मास तक रहता है, इस कारण गोचर में एक साथ बहुत दिन तक खराब नहीं चलता, परन्तु दशा अन्तरदशा अधिक दिन तक खराब आ सकती है। तब सूर्य का उपाय करना चाहिए। किसी जमाने में सूर्य की पूजा मुख्य देवता के रूप में प्रचलित थी। सूर्य भगवान की नित्य प्रातःकाल पूजा करने से बल बुद्धि तेज की वृद्धि होती है। इनका जप मन्त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं

सः सूर्यायः नमः है जिसकी जप संख्या केवल सात हजार है। समय प्रातःकाल है। अर्क (अकौआ) या आक की समिधाओं से लाल चन्दन मिलाकर हवन किया जाता है। नित्य न कर सकें तो रविवार के दिन ही करें। प्रातः सूर्य को जल चढ़ाने से भी बहुत लाभ होता है। स्नान करके पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो जाओ और सूर्य को एक लोटा जल से अर्घ्य दो। सूर्य की किरणें जल के द्वारा तुम्हारे शरीर में प्रवेश करें। फिर अपने स्थान पर ही एक बार घूमकर परिक्रमा दो और पृथ्वी पर गिरे हुए जल को अपने शरीर के मुख्य भागों से स्पर्श कराओ। मस्तक हृदय बाहुओं पर लगाओ। सूर्य भगवान को नमस्कार करो। जन्मकुंडली में जिनका सूर्य नीच का था और जिनके उत्तम ग्रहों का प्रभाव नहीं हो रहा था ऐसे कितने ही लोगों को मैंने सूर्य पूजा जल चढ़ाना बताया और केवल रविवार को ही यह नियम करने से उनको अप्रत्याशित लाभ हुआ।

सूर्य के प्रभाव को ठीक करने के लिये माणिक पहना जाता है। इसे सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी में सूर्योदय के समय रविवार के दिन से पहनते हैं। वजन सवा रत्ती से लेकर तीन रत्ती तक होता है। सूर्य का दान ब्राह्मण को दिया जाता है जिसमें ताँबा गेहूं गुड़ घी लाल कपड़ा लाल फूल केसर मूंगा लाल गाय (सजीव न हो सके तो मिट्टी की बनी गाय) लाल चन्दन इन पदार्थों का दान किया जाता है।

चन्द्रमा :

चन्द्रमा गोचर में एक राशि पर केवल ढाई दिन के लगभग रहता है। परंतु जन्मकुंडली में आठवां हो घातक पीड़ादायक हो या नीच राशि में हो इसी प्रकार के चन्द्रमा की दशा हो तो निम्न उपाय किये जाते हैं। बच्चों के गले में चाँदी का चन्द्रमा बनवा कर पहनाया जाता है। चन्द्रमा की शान्ति के लिए उसके प्रभाव को शुभ करने के लिए चाँदी में मोती पहना जाता है। दो सवा दो रत्ती का सच्चा मोती दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगली में संध्या के समय सोमवार के दिन से पहनते हैं। यह चित्त को शांत करता है और चन्द्रमा सम्बन्धी रोगों पर भी शुभ प्रभाव डालता है। मेरे पास एक डाक्टर साहब मिलने आये थे जलन्धर से। वे बताते थे कि वे रत्नों से ही बहुत से रोगों का

सफलतापूर्वक इलाज करते हैं। यदि ठीक नग पहनाया जाय तो बहुत से असाध्य रोग भी इनसे दूर हो जाते हैं।

चन्द्रमा का जप मंत्र : "ॐ रां रीं रौं सः चन्द्राय नमः" है। जप संख्या ११००० है। जप समय संध्याकाल। हवन सामग्री में पलाश वृक्ष की समिधाओं का विशेष प्रयोग किया जाता है। सफेद चन्दन की लकड़ी भी मिलानी चाहिये। दान पदार्थों में—चाँदी, चावल मिसरी दही श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प, शंख कपूर श्वेत बैल श्वेत चन्दन ब्राह्मण को दान किया जाता है। सजीव बैल के स्थान पर मिट्टी का बना खिलौना सफेद बैल का दिया जा सकता है। चन्द्रमा मन तथा मस्तिष्क का स्वामी होने से जब विपरीत फल देने वाला हो जाता है तो विक्षिप्तता मिरगी हिस्टीरिया आदि के दौरे बुद्धिभ्रंश आदि उत्पन्न करता है। कफ के रोग स्वाँस दमा आदि भी देता है। उपरोक्त उपाय करने से लाभ होता है।

मंगल

मंगल नीच राशि का पड़ा हो, नीच राशि का गोचर में अशुभ चल रहा हो, अथवा अशुभ मंगल की दशा अन्तरदशा आये तो उसमें यह ग्रह शरीर से रक्त निकालने वाली बीमारी, बवासीर या चोट अथवा आपरेशन आदि से रक्त बहाने वाले कुयोग बनाता है। मामूली सी चोट से अधिक रक्त बहता है। इसके कुप्रभाव को कम करने के लिए या दूर करने के लिये हनुमानजी की पूजा प्रसाद उपासना बहुत लाभदायक होती है। इसके लिये बच्चों के गले में या बाहू पर मूंगा डाला जाता है। सच्चा न हो तो नकली मूंगा भी बच्चों को पहनाया जा सकता है। वयस्क लोग दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में सोने में सवा पाँच रत्ती का मूंगा मंगलवार के दिन से सूर्योदय के एक घण्टे बाद प्रथम प्रहर में धारण करें।

इसका जप मंत्र ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः है। जप संख्या १०००० है। जप समय प्रातः प्रथम प्रहर। हवन में खैर की लकड़ी व रक्त-चन्दन की समिधा विशेष रूप से प्रयोग में लाई जाती हैं। दान पदार्थों में—तांबा मलका मसूर की दाल, गुड़ घी लाल कपड़ा लाल कनेर के फूल केसर कस्तूरी लाल बैल (या प्रतीक स्वरूप खिलौना बैल) लाल चन्दन आदि का मंगलवार के दिन ब्राह्मण को दान करना चाहिये। हनूमान जी को चोला भी चढ़ाया जाता है। घी सिंदूर आदि लेपन कराया जाता है।

बुध :

बुध का रत्न पन्ना है। तीन रत्ती वजन का पन्ना दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली में जिसे कनिष्ठिका कहते हैं पहना जाता है। सोने या चाँदी में दिन के प्रथम प्रहर में बुधवार के दिन से पहनें। चांदी सोना मिश्रित या काँसा धातु में भी पहना जा सकता है। दान पदार्थ—कांसा धातु, मूंग साबत, खांड या चीनी घी हरा कपड़ा चम्पा पुष्प या सब तरह के मिश्रित पुष्प हाथी दांत का टुकड़ा कपूर ऋतुफल, कोई हथियार या उसका प्रतीक बुधवार के दिन दान करना चाहिए। यह दान ब्राह्मण या किसी विद्वान को देना चाहिये। जप मन्त्र है—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः जप संख्या ९०००। जप समय मध्यान्हकाल। हवन मे हरी गिलोय और वनस्पतियों की जड़ें मिलाई जाती हैं। चावल गोरोचन शहद भी मिलाया जाता है।

एक राशि पर एक मास के लगभग रहता है। सूर्य के आसपास ही चलता है। गोचर खराब हो, कुण्डली में खराब पड़ा हो, नीच राशि में हो दशा अन्तर दशा खराब हो तो बुध की शान्ति कराई जाती है। हाथी दांत पहनने से भी लाभ प्राप्त होता है।

शुक्र :

गोचर में अनिष्ठ कारक हो कुंडली में बुरे भावों में पड़ा हो नीच का हो अस्त हो दशाअन्तर दशा खराब हो तो शुक्र ग्रह की शान्ति करानी पड़ती है। यह ग्रह सूर्य के सबसे पास में है और एक राशि पर एक मास के लगभग ही रहता है। गोचर में तो ज्यादा देर तक खराब नहीं रहता परन्तु दशाअन्तर दशा लम्बी हो सकती है।

शुक्र का जप मन्त्र ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः शुक्राय नमः जप संख्या १८००० समय संध्याकाल। हवन सामग्री में पीपल के वृक्ष की समिधायें, इलायची केसर भी मिलाई जाती है। दान पदार्थ—चाँदी चावल मिसरी दूध सफेद कपड़ा सफेद फूल खुशबूदार तेल या इतर की शीशी या फाया। दही सफेद घोड़ा या उसका प्रतीक सफेद चन्दन शुक्रवार के दिन किसी पंडित ब्राह्मण को दान किया जाता है। इसका रत्न हीरा है जो चांदी या सोने में करीब सवा रत्ती का दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में शुक्रवार के दिन प्रातःकाल से पहनना चाहिये। वीर्यवान बनाता है पुरुषत्व को बढ़ाता है। सन्तानोत्पत्ति की शक्ति देता है।

ग्यारहवां अध्याय

विविध यंत्र, मंत्र और तन्त्र

गण्डे बनाना

बहुधा बच्चों को डरने, नींद में चौंकने की शिकायत हो जाती है। उनको हवा का भी असर हो जाता है। प्रेतात्माओं से रक्षा के लिए, आपदा विपदाओं से रक्षा के लिए, आरोग्य लाभ के लिए तथा बने हुए ताबीजों को, रक्षा कवचों को धारण करने के लिए भी मामूली डोरे के स्थान पर गण्डों की जरूरत होती है। यह गण्डे लाल या काली पेचक के डोरों की आठ लड़ में करीब दो फुट लम्बे बट कर बना लिए जाते हैं। पेचक के डोरे की करीब पांच फुट लम्बी आठ लड़ें करो। उनको बट दो और उनको दुव्बर करके फिर बट दो तो तैयार डोरा दो फुट के करीब रह जायेगा। नवदुर्गाओं में जब आप नवचण्डी या शतचण्डी का हवन करो या आप न कर सको तो जहां पर शतचण्डी का यज्ञ हो रहा हो वहां पहुंच जाओ। सप्तशती में १३ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर खड़े होकर विशेष आहुति दी जाती है। उस समय आप अपने गण्डे में एक-एक गांठ लगाते जाओ। जब तक यज्ञ हवन चलेगा आप भी कुछ न कुछ जप पाठ करेंगे ही। इस प्रकार १३ अध्यायों की समाप्ति तक आपके गण्डे में १३ गांठें लग जायेंगी। प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर यज्ञ में विशेष सामग्री और पैसे हवन में डाले जाते हैं। जब यज्ञ की अग्नि शान्त हो जाती है तब उन पैसों को निकाल कर रख लिया जाता है और उनमें छेद करा के गले में पहनाने से बच्चों व बड़ों की रोगों तथा भूत-प्रेत बाधाओं से रक्षा होती है।

यदि चण्डी यज्ञ की सुविधा न मिले तो स्वयं ही छोटा-मोटा यज्ञ हवन कर लो। यह भी न कर सको तो अपने किसी भी इष्ट मन्त्र की माला से जप करो और प्रत्येक माला के अन्त में गण्डे में या बहुत से बनाने हैं तो उनमें एक-एक गांठ लगाते जाओ। यह काम यदि महारात्रि मोहरात्रि कालरात्रि ग्रहण के समय या अमावस्या की रात्रि को करो तो और भी अच्छा रहता है। तुम्हारे बनाये

गये गण्डे अधिक प्रभावशाली बनेंगे। इन गण्डों को जब किसी को दो तो उसके नाम के साथ इष्ट मन्त्र की कुछ आवृतियां करके धूप दो और भगवती की मूर्ति या चित्र के सामने रखकर मनौती मनवा कर भेंट चढ़वा कर दे दो। बिना दक्षिणा के गण्डे ताबीज देना निरर्थक होता है। अपने सगे सम्बन्धियों से भी धर्मार्थ कुछ न कुछ दक्षिणा जरूर रखवानी चाहिए।

भस्म विभूति बनाना

भगवती के चण्डी यज्ञ की भस्म या अन्य यज्ञों की भस्म हवन के बाद गंगा में या यमुना में या किसी नदी तालाब में प्रवाहित कर दी जाती है। उसमें से कुछ भस्म रख लेनी चाहिए और किसी भी महामन्त्र से किए गए हवन यज्ञ की भस्म से भी बहुत प्रभाव होता है। जैसे गायत्री मन्त्र का हवन हुआ हो या आपको इन पाठों में बताये गए किसी भी महामन्त्र का हवन हुआ हो या आप नित्य हवन करते हैं तो उसकी भी भस्म को लोगों को रोग निवृति बाधा शान्ति के लिए दिया जा सकता है। वशीकरण मन्त्र से किए गए हवन की भस्म तिलक के रूप में लगाने से वशीकरण होता है। जब भी किसी को यह भस्म या विभूति दो तो उसको एक कागज की पुड़िया में रखकर भगवती की मूर्ति या चित्र के सामने रखकर सम्बन्धित व्यक्ति के नाम के साथ मन्त्र पढ़ कर उसको अभिमन्त्रित करो। उससे कुछ द्रव्य भेंट चढ़वा कर उससे कार्य सिद्ध होने पर मनौती मनवा कर उससे प्रार्थना करवा कर दे दो। रोगी के शरीर पर लगाने से आरोग्य लाभ होता है। विद्यार्थी का यदि पढ़ने में मन नहीं लगता हो तो उसको पिलाने से बुद्धि निर्मल होती है। पढ़ने में मन लगने लगता है। विद्या समझने में आने लगती है। स्मरण शक्ति तीव्र होती है। पूजा का बचा हुआ चरणामृत या अभिमन्त्रित जल इसके साथ दिया जा सकता है। विद्यार्थियों को इसके साथ-साथ कुछ बादाम इलायची मिश्री आदि भी खाने के लिए मन्त्र अभिषिक्त करके देना चाहिए।

सन्तान तन्त्र

इस तन्त्र का प्रयोग मैंने सफलतापूर्वक कई जगह पर किया है। एक टेलीविजन इंजीनियर यहाँ पास ही नांगलराया में रहते हैं। उनके विवाह को १० वर्ष के लगभग हो गए थे। सन्तान नहीं हुई थी। मेरा टी. वी. ठीक

करने आये थे। अपने ग्राहकों से जो बातें मैं कह रहा था उसको सुन कर प्रभावित हुए और कहने लगे कि वह तो जिन ज्योतिषियों के पास गये हैं वे काफी दान दक्षिणा माँगते हैं कोई मुर्गा और शराब मंगवाता है आप तो कुछ भी नहीं मांगते। वह बहुत प्रभावित हुआ और अपनी फीस नहीं ली। कहा कि उनको सन्तान तंत्र दू। पहली बार प्रयोग करने पर तन्त्र का कोई लाभ नहीं हुआ। परन्तु उनको विश्वास था इसलिए दूसरी बार ले गए और भगवती की कृपा से अब वह एक पुत्र के पिता हैं जो इस समय ५-६ वर्ष का होगा। इस तन्त्र को गर्मी के महीनों में नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें अजवायन का प्रयोग है जो कुछ गर्म तासीर की होती है। करें भी तो मात्रा कम रखें। सम्बन्धित व्यक्ति को आप १०० ग्राम अजवायन लाने के लिए कहिए। मासिक धर्म की समाप्ति के बाद से उसमें से २ ग्राम के करीब रोज रात्रि को सोने से पहले सन्तान की इच्छा रखने वाली स्त्री दूध के साथ ले। २५-३० दिन बाद यदि दूसरा मासिक धर्म न हो तो आगे लेना बन्द कर दे। मासिक धर्म हो जाए तो लेती रहे। यह प्रयोग ४० दिन तक करना होता है आशा तो यही होती है कि आगे मासिक धर्म नहीं होगा और गर्भ रह जाएगा। परन्तु जैसा मैंने ऊपर बताया कभी-कभी दुबारा भी यही ४० दिन का प्रयोग करना पड़ता है। इस तन्त्र में प्रयुक्त की जाने वाली अजवायन को जिस मन्त्र से अभिषिक्त करना होता है वह प्रसिद्ध सन्तान गोपाल मन्त्र है। इसको विधि से सिद्ध किया हो तो अचूक फल देता है। नहीं तो महारात्रि मोहरात्रि कालरात्रि आदि के अवसर पर कुछ जप कर लेना चाहिए। जिस समय आप किसी को मन्त्र अभिषिक्त करके अजवायन दो उससे पहले २१ बार इस मन्त्र को पढ़ो और उसमें फूंक मारकर अभिषिक्त कर दो। भगवती के सामने रखकर प्रार्थना करो भेंट चढ़ावा दो मनौती मनवा दो कि सन्तान होगी या पुत्र होगा तो यह चढ़ावा चढ़ायेंगे और अजवायन दे दो। रोज कितनी खानी है इसकी मात्रा बता दो। मात्रा अजवायन के १०० दानों के लगभग हो। गर्मी में ५० दाने की मात्रा काफी है।

सन्तान गोपाल मन्त्र : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ।।

इस तन्त्र को देने से पहले यह पूछ लो कि पति पत्नी दोनों ने डाक्टरी

परीक्षा करा ली है और उनकी जननेन्द्रियां प्रजनन के योग्य हैं। कहीं कोई शारीरिक खराबी तो नहीं है शुक्राणु ठीक है। व्यावसायिक रूप से मैं यह कार्य १९७५ से ही कर रहा हूं और इस बीच सन्तान के इच्छुक लोग आये हैं जिनमें से बहुतों को सफलता मिली है। एक महिला को कन्यायें ही हुई थीं परन्तु पुत्र नहीं हुआ था। वे बहुत मोटी थीं और उनके गर्भाशय पर अवश्य चरबी चढ़ी होगी। उनको कोई लाभ नहीं हुआ। गर्भ भी नहीं रहा। मैं इसका कोई विशेष रूप से प्रचार या विज्ञापन नहीं करता। एक दूसरे की सफलता के समाचार सुनकर ही लोगबाग आते हैं। बहुत आग्रह करके मन्त्र तन्त्र ले जाते हैं। तो यह अनुभूत तन्त्र है। इसमें सन्तान गोपाल मन्त्र को सिद्ध करना आवश्यक है। ११००० आवृत्तियां करके पुरश्चरण किया हो अथवा ग्रहण आदि के अवसर पर १०८ मालायें की हों तो फल देने वाला हो जाता है। यदि इस प्रकार से इसे सिद्ध नहीं किया जा सका है तो जो मन्त्र आपने सिद्ध किया हुआ है उसके साथ इस सन्तान गोपाल मन्त्र को लिखकर स्त्री-पुरुष दोनों का नाम लिख कर सन्तान इच्छा या पुत्र इच्छा लिखकर यन्त्र भी दे दो जिसे सन्तान की इच्छुक महिला अपने शरीर पर धारण करे।

जब मासिक धर्म बन्द हो जाए तो अजवायन खाना बन्द कर देना चाहिए और गर्भ रक्षा के लिए शरीर पर रक्षा कवच गले में या बाहु पर बांधना चाहिए तथा कमर में अभिमन्त्रित करके गण्डा बांध देना चाहिए। इसका विचार नहीं करना चाहिए कि कमर में बांधने से गण्डा दूषित हो जाएगा। अन्य वैद्यक इलाज उपाय जब जैसे आवश्यक हों करते रहना चाहिए। मनौती सन्तान होने पर ही चढ़ानी चाहिए।

सरस्वती तन्त्र

विद्या प्राप्ति के लिए, विद्या की उन्नति के लिए, परीक्षा में उत्तम सफलता के लिये, वक्तृता में पटु होने के लिये, धारा प्रवाह भाषण देने के लिये, कविता कहानी साहित्य में धुरंधर होने के लिये तथा वाक् सिद्धि के लिये सरस्वती मन्त्र का जाप किया जाता है। माता सरस्वती की सिद्धि के लिये अनेक मन्त्र हैं परन्तु मुझे गुरु ने जो तन्त्र यन्त्र मन्त्र बताये तथा जिसको मैंने सिद्ध किया और लाभ पाया वह मैं यहां पर दे रहा हूँ। इन के प्रभाव से मैंने जितनी भी

परीक्षायें दीं सब में थोड़े से ही प्रयास से अच्छे अंकों से सफल हुआ। प्रभाकर की परीक्षा दी, साहित्यरत्न किया, बी० ए० किया, एकाउन्टेंसी की, लन्दन की बड़ी कठिन परीक्षायें दी और सबसे बड़ी लन्दन की ही बीमा सम्बन्धी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। जिनके बारे में मेरे अंग्रेज अफसर तक यह कहते थे कि वे स्वयं जिनके प्रथम भाग को ही कई बार प्रयत्न करने पर भी पास नहीं कर सके, मैं कैसे दो-दो भाग एक बार में पास कर लेता हूँ। मैं उन दिनों बृटेन की सबसे बड़ी बीमा कम्पनी प्रूडेन्शल में नौकर था। नौकरी के लिये भी तथा तरक्की के लिये जब भी साक्षात्कार में गया कभी असफल नहीं रहा और जीवन बीमा निगम के ऑफिसर ट्रेंनिंग कालिज में अखिल भारतीय परीक्षाओं में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किये। कोई भी विषय हो एक बार पढ़ने पर समझ में आ जाता था और याद हो जाता था। यह भी माता सरस्वती की ही कृपा है कि अब तक १० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और पाठकों ने पसन्द की हैं।

यह सब कहने का मतलब यही है कि सरस्वती देवी के मन्त्र तन्त्र को सिद्ध करने से क्या और कैसे-कैसे लाभ मिलते हैं। यह तन्त्र मैंने कई सज्जनों को बताया और उन्होंने भी लाभ पाया है। मां सरस्वती का मुख्य मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै मया दृष्टवा वीणा पुस्तक धारिणी।
हंस युक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे ह्रीं नमः॥

इस मन्त्र का ग्यारह हजार जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसका पुरश्चरण पहले बताई विधि से ११०० हवन आहुतियाँ, ११० तर्पण ११ मार्जन तथा १ से ११ ब्राह्मण भोजन के द्वारा किया जाता है। अंगन्यास करन्यास निवारण मन्त्र के अनुसार ही हैं जो पहले बताये गये हैं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै मन्त्र के साथ, वही करना चाहिए। दुर्गा सप्तशती का प्रथम चरित महाकाली का, दूसरा महालक्ष्मी का तथा तीसरा चरित चौथे अध्याय से १३वें अध्याय तक महा सरस्वती के लिए है। उसका पाठ कर सको तो उत्तम है। नहीं तो केवल ग्यारहवें अध्याय का पाठ पुरश्चरण अवधि में नित्य कर लेना चाहिए। महासरस्वती का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है—

घण्टा शूल हलानि शंख मुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं धनान्त विलसच्छीतां शुतुल्य प्रभाम् ।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ।।

यदि किसी को विद्या सम्बन्धी उपरोक्त कार्यों के लिए यन्त्र देना है तो १५ या २० का यन्त्र जो भी आप ने सिद्ध किया हो उसको उपरोक्त श्लोक के साथ लिखकर भोजपत्र पर या सफेद कागज पर श्वेत चन्दन की बहुलता वाले अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर दिया जाता है। यदि माता सरस्वती का यन्त्र सिद्ध करना चाहो तो वह नीचे दे रहा हूँ। यह यन्त्र अभी तक मुझे किसी पुस्तक में नहीं मिला है। मुझे मेरे गुरु ने जैसा बताया था लिख रहा हूँ। मन्त्र सिद्ध करने की विधि बताई जा चुकी है। इसको माता सरस्वती की मूर्ति या चित्र के सम्मुख बैठकर सिद्ध किया जाता है। महारात्रि मोहरात्रि काल रात्रि ग्रहण के समय अथवा बृहस्पतिवार के दिन पुष्य नक्षत्र में गुरु पूर्णिमा को शुभ मुहूर्तो में शुभ योगों में कर सकते हो। समय रात्रि का तीसरा प्रहर सर्वोत्तम होता है।

माता सरस्वती के हवन में चीनी चावल सफेद तिल विशेष होते हैं। श्वेत रंग के पुष्प श्वेत वस्त्र श्वेत मिष्ठान प्रसाद नैवेद्य श्वेत चन्दन की ही प्रधानता होती है। माला तुलसी की या मोती की या चांदी की होती है। आसन भी श्वेत रंग का लिया जाता है।

सरस्वती यंत्र

यन्त्र सिद्ध करते समय पहले त्रिकोण बनाओ फिर बांये तरफ का अर्ध वृत्त फिर सीधी ओर का अर्ध वृत्त उसके बाद नीचे का अर्ध वृत्त बनाओ। पहले ॐ फिर श्रीं फिर ह्रीं फिर क्लीं और अन्त में नमः लिखो। इस प्रकार ११००० यंत्र लिखने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। यथा विधि हवन आदि कराना चाहिये। पुरश्चरण की अवधि से ही मन्त्र के साथ यन्त्र भी सिद्ध कर सकते हो। अलग सिद्ध करो तो इसका हवन आदि अलग से करना चाहिए।
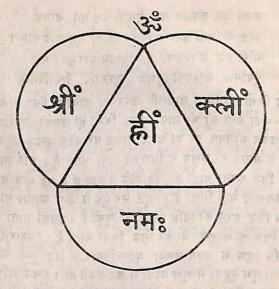
सरस्वती तन्त्र

बृहस्पतिवार के दिन विद्यार्थी के हाथों से इन सात वस्तुओं को मनौती मान कर बिना किसी को कहे सुने बिना टोके उठवाकर रख देना चाहिये। परीक्षा साक्षात्कार में अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जब सफल हो जाय तो उसको मनौती पूरी कर देनी चाहिये। (१) सफेद चावल साबुत दाने अक्षत-७ तोले, (२) सफेद फूल-७, (३) सफेद कपड़े का टुकड़ा-७० सेमी० (४) जनेऊ का जोड़ा-७, (५) कोई धार्मिक पुस्तक-७ (६) सफेद तिल-७ तोले, (७) सफेद चन्दन सात टुकड़े पतले-पतले, (८) छोटे-छोटे शंख-७, इन सात चीजों को सफेद कपड़े में बांध कर सरस्वती यन्त्र के साथ माता सरस्वती के चित्र के पीछे या किसी सुरक्षित स्थान में उठाकर रख दो। जब इच्छा पूरी हो जाय तो इन वस्तुओं को किसी विद्वान ब्राह्मण को या मन्दिर में दान कर दो। यंत्र को वापस ले लो, दूसरों के काम आ सकता है। साथ में द्रव्य रख दो। इसके साथ में जो सरस्वती मन्त्र व यन्त्र भी लिख कर रखा हो तो सोने में सुहागे का काम करता है। जिस व्यक्ति के लिए करो उसका नाम

उस यन्त्र में लिख देना चाहिये। अमुक व्यक्ति अमुक कामना प्राप्ति हेतु प्रार्थना करिष्ये।

कुछ मन्त्र

गायत्री मन्त्र—गायत्री मन्त्र भक्ति ज्ञान वैराग्य विद्या बुद्धि उत्तम विवेक के देने वाला मोक्ष देने वाला है। इसको सकाम उपासना में प्रयोग करने के बारे में मेरा मत यह है कि नहीं करना चाहिये। हाँ विद्या बुद्धि की उन्नति के लिए लेखन वाचन भक्ति संगीत स्वर साधना आदि में प्रयोग किया जा सकता है। इसके जप का पूरा विधान सहज उपलब्ध है। केवल जप से या इस मन्त्र से नित्य ही अग्निहोत्र हवन करने से सब प्रकार का कल्याण होता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरवरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

श्रीराम का पंचाक्षरी महामन्त्र—ॐ रामरामाय नमः

शिव जी का पंचाक्षरी मन्त्र—ॐ नमः शिवाय।

श्रीकृष्ण भगवान का मन्त्र—ॐ एं क्लींकृष्णाय ह्रीं गोविंदाय श्री गोपी-जनबल्लभाय स्वाहाः ॐ नमः

श्री गणेशजी का मन्त्र—ॐ बक्रतुण्डेक दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं रींग गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। यह त्रैलोक्य मोहन गणेश मन्त्र चमत्कारी सिद्ध मन्त्र है।

भगवान विष्णु का द्वादश अक्षर वाला मन्त्र—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। इसे ध्रुव जी ने जप कर भगवान कादर्शन प्राप्त किया था।

महामृत्युंजय मन्त्र—ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्रयम्बकं यजामहे ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिं पुष्टबर्धनम् ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ उर्वारुमिव बन्धनाद् ॐ धियो यो नः प्रचोदयात ॐ मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूँ हौं ॐ॥

असाध्य रोग से निवृत्ति पाने के लिए इस मन्त्र का स्वयं या विद्वान आचार्य से जप कराने से तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक कराने से शीघ्र आरोग्य लाभ होता है।

उपरोक्त सिद्ध मन्त्रों का जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है अब

तक जितने मन्त्र अनुष्ठान आदि बताये गये हैं उनको स्वयं थोड़ा करके अनुभव करके देखा है। गुरु के बताये हुए हैं। इन मन्त्रों का अनुष्ठान कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी कर सकता है।

दरिद्रता नाशक अँगूठी

शुक्ल पक्ष में रविवार को या शुक्रवार को जब पुष्य नक्षत्र आवै तो उस समय इस अंगूठी को बनवावे। ताँवा तीन माशे, चाँदी ४ माशे, सोना ढाई माशे लेकर तीनों के अलग अलग तार बनवावे और तीनों तारों को बट कर अंगूठी अपने नाप की उसी दिन पुष्य नक्षत्र में बनवा लें तथा उसी दिन पूजन करके दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में धारण कर लें तो रोजगार धन्धे में लाभ उन्नति होगी, दरिद्रता का नाश होगा। शरीर भी आरोग्य रहेगा। निश्चित है। भगवती की लक्ष्मी देवी की आराधना प्रार्थना अवश्य करना चाहिए। धर्मार्थ दान भी करना चाहिए।

बालक तन्त्र

बच्चे के गले में मूँगा पहनाने से प्रेत बाधा उसका स्वप्न में डरना चोट लगना बन्द हो जाता है। बालक की जन्म कुंडली में चन्द्रमा अष्टम पड़ा हो तो उसके गले में चाँदी का चन्द्रमा बनवा कर पहनाना चाहिए। शेर के नाखून चाँदी में मढ़वा कर पहनाने से भी नजर नहीं लगती और बच्चा डरता भी नहीं। शनिवार के दिन शेर के दाँत गले में बाँधने से बच्चे के दाँत बिना कष्ट के निकलते हैं और मजबूत होते हैं।

खोये हुए व्यक्ति की वापसी के लिए तन्त्र

जब किसी का कोई प्रियजन कहीं चला जाय और पता न लगे तो उसकी वापसी के लिए यह तन्त्र करें। उसके पहने हुए वस्त्र पर निम्न मन्त्र को लिख कर उस वस्त्र को चरखे की माल के साथ लपेट दो और चरखे को उल्टा घुमाओ। उस व्यक्ति का ही कोई प्रियजन सम्बन्धी उस चरखे को प्रतिदिन एक आध घण्टा उल्टा घुमावे और यह मन्त्र पढ़ता जावे। तीन दिन के अन्दर वह व्यक्ति लौट आता है या उसका कोई समाचार आ जाता है। मन्त्र यह है और इसको ग्रहण काल में १०० माला जप कर सिद्ध करके ही कपड़े पर लिखना चाहिए।

ओम् क्लीं कार्तवीर्यार्जुनों नाम राजाबाहु सहस्रवान । यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्ट व्यक्तिं च लभ्यते । व्यक्ति के स्थान पर उसका नाम लिख देना चाहिये ।

संतान तन्त्र

रविवार के दिन या गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद फूल वाली कटेरी की जड़ उखाड़कर लावें । इस प्रकार की कटेरी कहां लगी है यह पहले से देख लें । जब स्त्री मासिक धर्म से हो और ऋतु स्नान कर ले तो चौथे पाँचवे दिन एक तोला (१० ग्राम) जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर पिलावें । छटे दिन पति के पास जाय तो पुत्र सन्तान होगी । कटेरी एक जड़ी बूटी होती है और इसमें काँटे होते हैं । इस कारण कटेरी कहते हैं । पीले फूल वाली भी होती है ।

कर्ण पिशाचिनी तन्त्र

इसका मन्त्र ११००० जप के बाद सिद्ध होता है । साधक को एकान्त में एक स्वतन्त्र कमरे की व्यवस्था करनी होगी जिसमें ४० दिन तक कोई दूसरा व्यक्ति पशु-पक्षी तक न जा सके । इस कमरे में ४० दिन तक अखण्ड दीपक जलाना होगा । इस दीपक पर भी किसी अन्य की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए । अपनी राशि से तीसरा छठा या ग्यारहवाँ चन्द्रमा हो तब शुभ मुहूर्त देखकर साधक उक्त कमरे का दरवाजा बन्द करके दीपक के सम्मुख रात्रि को आसन बिछा कर बैठ जावे और कर्ण पिशाचिनी के मन्त्र की पचास माला नित्य जप करे । जप समाप्त हो जाने पर दीपक के तेल को अपने बीसों नखों से लगाकर वहीं जमीन पर सो जावे । दिन में काम पर जाते समय दरवाजा बन्द करके जाय और दीपक पर जाली आदि इस प्रकार ढक दे कि वायु के अभाव में दीपक बुझ न जाये और कोई चूहा आदि जन्तु उसे बुझा न दे । दीपक जलता रहना चाहिए बुझ गया तो प्रयोग खण्डित हो जायेगा और फिर प्रारम्भ करना होगा । चालीस दिन में मन्त्र सिद्ध हो जाता है और कर्ण पिशाचिनी प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर कान में टेलीफोन की तरह सुनायेगी । भूत भविष्य वर्तमान की प्रत्येक बात बताने में साधक समर्थ हो जायेगा ।

मन्त्र—ॐ ह्लीं कर्ण पिशाचिनी मे कर्णे कथय हुं फट् स्वाहा ।

दीपक अखंड रहे। कमरे में किसी अन्य का प्रवेश न हो। इसकी सावधानी रखनी होगी। इसमें जन्म राशि लेनी पड़ती है। जन्म राशि पता न हो तो नाम राशि से काम चलाया जाता है। जैसे आपकी राशि अगर मेष है तो मिथुन तीसरी, कन्या छठी, कुम्भ ग्यारहवीं हुई। चन्द्रमा जब इन राशियों में हो तब शुभ मुहूर्त देखकर इस अनुष्ठान को आरम्भ करना चाहिए। आत्म बल, साहस की जरूरत है। डरावने दृश्य आवाजें बाधा विघ्न आते हैं। भगवती का, भैरव का या कोई दूसरा इष्ट सिद्ध कर लिया हो तो भय नहीं है। नहीं तो गुरु के निर्देशन में ही सिद्ध करने से लाभ होता है सफलता मिलती है।

हनुमान जी की सरल साधना

हनुमान चालीसा का अनुष्ठान एक ही दिन में हो जाता है परन्तु जो साधक ६-७ घण्टे एक साथ न बैठ सकें उनके लिये अन्य अपेक्षाकृत सरल साधन भी हैं।

(१) यह साधना २१ दिन की है। शुक्ल पक्ष के मंगलवार से किसी भी मास में आरम्भ की जा सकती है। नगर या ग्राम से बाहर अथवा एकान्त निर्जन स्थान में हनुमान जी के मन्दिर में यह साधना की जाती है, घर पर नहीं। साधना में काम आने वाली वस्तुओं का प्रबन्ध पहले से ही करके रख लेना चाहिये। साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके सात्विक आहार, सत्संग, धार्मिक ग्रन्थों का पठन-पाठन करना होता है। पूजा काल में मौन व्रत रखना तथा भूमि पर शयन करना होता है।

लगभग ढाई सौ ग्राम भुने हुये चने ५०० ग्राम गुड़ और आधा किलो गाय का शुद्ध देसी घी तथा थोड़ी सफेद रुई फूल बत्ती बनाने के लिये लाकर रख लो। गुड़, घी, चने इनको सुरक्षा से बन्द डिब्बों मर्तबान आदि में रखो जिससे कीड़े चींटी आदि न हो जायं। एक दियासलाई और पूजा में काम आने वाले अन्य पात्र संजोकर रख लो। गुड़ के छोटे-छोटे इक्कीस टुकड़े अलग रख लो।

मंगलवार प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में शय्या त्याग कर मौन व्रत धारण करके नित्य कर्म शौच स्नानादि से निवृत हो लो। एक छोटी कटोरी में एक

टुकड़ा गुड़, दूसरी छोटी कटोरी में २१ भुने हुये चने और तीसरे पात्र में घी में भिगो कर फूल बत्ती रखो और इन तीनों को एक छोटी थाली में रखकर उसमें एक माचिस साथ में रख लो। इस पूजा की थाली को लेकर मन्दिर जाओ। नंगे पांव अथवा लकड़ी की खड़ाऊँ पहन कर जाना चाहिये। पूजा की थाली साफ कपड़े से ढक कर ले जानी चाहिये। यदि पूजा की थाली व सामग्री रखने का प्रबन्ध मन्दिर में ही हो जाय तो उत्तम रहता है। घर से मन्दिर तक मौन धारण करके जाना होता है। मन्दिर में नंगे पांव ही प्रवेश कर के घी की बत्ती जलाओ और गुड़ चने का भोग हनुमान जी को लगाओ। साष्टांग दण्डवत प्रणाम करके चुपचाप घर आ जाओ। पूजा की थाली यथा-स्थान रखकर सात बार "राम राम" कह कर मौन व्रत खोल दो। सायं काल हनुमान चालीसा का पाठ, रामायण सुन्दर काण्ड का पारायण जितना हो सके करो। दिन में अपना सांसारिक व्यवसाय कर सकते हो। यदि उससे छुट्टी ले ली हो तो धार्मिक ग्रन्थों का पठन-पाठन करो सत्संग भजन जप आदि करो। भूमि शयन सात्विक आहार ग्रहण करो। बाइसवें दिन सवा सेर का एक रोट या पाव-पाव के पांच रोट उपले की आग में पका कर बनाओ और घी गुड़ मिला कर चूरमा बना लो। बचे हुए सब गुड़ चनों को लेकर चूरमे सहित भोग लगा दो। उस दिन दोनों समय इसी चूरमा गुड़ चने के प्रसाद का भोजन करो। शेष प्रसाद का वितरण कर दो।

इस अनुष्ठान के बाद निश्चय ही मनोकामना पूरी होती है। स्त्री सम्बन्धी कामना अथवा कोई अनैतिक कामना नहीं करनी चाहिये।

(२) दूसरी साधना इस प्रकार है कि प्रातःकाल स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर शुद्ध पात्र में कूएं या नदी का जल लेकर हनुमान जी को जल चढ़ाओ और उड़द का एक दाना हनुमान जी के सिर पर चढ़ा कर ग्यारह प्रदक्षिणा करो। अर्थात् मूर्ति के चारों ओर ११ बार परिक्रमा लगाओ। प्रदक्षिणा करने के पश्चात् मूर्ति के सामने दण्डवत् प्रणाम करके अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिये निवेदन करो। हनुमान जी पर जो उड़द का दाना चढ़ाया है उसे लाकर घर में अलग पात्र में शुद्ध स्थान में रख दो। इस प्रकार प्रतिदिन एक-एक दाना उड़द का बढ़ाते जाओ। अर्थात् दूसरे दिन दो तीसरे दिन तीन दाने हनुमान जी पर चढ़ाओ और उनको नित्य घर

लाकर उसी स्थान पर इकट्ठे रखते जाओ। ४१ वें दिन ४१ दाने रखकर लाओ। ४२ वें दिन से एक-एक दाना कम करते-करते ८१ वें दिन एक दाना उड़द का चढ़ाया जायेगा। ८१ वें दिन यह अनुष्ठान पूरा हो जायेगा। उड़द के सब दानों को नदी में प्रवाहित कर देना चाहिये। रात को स्वप्न में हनुमान जी दर्शन देकर मनोकामना पूर्ति के बारे में निर्देश देते हैं।

(३) यदि किसी व्यक्ति के कार्य में विलम्ब हो रहा हो, अनावश्यक बाधाएं उपस्थित हो रही हों, मंगल, राहू, शनि आदि ग्रहों का प्रकोप हो, भूत प्रेत बाधा हो, मुकदमा चल रहा हो, अधिकारी नाराज हो, राज कोप हो अथवा असाध्य रोग का आक्रमण हो तो हनुमान जी की साधना से मनोकामना पूर्ण होती है। उपरोक्त साधनाओं के साथ-साथ बजरंग वाण का पाठ हनुमान चालीसा का पाठ यथाशक्ति करना चाहिए। हनुमान चालीसा का पाठ अथवा कुछ विशेष मंत्रों का जाप भी लाभप्रद होता है जैसे श्रीराम का पंचाक्षरी मंत्र ॐ राम रामाय नमः या ॐ यो यो हनुमन्त फल फलित घगधगित आयुराष परुडाह अथवा नासै रोग हरै सब पीरा जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥

विविध तन्त्र

(१) प्रसव में कष्ट व देरी हो रही हो तो चिरचिटे का पत्ता गर्भिणी की जाँघ में बांध दो तुरन्त प्रसव होगा। प्रसव के बाद पत्ता फौरन खोल देना चाहिए। चिरचिटा झाड़ियों के रूप में छोटा पौधा होता है, पास से निकलने पर कपड़ों पर चिपट जाता है। बहुत छोटा चने के बराबर होता है और उसमें चारों ओर छोटे-छोटे काँटे होते हैं।

(२) बवासीर के मस्सों पर सांप की केंचुली बांधने से ३ दिन में बवासीर ठीक हो जाती है।

(३) गाय के बांये सींग की अंगूठी बनवा कर दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली में पहनने से मिरगी का रोग ठीक हो जाता है।

(४) गूलर की लकड़ी की चार अंगुल लम्बी कील बना कर शत्रु के घर में गाढ़ दो या दीवार में छिपाकर ठोक दो उसका उच्चाटन हो जायेगा। वहां से चला जायेगा।

(५) पीपल की दातुन से पुष्य नक्षत्र में दांत साफ करने से ज्वर की शिकायत नहीं होती। पुष्य नक्षत्र एक चन्द्र मास में एक बार आता है। जब पुष्य नक्षत्र आवै तब पीपल की पतली-सी डाली लेकर उससे दातुन करें। नक्षत्र लगभग २४ घण्टे तक रहता है। उस अवधि में कभी भी हो सके तो प्रातःकाल प्रति मास करता रहे। ज्वर की शिकायत कभी नहीं होगी। यदि हो तो ज्वर काल में दातुन करने से ज्वर उतर जायेगा।

(६) किसी पर कोई जादू मन्त्र किया हो डरावने सपने आते हों या कोई मन्त्र पढ़ी चीज खिला दी हो तो छोटी इलायची, काकड़ासिंगी, काली मिर्च, नीम के पत्ते बराबर बराबर भाग लेकर पीस लें। गोधूलि बेला में सात बार रोगी के ऊपर से उतारकर मिट्टी के सकोरे में अग्नि लेकर उस पर चूरण की धूनी करे। उस व्यक्ति को धूनी सुंघावें तो ३ दिन में लाभ होता है। जादू का प्रभाव दूर हो जाता है।

(७) पत्नी पति से या पति पत्नी से नाराज हो गया हो तो छत्री का पुष्प शहद में मिला कर खिलाने से (एक माशा के बराबर) मेलमिलाप हो जाता है। छत्री को खुम्बी भी कहते हैं। बरसात में छत्री जैसे छोटे पौधे पैदा हो जाते हैं उन्हें ही छत्री पुष्प कहा जाता है। तोड़ कर रख लें और जरूरत के वक्त प्रयोग करें।

(८) रांग की अंगूठी पहनने से मोटापा कम होता है।

(९) रुद्राक्ष के पांच असली दाने लाल डोरे में पहनने से रक्तचाप ठीक रहता है। असली रुद्राक्ष पानी में डालने से डूब जाता है तैरता नहीं है।

(१०) नागफनी की जड़ को बालक के गले में बांधने से जिगर व तिल्ली के रोग समाप्त हो जाते हैं।

बारहवां अध्याय

टोने टोटके

विश्व के सभी समाजों में अति प्राचीन काल से बहुत से टोने टोटके प्रचलित हैं। आधुनिक सभ्य समाज हो या प्राचीन रूढ़िवादी, आदिवासी हो या अनुसूचित जनजाति, बहुत से अन्ध विश्वास तंत्र मंत्र ओझा सयाने झाड़-फूंक के रूप में चले आ रहे हैं। टोटके अधिकांश आधि व्याधि से रक्षा हेतु या छुटकारा पाने के लिए और टोने बहुधा दूसरों को हानि पहुँचाने के इरादे से किये जाते हैं। आपने देखा होगा कि नई बनी इमारतों पर मिट्टी की हांडी को काला रंग कर उस पर भयानक आकृति बनाकर लगा दी जाती है। मोटरगाड़ी, ट्रकों आदि पर काला चुटीला लटका दिया जाता है। वाहनों पर आपने लिखा देखा होगा "बुरी नजर वाले तेरा मुँह काला"। मातायें बच्चों को काला टीका लगाती हैं। यह सब बुरी नजर के प्रभाव से बचाने के लिये किये जाने वाले आम टोटके हैं। बुरी नजर के प्रभाव से इमारतें तक चटख जाती हैं और इन टोटकों का रक्षात्मक प्रभाव भी पड़ता है। जब किसी बच्चे को नजर लग जाती है तब मातायें या प्रौढ़ा स्त्रियां कई तरह के टोटके नजर उतारने के करती हैं और उनसे सचमुच नजर का कुप्रभाव दूर हो जाता है। एक बहु प्रचलित टोटका तो यह है कि थोड़ी सी राई, थोड़ा नमक और २-३ सूखी लाल मिर्च लेकर माता या कोई प्रौढ़ा स्त्री बच्चे के शरीर पर ७ बार उसारती है। अर्थात् उपरोक्त राई नमक मिर्च को दोनों हाथों में लेकर बच्चे के शरीर पर ऊपर नीचे स्पर्श करते हुए घुमाती है। उसके बाद उन वस्तुओं को चूल्हे या अंगीठी में झोंक देती है। बच्चे को नजर लगी होती है तो मिर्चों की धांस जलने की गंध बिल्कुल नहीं आती और नजर उतर जाती है। यह सब प्रक्रिया चुपचाप बिना किसी के टोके करनी चाहिये। बीच में कोई प्रश्न कर दे कि क्या है आदि तो निष्फल हो जाती है।

हमारे अति प्राचीन ग्रन्थ अथर्ववेद में बहुत से टोटकों का वर्णन है। यह

सब तन्त्र शास्त्र के अन्तर्गत आते हैं। पाण्डु रोग (पीलिया) ग्रस्त रोगी को लाल बैल के बाल पानी में पीसकर पिला देने से रोग दूर हो जाता है। अतिसार रोग में (दस्त लगना) रोगी की कमर में मूंज की रस्सी बांध कर सांप की बांबी की मिट्टी पानी के साथ पिलाने से रोग दूर हो जाता है। हिचकी बन्द न हों तो सैंधा नमक पीस कर पानी में मिला कर पिलाने से हिचकी बन्द हो जाती है।

आजकल शहरों में प्रसव अस्पतालों नर्सिंग होम में होते हैं। गांव कस्बों में अब भी बहुत से प्रसव घरों में ही होते हैं। सूतिका गृह (सोवर) के बाहर दरवाजे के दोनों तरफ की दीवारों पर गोबर से चक्र व्यूह का आकार बना दिया जाता है। गर्भिणी की कमर में काले सूत के धागे में बहेड़ा बांध कर लटका देते हैं। शैय्या के सिरहाने छुरी चाकू रख दिया जाता है। कपड़े में लपेट कर पन्ना रत्न गर्भिणी की जांघ पर बांधने से भी प्रसव निर्विघ्न कष्ट रहित हो जाता है। बच्चे के सिरहाने भी चाकू छुरी रखने से बच्चा सोते में डरता नहीं है। भूत प्रेत की बाधा से बुरी नजर से ग्रहों के कुप्रभाव से बचाने के लिये बच्चे के गले में काले डोरे में रुद्राक्ष, लाल घुंघची, चांदी का चन्द्रमा, ताँबे का सूरज, शेर का नाखून आदि चीजेंपहनाने का चलन है। बच्चे के हाथ की कलाई में और कमर में काली ऊन का धागा भी पहनाते हैं। अन्न प्राशन वाले दिन बच्चे के सामने पुस्तक सिक्के कलम औजार शस्त्र खिलौने आदि रखे जाते हैं और जिस वस्तु को बालक सबसे पहले पकड़ता है उसी आधार पर उसके भावी जीवन का अनुमान लगाया जाता है। जैसे बालक पुस्तक ग्रहण करे तो विद्वान होगा, सिक्का पकड़े तो व्यापारी, औजारों पर हाथ रखे तो इंजीनियर बनेगा—ऐसा समझा जाता है।

मातायें बच्चों को नजर से बचाने के लिये उनके माथे पर काला टीका लगाती हैं। अगर बच्चा बहुत रोता है चीखता है चौंकता है दूध उलट देता है हरे पीले दस्त करता है तो माताएं अक्सर यह टोटका करती हैं—गन्धक, चोकर, नमक, सात लाल मिर्चें, झाड़ू की सींकें। यह सब चीजें हाथ में लेकर माता बच्चे के ऊपर सात बार ओसारा करती यानी उसके शरीर पर सात बार ऊपर से नीचे फिराती है। फिर चूल्हे की ओर पीठ करके खड़ी होकर

उन सब वस्तुओं को टांगों के बीच से चूल्हे में फेंक देती है। इससे बच्चे का रोग दोष नजर दीठ ठीक हो जाता है। यह टोटका शाम को गोधूलि बेला में किया जाता है। वैसे भी बीमारी का इलाज तो दवा देकर ही करना चाहिए। हां नजर लगने पर टोटका करने से ही नजर दूर होती है। नजर लगने पर बच्चे के शरीर से खट्टी सी बास आने लगती है।

खेलने वाले बच्चे की नजर मातायें बहुधा इस प्रकार उतारती हैं : जमीन से मिट्टी उठाकर उस मिट्टी को सात बार बच्चे पर ओसार कर बच्चे के सिर पर लगा देते हैं। उसके बाद हाथ पैर घुला देते हैं या नहला देते हैं। अगर बच्चे को सूखा रोग हो जाय तो आधी रात के समय चमेली की झाड़ी के नीचे जाड़े के मौसम में गर्म पानी से और गर्मी के मौसम में ठण्डे पानी से बालक को स्नान कराना चाहिए। इससे सूखा रोग दूर हो जाता है।

संक्रामक रोग जैसे कि जलोदर, पीलिया, कण्ठमाला आदि हो जाने पर मिट्टी के शकोरे में एक अण्डा, एक लड्डू, दो पैसे और सिन्दूर रख कर रोगी के ऊपर से सात बार ओसार कर दोपहर १२ बजे या सन्ध्या सूर्यास्त के समय गोधूलि वेला में चुपचाप चौराहे पर रखवा दिया जाता है। रोगी स्वयं रखे या ओसारने वाला रखे, चौराहे पर शकोरा रखने के बाद वापिस मुड़कर नहीं देखना चाहिए। टोटका ऐसे सुनसान चौराहे पर रखा जाता है जहां किसी की टोका टाकी न हो।

पहलवान लोग या खिलाड़ी गले में या हाथ में काले डोरे का गण्डा पहनते हैं या कोई न कोई तावीज पहनते हैं। उससे उन्हें विजय व स्फूर्ति मिलती है। जब कोई बाहर का पहलवान उनके अखाड़े में लड़ने आता है तब चमेली के सात फूल लेकर उनको सीने से और दोनों भुजाओं से लगाकर अखाड़े के चारों कोनों में और बीच में गाड़ देते हैं। इससे उनकी ही विजय होती है।

काफी उम्र हो जाने पर भी जिन पुरुषों का विवाह नहीं हो पाता उनके लिये यह टोटका प्रचलित है—कुम्हार अपने चाक को जिस डंडे से घुमाता है उसको गुरुवार के दिन चुरा कर ले आओ। घर के एक कोने को लीपपोत कर सफेदी करके साफ कर लो। वहां पर उस डंडे को लहंगा चुनरी पहना कर सिन्दूर महावर लगा कर दुलहिन बना कर एक कोने में खड़ा करके गुड़

चावल से पूजा करो। जल्दी विवाह हो जायेगा। ४० दिन तक भी इच्छा पूरी न हो तो फिर कुम्हार के चाक का डन्डा चुराकर सब कुछ दुबारा करो। विवाह फिर भी न हो तो अधिक से अधिक सात बार यह टोटका दुहराया जा सकता है। कुम्हार का डन्डा पैसे देकर नहीं, चुरा कर ही लाना चाहिए।

लड़कियों की शादी काफी उमर तक न हो तो उनके लिये यह टोटका प्रचलित है—कार्तिक शुक्ला देवठान एकादशी को मिट्टी की दो मूरत एक पुरुष एक स्त्री (कच और देवयानी* की प्रतीक स्वरूप) बनाओ। उन मूरतों पर हल्दी, चावल, आटे का पिसा हुआ घोल (ऐपन) लगाओ। उनकी पूजा करके उनको एक लकड़ी के पटे के नीचे ढंक दो। मूरतों के दोनों तरफ ईंटें रख कर उस पर लकड़ी का पटा रख दो। उस पटे पर कन्या को बैठ कर अपने विवाह के लिये प्रार्थना करनी चाहिये।

पीलिया रोग के लिये कांसे के कटोरे में सरसों का तेल भर कर सात दिन तक नित्य कुछ समय तक दिखाना चाहिये। तेल रोज पीला होता जायेगा और रोग कम होता जायेगा। इस टोटके के साथ नीम के पत्तों से २१ बार झारा भी दिया जाता है। मंत्र भी पढ़ते हैं।

एकतरा या तिजारी ज्वर से छुटकारा पाने के लिए टोटका यह है कि जिस दिन ज्वर आने वाला हो उस दिन प्रातः काल अपने शरीर की लम्बाई के बराबर सूत का धागा लेकर पीपल के वृक्ष में धागे को बांध दें। बांधते समय यह कहें "मेरा मेहमान आये तो तुम संभाल लेना"। इस टोटके के करने से पारी का ज्वर नहीं आता। ऐसा ही टोटका आक के पौधे के साथ भी किया जाता है। पारी वाले दिन आक के पौधे के पास जाकर उससे भेंट

---

* कच और देवयानी की कथा पुराणों में है। राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य की कन्या देवयानी और देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच की कथा है। कच शंकराचार्य के पास मृत संजीवनी विद्या सीखने के लिये रहता है। देवयानी उससे प्रेम करने लगती है। परन्तु कच उसको गुरु पुत्री समझकर स्वीकार नहीं करता। देवयानी फिर राजा ययाति से विवाह करती है। ययाति अपना बुढ़ापा अपने पुत्र को देकर नवयुवक बनता है।

करते हैं उसे भुजाओं में लपेटकर कहते हैं : "मेरे मेहमान का आज तुम्हारे यहां न्यौता है"। ऐसा करने से भी पारी का बुखार नहीं आता।

आधासीसी का दर्द हो तो यह टोटका करना चाहिए : सुबह उठकर (अर्थात् आठ बजे से पहले ही) दो ढाई सौ ग्राम ताजा गरम जलेबी लाओ जो खूब चाशनी में तर हों और एकान्त स्थान में धूप में बैठकर उनको सूर्य देवता को दिखा दिखाकर खा जाओ। एक जलेबी हाथ में लो, सूरज की तरफ करके कहो ले सूरज देवता जलेबी खा ले फिर उसको मुंह बनाकर जीभ दिखाकर विराकर बजाय सूरज को देने के स्वयं खा लो। जैसे आप किसी को खाने की कोई चीज देते हैं और जब वह लेने को तत्पर हो तो बहका कर खुद खा लेते हैं और मुंह बनाकर बिरा देते हैं वैसे ही। इस प्रकार सभी जलेबियां समाप्त कर दो। आधा सीसी का दर्द चला जायेगा।

आंख की बिन्नी पर अक्सर फुंसी हो जाती है और काफी कष्ट देती है। इसे गुहेरी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि विष्ठा को देखकर घिन करने पर यह हो जाती है। गुहेरी होने पर जब आप शौच को जाएं तो शौच करने के बाद पात्र में थोड़ा जल बचा लो और हाथ की अंगुली को गुहेरी के पास ले जाकर कहो कि "चली जा नहीं तो छू लूंगा" सात बार ऐसा कहकर उसको शौच जल लगी उंगली से छू लो "नहीं जाती तो ले छू ही लेता हूं" कहकर छू लो। गुहेरी उसी दिन ठीक हो जायेगी।

काली बिल्ली की प्रथम प्रसव की जेर (खेड़ या आंवल) को सुखाकर रुपये रखने के स्थान तिजोरी सन्दूक आदि में रखने से धन समृद्धि की वृद्धि होती है और दारिद्रय का नाश होता है। काली बिल्ली के प्रथम प्रसव का जेर पाना सरल नहीं है। बिल्ली कहां प्रसव करेगी इसका क्या ठीक है। इसके लिए काली बिल्लियों का जोड़ा पालें और जब प्रथम प्रसव हो तो पूरी निगरानी रखें तभी जेर मिल सकती है। बिल्ली प्रसव के बाद जेर को खा जाती है। उसे खाने का अवसर न मिले तभी जेर को प्राप्त कर लेना चाहिए। इस जेर को सुखाकर रख लिया जाए तो बहुत भाग्योदय कारक मानी जाती है। करोड़पती तक बना देती है।

किसी का काम न बन रहा हो, बाधायें आ रही हों, विलम्ब हो रहा हो असफलता मिल रही हो, लाख प्रयत्न करने पर भी धन्धा रोजगार ठीक न हो

रहा हो तो यह टोटका करके देखें। शहर के बाहर एक ऐसा चौराहा देखें जहां आना जाना कम रहता हो। दोपहर बारह बजे या रात के समय वहां जाकर कुछ चीजें रखनी होती हैं और ध्यान यह रखा जाता है कि कोई देखे नहीं और न ही टोके। घर से वहां तक जाते हुए व वापिस आते समय भी कोई न टोके। वापिसी में जब तक चौराहा दिखाई देता रहे मुड़कर नहीं देखना है। टोटके की चीजों का प्रबन्ध करते समय भी कोई पूछा बताई टोका टाकी नहीं हो। शनिवार के दिन आटे में गुड़ मिलाकर घोल बनाओ और सरसों के तेल में सात पूये बनाओ। सात फूल आक (मदार) के लो, एक बड़ा पत्ता अरण्डी का या अरबी का लेकर उस पर पूये, फूल, थोड़ा सिन्दूर, एक आटे का दीपक जिसमें रुई की बत्ती तेल या घी में भीगी लगी हो पत्ते पर सजा लो। इस सब सामान को चौराहे पर रखकर वहां दीपक जलाओ और कहो कि "हे मेरे दुर्भाग्य तुझे यहीं छोड़े जाता हूं मेरा पीछा मत करना"। सब सामान को चौराहे पर छोड़कर वापिस आ जाओ मुड़ कर मत देखो। शीघ्र ही बाधा दूर होकर कार्य सफल होगा।

तेरहवाँ अध्याय

शावर मन्त्र साधना

शाबर मन्त्र भगवान शंकर के मुख से निकले हुए ऐसे मन्त्र हैं जिनकी शब्द योजना अक्षर योजना बिल्कुल बेमेल और अटपटी होती है। इनका कोई स्पष्ट अर्थ हो यह आवश्यक नहीं होता और इनको सिद्ध करने के लिए विशेष अनुष्ठान, पुरश्चरण, हवन आदि भी नहीं करने पड़ते। गोस्वामी तुलसीदास जी ने शावर मंत्रों के विषय में कहा है—

अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रकट प्रभाव महेस प्रतापू॥

भगवान शंकर के आर्शीवाद से ये मंत्र स्वयं सिद्ध स्वतः प्रभावोत्पादक होते हैं और निष्फल नहीं जाते। जैसे वेदोक्त तन्त्रोक्त मंत्रों को गुरु दीक्षा, पुरश्चरण, अनुष्ठान, न्यास, मुद्रा द्वारा पहले सिद्ध करना होता है वैसे इन शावर मंत्रों के लिए इन सब की आवश्यकता नहीं होती। ऐसा लगता है कि शावर मंत्र जनता में प्रचलित भाषा में जनसाधारण के उपयोग के लिए रचे गए हैं। इनमें विशेष ध्यान ध्वनि संयोजन पर दिया जाता है और प्रयोजन के अनुसार अक्षर योजना की जाती है। इनके बोलने का विशेष ढंग होता है जिसे गुरु मुख से सुनकर समझ लेना अच्छा रहता है। इनको सिद्ध करने के लिए हजारों लाखों की संख्या में जप करने की आवश्यकता भी नहीं होती। होली, दिवाली, शिवरात्रि की रात को १२ बजे से ३ बजे तक ग्रहण काल में, अमावस्या की रात्रि, पर्व काल आदि विशेष मुहुर्तों में जपकर सिद्ध किया जाता है। तीन-चार घंटे में जितनी संख्या का जप हो जाता है उतने में ही मंत्र सिद्ध हो जाता है। इतनी देर के जप में यह मुखाग्र यानी मुंह जबानी याद हो जाते हैं। फिर प्रत्येक होली दिवाली ग्रहण काल में जपकर इनको और शक्ति सम्पन्न तथा जाग्रत कर लिया जाता है।

शाबर मंत्रों को सिद्ध करने के लिए निर्जन स्थान में शिव, काली, हनुमान

जी या भैरव जी का मन्दिर अथवा शमशान ठीक रहता है। भय की आशंका हो तो गुरु या अन्य साधक मित्र को साथ लिया जा सकता है। मंत्र देवता के अनुसार कुछ पूजा सामग्री फल-फूल, सिन्दूर, धूप दीप नेवैद्य साथ में रखना होता है। फूलों में आक के, कनेर के या लाल गेंदे के फूल, फलों में बेलपत्र, बेर, करौंदा जैसे वनफल, नेवैद्य में बूंदी के लड्डू, बेसन के पदार्थ, मीठे पूये, गेहूं के आटे व गुड़ से बने गुलगुले पूये अपूप आदि सिन्दूर, धूप, दीप सब अन्डी के पत्ते पर रखकर पूजा स्थल पर रखा जाता है। देवता का दीपक घी का आटे से बनाते हैं।

यह मन्त्र जब सिद्ध हो जाते हैं तो पूरी तरह प्रभावी होते हैं। जैसे दांत दर्द को बन्द करने का मंत्र सिद्ध है तो मंत्र से झाड़ने पर दर्द तुरन्त बन्द हो जायेगा। बिच्छू झाड़ने का मंत्र सिद्ध है तो मंत्र द्वारा झाड़ने से बिच्छू का विष दूर हो जायेगा। परन्तु एक समय में एक ही मंत्र सिद्ध होता है। एक व्यक्ति जितने चाहे शावर मंत्र सिद्ध कर सकता है। इनमें शर्त यही होती है कि मंत्र सिद्ध व्यक्ति इसके द्वारा धन नहीं कमायेगा, परोपकार की भावना से कार्य करेगा, लोभ लालच आने पर सिद्धि चली जाती है। जिस समय भी जरूरत-मन्द या रोगी व्यक्ति उसके पास आयेगा सब काम छोड़कर उसका काम करेगा। आने जाने का खर्चा और कोई गंडा तावीज दवा का खर्चा ले सकता है। देवी देवता पर प्रसाद चढ़वा सकता है परन्तु अपने लिए धन लाभ नहीं कर सकता।

शावर मंत्र सिद्ध करने के लिए बहुधा रात का समय ही ठीक रहता है। चन्द्र ग्रहण भी रात में पड़ता है। सूर्य ग्रहण दिन में होता है। रात के समय मंत्र को सिद्ध करने से पहले उसको अच्छी तरह याद कर लेना चाहिए ताकि उसे आप ठीक से जप कर सकें।

किसी भी शावर मंत्र को सिद्ध करने से पहले निम्न मंत्र का ५ बार या ७ बार पाठ करके देवता गुरु जनों को प्रसन्न किया जाता है जिससे साधना निर्विघ्न पूर्ण होती है। जैसे प्रत्येक पूजा से पहले गणेशजी का पूजन किया जाता है वैसे ही शावर साधना में यह मंत्र पाठ है।

"गुरु सठ गुरु सठ गुरु है वीर
गुरु साहब सुमरों बड़ी भांत

सिंगी टोरौं बन कहौं
मन नाऊं करतार
सकल गुरुन को हर भजै
घट्टा पकर उठ जाग
चेत संभार श्री परम हंस।

शावर मंत्रों का ध्वनि संयोजन ही इनका मुख्य आधार है। अतएव इनकी शब्द योजना में कोई संशोधन परिवर्धन परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

ग्रह बाधा शांति के लिए मंत्र

जिस घर में भूत प्रेत बाधा हो अथवा उसके निवासी बीमार रहते हों, लड़ाई झगड़ा क्लेश रहता हो, धन, सन्तान, पशु की वृद्धि न होती हो, आमदनी में बरकत न हो, किसी ने टोना टोटका करके वृद्धि रोक दी हो तो इन सब आधि व्याधियों को दूर करने के लिए निम्न शावर मंत्र अद्वितीय है। इसको किसी मन्दिर या निर्जन स्थान में सिद्ध किया जा सकता है। निर्जन स्थान इसलिए उपयुक्त समझा जाता है कि साधना काल में विघ्न उपस्थित न हो। बस्ती में पूजा स्थान होने से आसपास के लोग कौतुहलवश विघ्न पैदा कर सकते हैं।

घर में जितने द्वार हों उतनी लोहे की कीलें ले लो। जितने कमरे हों प्रति कमरा दस ग्राम के हिसाब से साबत काले उड़द ले लो। थोड़ा सिंदूर तेल या घी में मिलाकर कीलों पर लगा लो। कमरे की चौखट लकड़ी की है या ईंट चूने की है तो उसमें ठोंकने के लिए दो इंच की कील काफी होगी। परन्तु यदि फर्श सीमेन्ट या चिप्स का है तो दरवाजे में ठोकने के लिए आधा इंच की कील पर्याप्त होगी। निम्न मन्त्र को सिद्ध करने के बाद व्याधिग्रस्त घर के प्रत्येक कमरे में जाकर मन्त्र पढ़कर उड़द के दाने सब कमरों में चारों कोनों में आंगन बरामदे में बिखेर दो और द्वार पर कील ठोंक दो। इसी प्रकार मुख्य द्वार की चौखट पर भी अभिमन्त्रित कील मंत्र पढ़कर ठोक दो।

ओम नमो आदेश गुरन को, ईश्यर वाचा अजरी बजरी बाड़ा, बज्जरी में बज्जरी, बांधा दसौं दुआर, छवा और के घालौं, तो पलट हनुमन्त वीर उसी

को मारै। पहली चौकी गनपती, दूजी चौकी हनुमन्त, तीजी चौकी में भैरौं, चौथी चौकी देत रक्षा करन को आवै सिरी नरसिंहदेव जी। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरै मंत्र ईश्वरी वाचा।

भूत प्रेत बाधा शान्त करने के लिए शावर मंत्र

"जय हनूमान बारह बरस को जवान
हाथ में लड्डू मुख में पान
हाँक मारत आप बाबा हनूमान
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरै मंत्र ईश्वरी वाचा ॥"

यह हनूमान जी का शावर मंत्र है। इसे हनूमान जी के मन्दिर में ही सिद्ध किया जाना चाहिए। सिद्ध करने के बाद इस मंत्र को पढ़कर फूँक मारने या झाड़ने से भूत प्रेत बाधा दूर हो जाती है। प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति को इस मंत्र से अभिमंत्रित जल पिलाना चाहिए। इस मंत्र से धूप की धूनी देनी चाहिए। शरीर से धूप भभूत लगाना तथा तनिक सी खिलाना भी चाहिए और मोरपंख से २१ बार झाड़ा देना चाहिये। अधिक से अधिक तीन दिन इस प्रकार झाड़ने से सब प्रकार की प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

जिसको यह वीर का मंत्र सिद्ध हो वह कभी यदि बहुत से शत्रुओं से घिर जाय तो भी उसका बाल बाँका नहीं होता। तीन बार इस मंत्र को जोर-जोर से उच्चारण करने पर शत्रुओं का स्तम्भन हो जाता है, उन्हें उस सिद्ध पुरुष में हनूमान जी विकराल रूप में खड़े दिखाई देंगे और वे आक्रमण का इरादा छोड़ भाग खड़े होंगे। जंगली हिंसक जन्तुओं से घिर जाने पर भी यह मन्त्र रक्षा करता है।

रोग दोष भूत बाधा के लिए अन्य मंत्र

"आगे दो झिलमिली पीछे दो नन्द
रक्षा सीताराम की रखवारे हनुमन्त
हनुमान हनुमन्ता आवत मूठ करो नौखण्डा
साँकर टोरी लोह की फारौ बजर किवार

अज्जर कीलै वज्जर कीलै
ऐंसे रोग हाथ से ढीलै
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरै मंत्र ईश्वरी बाचा

उपरोक्त शावर मंत्र रोग दोष भूत प्रेत बाधा शान्त करने ग्रह शान्ति में प्रयोग किया जाता है। शत्रु भय निवारण करने के लिए भी अचूक है। मंत्र को सिद्ध करने के बाद भूत प्रेत बाधा में झाड़ा दिया जाता है। अन्य स्थितियों में गण्डा तावीज बना कर पहनाया जाता है।

शावर मंत्रों का गण्डा तावीज बनाने की रीति

मौली का लम्बा मोटा धागा ले लो। शावर मन्त्र को पढ़ो और उस धागे में एक गाँठ लगा दो। इस प्रकार मंत्र पढ़कर ७, ११ या १३ गांठें लगा लो। इस प्रकार एक गण्डा बन जाता है जिसे गले में पहनने या भुजा में बांधने से बाधा दूर होती है। तावीज बनाने के लिए भोजपत्र पर मंत्र लिखते हैं और तावीज में रखकर बन्द कर देते हैं। अनार की कलम अष्टगन्ध या लाल चँदन की स्याही प्रयोग में लाते हैं।

भूत बाधा निवारण का मन्त्र

ओम हिरीम भिरीम फट् स्वाहा। परवत हंस परबत स्वामी। आतम रक्षा सदा भवेत। नौनाथ चौरासी सिद्ध। याकी दोहाई हाथ में भूत, पाँव में भूत, भभूत मेरा धारण माथे राखो अनाड की जोत। सब को करो सिंगार गुरु की शक्ति मेरी भक्ति। फुरी मंत्र ईश्वरी बाचा, दोहाई भैरव की ।।

इस मंत्र को शिवालय या भैरव मन्दिर में सिद्ध किया जाना चाहिये। सिद्ध होने पर भूत प्रेत बाधा दूर करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। बाधा ग्रस्त व्यक्ति पुरुष स्त्री बालक जो भी हो उसे सामने बिठाकर मंत्र पढ़ कर झाड़ा देने से जोत जगा कर मंत्र की आहुति देने, धूप धूनी देने से, भस्म भभूत शरीर पर लगाने खिलाने से भूत प्रेत का प्रभाव दूर हो जाता है। मंत्र को भोजपत्र पर अनार या चन्दन की लेखनी से रोली सिंदूर या लाल चन्दन की स्याही द्वारा लिख कर तांवे के तावीज में रखकर पहनने से प्रेत बाधा दूर होती है। जब तक तावीज या गण्डा बंधा रहेगा भूत प्रेत का असर उस व्यक्ति

पर नहीं होगा। गण्डा बनाना बताया जा चुका है उसी तरह इस मंत्र को पढ़ कर गांठें लगा कर गण्डा बनाया जाता है। गण्डे तावीज को बाधा ग्रस्त व्यक्ति के समक्ष हवन पर घुमा कर धूपित करके जाग्रत करके पहना देना चाहिए।

चमत्कारी शाबर मन्त्र प्रेत सिद्धि

गोस्वामी तुलसीदास जी शौच से बचा हुआ जल नित्व एक बबूल के पेड़ पर चढ़ाया करते थे। बबूल के पेड़ पर प्रेत रहता था। उसने प्रसन्न होकर दर्शन दिये और फिर उसी के द्वारा गोसाइँ जी को हनुमान जी के दर्शन हुये और हनुमान जीं के द्वारा श्री राम लक्ष्मण के दर्शन चित्रकूट के घाट पर हुये। इस कथा से ज्ञात होता है कि बबूल के पेड़ पर प्रेत का वास होता है। बस्ती के बाहर कहीं पर अकेला यानी एक ही बबूल का पेड़ हो उस पर ७ दिन तक पानी चढ़ाओ। फिर शनिवार की आधी रात के समय उस पेड़ के नीचे बैठ कर हवन करो। नीचे लिखे मंत्र को पढ़ कर १०८ आहुतियां दी जायेंगी। हवन से पहले मंत्र को अच्छी तरह याद कर लो। आम की लकड़ियों की समिधा, काले तिल व साबत उड़द मिलाकर हवन सामग्री तिल के तेत या वनस्पति घी में बनाई हुई हो। पेड़ के नीचे मिट्टी की वेदी बनाकर उसके सामने सब कपड़े उतार कर नंगा होकर बैठकर हवन करना होगा।

मंत्र—ओम साल सलीता सोसल बाई
कान पढंता घाई आई
ओम लं लं लं ठः ठः ठः स्वाहा ॥

हवन के बीच में या समाप्ति पर प्रेत प्रकट होगा। उस समय निर्भय हो कर बाँये हाथ की कनिष्ठा उंगली में ब्लेड से थोड़ा काटकर सात बूँद रक्त जमीन पर गिरा दो। जल्दी में या घबराहट में रक्त शीघ्र न गिरा सको तो कुछ कच्चा माँस साथ में ले जाना चाहिये ताकि अपना रक्त देने में कुछ देर हो भी जाय तो साथ में लाया मांस प्रेत को अर्पण कर सको। यह साधना डरपोक किस्म के लोगों को नहीं करनी चाहिए। जिन्होंने हनुमान जी, काली या भैरव जी की साधना की हुई हो, साहसी निडर हों भयभीत न हों उनको ही इस प्रेत साधना को करना चाहिये। साधक अपने ही भय से हानि उठाता है। प्रेत सिद्ध हो जाता है तो उसके द्वारा मन चाही खुशबू, मन चाहे देश विदेश

के पदार्थ मंगाये जा सकते हैं। भूत प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति ठीक किये जा सकते हैं। वशीभूत प्रेत की सामर्थ्य के अनुसार काम कराये जा सकते हैं। उसकी अनिच्छा से अनाचार दुराचार कर्म करना नहीं चाहिये। प्रेत को नित्य या सप्ताह में या मास में किसी एक तिथि को मंगल, शनि या अमावस्या को पूजा भेंट बराबर देनी होती है।

जिस बबूल के पेड़ के नीचे उपरोक्त शाबर साधना की जायेगी उस पर यदि प्रेत होगा तो इस साधना से अवश्य प्रगट हो जायेगा। बबूल के पेड़ पर प्रेत का वास होता है परन्तु सभी बबूल के पेड़ों पर प्रेत का वास हो ही यह निश्चित नहीं होता। कहीं पर अकाल मृत्यु हुई हो, किसी को प्रेत दिखाई दिया हो, शमशान के पास में हो तो ऐसे अकेले दुकेले बबूल के पेड़ पर प्रेत के वास की संभावना अधिक होती है। यह मंत्र व साधना अचूक है। एक पेड़ पर सफल न हो तो दूसरे पर करना चाहिये।

प्रवासी आकर्षण मन्त्र

मंत्र—ओम नमः आदि पुरुषाय············

आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा

खाली स्थान में उस व्यक्ति का नाम लिखा जाता है जिसको आकर्षित करना होता है।

यदि कोई व्यक्ति घर से भागकर रूठ कर लड़ झगड़ कर चला गया हो, देश परदेश जाकर घर वापिस न आ रहा हो या दूर रहने वाले किसी व्यक्ति से कोई काम कराना हो तो उपरोक्त मन्त्र में उसका नाम लगा कर इस मंत्र को काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन पीस कर बनी स्याही से कनेर की जड़ की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखें और कत्था (खैर) की लकड़ी के अंगारों पर रख कर जला दे। जिस व्यक्ति पर यह प्रयोग किया जायेगा वह वापिस आ जायेगा और आकर्षित भी हो जायेगा।

स्त्रियों के दूध उतारने का मन्त्र

ॐ दमुंदनी शाह दुग्धं कुरु कुरु स्वाहा

सन्तानवती माताएँ जिनकी गोद में दूध पीता बच्चा हो ऐसी स्त्रियों के स्तन का दूध कभी-कभी किसी कारण वश सूख जाता है ऐसी स्थिति में उपरोक्त मंत्र के प्रयोग से फिर से दूध उतर आता है।

एक पाव या आधा किलो दूध अथवा एक गिलास मट्ठा (छाछ) लेकर उसमें उपरोक्त मंत्र से इक्कीस बार फूँक कर उस दूध या छाछ को सन्तानवती माता को तीन दिन तक पिलाने से दूध आ जाता है।

गाय भैंस बकरी आदि दूध देने वाले पशुओं पर भी यह प्रयोग सफल रहता है।

आधासीसी के दर्द को दूर करने का मंत्र

"बन में ब्याही अंजनी कच्चे बन फल खाय। हाक मारी हनुमंत ने इस पिण्डा से आधा सीसी उतर जाय।"

कृष्णापक्ष की चतुर्दशी तिथि को शमशान में जाकर इस मन्त्र का १०००० जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यह तिथि इस प्रकार की होती है कि प्रात:काल सूर्योदय के समय चौदस होती है इससे तिथि तो उस दिन चौदस ही मानी जाती है, परन्तु रात्रि को १२ बजे के आस-पास अमावश्या आ जाती है तो रात्रि अमावश्या की ही होती है। रात को शमशान में जाने से डर लगे तो शमशान के आसपास के शिव या भैरव मन्दिर में बैठ कर भी जप किया जा सकता है। दिन में भी किया जा सकता है। इसमें पूजा प्रसाद हनुमान जी के अनुसार ले जाना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाए तो सात बार मंत्र का जाप करते हुए रोगी के मस्तक पर भभूत की राख मलने से आधा सीसी का रोग दूर हो जाता है। १०००० जाप एक रात में न हो सके तो २-३ रात में किया जा सकता है। चतुर्दशी तिथि जब से आरम्भ हो तब से लेकर समाप्त काल तक जप किया जा सकता है।

नेत्र पीड़ा

अक्सर बच्चों की आंख दुखने आ जाती हैं लाल हो जाती हैं दर्द होता है रोहे हो जाते हैं। नेत्र पीड़ा निवारण करने का मन्त्र इस प्रकार है :—

",ओ३म् नमो राम का धनुष लक्ष्मण का बाण।

आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।"

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात को शमशान में या शमशान के निकट के किसी शिव भैरव या राम मन्दिर में उपरोक्त मन्त्र की १० माला जपने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। ग्रहण काल होली दिवाली शिवरात्रि के

पर्वकाल भी उत्तम होते हैं। मन्त्र सिद्ध करने के बाद किसी आंख दर्द के रोगी की दुखती आंख पर नीम के पत्तों के झोरे (डाली) से २१ बार झाड़ने से आँख ठीक हो जाती है। दो या तीन दिन तक झाड़ा करना चाहिये।

प्रेत बाधा निवारण मंत्र

"ओ३म् नमो दीप सोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले, डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले नौसौ निन्नानवे नदी चले हनुमान बीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

इस मन्त्र को हनुमानजी के मन्दिर में तेल का दीपक बाल कर सवालाख जप करने से ऊपर बताये पर्वकालों में जप करने से सिद्ध होता है। फिर किसी भी भूत प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ा देने से प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

दूसरा मन्त्र :—ओ३म् काला भैरव कपाली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भस्म मुसाण जेहि मांगू तेहि पकड़ा आन डंकिनी शंखिनी पट्ट सिहारी जरख चढ़ंती गोरख मारी। छोड़ि छोड़ि रे पापिन बालक पराया गोरखनाथ का परवाना आया।"

इस मन्त्र को ग्रहण के समय में जप करके सिद्ध हो जाता है। ग्रहणकाल में जितनी संख्या में जप हो जाय उससे सिद्ध हो जाता है। २१ बार बोल कर तीर से या सूजे से झाड़ा देने से तथा २१ बार मन्त्र से अभिषिक्त करके पानी पिलाने से बालक पर आई हुई भूत प्रेत बाधा शान्त हो जाती है।

बवासीर दूर करने का मन्त्र

ओम काका कता किरोरी करता ओम करता से होय यरसना दश हूंस प्रगटे खूनी बादी बवासीर न होय मंत्र जान के न बतावे द्वादस ब्रह्म हत्या का पाप होय लाख जप करे तो उसके बस में न होय शबद सांचा पिण्ड काचा हनुमान का मन्त्र सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र ग्रहण काल में जितना जप हो जाय उतना ही जप करने से सिद्ध हो जाता है। २१ बार पढ़ कर पानी को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर दूर होती है।

डाढ़ में दर्द का मन्त्र

डाढ़ में दर्द हो या कीड़ा पड़ गया हो तो निम्न मन्त्र से झाड़ने से दर्द कष्ट कीड़ा दूर हो जाता है।

ओम नमो आदेश गुरु को। बन में जाई अंजनी जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा मकड़ा मसकड़ा यह तीनों भस्मन्त। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र भी ग्रहण के समय जितना जपा जा सके उतना ही जप करने से सिद्ध हो जाता है। इसको २१ बार पढ़ कर नीम की डाली से झाड़ने से डाढ़ का दर्द पीड़ा आदि दूर होती है।

कखवाई

कांख (वगल) में होने वाले फोड़े को कखवाई कहते हैं। इसको दूर करने का मन्त्र निम्न प्रकार से है :—

ओम नमो कखवाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता आई पके न फूटे चले न पीड़ा रक्षा करैं हनुमन्त वीर दुहाई गोरखनाथ की शब्द साँचा पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु को ॥

मन्त्र को ग्रहण समय या पर्वकाल में १०० माला जप कर सिद्ध करने के बाद २१ बार झाड़ने से और मोर पंख या नीम की डाली से जिस स्थान पर झाड़ा दे उस स्थान की मिट्टी बांधने से तीन दिन में कखवाई की गाँठ बैठ जाती है।

धरन या नाफ टलने पर उपाय

नाभि के नीचे एक नाड़ी बोलती है उसे धरन या नाफ कहते हैं। यह जब अपने स्थान से इधर-उधर हो जाती है तो शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है। कै होना दस्त हो जाना खाना हजम न होना वायु का बाहर न निकलना आदि शिकायतें हो जाती हैं। यह किसी भी डाक्टरी दवा से ठीक नहीं होती और बहुधा डाक्टर लोग भी इसके लिये किसी मालिश करने वाले के पास जाने की ही सलाह देते हैं। लेकिन ज्यादा मालिश वगैरा भी नहीं करानी चाहिये। योग के २-३ आसन हैं जिनसे यह ठीक हो जाती है। खड़े होकर या पैर पसार कर बैठ कर हाथ की उंगलियों की नोक से पैर के पंजों को छूने से

जिसमें घुटने न मुड़ें २-४ बार करने से धरन अपने स्थान पर आ जाती है। बिना ज्यादा मालिश के इसी प्रकार से शरीर मोड़ने आदि से जो ठीक करते हों उनसे ठीक करा लेने में कोई हानि नहीं होती। धरन अपने स्थान से गई है यानी हट गई है इसकी पहले जांच की जाती है। सीधे लेट जाओ। दोनों हाथ व पैरों को सीधा डाल दो फिर नाभि के बीच में पाँचों उंगलियों को जोड़ कर दबाव डालो तो नाभि बोलती धड़कती हुई प्रतीत होगी। जिस प्रकार अन्य नाड़ियाँ बोलती हैं वैसे ही ध्वनि आती है। यह ठीक बीच में बोल रही हो तो समझो कि नाभि अपने स्थान पर है। यदि ऊपर नीचे दाँये बाँये गई है तो उसी हिसाब से शरीर की नसों को मसलने से अपने स्थान पर आ जाती है। जैसे कि नीचे की ओर गई है और बाँई ओर को हो तो सीधी ओर की भुजा में कलाई के पास की नस को मसल कर ठीक किया जाता है। ऊपर की ओर गई हो तो पैर के पंजों की एड़ी के पास की नसों को मसल कर ठीक किया जाता है। जिस ओर धरन बोलती हो उससे उल्टी दिशा की एड़ी या हथेली की नसों से इसे ठीक किया जाता है। हाथ पैर में झटका दे देकर भी ठीक की जाती है।

इसको मन्त्र के द्वारा भी ठीक किया जाता है। इसको ठीक करने का मन्त्र इस प्रकार है—ओम् नमो नाडी नौ सौ नाडी बहत दसौ कोठा चले अगाड़ी डिगे न कोठा चले न नाड़ी रक्षा करै जती हनुमान की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

इस मन्त्र को ग्रहण समय में १०० माला जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर जब जरूरत हो तब किसी सूत के डोरे में ६ बार मंत्र पढ़कर ६ गाँठ लगावै। उसे छल्ले के समान गोल बनाकर नाभि पर रख दे और ६ बार मंत्र पढ़ कर फूंक मार दे। उस सूत के डोरे को जिस तरफ की धरन गई हो उसके उल्टी ओर के अंगूठे में थोड़ा कस कर बांध दे। धरन ठीक हो जायेगी।

रींधनबाय

कभी-कभी शरीर की नसों में ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर नस में रेंगता-सा दर्द होता है। डाक्टरी इलाज में इसमें विटामिन बी देते हैं उससे भी लाभ होता है। बिकोसूल के कैपसूल भी लाभदायक रहते हैं। इसको मन्त्र

के द्वारा भी दूर किया जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—ओम नमो आदेश गुरु को ओम नमो कामरूप देश कामाक्षी देवी जहां बसे मछन्दर जोगी। मछन्दर जोगी के पुत्र तीन एक तोड़े एक बिछोड़े एक रींधनबाय तोड़े। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

इस मन्त्र को ग्रहणकाल में जप करके सिद्ध कर लें। फिर मंगलवार या शनिवार को रोगी को मनिहारी (चूड़ी पहनाने वाली) की मोगरी से या किसी लकड़ी के बैंटे से, हथौड़े की लकड़ी के दस्ते से २१ बार बाय से पीड़ित स्थान को मन्त्र पढ़कर झाड़ दे तो रोग २-३ बार झाड़ने से ठीक हो जाता है।

कण्ठबेल दूर करने का मन्त्र

ओम नमो कण्ठबेल तू द्रुम द्रुम माली। सिर पर जकड़ी बज्र की ताली। गोरखनाथ जगाता आया। बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया। जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहिं बैठी तहां उठत नाहिं। पके फूटे पीड़ा करै तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। ओम नमो आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

ग्रहणकाल में अथवा पर्वकाल में १०० माला जपकर इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद कण्ठबेल के रोगी को सात दिन तक चाकू की नोंक से झाड़ कर जमीन पर २१ बार लकीरें खीचें तो रोग दूर हो। कण्ठबेल गले पर गरदन का एक दुसाध्य चर्मरोग होता है। झाड़ने से दूर हो जाता है।

बिच्छू-झाड़ने का मन्त्र

बिच्छू काटने के बाद उसका जहर जहां तक चढ़ा हो वहाँ से पकड़ कर झाड़ू से झाड़े। जैसे जैसे जहर उतरता जाय वहीं पर पकड़ता रहे और झाड़ते हुए उतारता जाय। डंक की जगह तक आने पर झाड़ना बन्द कर दे और डंक से ऊपर जहर मोहरा पानी में घिस कर लगाये। जहर मोहरा बाजार में मिल जाता है। शिलाजीत बेचने वालों के पास भी मिल जाता है। मन्त्र को पहले बताये तरीके से ग्रहण के समय या पर्वकाल में १०० माला जप करके सिद्ध किया जाता है। प्रयोग करने से पहले सिद्ध कर लेना चाहिए।

ओम नमो आदेश गुरु को। लो बिच्छू कांकर वालो उतर बिच्छू न कर टालो उतरे तो उतारूं चढ़े तो मारूं गरुड़ मोर पंख हकालूं। शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी बाचा।

वशीकरण साबरी मंत्र

ओम मोहिनी माता भूत पिता भूत सिर वेताल उड़ ऐ काली नागिन (यहां प्रेमिका या किसी रूठी स्त्री का नाम लें) को लग जाये। ऐसी जा के लगे कि (यहां उसका नाम लो) को लग जाये हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख न लेटे सुख न सोते सुख, सिंदूर चढ़ाऊं मंगलवार कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख काया तड़प तड़प मर जाय। चलो मन्त्र फुरो वाचा। दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा।

यह वशीकरण साबरी मन्त्र है। शुक्लपक्ष में अष्टमी से पूर्णमासी तक एकांत शांत कमरे में रात को दस-ग्यारह बजे के बाद शुद्ध वस्त्रों में ऊन के आसन पर बैठकर जल का पात्र अपने पास रख ले धूपबत्ती जला ले और उपरोक्त मन्त्र का जाप करे। रूठी स्त्री या विमुख प्रेमिका का ध्यान करता रहे। उसका फोटो हो तो सामने पास रख ले। इस प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ दो घण्टे रोज जप करने से नौ दिन में या ११ हजार जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

पीलिया झाड़ने का मन्त्र

पीलिया रोग में शरीर पीला पड़ जाता है आंखें पीली हो जाती हैं सारा कुछ पीला ही दिखाई देता है। यह पित्ताशय में पित्त की अधिकता हो जाने पर होता है। आजकल तो चिकित्सा विज्ञान में इस रोग के लिए बहुत औषधियाँ उपलब्ध हैं। परन्तु पहले जमाने में गांवों में इन बीमारियों का इलाज मन्त्रों के द्वारा होता था। १०० माला जप कर मन्त्र को सिद्ध करके रोगी के सिर पर कांसे की कटोरी में तिल का तेल भरकर रखे और डाभ यानी कुशा से उस तेल को चलाते हुए निम्न मन्त्र को सात बार पढ़ें। तीन दिन तक ऐसा करते रहने पर तेल पीला पड़ जायेगा और पीलिया रोग दूर हो जायेगा।

ओम नमो वीर बैताल असराल नार कहे तू देव खादी तू बादी पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न एक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत वीर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

□

मन्त्र महोदधिः

मन्त्र महोदधि भारतीय मन्त्र शास्त्र का सर्वाधिक प्रामाणिक तथा प्राचीन-तम उपलब्ध ग्रन्थ है। इसमें मन्त्र साधना के सभी आवश्यक अंगों का विस्तार-पूर्वक वर्णन करने के पश्चात प्रायः सभी प्रमुख देवी देवताओं, अर्ध देवताओं, पिशाचों, यक्षों, यक्षणियों तथा वशीकरण, मारण, उच्चाटन आदि षटकर्मों के मन्त्रों और साधना विधियों का सम्पूर्णतः, आद्योपान्त तथा विस्तृत उल्लेख है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त मन्त्र साधना की प्रामाणिक सामग्री से युक्त दूसरा कोई भी प्राचीन ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। ग्रन्थ में मूल संस्कृत मन्त्रों के साथ संस्कृत टीका तथा हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा व्याख्या भी है ताकि कोई भी व्यक्ति पुस्तक को भली भांति समझ सके। हर प्रकार की साधना के लिए आवश्यक यन्त्रों के चित्र भी दिए गए हैं जिससे पुस्तक अपने में पूर्ण हो गई है। मूल्य १५० रुपए

धनदा तन्त्र

धनदा रतिप्रिया यक्षिणी तन्त्र दरिद्रता नाशक एक श्रेष्ठ कल्प है। प्राचीन काल में ब्रह्मा ने इसे कुबेर को बताया था। जो इस मन्त्र को सदा जपता है उसके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि कभी दरिद्रता द्वारा अभिभूत नहीं होते—ऐसा शंकर जी ने पार्वती से कहा है। मूल एवं भाषानुवाद सहित। मूल्य ५ रुपए

तन्त्र विद्या

लेखक—पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा, बी० ए०, ज्योतिष वाचस्पति

इस पुस्तक में तन्त्र साधना सम्बन्धी बातें जैसे षोडसोपचार पूजन विधि, न्यास, विनियोग, पुरश्चरण विधि आदि सरल हिन्दी भाषा में समझाई हैं। काली, तारा, षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी), भुवनेश्वरी, त्रिपुरभैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला मुखी, मातंगी, कमला, इन दशों महाविद्याओं की साधना और सिद्धि की विधियां बताई हैं। इनके अतिरिक्त वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण, स्तम्भन, उच्चाटन तथा मारण आदि के गोपनीय तान्त्रिक प्रयोग विस्तार से सरल भाषा में समझाये गये हैं। पुस्तक में दशों महाविद्याओं के चित्र भी दिए गए हैं। पृष्ठ संख्या 184, मूल्य १५ रुपए

हिप्नाटिज्म के चमत्कार

लेखक—डा० कालीचरन

इस पुस्तक से घर बैठे सम्मोहन विद्या सीख कर स्त्री-पुरुषों का मन मोह लेना, आंखें बन्द करके हजारों मील की दूरी पर घट रही घटनाओं को देख लेना, लोगों की बीमारियां व कष्ट दूर कर देना आदि कार्य कर सकते हैं।

मूल्य 10.00

चमत्कारी मंत्र-तंत्र और टोटके

लेखक—के० ए० दुबे 'पदमेश'

तन्त्र विद्या तथा ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान तथा 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के स्थायी लेखक पदमेश जी ने इस पुस्तक में ऐसे मंत्र, तंत्र, ताबीज और टोटके आदि दिये हैं जिनसे आपके बिगड़े काम बन सकते हैं और समस्त मनोकामनाएं पूरी हो सकती हैं।

मूल्य 12.00

अलौकिक शक्तियां

घरेलू साधनाएं जिनके द्वारा आप रहस्यमयी अलौकिक शक्तियों के स्वामी बनकर लोगों को अपने वश में कर लेना, मृत आत्माओं को बुलाकर उनसे बातचीत करना, दिव्य दृष्टि प्राप्त करके वर्तमान, भूत व भविष्य की बातें बता देना आदि चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं। विघ्न बाधाएं दूर करके मनोकामना पूर्ति के लिए यंत्र, मंत्र और तंत्र आदि भी दिए हैं। मूल्य 12.00

टेली-रेस्पान्स पावर

आपके शरीर में छुपी हुई वह अदृश्य शक्ति जिसके द्वारा आपकी इच्छित प्रत्येक वस्तु आपको मिल सकती है, जिसके द्वारा आप किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं; जिसके द्वारा कौडियां, पासे और ताश भी आपकी इच्छानुसार पलट जाते हैं, इसी शक्ति को जाग्रत करने की शिक्षा देने वाला रहस्यमय वैज्ञानिक कोर्स जो अमेरिका में आज भी 850 रुपये का बिक रहा है।

मूल्य 12.00

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन